الره على ريداك عَلَّامَةُ النَّاحُ السَّيِّدُ سَعَيْلُ جَيْرُ فَوْقَى معادف سليكيشان كويال يوربها قرفي والع يسيوان بهار بردوتان يمسهم Scanned by TapScanner

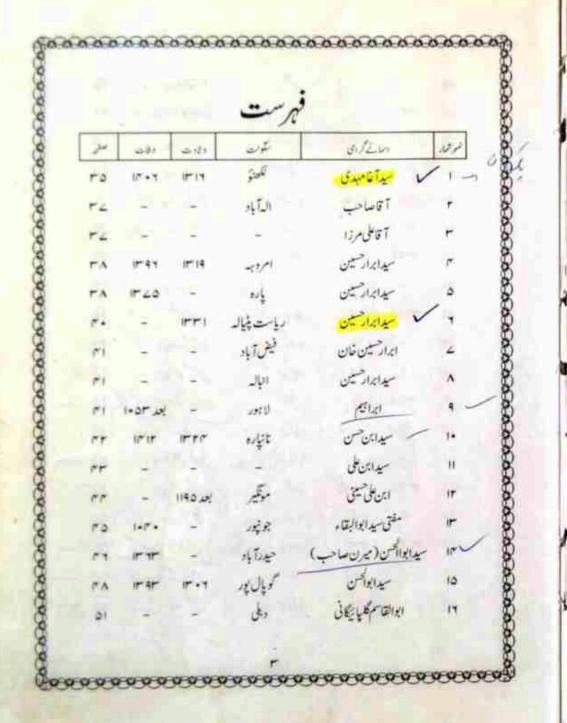


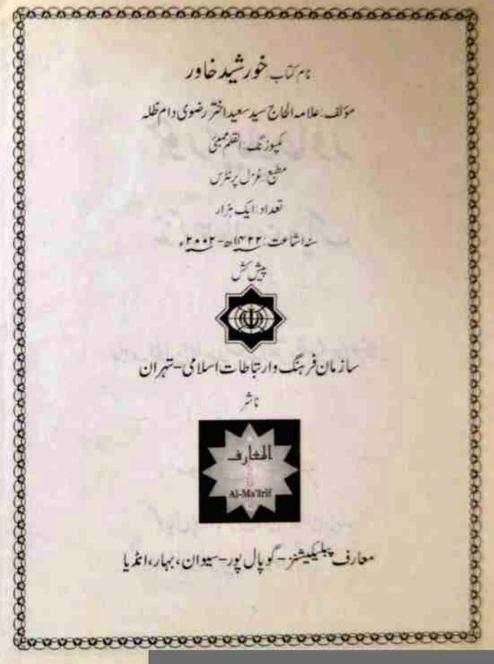
خورشيدخاور

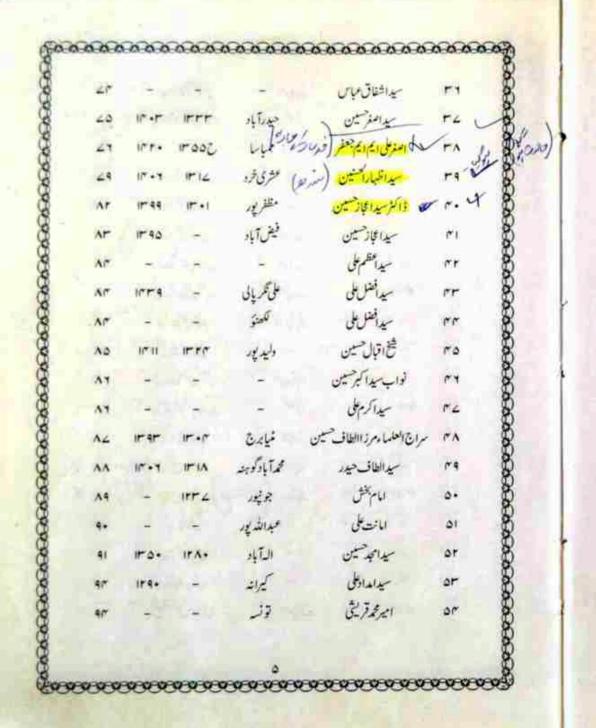
تذكرة علماء هندوياك

علامهالحاج السيرسعيداختر رضوي دام ظله

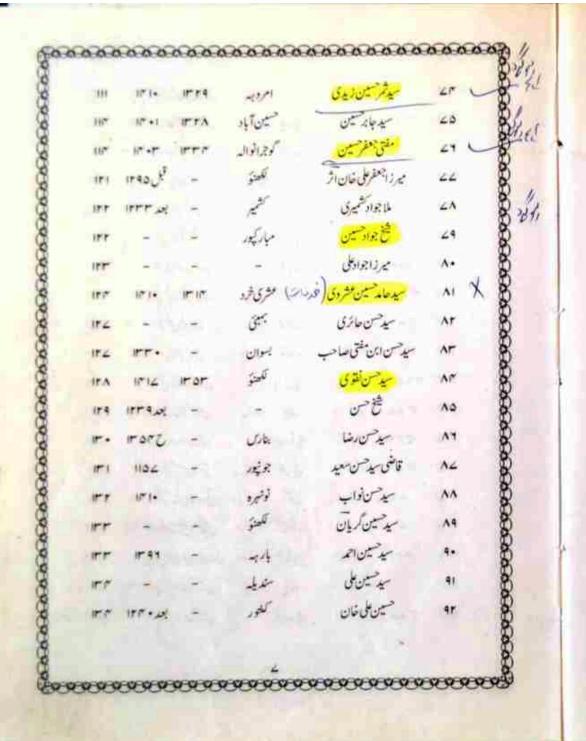
معارف پبلیکییشنز گویال بور، باقر گنج بنطع سیوان، بهار مندوستان ۱۲۸۶ ۸۴



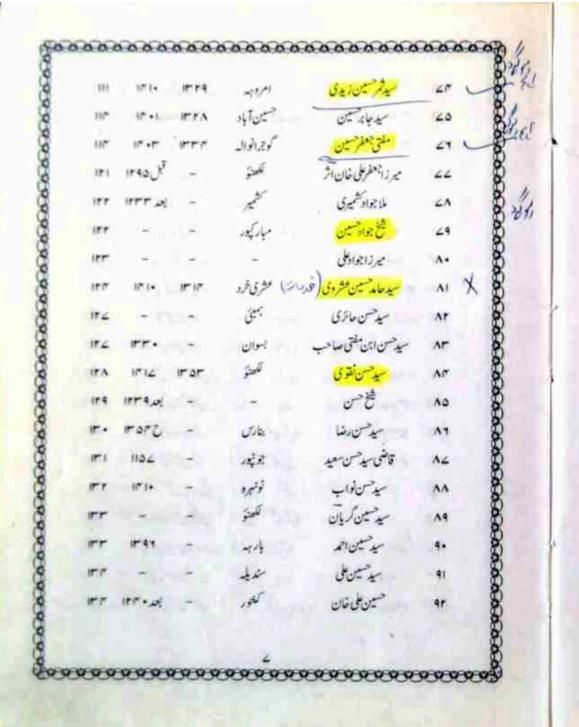




or		22	3	سيدالوالقاسم	441
3			5		12
or	irrr	-	4	الوالكاسماني	(A)
٥٢	wir	irr.	بجۇرتىمتۇ -	Lains	35
٦٥	10-1	-	نوگانوال	بيالالهائم	24
۵۵	Ir4r	IFIZ	14 - 44	سيداحسان على	7)
۵۸	irrr	e A	كلبازا	حافقاته	rr.
۵۸	IF4F		لكستؤ	ary .	er.
90	1			سيدا تمدوا عظ	7.7
94	SAIT	76	4.20	AID.	70
Yr.		-	کجو و	سيداحدسين	rs.
Hr.	-	-	12,6	سيداحدسين	14
11	mo.	12	رفي	🗙 مرزاا حرساطان	Xrn-
10	10.11	-	16.7%	احرطی	7.9
44	¥1,	-	فيضآباد	ملااحد على تشميري	r
44	1154	11-5	کجوہ	سيداخرحسين	r.
YA.	-4	1114	تابره	سيداخرطي	rr
19	irr.	IFFI		ساخهای (عادق بالمز	rr-
40		-	- (المعيل حسين المعالم	rr
25	- 2		حيرآباد	مرزاآطعيل	ro .
-			3,000		



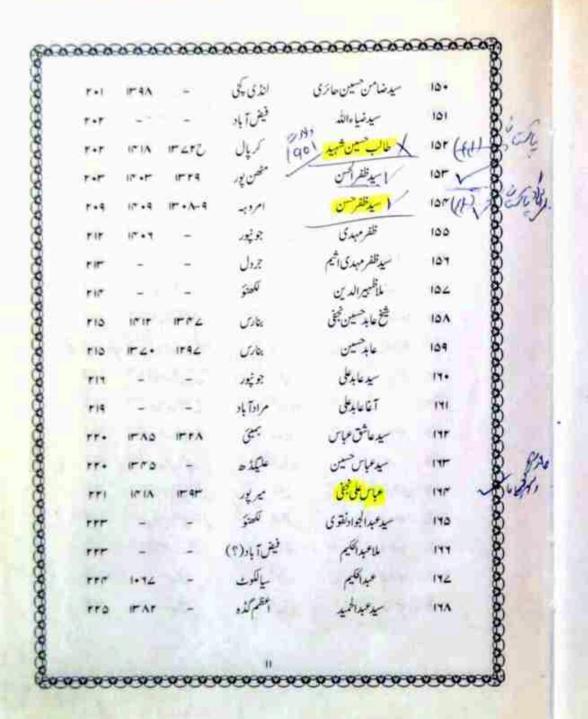
40	12.	100	40/1	سيدانكلادسين	30
49	1800	IT-A	Darie Darie	سيداولاد حيين شاقر	01
94	4		juli .	باقرشاه نغوى	94
9.0	. 2		رفي	مكيم باقرعلى خان	OA-
99	197	-	1000	بازعىشاه	34
1	12	100	الما	بخِآور في خان	3+
1	120,	the.	-17/1	يركت حيين خال	11 /
1+1	IFAI	IFAG	م مجلی بندر	ميد بركت على مجتد	37
100	27	May 1	15/23	وكتافيثاه	T.
1.5	27	9.27c.	10 000	شخ جارت على	OF THE
1.1	4	3+111	حيدرآ باد	سيد بنده حسن مسيق	70
1+0	mr.	100	لكعثق	سيديندوكاهم جاويد	31
194	181	-1	sięk .	سيد بنياد سين	34
1-1	20	err	24,163	راييع خيادى واعظ	地外义
1+4	ror	11-1	عيرًا المدرآباد	المهم مرويهاويلي (فيدم	5/19 X
1+9	6	184	1-11	مين يناوش	4*
1+9	-	N.	100 170	سينافرسين	41
1.4	1 2 1	. 2	= 1	ميوتراپ فل	45
n.	1010	11-19	بالدوم وال	المُنْ النَّفْل مِيدى	4.



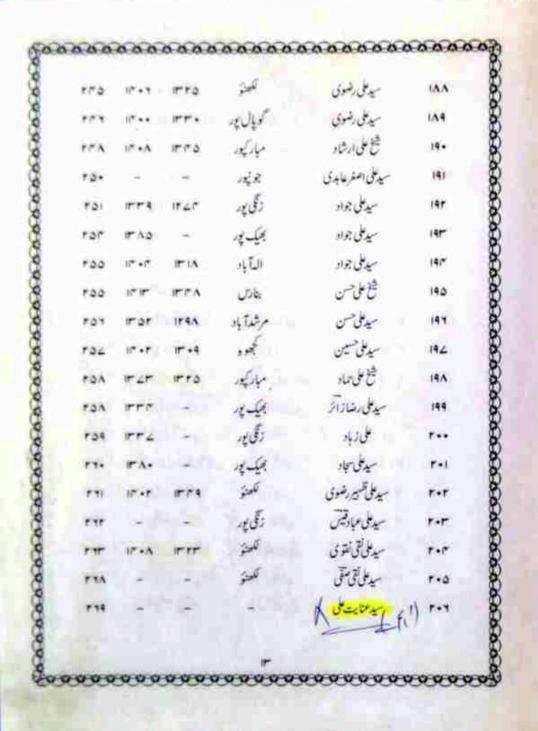
40	200	100	41/1	سيدانكارهين	00
44	USE	11.4	See See	سيداولا وسين شاح	51
94	4	181	just .	باقرشاه نقوى	64
44	1	-	ريلي	تثيم باقرطى خاك	0A -
99	97 E	ng á sal.	15110	بازطیان،	09
100	7.	1	اميط	بلاِتَاور على خان	- 10
100	-4	-	19/1	يركت حسين خال	11
1-1	IFAI	IFAD	ميحل بندر	इंग्रेडिंग्स	THE STATE OF THE S
1+1	Α.,	100	15/6/20	المركب في شاء	*
1.1	4	1	1 × 100	من بشارت على	190"
1.1-	-	J-471	حيدال	سيد بنده صن سيتي	10
1.0	111	100	gine i	ميديندوكا فم جاري	77
104	<u> </u>	NES	126	ميد غياد حين	.74
1-1	4.	irrr	12,163	solution bell	why x
1.4	ror	15:1	المراباد	الما مرداياه على (فعان	silve X
1-4	24.1	1000		سيديناوهل	4.
1.4	-	12	18 .50	Ut sty	41
1-9	÷	12	3 75	سيزابال	41
11-	1010	1719	الاروم وف الاروم وف	في النقل ميدى	45

				-20	
DA.	11-49	ic et	گوپال پور	سيدرسول احمد	ur
04	17.9.5	24-71	وتخلو	سيدر ضافسين شاو	111
4.	إدرواحا	+	100	مرذادشاعلى	110
M	-	5	مرشدآ باو	دمشى الدكن	110
45	115.45	*	الدآباو	رضى المدين حيدر	117
41	-	# _	جأتس	رمنى حسن	114
70	-	- 1		سيدر فق على	HA
ME	تيل ١٢٢٩		مياركيور	فيفخ دمضان على	119
70	90.0	1	142	مفتى روح الله	11.
40	1010	ror	منهاريور	شخ روش علی	iri
177	- 11/	1.5	-	رياست على خان	irr
44	10" 10"	rr.	بناري	فيخ والمحسين	Irr
44	-	15.00	9 14	و کی صین مرزا	(FF
AF	-	(4U	نوگانوال	سيدزةارهين	iro
144	IFF0	44	حسين آباد	نواب زوارعلی خان	IFT
4.	1179	J+1.11	مرىفرد	سيدزين العابدين	11-2
ZP.		11-	مرادآباد	آغازين العباد	IFA
40	IF4A	-	الدآباد	سيدسبط الحن بنسوى	179
24	11-41	1143	1, 1967	سيدسبط سين	r.

15					-
IF O	-	No. of Lot	. S. M.	مسين على سيزواري	1
mo	IFAF	1110	بيك پايد	ميدهاظت سين	91
114	rer	Su.	and letter	سيدمزوعلى	90
112	100	See L	12.75	حاسلى	41
#A	21	190	N. S. N.	خادم حين	44
IFA	- 30	-	14 1	سيدخالق بخش	90
11-4	1100	15.	122	قاصنى خوب الله	44
10.	بعدماسا	-	المآياد	سيد فيرالدين في	100
1001	100	-	1128	قاضى فيرالله	1-1
10"1	10.er	JP197	الوثيره	سيدوليرض	1.r
mr.	ITAOU	1	دائليد	مفتى ولدار حيين	1+
irr	1174	1	24	سيددلدادسين	1-0"
100	irra		حيدآباد	مردادوستانم	1+0
iro	1141	-	برلي	ذا كرحسين اختر	169
1174	-15		ببيق	ذاكر حسين فاروتي	1+4
IFA	+57	146	مخليم آباد	د والفقار على رضوى	J+A
1179	irri	102	البآياد	سيدة يثان حيدر جوادي	1-4
ior			يارو	سيدراحت حسين	114
104	11-62	15-1	بيك بور	سيدراحت صين	10.



144	17.70	15	ميزومادات	سجاو مسين بار بوي	100
129	irir	Hall.	148	سا بدجادتين	rrv
14+	house	-	-	مزداجادي	er
IA+	11- 15		بأس	سيد جادلل	**
10.	4	alen.	M	ميد تاوت على	ro
IAI	10-4	irro	اميت	فض سعادت مسين	m15
104	10°+A	55	المراميد	سيدسعيدا أرطن فسيد	e-2
14+	1-19.00	New York	Harrison.	سيدجم الدين سكندر	EA.
197	1	8	Jime V	ملامت على	174
195	10.0	iror	ماركور	عاقى سلمان احد	10"+
191"	1010	100	الوكالوال	سيدسلمان حيدر	151
190	IFAF	Car.	135.	سيعمان	urr
190	بعدسهما	ırrr	اورد	سيدصا يرحسين	ur.
194	100	152	احقيان	صادق إصفياني	100
194	112.	1616	7 344	ساوق لل	100
194	114.00	83	تكعنو	ميدمين الله	67.1
IAA	Testing.	882	وبل	سييعفرهن	15.4
19.4	10"14	IFOF	مقتركذه	م میمندشین	T STA
r	1144	mil	and of the	اليمغرض	10.4



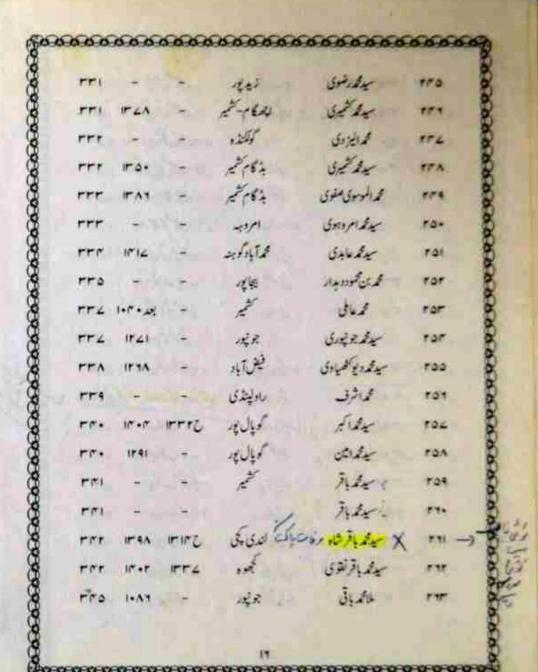
000	000	000	000000	0000000	
rro	1.37	130	246	مدالال يزال	179
rri	1711	1. 10	حيدرآ باد	سيدميدالرسول	14.
rre	IFF4	J-171	Els	الله المرابيد	141
FFA	114+		12.7	سيعبداهل	141
rr4	IFFA	315	4	مرداهیدأهلی	140
rra	191	45	14-44	عبدأعلى خان	140
rr.	irer	IIIr	ويخفيا	سيدميداهلي	140
rrr	-	-	حيدرآ باو	عبدالذقروعي	141
rer	1.465	1+1-5	مسين آباد (؟)	ر مدالله کار	1166
rrr	SAPTI	15.VC	ا مع الله	الان المالية إلى في	PICA
rrr	-	7.7	وفي	آغامير في يك	149
rrr	-	4 t.	محشن آباد	سيدمبدالتان	tA+
rra	11-92	JATTI	مباركيور	مبدالجيد	JAI
rro	+44	14.	فيض آباد	سيدفيدا لجيد	IAF
ren	صعفاجك	كاربوي	وفي	مبدالوباب ويطي	IAT
172	IF 9A	140	بلندشير	ميداري السنافق	(Ar
172	1+59	48	الماريون	لأصمتافة	IAO
EFA	IFAQ	20171	and the	سيطل	141
reo	irio		فيض آباد	سيعلى .	184

				0-00-00-00-00-00		wow.
r •1		122		فياض حسين	rry	
F-1	11790	1445	وليدبور	فياض حسين	rrz	
F + 0	-	distr.	100	سيدفيض حسين	FFA	
r+0	16.0	irr	יטונט	شخ قاسم حسين واعظ	rra	-
F.4		17	كالمشتؤ	مرزا قاسم على	rr.	3
r.2		1000	رجوعه سادات	قا يم حين	rri	-
r.2	-	100	مظفريور	سيد قريان على	rrr	90
r.2	ırrr	A TO	لمتكرى	قمرالدين	rrr	9000
r.A	ITAT	IFFF	بنارى	فيخ كاظر حسين	rrr	Sec.
r.9	7.50	nko.	127.500	سيد كاظم على	rro	2000
r1.	100	IFOY	محدآ بادكوب	سيدكرادحبين	rry	2000
rir	IFAA	11-10	بلندشهر	ارئيس الحفاظ كفايت حسين	Atra +	-
F12	1194	1.	- غازى پور	سيدكلب حسين	rra	8
MIA	10.4	IFFI	لكعثو	سيكلبعابد	rrq	B
rrr	IFFA	4.1	اناره	سيركلبعتكرى	rr.	8
rrr	1+91	4	جو نبور	سدمبارک	rri	8
rry	Irri .	ייוץ	سلطان يور	معتباعلی خال	rrr	8
rra	100	irra	گو يال پور	سیخن رضوی	rrr	8
rr.	1 E		فيض آباد	到	rer	8
						8
			10			8

14.			1		
12.	1 9 4	Charle L	12/20 ·	سيدغلام اصغر	1.4
141	Irar	1727	ي الما الما الما الما الما الما الما الم	سدغلام حسين (بار	r-A
720	IFA1	11-1-0	زنجار	غلام حسين دهاري	r-9
122	19.42	roz	1 TH 104	مرذاغلام دضا	rj.
741	iror	IFTT	مجحوه	سيدغلام صادق	- FIL
149	10.0	11744	بجنور/لكصنو	سيدغلام عسكرى	rir
TAI	IFTI	IFAI	بيني .	حاجي غلام على المعيل	rır
rar	ודירי			شاه غلام على	ric
ras	1012	Uto.	بدرای	غلام محرتقي خان	rio
rao	IFAF		گویال پور	سيدغلام مصطفي	rit
114	10.4	11-1-	واگريجي سنده	ی غلام مبدی نجفی	1 114
r19	- 1	1	چندن پی	سيدفخر الدين	TIA
r4.	141	plo-col	- las	سيدفداحسين	719
r9.	IFTA		لكعنو	حاذق الملك سيدفد احسين	rr.
r91	11791	irrr	4	سيدفر حت سين	rri
rar	11-91	11-19	بنازی	سدفر مت حسین	rrr
rar	י ודדר	57771	الفروس المناسية	ع حافظ سيد فرمان على	1 rrr
r	IFAI	Jes S	יטניט.	سيفنل حسين سيد	rre
۳			حسين محنج	فقر حين عظيم	rra

~~~~~

| PER | B.A   | 100    | 17575          | 2.ex               | rar   |
|-----|-------|--------|----------------|--------------------|-------|
| 254 | ye.   | 1      | X.             | Pou                | 110   |
| rez | I HOT | -      | Gal.           | مردافدتني          | ***   |
| FEA | FAP   | 14     | 1              | poly .             | 112   |
| FEA | IF 44 | 15.4   | JAŽI .         | المرجعفرش يف ديوني | TYA   |
| ro. | IFFA  | irzr   | 14-4           | سيدنكه جواد        | . 149 |
| ror | -0    | 120    | لكعشق          | سيقش               | 12.   |
| ror | *     | Irr.   | U5 K.S         | سيقص               | 721   |
| ror |       | A+.    | 1000           | مرزائد حن فجني     | rar   |
| ror | rrr   | 32871  | رفی            | مرزاهرحس           | 125   |
| ror | (4)   | -      | 4              | سيدالاحين          | 147   |
| ree | -     | N.     | فيض آباد       | سيدالاشين          | 740   |
| ree | -     |        | netolis        | سيد في حسين        | F44   |
| HOT |       | 18     | in M           | مرزافرحين          | 144   |
| FOT | HFA   | STEV . | 12R            | لمامحرحفظ          | 144   |
| F02 | 1500  | WHY.   | 2005           | whe                | 149   |
| FOA | 10"+9 |        | سنجل مرادة باد | ne t               | ra.   |
| FOA |       | irar   | رقی پر         | 5513. Bur          | FAL   |
| mi. | 444   | 4      | sk R           | ייבולה כנפ אל      | rar   |
|     |       |        | lz.            |                    |       |

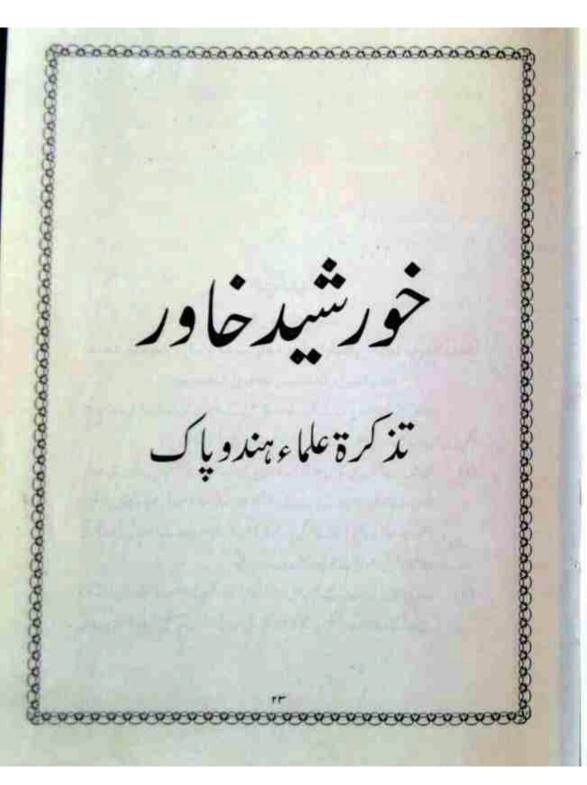


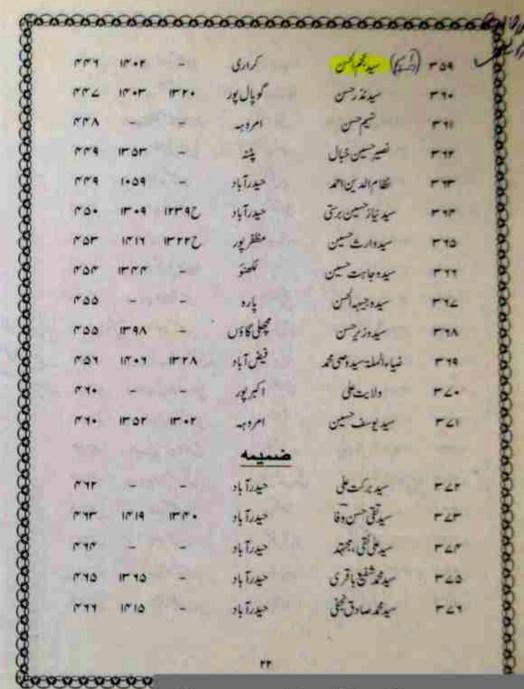
| FAF   |           | irrr   | 4             | محيظهورواعظ               | ror    |
|-------|-----------|--------|---------------|---------------------------|--------|
| FAF   | 10.0      | WARE . | رجيتي         | مرزافدعاكم                | r.r    |
| FAY   | 10-1-     | irra   | امرويد        | سيد محمد عبادت            | ۳.۴    |
| FAA   | 11711     | 1177   | مظفريور       | سيرفدعياس                 | r.0    |
| FAA   | - 21      |        | راي .<br>مدال | محرعبدالحين               | F+4    |
| PA9   | 119+      | ar ele | 18,9.         | سيقعترى                   | r.4    |
| r9.   | 1         | 204    | 1929.         | محطی                      | r-A    |
| P91   | -12       | -1-1   | لكصنو         | مرزامخيطي                 | r.9    |
| r91   | L.        | -      | فيض آباد      | المثاني                   | rı.    |
| F91   | IFAF      | No.    | الدآباد       | سيقاح                     | rii    |
| rar   | 1194      | gwil.  | مظفريور       | سيقق                      | rir    |
| rar   | iror      | est .  | رنگی پور      | سيرمحراطيف                | rır    |
| 797   |           |        | ديركام        | ملامحدماه                 | rir    |
| rar   | 11-44     | 11-11  | نوگانوال      | سدهر مجتبى                | r10    |
| F91   | 17-17     | -      | كافسيا داز    | سيدمحرض حائزي             | FIT    |
| ray . | 145       | 100    | 19:39.        | سيدمحدمرتضى               | F12    |
| r92   | irai      |        | حسين عجنج     | شخ محمسلم                 | FIA    |
| T9A   | 10.4      | .irir  | حسين محنج     | (Al) من المنظمة المواجوير | r19 -> |
| r.r   | - Service | ig.    | - BEN         | محمعوم بندى               | rr.    |

| 10-10-10 | 000   | 0000      | اممممم   |                       | 000   |
|----------|-------|-----------|----------|-----------------------|-------|
| P11      | HAP   | 44.7      | 1949.    | 31,2                  | TAT A |
| rar      | STITI | 1rr-2     | 28       | ٧ المريم رغيان        | TAP   |
| -14      | SAPTI |           | 上分产      | يدفد رضا              | ***   |
| F10      | 11-4. | IFAO      | حيدرآباد | يدفين ا               | FAT   |
| F44      | 11-2. | بارجيا    | زگی پور  | & sier ord            | TAL   |
| r2.      |       | 0.00      | لايور    | 🗶 محدرضی رضوی         | FAA   |
| r4.      | ırrr  | A'S       | رنگی پور | سيدفئرة كاعرف كداحسين | r.14  |
| F41      | IMIA  | irra      | لكحنو    | تاج العلماسيد محدذكي  | r9+   |
| rzr      | IFFA  | 11-12     | ريان.    | المرتبط المراد        | 791   |
| 74       | 4-1   | organi    | زنگی پور | 52                    | rar   |
| 74       | v 44  | Alexander | 11-11-12 | الم الفاح             | 195   |
| 74       | 1.41  | V         | 1943.    | للمحدصادق             | 190   |
| 740      |       | 1190      | غ پرسده  | محمصاوق               | 190   |
| 724      |       |           | لكحنؤ    | سيد محمد صادق         | 191   |
| 744      | 4 - 4 | A. Ser    | مجحوه    | سيد محد صادق          | 194   |
| rzz      | rorz  |           | مجحوه    | سيد مجد صالح عرفي     | ren   |
| r29      | 11794 | Irir      | لكعنو    | مزافعطاير             | 199   |
| r29      | 16.11 | Shirt S   | بخور ا   | برائد طاير            | r.,   |
| r.       | 11-91 | ITTA      | ريان ا   | الماسدقرطاير          | +.1   |

| 77.  |          | 45    | and-               | سيدمظا برسين       | re-    |
|------|----------|-------|--------------------|--------------------|--------|
| (00) | -        |       | REY                | سيدمظفرسيين        | rer i  |
| err  | -10° • A | FFA   | المرال المرال      | سيدمنظ فسين طابر   | rer    |
| rry  | man      | -     | بانش               | سيدمظفرعلى خاك     | rer    |
| erz  | 1774     | - 54  | 14.32              | مظيرسين            | rre    |
| 074  |          | 100   | التكولي ا          | سيدمظيرعلى         | Pro    |
| CEA  | 1-24     | - 4   | 454                | چنارالدین اروستانی | rrs    |
| FFA  | mer.     | 3     | چار                | مرداكرم بخت        | TTL    |
| res  | 18.64    | 7.30  | Fig.               | سيدمتنا وحسين      | FFA    |
| nes. | er.      | mrs.  | 3476376            | ر منگورسین         | Krma B |
| 201  | mrr      | 15445 | غراد               | سيدمبتاب شاوجعقرى  | ان ۲۵۰ |
| 200  | iras     | -15   | للعتو              | طلامهدى مازعدداني  | POI _  |
| EEE. | erro     | ارف   | 第二                 | غواج مبدى حسن      | ror    |
| rer  | 197.574  | - 2   | على كذره           | میدی حسن تا سری    | ror    |
| rre  | SAFTE    | 15,0  | حس فيل بكي         | So see             | ror    |
| SEE  | *        |       | تا <del>س</del> تو | ناور سين           | raa    |
| 555  | 1010     |       | فيش آباء           | ناصرسين            | rot    |
| 115  | rr       | No.   | 188                | سيدة حرشين         | F04    |
| 151  | *49      | 19.   | 1928               | 200                | ron    |
|      |          |       |                    |                    |        |

|      | 100.00   | 1000   | .4        | 200                | - 4       |
|------|----------|--------|-----------|--------------------|-----------|
| 4.4  | IF IT A  | 15.44  | 19-49     | يدارميدي           | E         |
| 1.4  | 10"+1    | ar in  | 1647      | Cuply              | Ett.      |
| 611  | 1120     | irrr   | u Es      | العامدي            | rer       |
| rir  | -        | VIEL   | 1995      | ميده في            | rer       |
| rir  | يوروا ۱۳ | V=1.   | بالاد     | ميد في والإلال قال | rro       |
| rir. | * 1      | Page 1 | 7 33      | ميد الديدان        | res       |
| **   | 1        | N-     | 15.57.    | 51/24              | FFZ       |
| rim  | IFF4     | IFAF   | 14. Es    | ميدنگ باردان       | FFA       |
| C19  | mr.      | 0-0    | UPEU      | Alex               | rra       |
| F14  | rrr      | \( ( - | رقی پر    | ميدل يقوب          | rr.       |
| er.  | 1109     | m-1    | رقی       | بيلين              | FFI       |
| eri  | mar      | 3.77   | الميال يد | 21,35%             | rrr       |
| rer  | mrr      | 17.77  | الور      | سيدم لقنى شيمن     | rer       |
| err  | 5 71     | M+     | حسين آباد | سيدم لفتى هيمين    | ree       |
| ere  | 15.4     | (FC)   | الكعثق    | الم ميدم تقى مسين  | ellero gi |
| FF4  |          | 30.41  | 40/1      | ميد مرود حين       | rrı       |
| FFA  | 74       | NE     | 1- 1      | ميده معقى يكم      | rrs       |
| era  | man.     | irr    | -12/11    | سيد مظاير تسن      | FFA       |
| rrs  | -10      | 5.00   | وكالوال   | سيدمقا برسين       | rrs       |
|      |          |        |           | - 2                |           |





# ديباچه

and the state of t

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على اشرف الانبيآء و المرسلين محمد خاتم النبيين و آله الطيبين الطاهرين المعصومين.

اما بعد: برصغیر ہندو پاک کے شیعہ علماء و افاضل کے حالات میں فاری ، عربی ، اردو اور انگریزی میں اب تک میری اطلاع کے مطابق کم از کم پندر و کتابیں کھی جا چکی ہیں:

- (۱) ان میں ہے بعض کی خاص علاقہ یا خاندان یا کی ایک فرد سے متعلق ہیں۔ ان میں ورثۃ الانبیاء (خاندان اجتہاد کے بارے میں ) ہتخفۃ الا برار (مولا ناسیدعلی بھیک پوری) ، گوہر منثور اور صناد یدوطن (علائے زگلی پور) ، شجرۂ طیبہ (راقم الحروف کے اسلاف) اور تاریخ سلاطین شرقی وصوفیائے جو نیور شامل ہیں۔
- (۲) دوسری کتابین تذکروں کے نبج پر ہیں۔مثلاً نبوم السماء، تکمله نبوم السماء (جلداول)، تذکر و بہا، تذکر ة العلماء الحققین ، تذکر ة الاتقیاء فی تاریخ العلماء اور مطلع انوار، ڈ اکٹر سیدا طہر

اورا گرتھا بھی تو نا قابل اعتناء۔

آئے ہے چارسال قبل کے 194، ش ای نقص کا ذکر آیۃ اللہ شخ محرطی تیجری (رئیس سازیان فرہنگ وار تباطات اسلامی، شہران) کے سامنے آیا۔ (موصوف ای وقت بجن جہائی افل بیت (ع) تہران ۔ کے رئیس نتے )۔ آیۃ اللہ موصوف نے اصرار فر بایا کہ میں اس کی کو پورا کرنے کی کوشش کروں۔ موصوف کی ہمت افزائی ہے میں وار السلام ہے ہندوستان گیا اور اپنے وطن کو پال پور میں چار پائے مہید تک مقیم رہا۔ دو جوانواں کو اس مدت کیلے شہرید دے کرا پی مدد کے لئے آبادہ کیا جنہوں نے بیٹرنہ بناری، فیض آباد اور جو نیور وغیرہ کا دورہ کر کے وہاں کے بزرگوں کے حالات فراہم کئے۔ دوسری چگہوں سے خط و کتابت کے ذرایعہ رابطہ قائم کیا گیا۔ اس طرح اس تذکرہ میں پوئے جاربو علماء کے حالات اکٹھا ہوگئے ہیں جن میں ہے تقریباً نوے (۹۰) نام مطلع انوار کے ساتھ مشترک ہیں۔ باتی سب وہ حضرات ہیں جن کا ذکر آئے ہے پہلے کی تذکرہ میں نہیں آیا تھا۔ جو نام مشترک ہیں ان کی وجہ بالعوم ہے کہ مطلع انوار میں ان حضرات کے حالات میں کچھ غلطیاں اور مشترک ہیں ان کی وجہ بالعوم ہے کہ مطلع انوار میں ان حضرات کے حالات میں کچھ غلطیاں اور اشتریا ہات تھے یا ہم تفصیلیں چھوٹ گئ تھیں۔ میں نے ان کے حالات کوسج انوار کے تھی کے طرف اشتر نہیں گیا۔ ان کوئی اشارہ نہیں کیا ہے۔

او پر لکھا جا چکا ہے کہ اس تذکرہ کا اصل مقعد پورب کے علاء کے حالات کی جمع آوری تھی اور اس لئے میں نے اس کا نام'' خورشید خاور''رکھا ہے۔لیکن اس میں آپ کو حیدر آبادہ کن اور مدراس نیز مہار اشٹر اور گجرات کے علاء کا تذکرہ بھی طے گا بلکہ پنجاب اور صوبہ سرحد تک اس کا دائرہ بھیل گیا ہے۔ان کے علاوہ میں نے اس میں خوجہ برادری کے تین چاران علاء کے حالات بھی شامل کردیے بیں جن کی پوری زندگی زنجار اور ممباسا میں گذری۔اس کا سب یہ ہے کہ وہ حضرات اصلاً گجراتی میتی عباس رضوی مرحوم کی انگریزی تعنیف the Isna-Ashari Shi'is in India اور میرے شیخ المشائخ آ قائی بزرگ تهرانی کی طبقات اعلام الشیعد بلکه ان کی الذریعة مله الی تصانیف الشیعد بھی ای گروپ میں شامل

80808888888888888888888888888

ندگورہ بالا کتابوں میں صنادید وطن اور تذکرۃ العلماء المحققین غیرمطبوعہ ہیں اور باتی سب مطبوعہ میں نے ان میں سے تیرہ کتابوں کا بالاستیعاب مطالعہ کیا ہے اور تاریخ سلاطین شرقی اور تذکرۃ العلماء المحققین کے اقتباسات دیکھے ہیں۔

(٣) نہ جی ماہناموں: اصلاح (کجوا)، شیعد (کجوا)، الواعظ (لکھنو)، الجواد (ہناری) اور

یام علی (لاہور) میں بھی علاء اور بزرگوں کے حالات ال جاتے ہیں۔خصوصاً رسالہ اصلاح کے پرانے مجلدات علاء کے سوائے حیات کا ایک فیمتی سرمایدائے دامن میں لئے 
ہوئے ہیں۔ الجمن وظیفہ ساوات ومومنین (ہندوستان) کے سلور جو بلی نمبر، گولڈن جو بلی 
نمبر اور دستاویز یعنی ڈائمنڈ جو بلی نمبر بھی معلومات کا ذخیرہ ہیں۔ میں نے مندرجہ بالا 
ماہناموں کے مجلدات اور المجمن کے ان جو بلی نمبروں سے براہ راست فایدہ اٹھایا ہے۔

نمبر (۲) میں مندرج اکثر تذکروں میں ایک نقص مشترک نظراً تا ہے اور وہ میہ کہ ان میں 
یا معمون ہوتا ہے جسے بہاراور بنگال میں (بلکہ حیوراً باداور مدراس میں بھی کھیوں وہ کو دنہ تھا 
معمون ہوتا ہے جسے بہاراور بنگال میں (بلکہ حیوراً باداور مدراس میں بھی کھی شیعہ دانشوروں کا وجود دنہ تھا

طراقم الحروف نے علام یحقق سید عبدالعزیز طباطبائی طاب ژاه (قم) کی فرمائش پرالذرید پرالتعلیقات لکھے تھے جھے اس م جھے النام دوم نے اپنی کتاب الاضواء علی الذرید بین میرے دوالے سے شامل کیا۔ نیز الذرید کا محملہ بھی کلسا تھا جے آخوں نے محملہ الذرید بین شامل کیا۔

Scanned by **TapScanner** 

بادشا و کا ستاد موانا چی تی شیره افی اور پکورد سر سالا داس سے خت برہم ہوگا اور الدیکریش ایک زیر دست الفو خاوشو مظیم الفو کمر الوار پی تھ نے بار ویژار سوار اور بیاد ے اکف کے اور قامہ کا تھاسرہ کرلیا پختے مرب کہ بادشاہ اور شاہ طاہر کے حسن قدیر ہے وہ جمیت مشتر ق اوگی اور پی تھ کرفار کرلیا گیا۔ جار سال بعد شاہ طاہری کی سفارش ہے اے آزاد کیا گیا اور ش سابق مقرب بارگا و بنایا گیا۔

اب صاحب مطلع کا بیان سنے (یدوائی رے کدوو ثاوطا ہر کو ملاطا ہر اور ملاصاحب کلفتے ہیں): "ایک مرتبد اللام شاونے (ی جمہ الد تحری کو ) اپنے خواجہ جہاں (وزیر) کے پاس قامد ہر بنده بجیجا۔ وہاں ملاطا ہر سے ملاقات ہوئی۔ ملاصاحب نے جائے کہ کو جسلی پر حمائی۔ ایک سال کے بعد جب مولانا چر محدا ہم گرا آئے تو باوشاو نے استقبال کیا اور اعزاد جمی اضافہ کیا۔ ملاصاحب نے تین جراد آومیوں کے ساتھ فیصب شیعد قبول کرلیا۔ اور خطبہ میں اشار اٹن عمر کے ناموں کا اطالان کیا۔ اس سے مشتعل ہوگر بادہ سواد بیاووں نے انظام شاہ پر تمار کردیا۔ بربان نظام شاہ نے آئیس اظر بند کردیا۔ اس اور الل بعد ملا اور الله کی ساتھ شیعد ہونے والوں میں بہت سے لوگوں نے فیصب بدل دیا۔ جار سال بعد ملا صاحب رہا ہوں کے۔ یوواقی میں ج

ان سات آخوسطرول بی بہت سے اشتیابات بین : خواجہ جہاں یہ بان نظام شاو کا وائے میں بلکہ قلعہ وارتفاع میں بہت سے اشتیابات بین : خواجہ جہاں یہ بان نظام شاو کا وائے میں بلکہ قلعہ وارتفاء وقعہ کے برندو) میں تیم تفار بیر کر کی وائیسی برای کے امراز بین اصافہ کا تاریخ فرشت میں کوئی ذکر میں ہے۔ ملاصاحب ( لیمی شاو طاہر ) تو پشتی شیعہ تھان کے "فہیب شیعہ قبول کرنے" کا سوال کہاں ہے آیا انہ بیان اللاصاحب کے بہائے" بربان نظام شاو نے تو المال کی اللہ برکو ) نظر برکر دیااوران کے ساتھ شیعہ وقے والوں میں کرا ایران انظام شاونے آئیس ( لیمی ملاطاہر کو ) نظر برکر دیااوران کے ساتھ شیعہ وقے والوں میں بہت سے لوگوں نے غراب بدل ویا۔" اس بیان کا حقیقت سے کوئی رابط نیس ہے۔ ترکیس شیعہ بہت سے لوگوں نے غراب بدل ویا۔" اس بیان کا حقیقت سے کوئی رابط نیس ہے۔ ترکیس شیعہ

بعدوت فی تصدر کرونی دبان بولئے تھے۔ اور اگر فورشد خاورش ان کانام ندآ تا تو فیر کرواتی پیک ان سے آشاد تق اور ان کے مالات آبت آبت فیسل کی این قرق پراس کا بیت ایمی شکر اواکروں کم اب بیرکماب ممل ہے اورش اللہ بھاندہ قالی کی اس قریق پراس کا بیت ایمی شکر اواکروں کم

معلق افرار فرست وفيره كرماته 124 مغات يرمشتل ب اورال يمن فوسو (٩٠٠) عند ياده علاء الارزرگول ك طالات درن ك ك ي ين راق هيم كتاب من اگر دُروه وسو يجوف بنا ساشتابات بوجا كي ق تجب كي بات فين دل رايت دوت الحات كی طرف توجه دار فی عفروری ب تا كدومر ب قطعة والے مطلع افرار پرامتا و كرتے بوت الن فاطيول كا اعاده و تركري رب سب سامتم اور تجب فيز اشتباه يہ ب كدمها حب مطلع في من ١٣ اپر البي جي ١٥ اله يوكري " يجت قت و ي كوشيد بناديا ب موسول تے توالد من الزية الخواطر ، ج ١٢ من ١٠٠٠ ، يولا فرشونا تلما ب ليكن تاريخ فرشة من ال كي الكل يكس كلمات -

تاریخ فرشته جلد دوم شمال ۱۱ سال ۱۱۹ کی شاه طاهر کی وساطت سے اور ایک ایمان پرورفواب کی بنیاد ہے اتفاظ کر کے بادشاہ بربان مظام شاہ (۹۶۱ – ۹۱۳ – ۱۵۵۲ – ۱۵۰۹) کے شیعد بولے کا ماجراوری کی آتی ہوئے کی برار افراد ای برم میں ملت بگوش تشیع ہوگئے لیکن

الله المرافق المستوارة والمرافق المرافق المحق على المرافق المستوارة المرافق ا

میرے شخ المشائخ آ قائی بزرگ تبرائی نے طبقات اعلام الشیعد میں ایے حضرات کے اسائے گرامی بھی لکھے ہیں جن کا صرف نام ان کوکسی کتاب میں ملا لیکن حالات معلوم ندہو سکے۔ موصوف نے اس کی وجہ لیکھی ہے کہ ایسے ناموں کا عنوان قائم ہوجائے گاتو ممکن ہے کہ بعد کہ آئے والے حالات کی چمیل کردیں۔ اُن مرحوم کی تاشی کرتے ہوئے میں نے بھی ایے حضرات کے نام لکھ وے ہیں اور قریر کردیا ہے کہ بینام کہاں سے لیا گیا ہے۔

جیسا کہ بیں شروع میں لکھ چکا ہوں ایسے کا موں میں مختلف وجوہ سے بہت سے اشتباہات ہو سکتے ہیں۔ اور لازی طور سے '' خورشید خاور'' میں بھی غلطیاں ہوں گی۔ قار تین میں سے جے بھی کمی غلطی کی طرف تو جہ ہویا جو کئی ناکمل حال کو پورا کر سکتے ہوں ان سے گذارش ہے کہ از راہ عنایت مجھے فورا مطلع فرما کیں تاکہ آئندہ ایڈیشن میں اس کی تھیے یا سمیل کردی جائے۔

ال منصوبہ کے سلسلہ میں سب سے پہلے اپ خلص کرم فرما جناب آیۃ اللہ ﷺ محمطی سنجری حفظہ اللہ کاشکر سیادا کرنا واجب ہے جن کی شجیع اور ہمت افزائی سے یہ کتاب کھی گئی اور ابطیع ہوکر قاریکین کے باتھوں میں پہنچ رہی ہے۔ بعدہ نورچٹم سیر مختار سعیدر ضوی سلمہ اللہ (المعروف یہ مرتضی رضوی) کے لئے دعا گذار ہوں کہ افھوں نے ان حالات کی فراہمی میں انتقک کوشش کی اور میر سے پورے کتب خانہ (ریاض محارف) کو کھنگال ڈالا۔ اور اس طرح میراکام بہت آسان ہوگیا۔ آخر میں عزیز م جناب عمران رسول صاحب سلمہ اللہ ، سر پرست "ورلڈ اسلا مک نیٹ ورک" (WIN) مجمئی رہندوستان) کاشکر گذار ہوں کہ افھوں نے صرف خدمت دین کی خاطر اس کتاب کی کمپوزنگ اور طباعت کی نگرانی کا بوجھا ہے سر پر لے لیا ہے۔ فجز اواللہ فیرالجزاء۔

موتے والوں کے خرب بدلنے کا ذکر ملا ہے۔ چار سال بعد مولانا بیر محدر ہا ہوئے تنے ند کد طا طاہر۔ ح

تن بعدواغ واغ شد، پنبه كا كانم-

تنسیلات کے لئے دیکھئے: تاریخ فرشتہ مقالہ سوم روضتہ سوم ص ۱۱۱ تاص ۱۱۵،مطبوعہ نول مشور رئیں لکھنوکا ۱۲۸ء۔

دوسری تلطی جو بہر حال آئی اہم نہیں ہے وہ شخ احمد دیو بندی کو'' اسرار البدی جواب انوار البدی " کا مصنف طاہر کرنا ہے۔ حالانکہ یہاں بھی معاملہ برعک ہے۔ شخ احمد دیو بندی مرحوم جب شیعہ ہوئے آتا سے تبدیل ندہب کے وجوہ بیان کرنے کے لئے انہوں نے انوار البدی کھی جومطیع اثنا عشری ویل میں وہ سیا ہے میں چھی تھی۔ اور جس پرمصنف کا نام شخ احمد بن مولوی و جیدالدین عثانی لکھا ہے۔ دو تین سال بعداس کے جواب میں ایک تی جو ہر علی نے اسرار البدی کھی۔

صاحب مطلع انواد لکھتے ہیں: "میرے پاس امراد البدی ہے۔" صاف ظاہر ہے کہ موصوف فے اس کتاب کو پڑھا نہیں تھاور نہ شاید اے شیعہ تعنیف نہ بتاتے۔ ایے اشتبابات کے بعد ان کے ایک میانات کا وزن ختم ہوجا تا ہے کہ" فلال کتاب میرے پاس ہے۔" یا" فلال کتاب میں نے دیکھی ہے۔"

انوارالبدی کی اشاعت کے بعد جواب الجواب کا جوطویل سلسلہ شروع ہواات میری ای کتاب میں شخ احمد ایوبندی مرحوم کے حالات میں ملاحظ فرمائیں۔

می نے کوشش کی ہے کہ جری سنوں کی تطبیق عیسوی سنوں سے کرتا چلوں۔اس کے لئے میں نے ابوالصر محمد خالد صاحب۔ایم۔اے(عثانیہ) کی'' تقویم جری وعیسوی''(اشاعت دوم) شالع کردو انجمن ترتی اردو (جند) فی دلی (۱۹۹۳ء) پر مجروسا کیا ہے۔ اپنی ان تطبیقات کو میں نے شالع کردو انجمن ترتی اردو (جند) فی دلی (۱۹۹۳ء) پر مجروسا کیا ہے۔ اپنی ان تطبیقات کو میں نے

Scanned by **TapScanner** 

حورشيرحاور تذكرة علماء مندوياك

جب سے اس كتاب كے لكھنے كامنصوبہ بنا اس وقت سے اب تك بشار افر اوكا مخلصانہ تعاون مجھے حاصل رہاہے جن كانام بہنام شكريداداكرناندآسان ہے ندمناسب۔ ( كيونكداگر سہوا كوئى تام چھوٹ گيا تو شكايت ہوگى!!) اس لئے ميں ان سب معاونين كايبال يجائى شكريداداكرتا ہوں اور اميد ہائے آگا۔ وما توفيقى الا باللہ۔

و آخر دعوانا ان الحمد لللہ رب العالمين ۔

احترسید معیداخرر رضوی موس دعمید ، بلال مسلم شن آف تا نزانیا پوست بکس نبر ۳۳۳ دارالسلام ، تا نزانیا ۸رد کاال فی ۲۳۱ هار ۱۰ رجولائی و ۲۰۰۰

#### آغامېدي،سيد

ALVER SHIP SHIP

HAT STATIST

المان العلماء مولاتا سيد آغا مبدى صاحب فائدان اجتباد كاياية نازركن في 10 وشوال المان العلماء مولاتا سيد آغا مبدى صاحب فائدان اجتباد كاية نازركن في 10 ميلوي كو المان المان المان كالم يملوي كو يا منابط قيد تحرير ش الأكر أكده كريسري الكارزكيك ايك ناود ما فقد مهيا كرديا بي جس ان كى المنابط قيد تحريث ، فائدانى حالات اور ذاتى سواغ كمان وتبلى فدمات كالهور المتيث تطريح ما منا آباتا

آپ نے سات سال کا حمرے داکری شروع کی اور ۱۳۰ دقی الحج و استا ہوئے ۱۹۱۰ مجامیدی پر جیس نے سات سال کا حمرے داکری شروع کی اور ۱۳۰۰ میں کھوٹا جیں۔ مضمون نگاری بھی اوائل حمرے شروع کردی تھی۔ ناکھل فہرست مضایین میں ۱۳۹۱ مضایین کے نام دری بیاں۔ جانس اور تبلغ دین کے سلسط میں محمد و بار مشرف محمد و بار مشرف میں گئے۔ زیادت متبات عالیات سے متحدد بار مشرف

۲۲ سال تک تکھٹو کی مجد تحسین علی خال بیل قر اُنف امامت فی میمل الله انجام دیے اور ہر اتوارکوموعظ فرماتے تھے۔

شید کاغ کھنؤ کے قیام کے بعد اس کے آرگن" السراط" کی مجلس ادارت میں شریک رہے۔ اور دی فی کلسنؤ میں ہمی آپ کے مقالے چھنے رہے۔ رسالہ والواط کلسنؤ میں ہمی آپ کے مقالے چھنے رہے۔ رسالہ والواط کلسنؤ میں ہمی آپ کے مقالے چھنے رہے۔ دسالہ والواظ کی والے اللہ منتظع ہوا۔ دہے۔ جب ۲۲ رجو لا فی وقت الواظ کے مریہ نے اس وقت سے راتم الحروف کوآپ سے نیاز عاصل ہوا۔ وساوان

ro

#### آ قاصاحب

مولوی آ جا صاحب این زین العابدین الدآبادی کی ایک کتاب سیاس الا عال کا ذکر الذر بعی طلایا (دیم عرفیر ۱۹ سپر ماتا ب

## آ قاعلى مرزا، رئيس العلماء

رسال وشید ( کجو و ) جلد ۱۸ فیر ۵ (ماو گرا افیا و ) ش ایک خط خوجه بیار علی عبد الله کی طرف ب چیپا تھا۔ اس بی نامه نگار نے جیت الاسلام دلانا و شقد انارٹی العلم اما قاعلی مرزا صاحب کے بارے بی الکھا ہے کہ ممدول نے بہ سب ناسازی مزاج و ناموافلت آب و دوا شیخ و موغد او باد بالیور ( گجرات ) کے موشین کو چیوز کر جرت کرنے کا قصد فر مایا ہے۔ اس فیر کوئ کر موشین بہت ہی فم وائد و و بی جانا ہیں ، چینی زن و مرد فریاد کررہا ہے کہ مولا تا تو زمارے مال باب بین ان کے بیط جانے سے ہم لوگ بیتے ہوجا کی گے۔ موشین کے ملاوہ آنا خاتی اسامیلیوں اور الل بنود کو بھی کافی فم جوانے د

یہ پات نہ چل سکا کہ موانا تا ہے ممدوح کہاں کے دہند والے تھے۔ لیمن نہ کورو بالا علا ہے ان کے کردار و سیرت کا انداز و ہوتا ہے۔ ممدوح حسن اظابق میں کمال رکھتے تھے بہ ظاہر بانگل سیدھے سادے مگر اپنے وقت کے افلاطون تھے۔ اپنی عزت کئس اور خود داری کو بیٹ برقر ادر کھا۔

مزے تی تھے۔ ان کے پاس لوگ بہت زیادہ تھے تھا گف بیمجے رہے تھے لین ممدوح ان سب چے وال کودمروں میں باعث ویتے تھے۔

(دسلاميد محوويد برابر دراو كاللار)

ے برے مضائن الواطنائن پائندی ہے چھنے گئے۔ اس کے دوایک سال کے احدیث العنوا کیا تا ولئے بیڑ ساحب ہے وکی طاقات ہوئی۔ موصوف بھے بہت جبت کرتے تھاور میں ان کا طاق و اکساند اور سادگی ہے بہت میتا اڑ تھا۔ موصوف نے بھیٹہ ساوہ زندگی اسرکی۔ عالم ہاعمل تھے۔ اپنا کام است باتھوں ہے انہام و بنا پستد کرتے تھے۔

آپ کھنیفات کی فہرت ۲۲۷ کتابوں پر مشتل ہے۔جن میں سے بعض کتابیں کی گئی مطابق ہیں۔ ان میں سے تقریبا ۱۱۰ کی مطابعہ دوں میں ہے۔ ان میں سے تقریبا ۱۱۰ میں مطابعہ دوں میں جو جاتی ہیں۔ ان میں سے تقریبا ۱۱۰ میں مطابعہ میں۔ فیر مطبوعہ ہیں۔

-U. 1910 A US 10 LOUIL

آخری کوشینی افتیار کر گی ۔ وعلیا میں آگھوں کی بصارت نے ساتھ چھوڑ دیا۔
عدالا میں دونوں آگھوں کا ایک ساتھ آپیشن ہوا جوکا سیاب دہا۔ لیکن چالیس دن بعد مجد وکرنے
کی وجہ سے ایک آگھ ضائع ہوگئی۔ صرف ایک آگھ ہے ۱۳-۱۳ گھنٹ کام کر کے اپنے تفیقات کو
ملس کرنے کی وجن دی۔ تاریخ تکھنٹو کا تیمرا حسر کا بت کے مراحل سے گذر دہا تھا کہ آپ نے
داخی ایمل کو ایک کیا۔

۱۱، جولائي و معالم بدا كار دود شنبه و يع مع بارث اللك بوار ۱۳ رجولائي كوشام كو د الله كر د ۲۰ من يداس دارق سام بدا كل طرف رحلت قربالي -

-

0000000000

DATE OF THE PARTY OF THE PARTY

معلوم نین کن سندی آپ نے پلندی و آلاد مدرست ناظمیہ (کلسنز) سے نسلک ہو گئے۔ آپ نے کٹر والوتر اب خال میں سکونت اختیار کی تھی یکسنو کا دوم شروجس میں خطیب اٹل دیت مولانا سید سبط شن صاحب قبلہ مرحوم پڑھا کرتے تھے دومولانا ابرار شیمین صاحب کو طاہر شیر اور ملک میں ہر عبلہ مزت تھی اور ڈاکری کے سلسلے میں دوسری جگہوں پر جاتے دیتے تھے۔

آپ نے ۲۷ روز الاول ها ۱۳ اول ۱۹ الدوم رود ۱۹ مرکود درآبادد کن جی وفات پائی۔ آپ کے صاحبز اوے مولانا سیدمرتفی حسین صاحب ناظمیہ کے فارغ الحصیل جی ۔ پکھ عرصہ تک موقی (تانزانیا) بین امام جماعت تھے۔ اب مدرستا تھمیہ جی مدرس جی ۔ (مطلق توارید الله معلمات) ابرار حسين اسيد، امروبوي

1906 190

مولاتا سید ایراد شین صاحب این جناب سیدمهدی علی صاحب امره به شام مراوآ باد ک دینه داید شیر بیجین می شرسایهٔ پدری سے قروم ہو گئے۔ والدہ نے پروزش کی۔ پہلے تو رالمدارش میں تعلیم حاصل کی جہاں مولانا سیدمرتقبی شیمین صاحب اورمولانا سید پوسف تسیین صاحب نے فیش حاصل کیا اور فقت واصول فقت منطق وقلاف اوراوب میں مہارت نامدحاصل کی۔ مدرسالید رام پوریش مجی وزیر ایا۔ تمام استحانات میں تمایاں کا میائی حاصل کی۔

000000000000000000000000000000000

پر در رمصید جوز تی بہ جیئےت دری مقرد ہوئے اور آے کال کر اس کے پہلی ہوئے۔ بھین سال ای درسی گذاروئے۔

المردمقان البارك وفي وكورطت فرمالي.

( تذكرة الأخيام في عارفي العلماء)

ابرار حسين مسيد، ياروي

1900/11/20

مولانا سيدابرار حين صاحب، إروضلع فازى إورك دين والي تق، ولمن ش ابتدائى المرك وين المرادر تعليم عاصل كرف كر بعد تعديد المرادر المرادر عالم اور

### ابرارسين ،خال صاحب

مولانا محرصطلى جو برئے و سايده ي ان كور في جن أيك مطالعا تها جن شريكتوب الدكا تعارف ان الفاظ من كيا كيا تها:

" جناب مولوگ ایرار حسین خان صاحب مدر تهدر سده فید اسکول فیض آباد." ای سے زیادہ حال معلوم ندور کا۔

(Juditocko desporter)

#### ابرار حسين ،سيد ، انبالوي

مولوی سید ایرار حسین صاحب نے ابتدائی تعلیم اردو، فاری اور فربی کی گھریے حاصل کی۔ اس کے بعد مدرسہ میں داخل ہو گئے اور تمایال طلبہ میں آپ کا شار ہونے لگا۔ پھر تکھنو گئے اور مدرست ناظمیہ سے مسلک ہوئے۔ ممتاز الافاضل وغیرو کے استحانات پاس سے ۔ وطن واپس آ کرمسلم بائی اسکول (انبالہ) میں شیعہ و مینیات کے مدرس مقرر ہوئے۔

#### ايراجيم، لا مورى

بعد سود البعد ۱۹۳۳ء دبستان المذاہب کے مصنف نے ان کولا ہور یک سون الدی کی اتحااور پر لکھا ہے کہ وہ بخت متعصب شیعد سے کیونکہ اسلام لانے ہے قبل انہوں نے ائٹہ معصوبین ملیم السلام کوخواب میں

Was a series of the series of

# ابرار حين ،سيد ، مجرات

. HIT GIFT

مولانا سيدارداد مين رضوى التن سيدها بدهمين رضوى ٢٥ روم سر ١٩١٠ رام ١٩١٠ رخم الم ١٩١٠ حكو الا يو مير ميران الخصيل مر متدريات في الد (جواب مشرقی و فياب كا حصد ب) مين بيدا دو يا -ميال سادات آقيد كرمب من مسلك اختياد كريك تقد مولانا كى دالدوك نانا سيدانور كل شاو في ميني فو خود شيعد فد وب اختيار كيا اوراس كر بعد يهال كروشين كوشيويت سدوشاس كرايا-

مولاناتے ابتدائی آفلیم اپناموں علیم سید منور مین صاحب اور مولانا سید تابت مین صاحب اور مولانا سید تابت مین صاحب زید پوری ( منطح بارو یکی ) سے حاصل کی۔ پھر سلطان المداری میں وافلہ نے کر مولانا سید محد رضا صاحب سے کافیہ مثنا فیداور شرح جای پڑھی۔ آخر جامعہ سلطانیہ سے صدر الا قاصل اور جامعہ بال بھر سے متناز الا قاصل کی سندیں اعلی فیروں سے حاصل کیں۔ بعد و حراق تشریف لے مجے جہاں آخر سے ساتھ بھر خیاطیا تی کے دری خارج میں شرکت کی۔

عواق ے والی آگر سلطان الداری میں بطور مدری متعین ہوئے جہاں طلبہ کوشرائع الاسلام و فیرو کا درش ویا تقتیم ہت کے بعد پاکستان متعلّ ہو گئے اور گجرات میں قیام کیا۔ دوسال تک جاسد حسینیہ (جنگ ) میں صدر مدری کی حیثیت ہے رہے۔ ماہنا مدالبر حان (اور حیان ) کے گمراں مجی رہے تھے۔

(يَوْرُوالاَتْمَاءِ فِي تارِيخُ العلماء)

صاحب الل كرامت منے فردمولا ناسيد ابن صن تقوى ،عبادت اور قناعت مي فردفريد سے مزان انتخائی سادہ تفااور خصه برنماز كے بعد محنوں انتخائی سادہ تفااور خصه برنماز كے بعد محنوں تعقيبات كاسلىلہ جارى رہتا تھا۔غذا انتہائى مختصرتنى سخاوت ميں آگے رہے تھے۔

مولانا ابن حسن کی ذاکری میں استدلال اور تکتوں کی کشت ہوتی تھی۔مصاعب میں خودگریاں رہے۔ جسمجلس میں شریک ہوتے ہا واز بلندگریدکرتے تھے۔شاعری ہے بھی شغف تھا اور تاریخ گوئی رہیمی دسترس تھی۔

قیام ردولی کے زمانہ میں اور ادووظا کف کے دوجمو عمرت کئے جو گئی بارشا کئے ہوئے۔
کرم العلماء کی اولا دمیں سب سے بڑے تھے اور اپنے تمام بھائی بہنوں اور ان کے بچوں
سے انتہائی شفقت کا برتا وُر کھتے تھے۔ ذاتی زندگی میں بہت صد ہے جھیلے۔ زوجہ اولی کے انقال کے
بعد دوسری شادی کی لیکن وہ بھی راتی جنت ہوئیں۔ زوجہ اولی سے ایک بیٹی اور ایک بیٹا پیدا ہوا اور دونوں نے جوانی میں داغ مفارقت دیا۔

زندگی کے آخری ایام میں علالت کا زمانہ وطن میں گذارا اور وہیں ۱۹رمحرم الحرام ۱۳۱۲ ھے ۲۹ رجولا کی ۱۹۹۱ءروزشنبہکودائی اجل کولیک کہااور حسینہ ہجادیہ میں وفن ہوئے۔ (محم جار جورای)

#### ابن على ،سيد

رسالہ اصلاح (محم معالیہ) میں سکریٹری مدرسہ مشارع الشرائع (ناظمیہ) کی ایک تحریر چھی ہے۔نواب سیدنصیر حسین خال خیا آبادی (کلکتہ) نے بیسوال کیا تھا کہ قیام مدرسہ

دیکھا تھا۔ مرزامحن خان تشمیری ان سے وہ نا ہ میں ملے تھے۔اس وقت لا ہور میں دو عالم اور بھی تھے: ملامجر معصوم اور ملامجر تو تی۔

ملااہراہیم عالم وزاہداورفقیہد وحدث تھے۔ ووائل سنت کی چیزوں کے کھانے سے احتیاط کرتے تھے اوراس کی وجدید بیان کرتے تھے کہ چونکہ سے حضرات ہندوؤں کو نجس نہیں مانتے اس لئے وہ ان سے نجس چیزیں فرید کریتھے ہیں۔

(طبقات اعلام الشيعه جلد ٥،٥٠ • المطلع انوارس ١٠)

#### این حسن،سید، نانیاروی

-19.4/pirrr

1991/01FIF

آپ کرم العلماء مولانا سیر سجاد حن صاحب جو نبوری ثم نانپاروی کے فرزند تھے۔آپ ۱۵ مرحم الحرام ۱۳۳۳ الح ۱۱۱ مار چا ۱۹۰۰ء دوزشنبہ باور چی ٹولہ، نانپارہ میں پیدا ہوئے۔تاریخی نام منظور حسین تھا۔ ابتدائی تعلیم اپنے والد ماجد سے حاصل کی۔ اس کے بعد لکھنو جا کر سلطان المدارس میں داخلہ لیا۔ صدرالا فاصل کرنے کے بعد مختم عرصہ کیلئے نجف اشرف بھی تشریف لے گئے۔ واپسی پر وطن میں دینی خدمات انجام دیتے رہے۔ اس کے بعد ردولی ضلع بارہ بھی میں چودھری ارشاد حسین صاحب مرحوم کی مجد میں فرائض امامت انجام دیتے رہے اور تقریبا پوری زندگی و میں رہے۔ سان کا خانوادہ شیر از ہند جو نپور کے لئی گھر انوں میں شارکیا جاتا تھا۔ مُلَا اُولہ جو نپور میں اس خاندان کا حسینیہ انجی موجود ہے۔ مولانا سیر حجد حسن صاحب کے والد بزرگوار مولانا سیر حجد حسن خاندان کا حسینیہ انجی موجود ہے۔ مولانا سیر حجاد حسن صاحب کے والد بزرگوار مولانا سیر حجد حسن

m

## ابوالبقاء مفتى ،سيد، جو نبوري

وعواما وعواء

مفتی سید ابوالبقا و ملامحہ ورویش کے فرز تدھے۔ ابتدایش علوم مقلیہ و تقلیہ اپنے والد ماجد ے حاصل کے۔ گیر طاعجہ ماو دیوگائی کے سامنے زانوے اوب تبد کیا۔ ٹیز دوسرے کی علاءے اکتساب فیض کیا۔ آپ ذبین اور حافظ کی بلندیوں پر فائز تھے اور تحصیل علم میں آئی جدد جہدگی کہ بیس سال کی عمر میں تمام علوم کی تحمیل کرکے اپنے وقت کے مضیور علیا ومیں شمار ہونے گئے۔ طلبار آپ کی طرف رجو شام علوم کی تحمیل کرکے اپنے وقت کے مضیور علیا ومیں شمار ہونے گئے۔ وہ بسب آپ طرف رجو شام عیان کی وجہ سے سب آپ طرف رجو شام عیان کی وجہ سے سب آپ کے گروید وہ وجاتے تھے۔

آپ سے علم فضل کا شہرہ جو نیورے دبلی تک پہنچااور شاہ دبلی نے آپ کواسپت پاس باایا اور جو شیور کا مفتی مقرر کیا۔ اس دن ہے آپ کا محلّہ مفتی محلّہ کہا جائے دگا۔

سانف

(١) عاشيشر ما العامي (٢) عاشيظي

وفات

۲۳ رجمادی الاولی و ۳ مزاه (جوتقویم کی دوے ۱۸ ردمبر و ۱۹۳ می مطابق ب) بروز جعد بدوقت نماز منج آپ نے عالم آخرت کی طرف رحلت فر مائی۔مصنف جملی نور نے آپ کی پائٹہ قیر مفتی محلّہ جس دیکھی تھی۔

(ハータンナリでのしかりまました)

(المعلق على المرابع وي كفرون قارع الحيل موعد عريزى درسفال ك جواب على چدفار في الصيل معرات كام ثال ك مع جن على جوتها مولوى سيدا بن على صاحب کا ہے۔ (merceciui) ابن على حسيني (بعارهاام العاراما) الحول في سيد غلام صين طباطبائي كي تاريخ سير المناخرين كا انتخاب تمن وفترول بين فخص 1210000 بندوستان كي تيورى إدشابول كاحال تيور ع فدشاه تك جو ع الده تك ب-بظال وظيم آباد وأوريسك واقعات عمل 190 احتك. محرشاه كرسال جلوس بيت ودوم (١٥١١ه) عشاه عالم كرسال جلوس وست وسوم - LF (01190) اس كالكيان وي إه كالكعاء واخد المثل لا يبري كا ( بين ) يس ب د الحول في مولكير على وفات يائي-

او کی تھی۔ آپ نے اس کواز سر نواقی کر ایا۔ ای منجد یس امام جود و جماعت رہے۔ نماز مغربین کے بعد ادواند در کی فقت دیے اور بعد نماز جود موصف بیان کرتے۔ یہ طلبات حیات جاری رہا۔ در اس بھی کی رکاوٹ کو برواشت فیس کرتے ہے۔ آفر بیش ول کئی اور تا ثیرتی ۔ موصفہ نہایت مدلّل بیان فر باتے۔ می کو کی اور پیما کی آپ کا آپ کی تھا۔ آپ اسلامی اطلاق کا بیکر تھے۔ مصنف آڈ کر ہے بہا ہے آپ کے تعلقات تھے وو لکھتے ہیں "اب سناہ چند سال سے افریق میں جاریت فر بارے ہیں۔" تذکرو ایر بل سامالی میں بوایت فر بارے ہیں۔" تذکرو

تسانيب

مخون الطبارة ، قوالد المواريث ، ورع الصالحين ، كلمة طيب ، تقريب الشرع ثام اجازات ... (مطبوعه سلامياه)

الانده

لواب سيد عبد الله ، محد على فاضل مكيم ، سيد حسن كريلا في ، آقامين ، سيد غياث الدين شوشترى ، معادت على ، ذا كمزشجاعت على بيك ، سيد تقي حسن وقاد غيرو ..

سفاد

چالیس مرتبه فراق کاستر کیا اور زیارات سے مشرف ہوئے۔ سات مرتبہ تج کیا اور چورہ مرتبہ مشہد مقدس کی زیارت کی۔

اولاو

آپ کے پانچ فرزندوں کے نام یہ بیل: مید مران اُلی المعروف برجم آقار جبتد امید بیسف حسین عرف علی آقار مید جعفر حسین سيدابوالحن (ميرن صاحب)

المستراه المستراة ال

66666666666666666666666666

ختم تعلیم کے بعد آپ مکومت کے مگر رجنزیشن میں سب رجنز ارمقر رہوئے۔ ون ااھ میں اپنے والد ماجد کے انقال کے بعد طاز مت ترک کر دی اور اطلی تعلیم کی فرض سے تجف تھریف ہے گئے۔ وہاں چود وسال تیم رہے اور سید کاظم طباطبائی پن دی (صاحب العروة الوقی) ، شخ محرص مامقانی اور آتا ہے شہرستانی کے درس خاری شن کی اور اجاز ات ماصل کے۔ آپ آتا ہے سید ابوائحس اصفیانی کے قریبی دوست مجدری اور ہم شکل بھی تھے۔ چتا جی ایک مرتبہ پکھ بددی اور یوں نے آپ کو سرکاراسفیانی سجھ کردست بوی شروع کردی۔ بندی مشکل سے ان اوگوں کو بیقین والایا جاسکا کہ آپ اسفیانی نیس بلک ویار بائد کے دینے والے جمیتہ ہیں۔

عراق ے دائی آ کرآپ نے بورے دکن میں مربعیت عاصل کر لی اور اپنے والد باجد کے عاصل کر اور اپنے والد باجد کے عاصل کر اور اپنے ۔ سلسلار قدر اس شروع کیا۔ جومجد آپ کے والد نے بنوائی تھی وومنبدم

Scanned by TapScanner

او فی کی۔ آپ نے اس کوانر مرفوقی کر ایا۔ ای مجدی امام جمد و شاعت رہے۔ نماز مغری کے بعد دونا است رہے۔ نماز مغری کے بعد دونا اند درس فقد دینا اور بعد فماز بعد موسط میان کرتے۔ یہ سلسلہ تا جیات جاری رہا۔ درس ش کی رکاف کو برداشت فیص کرتے ہے۔ نقری ش وارائی فی اور تا فیر تھی موسط فیاب مدل میان فر ماتے ہے۔ می گوگی اور بیا کی آپ کا آئی تا تھا۔ آپ اسلامی اخلاق کا بیکر تھے۔ مصنف تا کر فرے بہا ہے آپ کے تعلقات تھے وو لکھتے ہیں "اب ستا ہے چھو سال سے افریق میں جایت فرمادے ہیں۔" تذکر و

تسانف

مخزن الطبارة ، قواند المواريث ، ورع الصالحين ، كلية طبيبه أقفر يب الشرع مع اجازات . (مطبوعه ١٣٣٠ هـ)

23.15

نواب سيد عبدالله ، محر على فاصل تكييم ، سيد صن كر جا الى ، آقامحن ، سيد غياث الدين شوشترى ، سعادت على ، واكثر شجاعت على يبك ، سيد تقي صن وقاد فيرو

سفار

عالیس مرتبد مراق کاستر کیا اور زیارات سے مشرف ہوئے۔ سات مرتبہ مج کیا اور چودہ مرتبہ مشہد مقدی کا زیارت کی۔

اولاو

آپ کے پانچ فرزندوں کے نام پر جین: سید سران الحن العروف بدمجد آقا۔ مجتد، سید پیسٹ حسین عرف علی آقا۔ سید بعظر حسین

# سيدابوالحن (ميرن صاحب)

JAND-TT/ ITATE

MET GITT

سيد المعتباء سيد الو أمن عرف ميرن صاحب قبله موان اسيد نياز حمن برق حيد رآبادي ك دومر المرت في المعتباء سيد الوائد وجودت المحق آب كا حصرتني اوراشا عن في بيا حصر فرزند تصديم المعتبر المدين مرف وقو اور منطق موان الكابر حمين زيد بوري سي برحي الموقع المعتبر المحتبر المحتبر

عراق ے والین آ کرآپ نے پورے دکن میں مربعیت ماصل کر لی اور اپنے والد ماجد سے جا اشین قرار پائے۔سلسلانہ قد رایس شروخ کیا۔ جومبحد آپ کے والد نے بنوائی شی وومنبدم

1949ء میں اپنے والدین کو دارالسلام بلایا اور اے 19ء میں مجھے میں سعادت حاصل ہوئی کہ ان دونوں بزرگوں کے ساتھ جج کروں۔ جج کے پچھ عرصہ بعد دونوں حضرات وطن واپس گئے۔

والدصاحب مرحوم نے اپنے صرف خاص سے وطن میں ایک عیدگاہ تغیر کرائی۔ (پیاس ساٹھ سال کے عرصہ میں وہ عمارت بالکل بربادہ وگئی تھی، اس لئے ۸۰ میارہ کا کے ۱۹۸۰ میں میں نے اس کو پرانی بنیادوں پردوبارہ بنوایا)۔ وطن ہی میں آپ نے ایک پل تغیر کرایا تھا۔ ہاور کے قیام کے دوراان آپ نے وہاں ایک پڑاوہ لگو ایا اور اس سے وہاں کی جامع مجد کی عمارت کی سحیل کرائی۔ ابھی مینارے بننے باتی تھے کہ آپ وطن واپس آگئے اور میکا مراقم الحروف کی سعی سے انجام پذریہوا۔

۲۷ ذی الحجہ ۱۹۳۷ه/۲۱ دیمبر ۱۹۷۴ء دوز شنبہ سوا چار بجے شام کوآپ نے گو پال پور میں رحلت فرمائی ۔ جمبیز و گفین دوسرے روز گیارہ بجے دن میں ہوئی۔

# ابوالقاسم الجرفادقاني ( گليائيگاني)

آپ کا حال الذریعہ ۲۲ ص ۳۸ سر آپ کی کتاب مناھی علیہ کے ذکر میں ماتا ہے،
اگر چدا س سے میہ پنہیں چاتا کہ آپ ہندوستان آکررہ گئے یا پچھ و سے بعد والیس چلے گئے۔
الذریعہ کے مطابق اصفہان میں تحصیلات علمی ختم کر کے آپ شاہ جہاں کے دور میں
الذریعہ کے مطابق اصفہان میں تحصیلات علمی ختم کر کے آپ شاہ جہاں کے دور میں
اکا دربار سے منسلک ہو گئے جہاں طرفین کے علاء جمع ہوتے وی اور ملاعبدالواسع محصوی وغیر ہم۔
اس دربار میں خالفین کے ساتھ ان کے بہت سے مناظرے رہے جن میں آپ نے ان سب کوشکہ سب کوشکہ سب کوشکہ سب

آگرہ ہے اس اور کے قریب مولانا سید گھر شخر صاحب (مدری اعلی، مدرسناصرید، جون پور) کی دعوت پر آپ مدرسے مدری دوم کی حیثیت سے جون پورآ گئے۔ اور پییں اپنامطب بھی قائم

**\$300000000000000000000000000000** 

ساررجب المرجب ٣٣ إ هو كومولانا محرمصطفی صاحب جو بر مدرسه عباسد (پشنه) كے مدرس اعلی بوع قو آپ نے والدصاحب مرحوم كونائب مدرس اعلی كی حیثیت سے پشنه بلالیا۔ يبال آپ نے پچھتم درواز و میں مطب شروع كیا۔ جب جنوری ١٩٣٣ و كزار له میں مدرسه كی دول گھائ كی عمارت گرگئ تو نواب سيدعلی جادصاحب مرحوم نے گزار باغ كی ایک وسیح عمارت میں مدرسه كو منتقل كيا۔ تو والدصاحب كا مطب بھی گلزار باغ آگیا۔

ا ارمی و ۱۹۲ مورسر تعطیلات گرما کے لئے بند ہونے والا تھا اور مدرسین کی تخواہیں تقریباً چھرمینے سے باقی چلی آرای تھیں۔ لہذا تمام مدرسین نے اجما عی طور پر استعفیٰ دیدیا۔ مدرسہ عماس ختم ہوگیا۔

والدصاحب مرحوم نے اس کے بعد کچھ دنوں سیوان میں مطب کیا۔ ۱۹۳۲ء میں ہاور ضلع بہتی (اب ضلع سدھار تھ گر) میں بطور امام جمعہ و جماعت تشریف لے گئے۔ بدأس وقت پانچ بزار ساوات کی آبادی والا قصبہ تھا اور والدصاحب وہاں انتہائی عزت واحر ام اور محبت وعقیدت کی نظر سے دکھیے جاتے تھے۔ جنوری ۱۹۳۸ء میں اپ بڑے بھائی سیدلطیف حسین صاحب کے انتقال کے بعد آپ امور زمینداری سنجالنے کی غرض سے وطن واپس آگئے۔ اور راقم الحروف کو اپنی جگہ ہلور بھیج

1979ء میں آپ والدہ صاحبہ مرحومہ کے ساتھ عراق واریان کی زیارتوں سے مشرف موعد علی دیسر میں امام جعدو جماعت کی حیثیت سے تانزانیا آگیا تھا۔ میں نے دمبر

0.

CONTRACTOR CONTRACTOR

# ابوالقاسم بسمناني، آخوند

" پندهی ای وقت مالی حطرت، ستود و مرتبت، تهیده فصلت، فضائل شعاد، فرخنده رفتار. آخوند طاابوالقاسم سنانی صاحب طبع سلیم و دین منتقیم تھے۔"

آب كوملوم متداول عن المجلى مبارت تحى اورتاري فدابب وطل تخلف كى بالوبي معرفت ماصل

(よんかはりまきままがまりま)

· intrager

#### ابوالقاسم ،سيد ، بجنوري

عیناط عداد،

عیناط عداد،

موالا تا سید ابوالقائم صاحب قعب بجور شلع تکعنو ک ایک زمیند ارضا عدان می سال و مین الداری بخک بیدا بوت مین والدین کسمایی سے مورم بوشے قعلیم کے شوق نے سلطان المداری بخک بیدا بوت دیمان سے اسلامی سی میرد الافاضل کی سند امیازی فیمروں سے حاصل کی سیم والد میں میوا کی شروں سے حاصل کی سیم وی اوران مجد میں اداری مجدوری اعت سے مسلک بوت اوران مجدی اداری مجدوری اعت

دی۔ پھران مناظروں کو تعمیل کے ساتھ سرید دائل کا اضافہ کر کے آپ نے مثلا کرہ بالا مناقع ملیہ
(افخر اللہ یون دائری کی پر ایون اللیہ کے مقابیغے میں) تحریر فر مائی اور اے شخطی خال (وزیر شاہ سلیمان
صفری ) کے نام پر معنون کر کے ال کو بدیر کیا (ای لئے کتاب کا نام منا کے علیہ رکھا)۔
ان کے والد آ قائد جر خاوق فی (مینی کھیا بڑگا فی) کا وکر اجاز اے بمار کے آخر میں اس اجاز و
میں مقتاب جو طاحر فی کے نام ہے۔ لیکن روشات البحات میں ان کے والد کا نام آ قائد رکھ ورج
ہے۔

میں مقتاب جو طاحر فی کے نام ہے۔ لیکن روشات البحات میں ان کے والد کا نام آ قائد رکھ ورج
ہے۔

(الذر بدین ۱۲)

بوالقاسم ،سيد

الذريد جلد وجم عن ص ١٥٥ پرسيد او القاسم اين محود فزيل مشميري كتاب الرة على ابطال الرق كل ابطال المراق كان مهتاب عن كيلي تكلما به المراق كان مهتاب جن كيلي تكلما به المراق كان مهتاب عدود ٨٥٠ الدين على -

معلوم نیس که بیالیک می شخصیت کے دونام بیل یا دوملحد و شخصیتول کا ذکر ہے۔ (الذربیدی:۱۰ص ۱۵۵)

بونی تو و تبطیخ کی راه می رکاویس السال کے اب ملی اور کائی مناظرون اور مباحثوں کا سلسلہ شروع بواجس کے تقیبہ میں صلع آئند بطلع کیٹر ااور احمد آباد کے بیزے بیزے میں اور منی ملاء نے اپنی گلست متعلیم کرلی اور پورے قصبے نے خدیب میں قبول کرنے کا اعلان کردیا۔

آپ اتھ آباد کی خوجہ شیعد اخاص کی مجد میں امام جمعد و جماعت تھے۔ جنوری علاق میں آب اللہ و میال کے ساتھ والمن والمی آنا جا ہے تھے کہ آپ کی طبیعت تا سان جو کی اور دو میں آپ اللہ و میں آپ اللہ و کی اور دو دن انہتال میں رو کر 19 رجنوری عربی الله کی اور دی اللہ و کی اور دی انہتال میں رو کر 19 رجنوری عربی الله و کی الله ول عن الله کی اور دی الله الله و الله و الله و کا الله و کی تاریخ احمار الله و کا الله و کی الله و کا الله و ک

توت: راقم الحروف معيد اخرر موى في ١٩٢٨ ومن ال وتجف من ويكما تقاء

احسان على ،سيد ، بعسيكيوري

۱۹۱۵ء ایا ایا ۱۹۱۵ ا

کا ذردداری سنیانی مادر شام اورش این فرزند اکبر کساتھ ج سے مشرف دوئ ادرشام اور مشہد مقدس کی زیارتی کیس -

6666666666666666666666666666666

۱۳ رفروری ۱۹۹۳ د (۱۶ رشعبان ۱۳ مله) کودای اجل کولیک کها. (الجواری ۱۹۹۳ در ۲۰۱۹ کالو ۱۳ ماده)

ابوالباشم ،سيد ،نو گانوي

شید جعفری فیڈریشن کا تشویق پرستم پوره (گرات) میں مجلس پڑھنے گئے۔ وہاں جاکر ویکھا کدان کے میزیان جعفری ساوات ہیں جن کے آباداجداد بھی تقید میں شے اوراس کے اثرے وہ حضرات ابھی تک الل سنت ہی کے طریقے پر نماز دروز واور دیگر ندہی امور انجام دیتے ہیں۔ البت مجت الل بیت کا جذبہ ابھی تک ان میں بیدار ہے۔ اس جذب سے فائد وافعاتے ہوئے موال تا نے انہیں ندیب الل بیٹ کی طرف مائل کرنے کی کوشش شروع کی۔ جب بستی کے دیگر سنیوں کو اس کی خبر

م كافات اور موثين كرما تهو مواسات قربات تفد الهية والدين كالمازي قضات عرى كر طودي الدواكس المازي قضات عرى كر طودي

ور الله الدنياه بن ففر (مآب ك شاكردون بن ايك نام" فاضل ما آن اودى به ولوى تجيم سيد احسان على" كالكلما ب- بولك سيد احسان على بيمك بورى تقريباً عن الدو بيني عقد اور ففران مآب كا انقال ال ساسمة و مال قبل هر الا الدين او باكا قدال الله جن احسان على صاحب كو ان كاشا كرد كلما كيا به وواحسان على تعميم و كليس بو سكة .

صاحب تذكرة بي بهائ إلى تحقة الايرارهي يكن ان مرحوم ف واقعات كالاسلول و سئن علد يم منطبق كرف كي طرف قوجة دى (جس طرح راقم الحروف ف موادة سيد على بيك يورى كرمواغ حيات كو كلفة بوت كياب ) ورشان بي يرتبائ شهوا كرافحوں في احسان على بيك يورى كو غفران مآب كاش كرد بجوليا - چنانچ انهوں في تذكرة بي بها (سفيره ١٠) بيران سلسله مي يكلا بيري وقت انقال جناب ففران مآب عليد الرحمة موادة كي محرتق بها اسال كي تحى \_ اگرة ب ابتدائ بلوغ من المعنو بينج ول قو غفران مآب عليد الرحمة موادة كي محرتق بينا جناس مكان سكي بوران

تذکرہ ب بہا کا بیاشتہاہ دوسروں پر یکی اثر انداز ہوا۔ چنانچی آنائے بزرگ تیرانی علیہ الرحمہ نے انگرام البررة جلداول می پراورمولانا سیدسلمان حیدرصاحب نے تذکرة الانتیاء جلدوم میں ۱۵۱ پراحسان علی اندیک پوری پر منطبق کیا ہے۔ جو بی میں ہے۔ میں ۱۵۱ پراحسان علی اندیک پوری پر منطبق کیا ہے۔ جو بی میں ہے۔

200

آپ كالك فرزند مولوى سيدكل رضاصا حب تقدين كاذكراب يمل يرآئ كار

ما يائل في ب

181

قدوة الامنياء موانات ميد نظر حن صاحب بحيك يورى في (جوآب عضيقي بحقيم عقيم عليه على المعناء العلم المنية الفطاء عنية العلماء العراء عن آب كانام ال طرب لكها ب " في جود و قرم عمدة العلماء الاعلام النبية الفطاء الكرام و بناب مولوى ميدا حيان في صاحب مرحوم ."

تخفۃ الدیرار جناب مولاۃ سید تیر مہدی صاحب افل اللہ مقامہ صاحب اورنے الاجزان نے السینے واللہ بزر گوار زید قالدار فین سید تلی صاحب بعربی ری ( جو بہار کے پہلے جبتہ ہے ) کے حالات میں تکھی ہے۔ اس میں بید تلاقا ہے کہ جناب سید العلماء سید میں تکھی ہے۔ اس میں بید تلاقا ہے کہ جناب سید العلماء سید صین علیمین مکان ہے کہ بناب فیض کر کے محتوم ہے کہلے اپنے وائن مالوف بھیک بوروا پی آئے تو ان کی دوحانیت اور تقدی کا ایسا اثر ہوا کہ کی حضرات ان کے ساتھ محتوم سیل علوم دینیہ کیلے لکھو تو جانے پر کیا دوحانیت اور تقدی کا ایسا اثر ہوا کہ کی حضرات ان کے ساتھ محتوم سیل علوم دینیہ کیلے لکھو تو جانے پر آمادہ ہو گئے۔ ان حضرات میں سیدا حسان تی حال علیم شے د

راقم الحروف نے اپنی کتاب چمرہ طیب میں سیدملی صاحب طاب شراہ کے سوائی جیات کی جو تفسیل تحذہ الایمار کے متدرجات پر بنا کرکے تکھی ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ بیا واقد تقریباً علاق الدی ہے۔

سيدا حدان على صاحب في سيدالهارا وطبين مكان ساكب فيض كيااور جب آپ مراجب علي بيدالهار و الله الله بيدالهارا وطبين مكان ساكن بيدالهارا و الله الله بيدالهار و الله بيدالهار و الله بيدالهار الله الله بيدالهار الله الله بيداله الله بيداله بيداله

احمر،سيد، واعظ

آپ کانام مدرسة الواعظين كنتائج امتحانات سالاند ١٩٢٥ مكدرجددوم كامياب طلباء يس مانا ب-

(الواعظ جوري ١٩١١)

# احمد، شخ، د يوبندي

صدد دائی ای مددند ای می ای مقیده در کتے تھے۔ لیکن شخ احمد دین دیا میں ایک تحقیق احمد دین دیا میں ایک تحقیق سے شیعت میں بارگی ایک تحقیق سے شیعت مذہب اختیار کیا۔ آپ نے اپ عقیده کی تبدیلی کے اسباب کو ظاہر کرنے کیلئے انوار الحمد کی الکھی۔ جس کے بعد تحریری مناظرہ کا دروازہ کھل گیا۔ اور بہت سے لوگوں نے طرفین سے مختلف رسالے لکھے۔ جن کی تفصیل (حوالوں کے ساتھ ) پیش کرنا خالی از فائدہ نہ ہوگا۔

آقائے بزرگ تہرائی نے الذریعہ جلد دوم میں انوار الحدی کوشنے احمد دیو بندی کی تصنیف لکھا ہے۔ نیز مطبع تصویر عالم لکھنؤے ایک کتاب صراط متنقیم (مصنف الحاج غلام علی اسمعیل مرحوم) ۲۲۲ اھیں شاکع ہوئی تھی۔ اس کے آخری صفحہ پران شیعہ کتب کی فہرست چھی ہے جو مطبع ندکورے ل علی تھیں۔ اس فہرست میں بیدونام نظر آتے ہیں جن کومیں بلفظ نقل کرتا ہوں:

"انوارالحدى"اردوتصنيف مولوى شخ احمرصاحب مرحوم اثناعشرى

العالم الماري والماء على المعالم المارية والمن على بولى-( تحقة الابرار بيخرة طيب ازسعيد اخر رضوى ، تذكرة ب بهاالكرام البررة ، جلد اول م ٤٠ بمطلع انوار، تذكرة الاتقياء ) المر ، حافظ - 19rm-rbirry رسالد اصلاح كى تحرير كے مطابق جناب حافظ احمدصاحب كلحاز ابرى اى قابل اور حافظ قرآن تھے۔ ہروت مناظرہ میں بین پررہ تھے۔ آب كانقال عماره(م-عاده) على بوا-(اصلاح ج٢ منم ١١، ذيقعده، سنه ١٣٠٢هـ) جناب سيدا حمصاحب، جناب بادى الملة طاب ژاه كے خلف اكبر تھے۔ آپ سلطان المدارك كمتازاسا تذهيس تقدم حوم نع الرديقعده ١٠٥ اه ١١٥ هـ ١٠٠١ ويمبر الكاء) كورحلت فرمائي- بهماندگان من صرف بيثيان چيوژي بين-(الجوادجوري عدور)

عجم البدق كي تفقيف ١٥ رومبر عديدا وكواجير عن قيام عولي اوريداي سال اوافر ١١ ١٥ هـ مثل المديدة كي كانتها عن مثل المديدة حيدري آكروش جي - كتاب ٢٤٢ م مقات يم مثل بداس كثرو من من اللها ب كذا امرار البدق "ميدجو برطي في شيول كاردش اللي تياس كاجواب ب.

( ناظرین نے دیکھا اوگا کہ جم البدق کے مصنف کا نام مراہ مشتیم کے اشتیار جی سید جم اکسن سے بجائے اشتیا با سید جم الدین صبن لکودیا کیا ہے۔)

مختمری کہ سیدجو برطی کی نے فی احد دیو بندی مرحوم کی الوار البدی کے جواب میں اسرار البدی کمعی جس کے جوابات سید جم السن نقوی نے جم البدی اور علامہ بندی نے از پار البدی لکھر ویے۔

افقار علی کی معیار الہدی کے جواب میں تی مولوی جہانگیر خال ملکو ہ آبادی نے پہلے ایک رسالہ لکھا گھرد دسرار سالہ تذکر ہ اُخلفاء المعروف با خیار البدی کے نام سے تکھیا۔ اس کے جواب میں افتار علی سرحوم نے تو برالبدی لکھی جس کی کیلی جلد 7 رشعبان 11 اوکو پوری ہوئی اور مطبع پوشی دیلی میں 44 صفحہ برا 11 ویس چیس۔

الغدد بيد جلد وهم عن شفح احمد صاحب مرحوم كى أيك اورتصنيف كاذكر مثلاث ويمل الحسنات فى اختلاف الفريقين فى الوضور والصلوق.

(الذويوطديكم المع واست وكم رفيقات المام العرد والدووم الكرام المررة والدول من الدست المراط معنى الوارد المدووم الكرام المررة والدول من الدول المراط المواد المراط المواد المراط المراط المراط المواد المراط المراط

Process of the second of the s

" على الصائل الدورتواب امراد الصائل برايك فتروكا بواب كتب الى سنت ، ويا ب. مصطله مولوق مير فيم الدين حسين ."

یبال ان طرف اوج دال فی ضروری ہے کہ متدرجہ بالا اشتبارے معلوم ہوتا ہے کہ امرار البدی کی تا کا آسنیف تقی جس کے جواب میں شیعوں نے جم البدی کھی۔

آجب ہوتا ہے کہ صاحب مطلع افرار نے بیٹی اتد و یو بندی مرحوم کی فیرست تسانیف یل امراد البدی بواہ ہوتا ہے کہ صاحب مطلع افرار نے بیٹی امراد البدی بواہ ہوتا ہے کہ امراد البدی کو مرفیرست تکھا ہے۔ اور یہ بھی فر بایا ہے کہ امیر ہو کی کا ب افوار ہے۔ اس تناب کی موجود گی کیا وجود موسوف نے بیٹ در بکھا کہ یہ بنی کی تصنیف شیعد کی کتاب افوار البدی کی تحقیق شیعد ملامد بندی البدی کی تواب میں ہے سطال کا مؤود موسوف نے ای مطلع افوار میں ووسفے کے بعد علامد بندی مید البدی کا کام مرکب ہوت کے مساف نظام رجوتا ہے کہ امراد البدی کا البدی کی گئی کتاب ہے۔ (افسوس کے ساتھ بیا کھتا پڑتا ہے کہ ایسے مساف نظام رجوتا ہے کہ امراد البدی کا الب ہم آگے بوسطے ہیں:

الذريد بعدرت بادرية كامل من يرمعياد البدئ في دداخبار البدئ مندرت بادرية كلما ب كـ" ايك تن في افرار البدئ ك جواب ش اخباد البدئ كلمي تني جس ك بواب من افخار مل في معياد البدئ كلمي تني من ك بواب من افخار ولي في معياد البدئ كمن يواب من شمل الفخار و ويتدى في الأنباد البدئ كمن يوب من شمل الفخار و المنافق والمن والمن

مجم البدق (جس كا ذكر اوير آيا ب) ميرك كتب خاندرياض معارف يي موجود ب-اعظم معنف خال بهاود سيد جم ألحن أفقرى الجانسي بين جورانية تان شي محكمة المداد محل مي المسيكر تقيد

مرزااحد سلطان مصطفوي چشتی گورگانی انتخاص به خاورآخری مغل تاجدار بهادرشاه ظفر کے بریوتے تھے۔ان کے والد مرز امحد مظفر بخت ابن مرز امحد شاہرخ ابن ابوظفر سراج الدین بہادرشاہ مرزااحم سلطان این تحقیق ہے شیعہ ہوئے تھے۔ وہ ایک منفر داسلوب تحریر کے بانی تھے جو انھیں کے ساتھ ختم ہو گیا۔ انھوں نے بچیس سے زیادہ کتابیں لکھیں۔ وہ اپنے تصنیفات میں چونکا دے والا انداز اختیار کرتے تھے اور بہ ظاہر خالفین کی تائید کرتے ہوئے انہیں کی کتابوں سے ان کی يخ كن كردية تق - ان كى اكثر كما بين طبع موئين - كني رسال إصلاح ( مجموا) بين بالإقساط شالع ہوئے اور بعد میں کتابی شکل میں علیحد وطبع ہوئے۔ جن تصانيف كانام راقم الحروف كومعلوم موسكاوه حسب ذيل مين: ابطال عامل بحديث محده كاه رسول سيرة الصديقة الكبري ع يضهُ خاور عذاب الباري على تيج ابنجاري اغلاط المسلمين العطيات في بيان اقتدار الني وثروته

مولوی علیم سیدا حرصین صاحب مجھو ئی صاحب علم وصاحب قلم تھے۔ چود ہویں صدی کے چوتے عشرے میں اوراس کے پچھ قبل و بعدان کے عالمانہ مضامین رسالہ اصلاح ( مجھوا) میں شائع آب شاعر بھی تھے اور طب سنخلص کرتے تھے۔ احرحين ،سير، عيم عليم مولانا سيداجر حيين صاحب موضع مير يور (ضلع مو) كرريخ والے تھے۔ مدرسہ ائمانيد (بنارس) اورمدرسة اصريد (جونيور) ميل درس لے كرعالم كى سند حاصل كى - جناب ي جي حرصن مجنى طاب راه كابتدائي دوريس مولانا مروح خوجه شيعه اثناعشري مجد (جميئي) مين امام جماعت رے۔ پھر کا ٹھیاواڑ کے علاقہ میں تبلیغ کے فرائض انجام دیئے۔ وہاں امام جماعت بھی سے اور طبابت بحى كرتے تھے۔ كافھياواڙي ميں رحلت قرمائی۔ مولانا ممدوح نے کئی کتابیں کھی تھیں جن میں جبل العارفین قابل ذکر ہے۔ (مولاناسيد كرارحين واعظ، ميريوري)

رب إلى - ليكن داقم الحروف كوتن قريب بيتين بكريدة واليس كي تعفيف ب- (الا الكيف ك يرسول بعد اصلاح بلد د ٢ فير اص ٨ ير يد الفاظ نظر آئ البياب موادي شابزاده مرزااحد سلطان ساحب يشتى د يلوى مصنف جنزيها الانساب وغيرون)

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

٢٢- مناظرة وفي (ييتزيدالانساب كاخلاصب)

أخرالذكر ووول كابول كالذكر والذريع شي ملاب

١٥-١١-١١ فبرك كالول كالرحث معلوم دوسكا كدوطيع مولي تحلى المينا-باقى سبالتا ين مطبوعه ين -

مروح نے ١٢٥ ق الحج و ١٣٥٥ هار وات فرمائي جيسا كداملاح جلد ٢ سانبرايك، ماديور الحرام الا ساه علوم بوارتق م كالاعدية ارخ كم من اسوا مكم طابق مى

## احميلي،الهآبادي

مولانا اجماعی صاحب موضع مصطف آ بادشاه الدآباد کردینے والے تھے۔وطن یس بھای اور اگریزی برجی پر ملم دین کی تحصیل کے شوق میں سوموا میں مدرسالیانی (بنادی) می وافل ہوئے۔ پھر جامع العلوم جوادید (بناری) شی واطله لیاجہال فرالا فاضل کی مند حاصل کی۔ جوادید

تاديب الي نين- عص (يدا حد ١٥١م في رتبام ووا) . بخوات المسلين كے جواب مي مرزا يشر الدين محود احد خليف دوم قاديان ف" حق التقين" عمارسال كلفات ويب الجاتين اى كاجواب ب-مناظرة رأضي إراضي ١١- مناظرة عيدآياودكن ١١- الليديث يالديد ましいが يبهت بى ايم دور ليب كتاب ب يضم زاصاحب في ثائع كرات وقت يركلها قاكد يركنب ان كري عالى مولوي على ادعالم وشي خلى كاتعنيف بي يصور وبعد على شاكع كر 

دارفات عالم بنا كى طرف مدحار .... ال المقترى الرش جارات الى دفاع شيبيت الى العين:

- ا۔ الوصی۔ دوجلدوں ش۔ اس ش الوقاص مولانہ عبد الرزاق عارف جبل بوری کا جواب دیا عمیا ہے۔ پہلی جلد رسالہ اصلاح فیر 7 تا ۹ (بندادی الافرنار صفیان و سے بیس کی ۔ جو یکجائی شائع ہوا تھا۔ کتابی قفل ش پیجی ۔ دوسری جلد بہت بعد ش ای رسالہ میں کتابی قفل ش
- س فتشل شل العانى ف البرالوشين يرمعاذ الله شرب فركا الزام الكا تقاال كالمعسل جواب الركات على المعسل جواب الركات عن ديا كيا ب-
- ۳- رفتی الرحمان بر بحث تقییش به مطاوری می ایش بیر بیمی رہے۔ نیز اصلاح ماہ جمادی الاوتی الاوت

مولا يا الوطن في المراح الله المراح المراح

احد على ، ملا ، تشميري

سیطا تعظی پادشاہ کشیری فیض آبادی کے صاحبز ادے تھے۔ تجوم السمام میں ۱۵ میں آلکھا ہے کہ طاحہ علی بھی علم و حلم کے زیورے آرات تھے۔ نیز بیرکہ آپ کے دوفرز ندھے: (۱) ملاحمن جن کی قبر آنا اجتفالی خال کے امام بازے میں ہے اور (۲) ملاحمہ تقی جن کی اولا د آج بھی ( لیمن ۱۲۸۷ ہ میں جو تجوم السماہ کا سنتالیف ہے) موجود ہے۔

اخر حسين ،سيد ، كجو ئي

مددوس المراالار عن المراالار سيداخر مسين لقل في أخر الحكماء سيد على اظهر صاحب طاب راد كي فيول بيغ تقد مختوان شياب عن شي ١١ سال چند ماه كي عرش عرص عاد (=٢٦٠ جولا تي ١٩٢٥م) شي اس

# اختر عباس نجفي ،شخ الجامعه

HATTINET

1444/127

فَيْ الْجَامِدِ علامِدافِر مَهِا مِ فَجَلْي جَابِ كَ علاقدَ وَ ادوكَ ايَدَ وَالْ كَالَ عِلْوالُودالَى وَالْوَدالَى وَالْوَدالَى وَ الْجَالِ مِنْ اللهِ وَمَهِاللهِ مِنْ مِيدا وَ عَلَيْ يَعِلَ وَاللهِ (مَنْهِاللهُ مِنْ إِللهُ وَ اللهِ وَ مَنْ اللهِ عَلَيْ مِيدا وَ عَلَيْ مِيدا وَ عَلَيْ مِيدا وَ عَلَيْ مِنْ اللهِ وَ اللهُ وَاللهِ وَ اللهِ وَ اللهِ وَ اللهِ وَ اللهِ وَ اللهِ وَ اللهِ وَاللهِ وَاللهُ وَاللهِ وَلَا لَا اللهِ وَاللهِ وَاللهِل

آپ باوی قوم سے تعلق رکھتے ہے۔ آپ کے والد صدیق کو خان اپنی وائی محمقیق ہے فہرب شیعد اختیار کر بچھ ہے۔ ان کے متحول میں علم وین ماصل کرنے کے لئے متوجہ ہوئے دین ہے فرز کا منظر بخش باقری بوقر میں وہی و تدریس کے فرائش انجام و کر کوم و میں دھی دائی ہنت فرز کا منظر بخش باقری میں دول ہو جوائی میں دوران تعلیم نیف انشرف میں دھات کر گئے۔ تیمر سے تھا میں جنوں سے عالم جمین جو فرجوائی میں دوران تعلیم نیف انشرف میں دھات کر گئے۔ تیمر سے تھا می بخشوں سے عالم و میں اختیار کیا۔

الم الواض شرل کا احمان یاس کرے علوم دینیہ کی تقصیل کے لئے مثنان آئے اور مدرسہ باب العلوم میں وافلہ لیا۔ اس کے چھورے بعد استاد العلمان مولانا سید تحمد باقر چکڑ الوی کے خاص شاگردوں میں شامل ہوئے۔

ان کے فیق پندمزان نے ان کودوسرے مکا جب قرے انظریات کو تھنے پر آبادہ کیا چنا تھی میں ان کے فیق پر آبادہ کیا چنا تھی میں ان کے فیر کے مولانا میں بریلوی کمت قرکے مولانا میرد الخالق کی خدمت میں حاضر ہوئ اور آئین کے امراہ والے بندجی کے جہال مولانا امرزاز علی امروہ ہی اور شیخ الحدمت مولانا تھے ادر ایس کا موطوی ہے کسب علم کیا تیروہاں ہے وائیں آئے اور شیعہ شرب کے الحدیث مولانا تھے ادر لیس کا موطوی ہے کسب علم کیا تیروہاں ہے وائیں آئے اور شیعہ شرب کے

اخترعلى بتلبري

11/19/6/11/11-0

مولانا سيد اخر على تايرى ابن سيد اكبرعلى صاحب تاير ضلع شاه جهال پورش وويده العرف و الميلاء (٢- الله الله على بيدا بوت مرير ابتدائي آفليم كه بعد مدرسة عاليد دام پورش داخل بوت جهال آب الله شارم تا زطل بيل كيار عال الله والله ميل ديار و بال الله والله الله ميل موادى قاضل كا احتمال پاس كيار عاصل كي مرافي و بيل في قاضل كا احتمال ياس كيار درج كي سند حاصل كي مرافي و بيل في قاضل كا احتمان ياس كيار

000000000000000000000000000000

ر 1919ء میں سرکاری گلک تعلیم میں ملازمت شروع کی اور گورتمنٹ ہائی اسکول (ہی بور) میں پیسٹنگ ہوئی سا 191ء دوران ملازمت میں ہی اعراض کا احتمان پاس کیا۔ پکو فرصد کے بعد آپ کا جادلہ جو بلی اند کالے تکھنڈو میں ہوگیا۔

تصانف

آپ کے بلند پاییلی وادبی مضایین سرقراز (کلسنو)،ادب، نگار، زباند (کانپور)اوراکلیم وقیره جن جابر شائع موت رہے۔ان کے طاوہ آپ نے (۱) اہتا اعظیم لکھی جس کو بردی مقولیت حاصل جوئی۔ دوسرے تصانیف میں: (۲) رسول کی پاکدائنی (۳) شہادت عظمی اور (۴) اسلامی جہادہ قیم و۔

قوی امورے کانی دلجی دکتے تھے اور آل اندیا شیعہ کا نفرنس کی مرکزی کیلی کے میر تھے۔ آپ شامر بھی تھے اور اخر تھس کرتے تھے۔

(الجمن وظيفرمادات ومؤتمن ملوريو لحالير الإاصلات جلدت جافر الدينات و مستال

6 17

تشريف لے گئے۔ ٨ حرم الحرام و ٢٠١٠ كى شام سالكوك ميں جلس يو صف ك بعد وزيرة باوتشريف لے گئے اور نویں محرم کی شب میں وہاں پر مجلس عزا ہے خطاب کیا۔ وہیں نویں محرم الحرام مطابق ۲۷ راپریل 1999 بروز دوشنبه نماز صح کے لئے وضو کرتے ہوئے آخری مسح کے دوران حرکت قلب بند

وزيرة باديس مولاناموى بيك في نماز جنازه يزهائي فيرسالكوث بس مولانا فيض كرياوي نے نماز جنازہ عین ای وقت اور ای مقام پر پڑھائی جہاں سالہا سال سے علامہ مرحوم خطاب فربایا كرتے تھے۔روز عاشوراء جامعة المنظر لا ہور میں آپ كی نماز جنازہ حافظ ریاض حسین صاحب مجفی نے پڑھائی اورآپ کومین اذان ظہر عاشورا کے وقت جامعۃ المنظر لا ہور میں سر دخاک کیا گیا۔

آپ ك تلانده كى تعداد ب الديشر حين مشهورنام حب ذيل بين: آية الله بشر حين تجفى (نجف اشرف) علامه سيد صفدر حسين تجفى ، حافظ سيدرياض حسين تجفى (يركبل جامعة المنظر لا بور) ملك اعجاز حسين نجفي (يرنيل دارالعلوم جعفريه، خوشاب)، شيخ محد شفيع نجفي (لا مور)، مولا نا ظفر عباس (متحده عرب امارات) وغيرجم

)EEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEE

(مابنامه المنظر لا بور،جون 1999)

66666666666666666666666666666666

احباب من بينے ہوتے تو ہرموضوع پر گفتگو كرتے۔ تنها ہوتے تو مجى تلاوت قرآن مجيد فرمات بمجى على وادبى كتابول كے مطالعه ميں غرق رہے يا تحرير وترجمه ميں مشغول رہے آپ كوم بى، فارى ،اردواور پنجاني زبانول پرعبور حاصل تقاسرائيكي تو مادري زبان تقي سماري زندگي علم و تدريس ے وابسة رب ليكن دين كوحصول معاش كاذر ليد نه بنايا ابتدائي تعليم كے دوران لا موريس ايك ليمن قیکٹری میں مزدوری کی بعد میں نجف، لا ہوراورقم جہاں بھی گئے کتابوں کی دوکان کھول کر گذارہ کرتے

آپ نے خودکوئی کتاب لکھنے کے بجائے تراجم کی طرف زیادہ توجہ کی۔ آپ کی ترجمہ ک ہوئی کتابوں کے نام حب ذیل ہیں:

مفاتح البنان ( شخ عباس في ) ، فضائل في تبن ياك ٣ جلدول مين ( فضائل الخمسة از آية الله مرتضى فيروز آبادي)، آموزش وين جارجلدول من (از آية الله ابراييم المني) فاطمة الزبرأ-اسلام كى مثالى خاتون (از ابراميم ايني) خود سازى (از ابراميم ايني) قيام مخار (از آية الله اردكاني) علم قضاوت برآية الله سيد محمر مبدى شيرازى كى مندرجه ذيل كتب كا اردوتر جمه كيا- كتاب القضاء (دو جلدي) الشهادات، كتاب الديات، كتاب الحدود والتعزيرات وضعداري كابيرعالم تفاكه تقريبًا چالیس سال قبل وزیرآ باداور سالکوٹ میں عشرہ محرم کی مجلسیں پڑھنی شروع کیں اور انہیں شہروں میں عضره پڑھے ہوئے دنیاے رفعت ہوئے۔آپ ١٩٩٢ء عارض قلب میں جتلاتے اوراب عشره پڑھنے سے خود کومعذور سجھ رہے تھے لیکن وزیرآ بادوسیالکوٹ کے مومنین کے انتہائی اصرار پروہاں

# اصغرصين ،سيد ،حيدرآ بادي

1912 SIFF HAT WITH

مولانا سيداصغ حسين صاحب (عرف اقوميال) مولانا سيدزين العابدين صاحب ك يرع فرزند تق - سساره ين حيدرآ بادش بيدا موائد التدائي تعليم كمرير موتى خود والديزر كوار نے علم دین کے ابتدائی مراحل طے کرائے۔ مجرمولانا آقامحن صاحب اورمولانا میرن صاحب کی شاگردی اختیار کی جہال اعلی مدارج طے کئے۔اپنے والد بزرگوار کے انقال کے بعد سجد جعفری کی امامت جعدوجهاعات كى ذمددارى آپ يريزى اورآخروت تك ال خدمت كوانجام وية رب-آپ نيتبات عاليات كازيارت كاجمى شرف عاصل كيا تحا-

مولا نازندگی مجرنشر واشاعت علوم دیدیه مین مصروف رہے۔ ہرطیقداور ہر مذہب وملت میں ہر دلعزیز رہے۔ آپ کے جود وکرم کے انداز میں سیرت ائمۃ کی پیروی بہت تمایاں تھی۔ ایک ہاتھ ے دیے تو دوسرے ہاتھ کو خرنہ ہوتی ۔امدادیانے والوں میں بیواؤں اور بیموں کی تعدادزیادہ تھی۔ عوام کوال داد و دہش کا پند اس وقت چلا جب وہ متحقین روتے پنیتے آگر جنازے میں شریک

مولانا دکنی تہذیب کے نمائندے تھے۔اب ولہج بھی دکنی تھا۔مجل بھی ای زبان میں سيد مع ساد عطر يق يره على يكن زبان من بهت الرتماج وخلوس كانتيج تفارآب كدل اورزبان مين فرق ندتها يجودل من موتاوي زبان يرآ تا تحار

سرسال كي عمريا كرا ٢ رجمادى الاولى سوم إه (=١٠ /مارج ١٩٨٣ م) كودنيا ي رخصت ہوئے۔آپ کے انقال کی خبر من کر ہندومسلمان، شیعہ اور منی تاجروں نے اپنی ووکا میں بند کردیں اور \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\* المعيل حسين

آپ كريكويك تقد جب مدرسة الواعظين قائم بواتو آپ نے كمال تدين اور جوث العائى سے تمام دنیاوى منافع كوفير باد كردرك مذكورين داخله كايا- الواعظ بن ١٩٢٥ ء ك نتائج التحانات ين آپ كانام ناى موجود بـ

#### اساعیل،میرزا

مولانا حكيم ميرز اا عاعيل (جن كاتعارف ورثة الانبياء من "مبلغ وردكن" كي طور يركيا كيا ے) خفران مآب سیددلدارعلی (متونی ۱۲۳۵ه ) کے شاگرد تھے۔ سیدمبدی ابن سیدنجف علی عظیم آبادی رسول پوری نے تذکر والعلماء الحققين مي ان كے لئے" ذكى جليل" كے القاب لكھے ميں اور ية ويكياب كدايك وصة تك غفران آب ساستفاده كرنے كے بعد مشاہ مقدمہ كے زيارات سے مشرف ہوئے اور والیس کے بعد حیدرآ باددکن میں مقیم ہو گئے۔

(ورثة الانبياء-الكرام البررة عص ٤ ١١ تذكرة العلما والتقلين مخطوط

اشفاق عباس، سيد

مولوی سید اشفاق عبای صاحب کا نام رسالہ اصلاح ماہ رمضان ۱۳۵۲ ه میں ماتا ہے جبال آپ كومتاز الافاهل لكها باوريدية چلاب كرآپ كى كورنمن بائى اسكول من مدرى تعد

## اصغرسين ،سيد ،حيدرآبادي

1900 PET

مولانا سیداصغر حسین صاحب (عرف اقومیان) مولانا سیدزین العابدین صاحب کے برے فرزند ہے۔ ۱۳۳۳ وی ساحب اورش پیداہوئے۔ ابتدائی تعلیم گھر پر ہوئی۔ خود والد بزرگوار نظم دین کے ابتدائی مراحل طے کرائے۔ پھرمولانا آقا محن صاحب اور مولانا میران صاحب کی شاگر دی افتیار کی جہاں اعلی مدارج طے کئے۔ اپنے والد بزرگوار کے انتقال کے بعد مجد جعفری کی امامت جعد و جماعات کی ذمہ داری آپ پر پڑی اور آخر وقت تک اس خدمت کو انجام دیتے ہے۔ اسکا محمد و جماعات کی ذمہ داری آپ پر پڑی اور آخر وقت تک اس خدمت کو انجام دیتے ہے۔ اسکا علی است جعد و جماعات کی ذمہ داری آپ پر پڑی اور آخر وقت تک اس خدمت کو انجام دیتے ہے۔ آپ نے متبات عالیات کی زیارت کا بھی شرف حاصل کیا تھا۔

مولانازندگی مجرنشر واشاعت علوم دینیہ علی مصروف رہے۔ ہر طبقد اور ہر ند ہب وطت علی
ہر دلعزیز رہے۔ آپ کے جود وکرم کے انداز علی سیرت ائلہ کی چروی بہت نمایاں تھی۔ ایک ہاتھ
سے دیتے تو دوسرے ہاتھ کو خبر نہ ہوتی۔ ایداد پانے والوں علی بیواؤں اور قیموں کی اقعد اوزیار و تھی۔
عوام کو اس داد و دہش کا پند اس وقت چلا جب و و مستحقین روتے پیٹے آ کر جنازے علی شریک
ہوئے۔

مولانا وکئی تہذیب کے نمائندے تھے۔ لب ولہدیجی دگئی تھا۔ بلس بھی ای زبان میں سید مصرادے طریقے سے پڑھتے تھے لیکن زبان میں بہت اثر تھا جوظوس کا نتیجہ تھا۔ آپ کے دل اور زبان میں فرق ندتھا۔ جودل میں ہوتا وہی زبان پرآتا تھا۔

سترسال کی عمر پاکر ۲۱ رجمادی الاولی سوی اه (=۲ /مارچ ۱۹۸۳م) کودنیا سے رفضت جوے ۔ آپ کے انتقال کی فیرس کر مبندومسلمان، شیعداور سی تاجروں نے اپنی دوکا ٹیس بند کردیں اور

المعاجب المعارض المعار

آپ گر بجویت تھے۔ جب مدرسة الواعظین قائم ہوا تو آپ نے کمال قدین اور جوث العماق سے تقام و تیاوی منافع کو فیر باو کہد کر مدرست مذکور میں واضلہ لے لیا۔ الواعظ میں 1910ء کے منافع العمام مالی موجود ہے۔

#### اماعيل،ميرزا

مولانا تھیم میرز ااساعیل (جن کا تعارف ورث النبیاء مین "مبلغ دردکن" کے طور پر کیا گیا ہے) غفران مآب سید دلدار علی (متوفی ۱۳۳۵ه ) کے شاگر دیتھے۔ سیدمبدی ابن سید نجف علی عظیم آبادی رسول پوری نے تذکر قالعلماء المحققین میں ان کے لئے" وی جلیل" کے القاب لکھے میں اور بی تحریر کیا ہے کہ ایک عرصة تک غفران مآب سے استفاد و کرنے کے بعد مشاہد مقد سد کے زیادات سے مشرف ہوئے اور والیسی کے بعد حیدراآبادد کن میں مقیم ہوگئے۔

(ورثة الانبياء-الكرام البررة ع ص ١٣ ما تذكرة العلماء الحققين مخطوط

#### اشفاق عباس،سيد

مولوی سید اشفاق عباس صاحب کا نام رسالۂ اصلاح ماہ رمضان ۵۳ اھ میں ماتا ہے۔ جبال آپ کومتاز الا فاضل کھا ہاور یہ پہ چانا ہے کہ آپ کی گورنمنٹ بائی اسکول میں مدرس تھے۔

اشاعشری کا ونسل کے صدر ہوئے تو انھوں نے ملا اصغرکواں کا سکریٹری بنایا۔ تین سال بعد وہ تاہب صدر ہوئے اور انھیں مرحوم کے انتقال پر انھوں نے کری صدارت سنجالی۔ پریم کا ونسل کے ذریعہ انھوں نے نہ صرف پورے افریقہ کی خوجہ جماعتوں کی سرپریتی کی بلکہ بند دیا کستان نیز عراق وامیان کے موشین وسادات کی بھی دیکیری کی۔

ساموا میں وہ اپنی اہلیہ کے ساتھ عراق واریان کی زیارتوں کیلئے گئے۔ عراق سے رواقی کے وقت بغداد کے ایر پورٹ پر دونوں کو گرفتار کرلیا گیا اور تقریباً ساڑھے چار مہینے تک دونوں کو ملیحہ وقید خانوں میں رکھا گیا کہ ایک کو دوسرے کی خرند تھی۔ قید خانہ کی روداد انھوں نے ایک آگریزی کا کتا پچه خانوں میں رکھا گیا کہ ایک کو دوسرے کی خرند تھی۔ قید خانہ کی روداد انھوں نے ایک آگریزی کتا پچه سالات ساتھ کے نام سے لکھی ہے اور اکثر زبانی تفسیلات مجمی بتایا کرتے تھے۔ ساڑھے چار مہینے کے بعد دونوں کو برٹش ایرویز کے موائی جہاز میں بھا کر لندن سے بھی ماگیا۔

اب دہ اندن ہی میں مقیم ہوگئے۔ اور یہاں ان کی تنظیمی صلاحیتوں کا پوری طرح مظاہرہ ہوا۔

<u>ورلڈ فیڈریشن</u>: انھوں نے تمام دنیا کی خوجہ جماعتوں کو متحد کرنے کیلئے ورلڈ فیڈریشن آف خوجہ شیعد اثناعشری مسلم کمیوئیٹیز قائم کی۔ اس کی تاسیس سے لے کراپئی زندگی کے آخر تک (درمیان کے تمن برسوں کو چھوڑ کر) دواس کے صدر رہے۔ ورلڈ فیڈریشن کی جانب سے انھوں نے بہت اہم خدمات انجام دیے۔

مدرسة الامام الخونی کی تامیس کی میم امام و مهم سادات اوردومرے حقوق شرعیداور ترعات کوایک مرکز پر جمع کرنے کی کوشش کی اوراس کے ذرایع غریب سادات اوردومر فریب موتنین کی امدادواعانت کی۔ خاص طور سے ہندوستان و پاکستان میں ان کے لئے مکانات بنوائے ،الزیموں کی شادیوں میں اعانت کی ، اجماعی شادیوں کی حوصلہ افزائی کی۔ زینید چایلڈ اسپائسر شب اسکیم کے شادیوں میں اعانت کی ، اجماعی شادیوں کی حوصلہ افزائی کی۔ زینید چایلڈ اسپائسر شب اسکیم کے

الريك جنازه ووك

(راحت عنى وسيدتعمة اللهموسوي)

اصغطى ملاءايم اليم جعفر

1954/15002

r ... / 10 F .

200000000

الحان ملااصغری ملا محرجعفر کے فرز تدا کیراور مشہور صاحب قلم ملا محرجعفر شریف دیو جی کے نواسے تھے۔ ان کے والد بھی صاحب علم اور ذاکر ابلیت تھے۔ ملااصغری حدود ۵۵ ۱۹۳ میں امسارا کینیا) میں پیدا ہوئے۔ انحوں نے دین تعلیم گھر پر حاصل کی اور سکنڈری ایجو کیشن میں ممتاز خبروں سے کامیاب ہوئے۔ ان کا ایک مضمون عربی تھا اور اس میں انحوں نے کافی مہارت حاصل کر فی قاری اور اردوفیض پنجتی (عمباسا) کے مدرسہ میں حاصل کی مطالعہ بہت وسیع تھا اور حافظ تو کی، وواگریزی، سواطی، اردو، عربی، فاری اور گھراتی زبانوں میں اس طرح تقریر کرتے تھے کہ جمع مصور ہوجاتا تھا۔ ان کی اس خصور ہوجاتا تھا۔ ان کی اس خصور ہوجاتا تھا۔ ان کی اس خصوصیت کی وجہ ہے ان کے بعض سوائح نگاروں کو یہ فلط خبی ہوگئی کہ انحوں نے ہندوستان کے دینی مدارس (ناظمیہ اور باب العلم نوگانواں) میں تعلیم حاصل کا تھی لیکن اس المحاس تھی۔ اس کے انتخاب نہیں ہے۔

ابتدائے جوانی ہے تو ی اور ساجی خدمات کا دوق اور لگن تھی۔ مماسا کی خوجہ شیعہ اثنا عشری بھاست کے رکن رہے پھر سکر بیڑی اور آخر میں صدر ہوئے جب الحاج محر علم میکھی افریقہ کی خوجہ شیعہ

44

(1) Outline of Shi'a Ithna-ashari History in East Africa

(2) To Thee I bequeeth

(3) Marriage : A step towards Fulfilment of life (with Dr. A. G. N. Lakha) (دَاتَيْ معلوبات)

(ررُان که دادا) سر اظهار الحنین ،سید ،عشروی

النظام المراد المحالة المحالة

قر بعدایے پچوں کی تعلیم کا انتظام کیا جونا داری کی وجہ سے اسکولوں میں جانے سے معذور تھے اوران کو اعلیٰ درجات تک پہنچایا۔ مدارس دینیہ کی بحر پور کمک کی ان کے اسا تذہ اور طلبہ کو معقول وظائف درجات تک پہنچایا۔ مدارس دینیہ کی تجدیدیا تغییر میں پوری طرح حصدلیا۔ مساجداورامام باڑوں کی تغییر میں پوری طرح حصدلیا۔ مساجداورامام باڑوں کی تغییر وتجدید کی سہم امام کا جو حصد مراجع تک پہو نچانا تھا۔ وہ ان تک پہنو نچایا یا اکی ہدایت پر دوسرے مکوں کے دینی ورفائی مراکز برصرف کیا۔

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

ان سب وجوہ سے پوری شیعہ دنیاان کوعبت اور عقیدت کی نظرے دیکھتی تھی۔عوام مومنین کے علاوہ علمائے کرام ان کی بہت عزت کرتے تھے خواہ وہ عراق واریان کے ہوں یا ہندو پاک کے رہے والے ہول یا ہیں مقیم ہوں۔

ان کی تر یک اور بہت افزائی ہے افریقہ کی سپریم کا وُنسل کے نیج پر جرات فیڈریشن اور پھے کا وُنسل قائم ہوئی ای طرح یوروپ کے تمام اداروں کی بونین بی۔

عالمی بیانے پر ہر جگہ مقامی زبانوں میں یا انگریزی میں قرآن مجید اور ضروری دینی لٹریچر فراہم کرنااوران مقامات پر مدرسین اور علماء کو معین کرناان کامحبوب مشغلہ تھا۔

ان کی زیرسر پرتی پوشیا کی زبان میں بھی چند کتا بچے ترجمہ کئے گئے (جوابھی غالبًا غیر طبوعہ ہیں۔)

قيدفاندكى رودادواك كتابي كعلاده أنحول فيتمن كتابي اور كلص تقد

صاحب مرحوم كاتفادن ك (جو مدسة الحاصلين كرماتى اور فير بوريورى بال تيم في ) فير بيد عن سلطان المدارس قائم كيا اورو بي رئيم امرواوي كرماته ال كرايك برياس قائم كيالة يكو فرمدتك آب مدرسة الواعظين (كرايق) كريكل رب عصاد يب المظم مولايا، سيد فقر حسن امرواوي في قائم كيا تحاد علامه رشيد تراني في حسينية بهاديدكرا إلى عن قائم كيا تواس كي المحت بما هند أب كرير واوني.

آپ نے پہلی دین کواپنا شعار اور درس وقد ریس کواپنا مشظار قرار دیا تھا اور خدمت قد ہب کو اپنا نصب احین مایا تھا۔

فالغره

مولانا س<mark>یر جوادالا</mark> مغرصا حب، مولانا چین صاحب مرحوم، مولانا سید خمیر اُنحن صاحب مرحوم، مولانا سید سیط احمد صاحب مرحوم، مولانا شخط مارف حسین صاحب مرحوم آپ کے علاقہ ویش شامل تھے۔

آخرین قدرآباد (سنده) شن سكونت اختیار كی اور القف مساجد شن خد بات انجام وية

مختری طالت کے بعد ۵ رمز اُلظر و ۱۳ ومطابق ۲۰۰ کور ۱۸۹۵ ، کونالی هیلی کی اِلگاه شرکافی کا کارگاه شرکافی کا اِلگاه شرکافی کا

21/2

آپ كى تىن بىلى اورايك بى جات إلى د يۇل كام يى بسيد تميز تسنين سيد تاظر الىنىن اورسىد مرغوب تسن د مولوى سىد تميز تسنين صاحب كورنىن كان كى (جيدرة باد، سنده) يى

مدرسة الواعظين

سلطان المداري كربعدة بدرية الواعظين في واقل بوئ جهال عرب 1914 وفي الأرق القصيل بوئ جهال عرب 1914 وفي الأرق القصيل بوئ ما مداري آب كرموام رين تقية علامه حافظ كفايت مسين ومولا نا أنيس المن وشوق اورم زايوست حمين صاحب طاب را ابم .

مدرة الواحقان كی طرف سے پہلے بہار اور اور پری تی تی مقرد كے گے۔ پر میں المجان ہے مقرد كے گے۔ پر معلام میں ماؤالا سر الموالا عربی ہے کے والا والی آکر مدر تا اسلام یہ کچھو وی پر ٹیل اور ہے ہے بہال الموالا عربی حق حن کا موں پوری آپ کے تائب پر ٹیل رہ ہو۔ تی المحکو وی پر ٹیل اور با تا المولا عربی حید رصاحب (مدید اصلاح) کے ساتھ کا بوں کی نشر و المثام است کا بین المحلولا المور الما المور المحلولا المحلولا المحلولا المور المناس المحتس کو دوبارہ جاری کیا ۔ بیدرسالہ فخر الحکواری کے رسائ المجموم المحبور المحلولا المحلولا المحبور المحبور میں المحبور میں المحبور کی درسالہ المحبور کی درسالہ المحبور کی المحبور کی المحبور کی المحبور کی المحبور کی درسالہ المحبور کی کی المحبور کی المحبور کی المحبور کی کا کر کر کے دیا ہے دی گائی کی کی کے کو میں کی کا کر کر کی کی کر کے دیا ہے دی گائی کر کے المحبور کی کا کر کر کی گائی کر کے کر کر کر کی گائی کر کے کر کا گر کر گائی کر کے کہ کر کر کر کر گائی کر کے کہ کر کر کر کر گائی کر کر کر گائی کر کر گائی کر کر کر گائی کر گ

مولانا الخيار المعنين ساحب تشيم بندك فل كرائي على العداد من منى فادم حسين

تقتیم ہند کے بعد آپ مشرقی پاکتان تشریف لے گئے اور ڈھاکہ میں مقیم ہوئے۔ جہاں آپ ڈھاکہ یو نیورٹی کے شعبۂ عربی کے صدر تھے۔

0.000.000.000.000.000.000.000.000.000.000.000

جب مشرقی پاکتان بگلادیش ہوگیا تو آپ کراچی تشریف نے گئے اور عمر کے آخری حصہ تک تو می فعالیوں میں حصہ لیتے رہے۔ آپ ایک عرصہ تک اسلامک لاء کمیشن کے ممبر رہے۔ آپ نے لاے وا میں وفات پائی اور کراچی میں دفن ہوئے۔

(انجمن وظیفهٔ سادات ومومنین سلورجویلی نمبر، دُاتی معلومات)

# اعجاز حسين ،سيد ،فيض آبادي

1949/2119

مولانا تھیم سیدا گاز حسین صاحب مرحوم انتہائی منگر المزاح واقع ہوئے تھے۔ آپ کے علی و دینی فیوض سے فیض آباد اور اس کے اطراف کے موشین ہمیشہ مستفید ہوتے رہے۔ دینی خدمات کے ساتھ آپ اپنی حکمت کا چراغ روٹن کئے ہوئے تھے۔ مجلسوں میں بغیر کسی عذر کے ذاکری فرماتے تھے۔ ایک عرصہ تک وثیقہ عربی اسکول میں وائس پرنسل کے عہدہ پر مامور رہے۔

آپ کے تلاندہ میں مولانا وصی محمد صاحب مرحوم اور مولانا محمد صین نجنی مرحوم کے اساتے ای تابندہ ہیں۔

آپ نے ۱۸رجون و <u>۱۹</u>۷ء (=۸رجمادی الثانیہ و ۱<u>۳</u>۱۵ء کودی بجرات میں رحلت فرمائی۔

(الجواداكت وعواء)

یکچرریں۔ فی الحال لمی چھٹی لے کر نیوجری (امریکہ) میں تبلیفی خدمات انجام دےرہے ہیں۔ مولانا اظہار الحنین صاحب کی اہلیہ راقم الحروف کے والد ماجد کی حقیقی ماموں زاد بہن تحییں۔

(الواعظ، الجحن وظيف ساوات وموشين سلورجو بلى نمبر مهولا ناتلية حسنين، ذاتى معلومات)

اعجاز حسين، سيد، ڈاکٹر

יוואס ביולים ביולים

خان بهادر ڈاکٹرسیدا گاز سین صاحب پی۔انگی۔ڈی مولا ناسید محرصین صاحب (متوثی الا ۱۹۳۷ء) کفرزند تھے۔آپ وطن مالوف مظفر پور (بهار) میں اپریل ۱۸۸۲ء (=ان الدہ) میں پیدا ہوئے۔آپ مشرق اور مغربی دونوں شعبہ ہائے علم میں درجہ کمال پرفائز تھے۔ابتدائی تعلیم گھر پر حاصل کرنے کے بعد مدرسسلیمانید (پینہ) میں تخصیل کی۔اسکے بعد وثیقہ عربی اسکول (فیض آباد) میں داخل ہوئے اور تعلیم عربی وفادی کے آخری مراحل سلطان المدارس میں طے کے۔و ہیں سے مظفر پور میں طاف الک کا احتیان دیا۔1919ء میں گار میں ملازم ہوئے اور گور نمنٹ اسکول مظفر پور میں عربی کا استاد مقرر ہوئے۔ دوران ملازمت انگریزی تعلیم حاصل کی اور ۱۹۲۰ء میں مظفر پور میں عربی کے استاد مقرر ہوئے۔ دوران ملازمت انگریزی تعلیم حاصل کی اور ۱۹۲۰ء میں مینٹرک ، ۱۹۲۵ء میں ایف۔اے اور ۱۹۲۷ء میں بی۔اے گوری کی سند کے کر واپس آئے۔ ۱۹۳۱ء میں کئی کوری کی سند کے کر واپس آئے۔ ۱۹۳۱ء میں کئی کوری کی سند کے کر واپس آئے۔ ۱۹۳۱ء میں کئی کوری کی سند کے کر واپس آئے۔ ۱۹۳۱ء میں کئی کوری کی سند کے کر واپس آئے۔ ۱۹۳۱ء میں آپ کو کان بہادرکا خطاب ملا۔

Ar

درجہ کے عکیم وطبیب بھی تھے۔ یہ بین معلوم کہ شفاء الدولہ وذکاء الملک کالقب شاہی در بارے ملاقعایا صاحب دریثة الانبیاء نے خود کھاہے۔

DECEMBER DE CONTROL DE

(ورثة الانبياء الكرام البررة جلداول ص ١٥١)

# اقبال حسين، شيخ، وليد يوري

مدود ۱۳۱۳ مردوا . المال مردوا ،

مولانا اقبال حسین ابن عبدالکیم صاحب حدود ۲۰۱۱ و ۳۲۳ اه) میں اپنے وطن ولید پوضلع اعظم گڈھ (اب مئوناتھ جنجن) میں پیدا ہوئے۔ آپ مولانا شخ فیاض حسین صاحب ولید پوری (دیکھتے احوال) کے چچا زاد بھائی تھے۔ راقم الحروف جب جولائی ۱۹۳۱ء میں جامع العلوم جوادیہ بنارس میں شرائع الاسلام کے درجہ میں داخل ہوا اس وقت مولانا فیاض حسین صاحب، فخر الافاضل میں تھے اورمولانا اقبال حسین صاحب۔ ان سے دوا کے درجہ نیچے تھے۔

مولانا اقبال حسین صاحب نے ابتدائی تعلیم ولید پورے تی مدرسہ نور الاسلام اوراس کے بعد مبارک پورے مدرسہ باب العلم میں حاصل کی۔ پھر جامع العلوم جوادیہ پہنچے جہاں سے فخر الا فاصل کی سند حاصل کی۔ آپ کتابت بہت عمدہ کرتے تھے۔

ایک عرصہ تک شکار پور (صلع بلندشمر) میں امام جعد و جماعت کی حیثیت سے دینی خدمات انجام دیتے رہے اور تبلیغ دین بھی کرتے تھے۔شکار پورہی میں عمر کے آخری جھے میں بیار ہوئے اور ای عالم میں وطن والی آئے۔ ۲۰ سرمحرم الحرام السلاھ مطابق ۲۲راگست و 199ء بدروز چہارشنبہ

مولا تا سید اعظم علی غفران مآب سید دلدارعلی صاحب طاب ثراه کے شاگرد تھے۔ ورثة الانبياء من ان كي ام كرماته" فاصل مدقق ، ذكى مولوى"كالقاب استعال ك على مين -(ورثة الانبياء الكرام البررة جلداول ص ١٥٠) افضل على ،سيد ، يالوي -19-1/01-19 مولا نا تحيم سيد أفضل على صاحب قبله على تكريال (بهار) كمقدس، جليل، ورع وتقدس والح بزرگ تھے علم ابدان وعلم ادیان دونوں میں ممتاز حیثیت تھی۔ كم ذى الحجه وسي ها ١٩ رايريل المواءين الني وطن يالى من انقال فرمايا-

(اصلاح جلده ۱،۱رعم الحرام وه ساه)

افضل على ،سيد

سيد افضل على خال اپ وقت كفك اور محققين ميں تھے۔ آپ نے سيد العلماء عليين مكان (متوفى سيكيا هـ) ابن غفرائماً ب كسب فيض كيا تھا۔ ورثة الانبياء ميں آپ كے اوصاف ميں لكھا ہے: " الحكيم المدقق ، شفاء الدولہ وذكاء الملك" ۔ ان القاب معلوم ، وتا ہے كہ آپ اعلى

AC

درجہ کے حکیم وطعیب بھی تھے۔ بیٹیں معلوم کد شفاء الدولدوذ کا والملک کالقب شائل دریارے ملاقعالیا صاحب دریثہ الانبیاء نے خود کھاہے۔

(ورية الانبياد، الكرام البررة جلداول الم ١٥٠٠)

# اقبال حسين، شيخ، وليد يوري

199. 61711

مولانا اقبال حمين أبن عبد الحكيم صاحب حدود ٢٠٠١ ه (= ٣٢٣ هـ) مين اپنے وطن وليد پورشلع اعظم گذره (اب محناتي بيخن) من بيدا بوئ - آپ مولانا شخ فياض حمين صاحب وليد پور ك (د يكھنے احوال) كے چپازاد بھائى تتے۔ راقم الحروف جب جولائى ١٣٠١ ه مين جامع العلوم جواد بي بنارس ميں شرائع الاسلام كے درجہ ميں داخل ہوا اس وقت مولانا فياض حمين صاحب، فخر الافاضل ميں تتے اور مولانا اقبال حمين صاحب - ان ہے دوا يک درجہ فيح تتے۔

مولانا اقبال حین صاحب نے ابتدائی تعلیم ولید پور کے بنی مدرسہ نور الاسلام اور اس کے بعد مبارک پور کے مدرسہ باب العلم میں حاصل کی۔ پھر جامع العلوم جوادید پینچے جہاں سے فخر الافاصل کی۔ آپ کتابت بہت عمدہ کرتے تھے۔

ایک عرصہ تک شکار پور (ضلع بلندشمر) میں امام جعد و جماعت کی حیثیت سے دینی خدمات انجام دیتے رہے اور تبلیغ دین بھی کرتے تھے۔شکار پور بی میں عمر کے آخری صفے میں بیار ہوئے اور ای عالم میں وطن واپس آئے۔ ۲۰ سرمحرم الحرام السمالے حمطابق ۲۲ راگست ووا ، بدروز چہار شنبہ مولاتا سيد اعظم على غفران مآب سيد ولدار على صاحب طاب ثراو ك شاكرد تھے۔ ورث الانبياء مين ان كينام كرماته" فاصل رقق ، ذكى مولوى"كالقاب استعال ك على بن-(ورثة الانبياء الكرام البررة جلداول ص ١٥٠) افضل على ،سيد ، يالوي مولانا عليم سيد افضل على صاحب قبله على محر يالى (بهار) كے مقدى، جليل، ورع و تقدى والے بزرگ تھے۔علم ابدان وعلم ادیان دونوں میں متاز حیثیت تھی۔ ميم ذي الحجه وم الحراه ارايريل اعلاء مين الي وطن يالي من انقال فرمايا (اصلاح جلده ١٠١٥ع م الحرام و٥ ١١٥)

افضل على مسيد

سيد افضل على خال اپ وقت كفلسنى اور محققين من تھے۔ آپ نے سيد العلماء علمين مكان (متوفى سوئے ياده) ابن غفر انه آب كسب فيض كيا تھا۔ ورثة الانبياء ميں آپ ك اوصاف ميں آگھا ہے: " المحتاج: " المحتاج المدقق، شفاء الدولہ وذكاء الملك" ۔ ان القاب سے معلوم ہوتا ہے كہ آپ اعلى

AF

^3

# الطاف حسين ،مرزا،سراج العلماء

יווא לבתויי

سراج العلماء مولانا مرز االطاف حسین صاحب مفتی الحائری این مولانا مرزامجد تقی صاحب مرحوم کی پیدائش ۸ رمحرم الحرام سی سال همطابق ۹ رجون ۱۸۸۷ء کو نمیابرج کلکته بیس بوگی۔ ابتدائی تعلیم نمیابرج کے قیصر بیاسکول میں حاصل کی۔ آپ کی عمر آشھ سال کی تھی کہ والد کا انتقال ہو گیا اور والدہ نے پرورش کی۔ سترہ سال کی عمر میں اپنی والدہ کے ساتھ کر بلائے معلی گئے جہاں چند دنوں کے اندر والدہ کا سابی بھی سرے اٹھ گیا اور وہ وادی السلام میں سپر دخاک ہو کیں۔

نجف اشرف میں آیة اللہ سید کاظم طباطبائی ہے تعلیم حاصل کی۔ ۱۸ سال تک عراق میں مخصیل علم کرتے رہے۔ واپسی کے وقت گیارہ مجتبدین کرام نے آپ کو اجازے دیئے۔

<u>1919ء میں عراق ہے واپس میابرج تشریف لائے۔ چند سال وہاں قیام کر کے پھر عراق</u> گے اور پانچ سال وہاں مقیمر ہے۔ پھر میابرج آگردین خدمات میں منہمک رہے۔

به ۲۲ رجنوری ۱۹۷۴ ومطابق ۲۹ رزی الحجه ۱۳۹۳ هدکوانقال فر مایا اور نمیابرج کی مجد جامع کرانهنی بھا تک کے سامنے فن ہوئے۔

(مرزاعتي حسين عالم فرز تدمراج العلماء بذريع مولانا غلام السيدين فيفي)

وطن مين رحلت قرما كي اورويين وفن بوك\_ بدحالات جناب ابرارحسين صاحب وليد يورى عمعلوم بوع جورشة مي مولا نامرحوم 3011012 10-اكبرحين،سيد INTLUST / ITAT JU نواب سيدا كرفسين ذوالرياسين -آب ك حالات مي صرف اتنامعلوم ب كرآب نے " مجمع الحنات ومزيل السيات " ناى كتاب بار والوابيل ٣٨٣ هين تالف كي عن جو ١٠٠ ساره من "علاء كبار" كي تقريظون كساته طبع بوئي-ا کرم علی ،سید ان کی ایک کتاب کا ذکر الذراید می الا ب جس کا نام تما" الثوابد الفد کیه" اورجس کی الف ع ١٢٣٤ ه من فرافت موفي تحي

ادیب سیدعلی جواد زیدی کے اصرار پر" خاندانی منصوبہ بندی" کے موضوع پر ایک مخضر رسالہ حدود شریعت کو مدنظر رکھتے ہوئے مخاط انداز میں تحریر کیا تھا جے حکومت نے ایک کتابچہ کی صورت میں شالع

كالعرامين بحى جهاز سفركرك زيارات عتبات عاليات سفرف موا

وفات

مدرسہ سے سبکدوش ہوئے ہی تھے کہ ۱۱ ررئے الانی ان اللہ ۱۹۸ ردمبر ۱۹۸۵ء کووقت موعودآ پہنچا۔ وطن میں رحلت کی اور محرآ باد گہند کے صدر حسینیہ میں آ رام گاہ لی۔

مولانا کے شاگردمولوی ساجدرضازید پوری کا کہابواقطعہ تاری شنگ مزار پرکندہ ہے رفت جنت از جہال الطاف عالی مرتبت عالم دین نبی وسید عالی نب شد شکتہ قلب ساجد بہر سال فوت او فحر سلطان المدارس زینت علم و ادب (سیطی المزدیدمولاناموسوف)

امام بخش

- ואדן-דיםודד

مولاناامام بخش (عرف بھگو) صاحب مرحوم عسل الله هلی پیدا ہوئے۔آپ کاوطن جو نپور تھا۔ فاری علوم امیر خال جو نپوری سے حاصل کئے ۔مختصرات عربیہ مولوی البی بخش صاحب (ساکن گھوی) سے پڑھے اور مطولات مولانا سخاوت علی جو نپوری سے - دینیات کی تخصیل مولوی علی حسین

الطاف حيدر،سيد

٩-٥١١٥٥١٠٥٠٠

مولا تاسید الطاف حیدرصاحب ابن سید مظاہر عباس مرحوم او وا عیں محمد آباد گہذ ضلع اعظم کرھ (اب متونا تھ بجنین) میں پیدا ہوئے۔ سادات محمد آباد گہذا مام زین العابدین علیہ السلام کے فرز تد جتاب حسین الاصغر کے ایک بیٹے عبداللہ الاعرج کی نسل سے ہیں اورای وجہ سے الحسین الاعرجی کہلاتے ہیں۔ ای نسل میں سید حمیدالدین غفراں پناوس م ھار ۱۹۹ تا عیں لا ہور سے جو نپور تشریف لاٹ جوشر تی سلطنت کا پایٹ تخت تھا۔ اس وقت کے حکر ال سلطان ابراہیم شاہ نے بری تعظیم کی اور پرگذ گہذ آپ کونڈ رکیا۔ آپ نے وہاں کے سرکشوں کوزیر کیا اور دریائے ٹونس کے علاقہ کو اپنامکن پرگذ گہذ آپ کونڈ رکیا۔ آپ نے وہاں کے سرکشوں کوزیر کیا اور دریائے ٹونس کے علاقہ کو اپنامکن بینا ہوں نے اپنے بڑے فرز ندسید حن بینا ہوں نے بینا ہوں نے بینا کے میں کرمولا تاسیدالطاف حیدرصاحب پیدا ہوئے۔

مولانا وطن میں ابتدائی تعلیم حاصل کرنے کے بعد مدرے ایمانی (بناری) میں داخل ہوئے جہاں مولانا سیعلی جواد صاحب اعلی اللہ مقامہ کے دری سے فیضیاب ہوئے۔ پھر سلطان المداری میں بطور مدری گئے جہاں سے ۱۹۲۸ء میں صدر الا فاضل کیا۔ نومبر ۱۹۲۹ء میں سلطان المداری میں بطور مدری معین ہوئے جس کا سلمان صدی سے زیادہ عرصہ تک جاری رہا یہاں آپ تدریس کے علاوہ دار الاقامہ کی گرانی کے فرائض بھی انجام دیتے تھے۔ مولانا سید محمد صاحب قبلہ طاب راہ (رئیل سلطان المداری) مدرسہ کے اہم امور میں آپ سے مشورے لیتے تھے۔ آپ کے شاگردوں میں بے شار المداری ) مدرسہ کے اہم امور میں آپ سے مشورے لیتے تھے۔ آپ کے شاگردوں میں بے شار علیاء، ذاکرین اور یو نیورٹی و فیرہ کے اساتذہ شامل تھے۔

درى وتدريس كى مشغوليت كى وجد ے آپ كوتفنيف و تالف كا موقع ند ملا ـ البيت مشهور

AA

- (۱) تھ الري(فاري) استخاره كے بيان ميں۔
  - ٢) تنزيبهالصفي علم كلام مين-
  - (m) حمايت الايمان علم كلام وعقا كدمين \_
  - (٧) فصوص المومنين- نگينوں كے بيان ميں۔
- (۵) خواتیم الصالحین \_انگوشیوں کے بیان میں \_
- (٢) الفصلين في الممة امير الثقلين المحت كيان مين -

الذراتيد كے مطابق سيس مخطوطات راجسد محدمبدى صاحب (فيض آباد) كے مكتب من

تھے۔(اب معلوم نہیں کیا حال ہے؟)

مولانا کے ان ساتوں مخطوطات کے اس خاص مکتبہ میں موجودر ہنے سے بیگمان ہوتا ہے کہ مصنف کا تعلق اس ریاست سے رہا ہوگا۔

(الذريعة كلدات ٣٠،٥،٥- الكرام البررة جلداول ص ١٥٥)

امجد حسين، سيد، اله آبادي

۱۹۳۱/۵۱۲۸۰ ۱۹۳۱/۵۱۲۵۰

جناب مولانا سید امجد حسین صاحب ابن مولانا سید منورعلی صاحب الد آبادی جناب باقر العلوم اور قد و قالعلماء کے جمعصروں میں مسلم الثبوت مجتبد سے ۔ آپ قصبہ رسول پورسونی ضلع الد آباد کے دہنے والے سے جوائر سوئیا اور کراری کے درمیان واقع ہے ۔ آپ کی ولادت و ۲۸ المحاء میں ہوئی ۔ آپ نے والد ماجد سے حاصل کی ۔ پھر تکھنو تشریف لے گئے جہاں میں ہوئی ۔ آپ نے ابتدائی تعلیمات اپنے والد ماجد سے حاصل کی ۔ پھر تکھنو تشریف لے گئے جہاں مولانا محد حسین صاحب قبلہ ہفتی سیدمحد عہاس صاحب قبلہ ، مولانا محد حسین صاحب قبلہ ہفتی سیدمحد عہاس صاحب قبلہ ، مولانا محد اللہ علی صاحب قبلہ ، محد آبادی اور

صاحب نصیر آبادی ہے کی اور ان کے بعد مولانا سیدعلی محد صاحب مجہد لکھنوی کے سامنے زانو کے اوب تنہیں) اوب تبد کیا۔ مولانا سخاوت علی جو نبوری ہے طب پڑھی اور طبابت شروع کی۔ (گر بطور پیشہ نبیں) مولانا پڑے سادہ طبع اور منکسر المز اج تنے۔ عمر درس و قدر لیس میں بسرکی۔ بہت مدت تک عربی اسکول جو نبور میں مدرس دے۔ جہاں آپ کو بدھ شیت مولوی بہت شہرت ملی۔

ایک رسالفس اردویس آپ کے آثار قلم ہے۔

آپ کا انقال محلّہ بلوا گھاٹ۔ جو نپور میں ہوا اور اپنے خاص امام باڑہ کے صحن میں دُن ہوئے۔بعد کو ہیام ہاڑہ پختہ تغییر ہوگیا۔

آپ نے ج وزیارات کی سعادت بھی حاصل کی تھی۔

(تاريخ سلطين شرقي دصوفياتي جو نيور بس ١٤٥٣ مصنف: سيدا قبال احد جو نيوري)

### امانت على عبدالله بورى

مولانا امانت علی عبداللہ پوری غفران آب طاب ثراہ کے شاگردوں میں تھے۔ان کے ہم عصر مولانا محمطی محمد آبادی نے ان سے پھے سوالات پوچھے تھے۔اس کے جواب میں انھوں نے ایک فاری رسالہ '' جوابات مسائل المولوی احمطی المحمد آبادی'' کھا۔اس رسالہ کا ذکر الذر بعہ جلد پنجم میں ہوار سیکھا ہے کہ اس کا مخطوط داج سید محمد مہدی ضلع فیض آباد کے مکتبہ میں ہے۔اس سوال وجواب سے ان کے علی پاید کا بھی اندازہ ہوتا ہے۔

ال رساله كعاده، الذريد كالخلف جلدول من ان كحسب ذيل تصنيفات كايد چاتا ب:

TO THE PROPERTY OF THE PROPERT

-11-1

صرف ایک بین تھیں جن کی شادی مولا نامقیاز حسین صاحب صدر الافاضل ہے ہوئی تھی۔

تصانيف

(۱) صفاع الابريزني شرح الوجيز - بياوجيزة شخ بهائي كالمختفر شرح عربي مين ب جوتكستو مين و • الاحين چيني تقي -

(r) وجيزه بي كي ايك مطول شرح للهي تحي جوملف موكن .

(٣) تعلیقه علی شرح المدعة (غیر مطبوعه): سنا ہے کہ پی خطوط سلطان المداری کے کتب خانہ میں ہے۔ اصلاح (مجبود) جلد ۴ سائیسر اکے مطابق یہ تعلیقہ کتاب الطہارة سے کتاب الدیات تک مکمل ہے اور اس کے تخریمی مجبلہ مین عراق کے وواجازات بھی نقل کتے ہیں جوان حضرات نے مولانا مروح کوعطافر مائے تتھے۔

(٣) زبدة المعارف (اصول دين كے بيان مي)

(۵) وسيلة النجاة في احكام الصلوة \_ (اردو مطبوعه)

(۲) خلاصة الطاعة دراحكام جعدو جماعت (اردو)

(ارسید تنظرمهدی مزیل قم-۲رمان اصلاح ، جلد و ۳ انبرا، ۲-سده ای رسال عشاق الل بیت قم جلد دوم شاره ۵ بایت رجب شعبان ، رمضان و ۳۳ اید) تاج العلماء مولانا محر على صاحب قبله طاب ثرابهم ہے كب فيض كرے اجازات اجتباد وروايت حاصل كے۔

\( \oldot \oldot

عن اله بن آپ نے تعنیف و تالف اور تدریس کا سلسله شروع کیا اور اله آباد بحثیت امام جعدو بعامت تحریف لائے۔ اور تاله بھی آپ عراق گے اور وہاں تقریبًا دس سال تیام کرنے کے بعد ۱ اسر تی ال فی واسیا ہو کو ہندوستان واپس تحریف لائے۔ عراق میں آپ نے آیات عظام شخ محد لا نجف بھر علی رشی اور سید تھر کاظم یزدی طباطبائی کے سامنے زانوے اوب تبد کیا اور ان سے اجازات اجتباد وروایت حاصل کے ۔ شخ تھر لا نجف نے اپنے اجاز و میں اکھا تھا کہ:

آپ نے عالی اوی چک الدآبادی ایک مدرسرقائم کیا۔ آپ آل انڈیا شیعد کانفرنس کے اجلال تیم کے صدر ختب ہوئے تھے اور آپ نے اپنی طرف سے جناب راجہ سید ابوجعفر صاحب بالقاب کو اپنانا ئب بنادیا تھا جنوں نے فرائض صدارت انجام دیے۔

ایک دوزایک بندهٔ موسی کراری جاتے ہوئے سونی میں آپ کی دست بوی کو حاضر ہوئے تو دیکھا کہ آپ ایک گفن پر پچھ کھدرہ ہیں۔اس موسی نے پوچھا کہ آپ بدکیا کردہ ہیں تو فر مایا کہ کل ای وقت میری تجھیز و تعفین ہوگی اس کا انتظام کردہا ہوں۔ اور وہی ہوا۔ آپ کی تاریخ وفات ۱۳ ریج الاول وہ ساح (=۸ ماگست ا ۱۹۳) ) ہے۔

91

Popopopopop

صاحب رئیس اعظم حویلی جائیوال ضلع جمنگ کی خدمت میں حاضر ہوکر مطامن تشیع کو بیان کیا۔
موصوف نے ان کو جناب ملک العلماء ملک فیض محمد خال ممتاز الافاضل کھیانوی کے ایک ہفتہ بعد
تشریف لانے کی اطلاع دے کران سے گفتگو کرنے کو کہا۔ (۲۷رجب ۲۲ شعبان، ۱۵ الھ الھ جناب ملک العلماء کے مواعظ وہاں ہونے والے تھے۔) بہر حال بعد تصفیہ شرائط، پہلے دن آو حیداور
تخریف قرآن پر، دوسرے روز ایمان خلفاء ثلثہ پر اور تیسرے روز قضید فدک پر بحث ہوئی، اس
دوران میں روزانہ ملک العلماء کے مواعظ کا سلسلہ بھی جاری رہا۔ آخر تیسرے روز پیرامیر محمد صاحب
قریش مناظر نے حلقہ بگوش تشیع ہونے کا اعلان کردیا۔ اگر چہموصوف" فارغ التحصیل عالم فاضل" تھے
مرملک العلماء کی شاگر دی اختیار کی اور دین حق کے علوم حاصل کرتے رہے۔

### انتظار حسين ،سيد ، امرو موى

ووعاد/لاعواء

مولا ناسیدانظار حسین صاحب نقوی امروہوی ال<u> ۱۹۳۰ء میں عثان پور میں پیدا ہوئے۔ آپ</u> کے مورث اعلی سید نظام احد گنخ روال کے پوتے سید جاند نے اپنے فرزند سیدعثا<mark>ن کے نا</mark>م پرموضع عثان پورآ باد کیا تھا۔

آپ نے مدرسہ باب العلم نوگانوال سادات میں مولانا سید آقا حیدرصاب قبلہ مرحوم ہے علوم دینیہ کی تحصیل کی سام 19 ء ہے 190 ء تک کیرا ( کچھ ) کی خوجہ شیعد اثنا عشری جماعت میں مذہبی خدمات انجام دیئے۔ اس کے بعد آپ تانزانیا تشریف لے گئے جہال سونگیا اور سنگیڈا کی

# امدادعلی،سید، کیرانوی

العداد المعلق انوارس ۱۱۰ پرمولا تاسیدامدادعلی صاحب کے والد بزرگوارکا نام سیوعلی احمد الله احمد الله معلق انوارس ۱۱۰ پرمولا تاسیدامدادعلی صاحب نے مولا تا کے والد کا نام قلندرعلی الکھتا ہے۔ لیکن راقم الحروف سعیداختر رضوی نے الکرام البررة جلد اول ۱۵۵ پر آپ کا نام اس طرح لکھاد یکھا ہے: ''المولوی امدادعلی ابن احمر علی بن قلندرعلی الکیرانوی اللکھنوی''

آپ امجد علی شاہ کے معاصر تھے۔ آپ کی ایک تصنیف بحار المصایب (۲ جلدوں میں ) کا فرمت درک الذریعہ میں ہے۔ آپ نے 194 میں وفات پائی۔
(مظلع انوار ، الکرام البررة ، جلداول ص ۱۵، تذکرہ براس ۱۳)

#### امير محرقريثي تونسوي

پیرامیر محمد شاہ قریش او نسوی او نسد (پنجاب) کر ہے والے متشدر تی تھے۔ مولوی علی گوہر صاحب، مفتی وربار شریف، کی درسگاہ سے فارغ ہوکر سنیت کی تبلیغ میں مشغول تھے۔ اور تحفیدُ اثنا عشر میداور درسالہ النجم کے مضامین کو ہر جگہ بیان کرتے پھرتے تھے۔ انہوں نے اپنا حال رسالہ اصلاح جلد ۳ منہر ۱۰ (شوال ۱۵ سارہ) میں مفصل چھپوایا ہے جس میں کلھا ہے کہ وہ مجسم دشن اہل بیت بن حکمتھے۔ ہرتقریمی شیعوں کو کافر کہتے تھے اسلے ان کے حلقہ بگوشوں کی تعداد بہت زیادہ ہوگئ تھی۔ آخر میں 'جہنے افر بین' کی فرض سے سجادہ شین شخ حکمو بلبل شاہ صاحب اور حصرت شیخ نذر حسین شاہ

CONTROL CONTRO

95

-01

آپ نے مدرے ناظمیہ اور سلطان المداری میں تعلیم پائی۔
فارغ التحصیل ہونے کے بعد ملازمت کی تلاش ہوئی۔ سیآرہ اخبار میں دی یہ یہ ماہوار پر
ملازم ہوگئے۔ بعد میں اس کے ایک حصہ کے مالک بھی ہوگئے۔ سیآرہ کے بعد سفینہ اخبار نکالا۔ پھر فیر
پور اسٹیٹ میں واعظ، پھر آؤیٹر پھر معلم الاطفال مقرر ہوئے۔ پھر آفیسر اوقاف اور افسر امور فیر

اوپر کی تحریر سے اندازہ ہوگیا ہوگا کہ مولانا کو صحافت سے خاص لگاؤتھا۔ چنانچہ جب راقم الحروف ہلور میں ان سے متعارف ہوا (<u>190</u>ء کے لگ بھگ) اس وقت وہ لکھنؤ سے ہفتہ وارسحاب نکال رہے تھے۔ میراایک رسالہ (گانے بجانے کی حرمت کے بیان میں) انہوں نے سحاب میں '' خنا کی حرمت'' کے عنوان سے بالاقساط شائع کیا تھا۔

انھوں نے مختار نامہ مثنوی کے طور پرنظم کیا تھا۔اشعار کی سلاست اور روانی عدیم النظیر تھی۔ موصوف کے دوسر نے للمی کارناموں کی مجھے اطلاع نہیں ہے۔

(انجمن دظیفند سادات دموشین، جو لی نجر وذاتی معلومات) جماعتوں میں دینی خدمتیں انجام دیں۔ تا نزانیا کے بعد آپ ماڈ اگاسکر گئے جہاں ۸<u>ے 19</u> متک ندہبی خدمات انجام دیتے رہے۔

افریقہ سے وطن والیسی کے بعد آپ نے اپنے نوتغیر کشادہ مکان کے ہیرونی حصہ میں آٹا پینے اور وصال کو شنے کی مشینیں لگا کی جن ہے آپ کو انجھی اور حلال روزی بے برٹت احد ملتی تھی۔ تصانیف

- (۱) ستون صداقت (مطبوعه)
  - (r) اظهار ق

(الجمن وظيف سادات وموثنين ، ذائمند جو بلي نمبر و ذاتي معلومات)

اولادحسين،سيد،شاعر،لكھنوي

١٨٩١/٥١٢٠٨

Construction of the constr

مولانا سیدادلاد حین شاعر لکھنوی، خاندان اجتہاد کے ایک نامور رکن، بہترین شاعر اور کامیاب ذاکر تھے۔ آپ جناب سید فرزند حین ذاخر لکھنوی کے فرزنداور شاد العلماء سید مصطفے (میر آغا) جیسے مرجع تقلید کے نواسے تھے۔ آپ کی پیدائش ۱۱۷ زی الحجہ الموسیا ھ (=۲۱ جولائی الحجہ کونائیال میں ہوئی۔

آپ كاساتذه بش آپ ك حقيق چاش العلماء سيد سبط حسن صاحب، مجتد، قدوة العلماء سيد آقاحسن صاحب مجتد، طاب ژائم قابل ذكر

اعتراضات لکھے اور میرز امحد کامل کے پاس بھیجا۔ میرزا صاحب موضوف نے اس کے جواب شی ایک مفصل خط لکھا۔ اس خط کے جواب میں ''فاضل رشید'' نے ایک رسالہ لکھا جس کا نام نجوم السماء میں فرق الراشدین اور الکرام البررة جلداول میں شوکت عمر بیلکھا ہے۔ علامہ میرز المحد کا آل نے اس کا جواب لکھنے میں وقت ضابع کرنا لہندنہ کیا لیکن محیم یا قریعی خال نے اس کا بوری طرح جواب دیا۔

نیز'' فاضل رشید'' نے غفران مآب کی دو کتابوں'' الصوارم الالهید'' اور'' حسام الاسلام'' پر کچھاعتر اضات لکھے تھے توان کے جوابات بھی حکیم با قرعلی خال نے لکھے۔

(الكرام البررة جلداول عا اوتيوم السمايس ٢٥٩)

#### باقرعلی،شاه

مولوی باقر علی شاہ کورسالہ شیعہ جلد بشتم نمبر ۱۲ میں '' فاتح مناظر وَ فنڈر' کلھا ہے۔ اس مناظرہ کا حال رسالہ اصلاح جلد ۱۳، نمبر ۳ (ربح الاول ۱۳۲۸ھ) میں چھپا ہے۔ افسوس کے موصوف کے مزید حالات معلوم نہ ہو سکے۔

رسالنه شیعه جلد بشتم نمبر ۲ مین کسی "مولوی سید با قرعلی صاحب، بٹالوی" کا تذکرہ ہے۔ معلوم نہیں بید دونو شخصیتیں ایک تھیں یا علیحدہ۔

(رسال شيعه كجو وجلد ٨ ، رسالد اصلاح كجو و ، جلد ١٣)

# باقر، شاہ نفقوی ی سید میدالدین باقر شاہ نقوی " عالم کیر" شے۔ سلطان العلماء سید میدائن غفران آب کے ارشد حالہ ہیں بقر شاہ نقوی " عالم کیر" شے۔ سلطان العلماء سید میدالدین باقر شاہ نقوی " عالم کیر" شے۔ سلطان العلماء نے استاد نے شربت حیدریا کھی تو اس کواس شاگرد کی طرف منسوب کیا۔ (مطبوعہ العالیہ) میرزا تحریفی آبادی کے نام سے منسوب کردیا تھا۔ اس سے بیدا نداز دوتو ہوتا ہے کہ بید دونوں حضرات علم کے اس مرتبہ پر فائز شے کہ سلطان العلماء کی حاسم سے منسوب کردیا تھا۔

سید باقر شاہ نقوی کے صاحبز ادے سید ٹھر بھی بڑے علاء میں شار کئے جاتے تھے۔ وہ سید العلماء سید حسین علیین مکان کے شاگر دیتھے۔

(الكرام البررة، خاول ص ١٩٤)

# باقرعلی کیم،خان

"عالم محقق، فاضل مدقق" محيم باقر على خال اداخر عن دبل مين آكر مقيم بو ك تف\_آپ شهيدران علامه ميرز امحد كاتل (مصنف زبية اثنا عشريه) كي جم عصر تف\_

جب زید اثناعشریدگی ایک جلد تکیم شریف خال کو سط سے شاہ عبد العزیز محدث دہاوی کو لی تو شاہ صاحب موصوف نے اس کا جواب الجواب لکھنے سے گریز کیا۔ لیکن ان کے شاگرد، "فاضل رشید" نے طبارت فمراور جمع بین الصلو تمن کے مباحث سے چندسطریں لے کر ان پر

:5

(۱) اسلامی خدا: جواصلاح جلد ۲۱، نمبر ۱۰ (شوال اسم اید) برسالهٔ اصلاح کے ساتھ کتابی خدا: جواصلاح جلد ۲۱، نمبر ۱۰ (شوال اسم اید) ساتھ کتابی شاروع ہوا تھا۔ اس میں اسلامی عقید و الوہیت و تو حید کو دوسر بر خدا ہوں دوسر بران کے مقابلے میں اسلامی تو حید کی برتری فابت کی ہے۔ و دوسر بران کا برتری فابت کی ہے۔

(٢) اخلاق المعصومين

(r) بشارت مثیل موی

(۴) تارخ القرآن (اصلاح شعبان ع ٣٣ هد كساته شائع موناشروع موا) -سيسب باتني رسالة اصلاح ك فتلف مجلدات كي ورق گرداني معلوم موكي جي -

#### برکت علی،سید،مجتهد

مددد ۱۲۸۹ ما ۱۲۸۹ مدروره المتالم ۱۲۸۱

مولاناسید برکت علی صاحب قبلہ ،مجتہد ،مجھلی بندر کے رہنے والے تھے۔ آپ کی وفات ہے آپ کے اطراف وجوانب کے لوگوں میں ایک خلاء سابیدا ہو گیا۔ آپ ۳۵سال سے گرم آتے جاتے تھے۔

آپ كانقال ٢٩ راگسته ١٩٩١ ه (= ١١ رزيج الاول ١٢٨ مار ه ٢٠ سال كى عرض بو

بخآور على ،خال

افتارالعلما مولانا سعاوت حسین خال صاحب نے (جوآپ کے بیٹیج تھے) اپنی خودنوشت سوائح عمری میں جولکھا ہے اس کا ضروری حصہ بالاختصار یہاں درج کیا جاتا ہے:
"ہمارے جداعلی بریار سکھ مسلمان ہو گئے تھے اور بریار خال نام رکھ لیا تھا۔ ان کی اولاد سلطان پوراور پرتاب گذھ میں آباد ہے۔" لیکن سوائے حسن پور، موضع منیار پوراور امہد کے سب می بیس۔"مولانا بخاور علی خال کے داوا بخشی خال نے ایک خواب کے سب شیعہ مذہ ہب اختیار کیا۔

میں۔"مولانا بخاور علی خال کے داوا بخشی خال نے ایک خواب کے سب شیعہ مذہ ہب اختیار کیا۔

تمارے جداعلی بخآور خال بڑے زمیندار اور تعلقہ دار تھے اور انسٹھ (۵۹) قریوں کے مالک تھے۔ کور ۱۵۹ میں انہوں نے انگریزوں کے خلاف جنگ کی اور جب انگریزوں کا تساط ہوا تو پورا سلطان پوراور تمارا گاؤں توپ سے اڑا دیا گیا اور ہمارے پردادا کے علاقے کو ضبط کرلیا گیا۔''

مولا نا بخناور علی خال والا میلالا اور شن اپنی ریلوے کی ملازمت ترک کر کے بغرض مخصیل علم عراق چلے ۔ وہاں جگ عظیم میں ترکول کی حمایت کرنے کی وجہ سے قید ہوئے۔ بعد جنگ وطن پہنچائے گئے۔ چمرام وہد ، نوگانوال اور لکھنؤ کے مدارس میں مخصیل کے بعد جبعراق گئو آتائ سیدا بوالحسن اصفہانی آتائ مرزا محمد صین نا مجنی اور آتائی خیا اللہ میں عراق سے درسیات کی محمیل کی۔ سیدا بوالحسن اصفہانی آتائی مرزا محمد صین نا مجنی اور آتائی خیا اللہ میں عراق سے درسیات کی محمیل کی۔ (افتار العلماء ، مرحیہ اور بالبندی)

بركت حسين،خال

آغابرکت حین خال امروہ شلع مرادآباد کے باشندے اور صاحب علم وفضل بزرگ تھے ان کی تحریری ان کے وسعت مطالعہ پرشابد ہیں۔راقم الحروف کوان کی چار کتابوں کے نام معلوم ہو

Con the contract of the contra

# بشارت على ، شيخ

ME+/ITATA

آ قائ بزرگ تهرائی نے آپ کو'' من فضلاء البندواعلامها'' لکھا ہے۔ شخ بشارت علی خال صاحب تصانیف تھے۔ ایک کتاب'' دعوۃ الل الکتاب'' فاری زبان میں متی جس میں اہل کتاب کے ذیجے کی حرمت ثابت کی گئی تھی۔ یہ کتاب ۲۸ میاھ میں گئی اور ای سال مطبع حینی میں طبع ہوئی۔

(الكرام البررة جلداول ص ١٩٨ ، الذر اليه جلد بقتم)

# سيد بنده حسن سيني

IATE / IFA-7

آپ مولانا سید نیاز حن صاحب طاب ثراه کے برے فرزند تھے۔آپ کاسلسلاء نب سام ویں پشت میں امام زین العابدین علیدالسلام سے لل جاتا ہے۔ راحت عزی نے لکھا ہے کہ مولانا نیاز حسن کے مامول'' نواب مختشم جنگ دانش الملک وزیر بہادر شاہ ٹانی کے بہنوی تھے۔''
سید بندہ حسن صاحب حیدرآباد میں پیدا ہوئے۔ولادت ووفات کے سال معلوم نہ ہو سکے لیکن آپ سے چھوٹے بھائی حدود تا ۱۲۸ اھیں پیدا ہوئے تھے اس کئے آپ وی تا ھیا وی آباھیں میں پیدا ہوئے تھے اس کئے آپ وی تا ھیا وی آباھیں میں پیدا ہوئے تھے اس کئے آپ وی تا ھیا وی آباھیں میں پیدا ہوئے تھے اس کئے آپ وی تا ھیا کر تھا۔ سید

1.r

يركت على،شاه جناب مولوی سید برکت علی شاہ گوشدنشین، وزیر آباد ضلع گوجر انوالہ ( پنجاب ) کے رہے والے تھے۔ (جواب یا کتان کا صدب) مولانا كى كتاب" كليد مناظرة" بهت مشهور بوئى - ٨٠ صفات كاليملى ذخره شيعه مناظرين كيلي زروست اسليفراجم كرتاب\_ (ما حظه بوالواعظ ، فوم ١٩٢٥ م) ای طرح The False Prophet of Qadian قادیانیوں کی ردیس اہم مواد فرائم كرتى بيدير كاب مرع كت فاندرياض معارف من موجود بريمعلوم ندموسكا كديدان کی کی اردو کتاب کاتر جمدے یا براوراست اگریزی میں تعمی گئے ہے۔ تيرى كتاب كزالطاعن كاذكراصلاح ماه صفر عدى الصيل ملتاب-دواوركابونكا ذكررسالون من ماعب: كليد عمليات في التعويذات والدعوات صدائے درا (نظم فضائل ومناقب) افسوس كدمولاناك حالات كبيل نثل عكيد

صاحب تذکرہ ب بہائے آپ کے والد ماجد کے طالت کے ذیل آپ کے بارے بی الکھا ہے کہ '' نہایت متل و زاہد واور عیں آپ نوگانواں بھی تشریف لے گئے تھے جہال آپ کے ہاتھوں سے ایک عزاخاند کی بنیاد رکھوائی گئی۔صاحب تذکرہ نے آپ کے ایک فرزند سید افضل مین صاحب کا ذکر کیا ہے جو نجف اشرف میں تخصیل علم کرتے تھے اور زیجے الاول الاس اللہ میں نوگانواں بھی تشریف لے گئے تھے۔

(راحت الفرائي وتعمة الله موسوى مقد كراك بها)

بنده كاظم ،سيد

ٹ تا المراتانیا، مولوی سید بندہ کاظم صاحب انتخاص بہ جاوید صاحب علم ہونے کے علاوہ مر ٹید گوئی کے استاد تھے۔"صد ہامر ثیر آصنیف کیا۔"

۱۳ برنج الاول م ۱۳ هز = ۱۳ رنومبر ۱۹۲۱ و) کورطت کی۔ در اور جروار مروم نی در در در در در در الله و ۱۳۰۰ کار در سال در در در در در کار در در در در در در در در در در

اصلاح جلد ۲۴ نمبر ۱۰،۱۱،۱۰ (شوال تاذی الحجه ۱۳۳۹ء) میں جو کم از کم تین ماہ تا خیر سے شائع ہوا تھا) خبرانقال یوں چھی ہے:

"جناب مولوی بنده کاظم صاحب جاویدایے مسلم الثبوت شاعر سے جنبوں نے صد بامریتہ تصنیف کیا۔ اور ایسا بے شل پڑھتے تھے کداس زمانہ میں یادگار سلف تھے۔ افسوں کدمرعوم نے ۱۲ رویج الله ول (مسلام) کو بمقام کھنؤ انقال کیااور امام باڑہ غفران مآب میں وفن ہوئے اور اپنے فن کا خاتمہ کر گئے۔"
کا خاتمہ کر گئے۔"

بندوسن کی تعلیم گھرے شروع ہوئی پھر حیدرآباد کے دوسرے علاءے استفادہ کیا۔ اس کے بعد لکھنؤ گئے۔ وہاں سے قارغ التحسیل ہوکر حیدرآباد آئے تو آپ کے بیضلے بھائی مولانا سید ابوالحن عرف میران صاحب نے (جو پہلے سے درجہ اجتباد پر فائز نتے) امراء ورؤسما اور معتقدین کی موجودگی میں آپ کے سر پر عمامہ یا ند حااور مجدا تا محری میں امامت جماعت کیلئے اپنانا ئب مقرد کیا۔ آپ ہر جمعہ کوموعظ فرمائے اور ایا م عزامی کیلئے سے میں نواب سرمجوب علی خال آپ موجود کی خال آپ موجود کی کی موجود کی موجو

و المعلق المال ال

آپ نے سینے کام سالک دین در ساوقائم کی تھی۔

مولانا فے مختف ممالک کے سفر کئے۔ متبات عالیات کی زیارت سے پانچ بارمشرف ہوئے۔ ان ش سے ایک مالک کے سفر کئے۔ متبات عالیات کی زیارت سے پانچ بارمشرف ہوئے۔ ان ش سے ایک سفر سے ایک سفر سورہ وئی علم الانساب پرایک مجمی تھے۔ ایک کتاب نصیحة المحدول میں لکھی اور برجلد کا نام مستقل رکھا۔ پہلی جلد معدن الانساب، ووسری افخرن الانساب، تھی۔ ووسری افخرن الانساب، ورتیسری مخزن الانساب، تھی۔

خلق خدا کی خدمت میں ہمیشہ منہمک رہے۔ بلا لحاظ غدہب و لمت ہرایک کی حاجت تاحد امکان پوری کر دیتے تھے۔ ہر قوم و غدہب کے لوگ آپ کا احر ام کرتے تھے اور اکثر اپنے نزاقی مسائل کے حل کے لئے آپ کی طرف رجوع کرتے تھے۔ سنانقال معلوم نہ ہوسکا۔ وارو میرموکن میں فرن ہوئے۔

1.0

(فلوريدا-امريكه) مين تبليني خدمات انجام دےرہ بين دائل ان يا مين وه مجلسوں كے سلسلے مين اورونۇ (كناؤا) آئے تھے جہاں مجھ سے ملاقات ہوئی۔

(الجمن وظيف سادات وموشين كولذن جو بلي أبير، ذاتي معلومات)

مرزابهادرعلی آیان فاین میشودد برای

ייום יות וניים

مولانا مرز ابہادر علی حیدرآبادیل ۲ رزیقعد دان تا ہے ۱۸۴ راگت ۱۸۸۴ وروز یکشنبہ پیدا ہوئے۔ آپ کے والد مرز ارضا بیگ نے آپ کی تعلیم وتربیت دینی بنیادوں پر استوار کی۔ ان کے فائدان کاسلسلہ چنگیز خال سے ماتا ہے اور مولانا کے عزم وارادہ کی پینٹگی ای وراثت کی نشائی تھی۔

مولانا نے ابتدائی دین تعلیم مولانا میر کاظم علی صاحب سے حاصل کی اور ان کے طلب میں سب سے متازر ہے۔ مولانا عباس علی خال بحر العلوم سے ادب اور معقولات کی پخیل کی ۔صدر العلماء مولانا سید خلام حسین صاحب سے علم حدیث اور اصول فقہ میں کمال حاصل کیا۔ ستر واٹھار وسال کی عمر محل مے سم حدیث اور اصول فقہ میں کمال حاصل کیا۔ ستر واٹھار وسال کی عمر محل مے کرڈائے۔

فارغ التحصيل ہوتے ہى اى عفوان شباب ميں ايک ديني درسگاہ" باب العلوم" قائم كى۔ چيد سات سال تک چلنے كے بعد مالى دشواريوں كى بنا پر مدرسكو بند كرنا پڑا ليكن درس و قدريس كا سلسلہ نہيں ركا۔ مولانا اپنے گھر پر درس دیتے رہے۔

سوس اله میں مولانا کو مدرسة علیم المعلمین میں سرکاری ملازمت ال گئی۔ جہاں آپ نے دی

بنيادسين سيد

سید بنیاد حسین صاحب عالباً کاپیور کے دہنے والے تھے۔ اچھے ادیب و شاعر اور ماہر علوم عربید وقارسیہ تھے۔ان کی ایک تالیف'' محکول'' میرے کتب خانہ میں موجود ہے۔

#### بنيادعلى، واعظ

استاه اسالا، مولانا بنیادیلی واعظ کی ولا دت سالا و شی بوئی۔ (بیغالباً شکار پور کے دہنے والے اور سید مولانا بنیادیلی واعظ کی ولا دت سالا و میں بوئی۔ (بیغالباً شکار پور کے دہنے والے اور سید سخے )۔ ابتدائی تعلیم احسن المداری (شکار پور) میں حاصل کی، پھر مدرستہ ناظمیہ میں داخل ہوئے جہاں پورڈ کے امتحانات، مولوی، عالم اور فاضل اوب پاس کئے۔ پھر مدرستہ ناظمیہ میں داخل ہوئے جہاں سے فاضل فقہ (الد آباد پورڈ) اور ادیب فاضل ( انکھنؤ) کے امتحانات پاس کئے۔ ناظمیہ سے ممتاز اللا فاضل کی سند حاصل کرنے کے بعد مدرستہ الواعظین ( انکھنؤ) میں داخل ہوئے یہ جگیل تعلیم کے بعد مدرستہ الواعظین نے آپ کو تبلیغ کیلئے بنجاب بھیجا۔ اس 190 میں وہاں سے بنگلور بھیجے گئے۔ بنگلور میں میں وہاں سے بنگلور بھیجے گئے۔ بنگلور میں آپ کی جد وجیدے دوبائی اسکول قائم ہوئے۔

آپ نے دورسا لے بھی لکھے جوشائع ہو چکے ہیں:

- (۱) څوت اواري
- (r) ایجا فیزندگی۔

راقم الحروف نے ان گالی صاجزادے جناب جرجعفرصاحب کومدررة الواعظین میں دیکھا تھا۔ پھر وو تحصیل علم کے لئے قم تشریف لے گئے۔ اب (انتہاء میں) میای

....

1.7

# پناه علی ،سید

مولا ناسید پناوعلی صاحب غفران مآب سید دلد ارعلیؓ کے شاگر دوں میں تھے۔ ورثۃ الانبیاء میں ان کے لئے'' عالم عامل وفاضل کامل'' کے القاب لکھے ہیں۔ (درثۃ الانبیاء، الکرام البررۃ جلدادل، ص 199)

#### تا ثير سين ،سيد

مولاناتا شرصین صاحب نے مدرس ناظمیہ سے متاز الا فاضل کی سندھاصل کی۔ اسکے بعد مدرسته عالیدرام پوریش بطور مدرس مقرر ہوئے۔

#### تراب على ،سيد

ہندوستان کے علماءوفضلاء میں سیدتراب علی صاحب تھے۔ان کی ایک تصنیف تحفۃ القابلین (فارس) کا ذکر الذریعہ جلد سوم میں ملتا ہے۔اس کا مخطوط راجہ سید محمر مہدی (فیض آباد) کے مکتبہ میں تھا۔

آ قائ بزرگ تبرانی کاخیال بیہ کے کسیدتراب علی تیرہویں صدی کے علاء میں تھے۔ (الکرام البررة جلداول ۴۵۷،الذریع جلد۳) گیاروسال تک تعلیمی و تر مین خدمات انجام دیں۔ ۱۳۳۳ او میں جب حیدرآباد میں جاگیردار کا نگی

قائم جواتو نواب سرمسعود جنگ بہادر نے نواب عماد الملک کی سفارش پراس کا نج میں دینیات کے

پروفیسر کی حیثیت ہے مولانا کی خدمات حاصل کیں اور مولانا تا حیات اس منصب پرفائز رہے۔

مولانا عبادت خانہ حینی میں امام جمعہ و جماعت بھی رہے اور اٹھارہ سال کی عمرے آخر

زندگی تک یہ فریضہ انجام دیتے رہے۔ پہلے وہاں آپ کے استاد مولانا میر کاظم علی صاحب امام

جماعت تھے کین جب بوجہ کبری معذور ہوگئو آپ اس عزیز شاگرد کو اپنا جانشین بنایا۔

حیدرآباد میں آپ کے بہت سے شاگرہ ہیں۔ آپ کی قدر ایسی مشغولیت کا لیج تک محدود نہیں

تحییردابادین اپ سے بہت ہے جا مردیں دائے۔ اپ ن مدری حویت ہی مالک کا درس دیتے تھے۔ بیدا یک طرح سے تعلیم بالغاں کا کلاس تفاجو آخر عمر تک جاری رہا۔

آپ نے تین بار متبات عالیات کی زیارت کا شرف حاصل کیا۔

تصانف

آپ صاحب تصنیف بھی تھے اور خوش فکر شاعر بھی تھے مفقی تلص فرماتے تھے۔ تصنیفات کے نام میں: طریق الشریعت، وصال آخرت، چراغ ہدایت (ید کتاب آج بھی موثنین میں مقبول ہے)۔ مسدل تعلیم، رباعیات صفی، جامع التواریخ۔

مردی الحجہ سم سال مل سمار ہی العمام مورکت قلب بند ہونے سے انتقال فر مایا اور دائر دمیر موس میں فن ہوئے۔ دائر دمیر موس میں فن ہوئے۔

(راحت عزى ونعمة اللهموسوي)

SOCIAL CONTROL CONTROL

1.1

(ایم) را شرحن،سید،زیدی

-1911-11-19

سید العلماء سید ثرحن زیدی و ۴ سیاء میں امر و بہضلع مراد آباد کے ایک علمی گھرانے میں پیدا ہوئے۔ آپ کے والد مولانا سید قرحن زیدی ایک عالم باعمل اور مبلغ تھے۔ آپ نے ابتدائی تعلیم امر و بہد میں حاصل کی۔ پھر اپنے والد ماجد کے ساتھ حیدر آباد وکن گئے جہاں پانچے ہی ورجہ تک اگریزی کی تعلیم حاصل کی۔ اس کے بعد مدر سے نورالمدارس (امر و بہد) میں داخل ہوئے۔ ای دوران آپ کے والد کا انقال ہوگیا اور اپنے ماموں مولانا سید انیس الحسین صاحب کے مشورہ پر آپ نے مدرسہ ناظم ید ( کلھنے) کارخ کیا۔ ممتاز الافاضل کرنے کے ساتھ ساتھ آپ نے الد آباد بورڈ سے قابل اور فاضل اوب کے امتحانات پاس کئے۔ پھر مدرسۃ الواعظین میں تین سال کی تعلیم ممل کرکے مہوا ( کا ضیاواز) میں تبلغ وین کیلئے تشریف لے گئے۔ و مہوا و میں مدرسۃ الواعظین نے آپ کو حیدر آباد ( سندھ ) بھیجا یہاں آپ انجمن امامیہ سندھ (حیدر آباد) میں اقامت پذیر یہ و گئے۔

عیم اور میں قیام پاکتان کے بعد مونین کی تعداد میں کافی اضافہ ہوا۔ اب ایک مرکزی جامع مبحد کی ضرورت محسوں ہوئی۔ اس زمانے میں نماز جعد شنڈ وٹھوڑ و کی مجد میں ہوا کرتی تھی۔ ایک تو وہ مبحد چھوٹی تھی دوسرے شہرے دور بھی تھی۔ البند اسید العلماء نے مونین کے تعاون سے قدم گاومولی علی ہے متصل جامع ابوالفضل کی تعییر شروع کی جو 1900ء میں پایئے تھیل کو پیٹی۔

میں آپ نے ادارہ نظام الشریعة الم کیا۔ جس کے زیر تھرانی 1901ء میں جامعہ علویہ مشارع العلوم کی تاسیس عمل میں آئی۔ اور جامع ابوالفضل کے زیریں طبقے میں جامعہ کی تعلیم شروع ہوئی۔ و 192ء میں آپ نے جامعہ کیلئے لطیف آبادہ میں ایک پلاٹ حاصل کیا۔ تھوڑے ہی

تفضّل مهدى، شيخ

1997/21719

مولانا شخ تفضل مہدی صاحب اپنے وطن پورومعروف (ضلع متو، یوپی) میں 17 اھ/ ۵ رسی ۱۹۳۱ھ متو، یوپی) میں 17 اھ/ ۵ رسی ۱۹۳۸ھ کی مند ۵ رسی ۱۹۳۸ھ کی بند ۵ رسی ۱۹۳۸ھ کی بند ماصل کرنے کے بعد سلطان المداری ( انکھنٹو) میں واخلہ لیا جہاں سے صدرالا فاضل کیا۔ پھر مدرسة الواعظین میں مخصیل کی۔ اس کے بعد مالی گاؤں ( ناسک ) میں اماست جعدو جماعت کی ذمد داری سنجالی۔ مالی گاؤں سے آپ اعلی تعلیم کے لئے قم تشریف لے گئے۔ پھی عرصد کے بعد سازمان سنجالی۔ مالی گاؤں یہ حیثیت میلغ مندوستان بھیجا۔

ہندوستان آکرآپ نے بناری میں قیام کیا۔ یہاں آپ جامع العلوم جوادیہ کے مدری بھی رہاور ماہنامہ الجواد کی ادارت بھی سنجالی۔ ای عرصہ میں شہراعظم گڑھ میں نماز جعد کی امامت کرتے

"مولانا بریک وقت اعظم گذرہ کے امام جمعہ، جامع العلوم جوادیہ کے استاد، اوراس کے دارالا قامہ کے ناظر نیز اگرام حسین پرلی (جوادیہ) کے گرال اور عمید جامع العلوم جناب شیم الملة کے موثق وسعتدر فیق کارو دردگار تھے۔"

H\*

# جابر حسين ،سيد

اعراد/۱۹۱۱

مولا ناسیر جابر حسین کا وطن حسین آباد (ضلع مونگیر-بهار) میں تھا جہاں آپ ۲۵ رد کی المجہ ۱۳۲۸ کے ۲۲ روئمبر ۱۹۱۰ء کو پیدا ہوئے۔مولا نا حافظ سید فرمان علی صاحب طاب ثراہ کی نوائ سے شادی کے بعد آپ اپنی سرال، چندن پئی (ضلع در مجنگ، بهار) میں رہنے گئے۔

آپ نے سلطان المداری میں تعلیم حاصل کی جہاں ہادی الملة مولانا سید محمد ہادی صاحب، مولانا سید ابن حسن صاحب نونہروی اور مولانا عبد الحسن صاحب طاب ثراہم سے فیض حاصل کیا۔ طالب العلمی کے آخری دور میں ہی آپ سلطان المداری میں مدری مقررہوگئے۔ آپ کے شاگر دوں میں مولانا سید غلام عسکری صاحب مرحوم ، مولانا مرزامحد عالم صاحب مرحوم ، مولانا سید شبیہ الحن صاحب نونہروی مرحوم اور مرزامحد اطهر صاحب شامل ہیں۔

موا على آپ زنجارى خوج شيعه اثناعشرى قوت الاسلام جماعت ميں بطورامام جمعه و الاسلام جماعت ميں بطورامام جمعه و جماعت تشريف لے گئے جہاں آپ 1909ء كاواخرتك رہے۔ وہاں سے واپس آكرآپ چندن پئى ہى مين مقيم رہے۔ ايك طويل علالت كے بعد ٢٣ رشعبان ان ١٩٨٢ه اور حالت فرمائی۔

ایک بیٹی اور دو بیٹے یادگار ہیں۔ مولانا سید منظور الحسن صاحب جو کچھ عرصہ تک ٹانگانیکا (اب تانزانیا) کی ٹانگا جماعت میں بطور امام جعد و جماعت رہے، آپ کے بڑے بھائی ہیں۔ (الجواد جلد ۲۳، نبر ۸، اگستہ ۱۹۹۱ ماشوال ان مجاھے۔ نیز دیکھے الجواد جلد ۴، نبر ا، رجب وشعبان سماسیاھ)

عرصے میں اس قطعہ اراضی پر جامعہ علوبیہ مشارع العلوم اور مجد امام زین العابدین کی تقمیر شروع موقی اس قطعہ اراضی پر جامعہ علوبیہ مشارع العلوم اور محبد المام زین العابدین اور لا بجر بری ہے۔ ابھی مزید کمرے بن رہے ہیں۔ ادارة مظام الشراجہ کے زیرانظام زین العابدین ماڈل اسکول بھی قائم ہو چکا ہے۔ جامعہ علوبیہ کے سیکروں فارغ التحصیل علاء ملک بحر میں دین خد مات انجام دے رہے ہیں۔

دو العلماء في ساخر العلماء في ورف بورف بورف بورف الم تشي كومضطرب كرديا - سيدالعلماء في دو ممتاز عالمول كرساتي خطيب اعظم سيد محد د بلوى سه ملاقات كرك كل پاكتان شيعه كونش بلاف ك تجويز بيش كى - چنا نچه خطيب اعظم في استجويز برعمل كرتے بوئ كونش بلايا - شيعه مطالبات كينش بالايا - سيد العلماء كى كاوش سے كاوا ء ميں حيدرآ باد ميں شيعه مطالبات كونش كايا دگارا جلاس بوا۔

1949ء میں عراق کی بعث پارٹی کی حکومت نے علاء کو بھائی دیناشر وع کیااور آیۃ اللہ العظمی سید محن انگلیم اور ان کے خاندان پر ختیاں شروع کیس تو سید العلماء نے صدائے احتجاج بلند کی۔ آپ کی سعی سے تمام مکا تب فکر کے علاء نے ایک محاذ پر جمع ہو کر زبر دست احتجاجات کے اور حکومت پاکستان کے توسط سے احتجاجی مراسلے حکومت عراق کو بھوائے۔

سیدالعلماء ۱۹۸۲ء میں ٹنڈ وجام زرعی یو نیورٹی کی سنڈ کیٹ کے مبر منتخب ہوئے۔ آپ اتحاد بین المسلمین کے حامی تھے اور فر ماتے تھے: اپنے عقیدے کو چھوڑ ونہیں اور دوسرے کے عقیدے کو چھیڑ ونہیں۔

آپ نے ۲۱رمارچ ۱۹۹۰ء (= ۲۳رشعبان ۱۸۱۰ه) کورصات فرمائی۔ (عبدید سیدانعلماء ")

111

گے .... جنہوں نے آپ کونوگانواں سادات (ضلع مرآداباد) کے مدسہ باب العلم على بعثیت مدرس باب العلم على بعثیت مدرس بھی دیا .... نوگانواں میں دوسال تیام کے بعد آپ اپنی شہر کوجرانوال تشریف لے گئے۔ مدرسہ جعفر سیکا قیام

آپ کی کوششوں سے گوجرانوالہ کے ماسٹر اللہ دیتہ مرحوم نے اپنا مکان مدرسے گئے دیا۔ دوسرے مدرسین کے علاوہ مفتی صاحب خود بھی طلباء کو پڑھاتے تھے۔ بچھ عرصہ بعدوسائل کی کی سبب مدرسہ کو بند کر دینا پڑا۔ بی تقریباً ۱۹۳۳ء کی بات ہے جب تحریک پاکستان زور پکڑر تک متحی۔ آپ نے بھی اس تح یک میں بڑھ پڑھ کر حصہ لیا۔ بی ۱۹۳۳ء میں قیام پاکستان کے بعد آپ نے بھی البلاغہ کا اردوتر جمہ شروع کیا۔

تنظیمی زندگی کا آغاز

قیام پاکتان کے فورا بعد حکومت پاکتان کو دستورسازی کا مسکد در پیش تھا۔ پچھشیعوں
نے بیاعلان کیا کہ' ہم شیعیان حیدر کرار کے پاکتان میں وہی حقوق ہیں جو برادران اہلسنت کے
اوردیگر مسلمانوں ہے الگ ہمارے کوئی حقوق نہیں ہیں۔' دوسرے ہمدردان قوم کے علاوہ علامہ مفتی
جعفر حسین صاحب اور علامہ حافظ کھایت حسین صاحب نے اس اعلان پر انتہائی سخت رومل کا اظہار
کیا۔ ان نازک حالات میں چندہی ونوں بعد لا ہور میں ' ادارہ شخط حقوق شیعت پاکتان' کا قیام ممل
میں آیا۔ جس کے صدر مفتی جعفر حسین صاحب سینیر تا ہب صدر حافظ کھایت حسین صاحب اور جو نیر
میں آیا۔ جس کے صدر مفتی جعفر حسین صاحب سینیر تا ہب صدر حافظ کھایت حسین صاحب اور جو نیر
میں میں ہیں جمار کے میں اور ملت کو بتایا کہ ہمارے پچھ جدا گانہ
ہوئے ۔ مفتی صاحب نے شہر، شہر، قرید، قرید جا کر تقریر ہی کیں اور ملت کو بتایا کہ ہمارے پچھ جدا گانہ
حقوق بھی ہیں بحکوکوئی نیلام نہیں کر سکا۔

بعفرحسين مفتى

معراد/ماور.

POSSOSOSOS

گریران والا (پنجاب) کے حکیم پراغ دین این حکیم غلام حیدر کے تین فرزندوں میں سے علامہ مفتی بعظ حسین دوسر نے فرزند تھے۔ بو وطن مالوف میں ۱۳۳۳ ھر ۱۹۳۳ء میں پیدا ہوئے۔
پانچ سال کی عربی آپ نے اپنے بڑے پچا حکیم شہاب الدین کے سامنے زانو کے تلمذتبہ کیا اور عربی اور عربی اور عربی اور مربی کی عربی تلمذتبہ کیا اور عربی اور سیدید، اوب اور صرف ونجو کیلئے ویگر مقامی ملا وے کب فیض کیا۔ پودو ہری کی عربی قبلی ، ہدیہ سعیدیہ، سیدہ معلقہ اور مقامات جربی کی کے علاوہ اخلاق محنی ، حلیة المتقین ، طب اکبروغیرہ پرعبور حاصل کرلیا۔
پودہ سال کی عربی ای ۱۹۳۹ء میں آپ اعلیٰ دینی تعلیم کے لئے لکھنو تشریف لے گئے اور مدرستا ظمیہ میں داخلہ لیا۔ آٹھ سال میں آپ نے متاز الا فاضل کی سندحاصل کی اور ای دوران لکھنو کو فیٹورٹی سے فاضل اوب اور فاضل حدیث کے اساد بھی حاصل کئے ۔ آپ کے اسائذہ میں سرکار مجملہ الملیۃ ، مولانا ظہور حسن صاحب ، مولانا سبط حسن صاحب جو نبوری ، مفتی سیدا حمیلی صاحب اور سید العلماء سید طاف تی صاحب اور سید العلماء سید طاف تی صاحب اور سید العلماء سید طاف تی صاحب کے اسائے گرائی قائل ذکر ہیں۔

قارغ التحصيل ہونے كے بعد ايك سال تك مدرسہ ناظميہ ميں آپ درى و تدريس كے فرائش انجام ديتے رہ۔ اور جب اسباب فراہم ہوگئ تو ١٩٣١ء ميں نجف اشرف كيك رواند عور جبال آپ نے پانچ سال تك قيام كرك ال وقت كے اساطين حوز ، نجف سے فيض المحایا۔ نجف ميں آپ كے اسا تذو ميں آ قائے سيد ايوالحن اصفهانی ، آ قائے هي عبد الحسين رقتی ، آ قائے سيد جو اقترين كوفير بم كے نام قائل ذكر ہیں۔

والمالة على آب نجف الرف عمر اجعت فرما كرم كارجم الملة كى فدمت مي حاضر مو

116

ذوالفقار على بھٹو كے دور حكومت ميں اس تشريخى نوٹ كواس دستاويز ہے حذف كرديا گيا۔ قاويا نيټ كے خلاف اقدام

۱۸ رمی ع<u>۱۹۵۳ و کراچی می</u> مرزائی وزیر خارجہ چودھری ظفر الله خال نے ایک تقریر کی جس ہے مسلمانان پاکستان کے جذبات مجروح ہوئے۔اس کے دوعمل میں ایک کانفرنس طلب کلگئ جس کے داعیان میں مفتی صاحب بھی تھے اور آپ نے کانفرنس میں ایک بصیرت افروز تقریر بھی کی اسکے علاوہ'' محرکے شخط ختم نبوت' میں حافظ کفایت حسین صاحب کے دوش بدوش بڑھ کے اھر کرھے لیا اور ہرماذ پر جا کرختم نبوت سے متعلق شیعہ نقط نظر واضح کیا۔

اسلامی مشاورتی کونسل اور اسلامی نظریاتی کونسل

فیلڈ ہارش صدر جزل محمد ایوب خان نے اپنے عہد اقتدار میں اسلامی امور سے متعلق اسلامی مشاورتی کونسل قائم کی جس میں علامہ مفتی جعفر حسین صاحب کوشیعہ نمائندہ کی حشیت سے نامزد کیا۔ ایوب خان اور یخی خان کے دور میں آپ نے اس کونسل میں مذہب وملت کی نمائندگی کی۔ اسلامی مثاورتی کونسل میں مذہب وملت کی نمائندگی کی۔ اسلامی مشاورتی کونسل کا نام بدل کر اسلامی نظریاتی کونسل رکھا اور اسکی از مرفق کونسل کا نام بدل کر اسلامی نظریاتی کونسل رکھا اور اسکی از مرفق جعفر حسین صاحب کوبطور شیعہ نمائندہ نامزد کیا گیا۔

نوی قیادت

ایک زکات کی وصولی کا بھی تھا۔ گراس اعلان میں فقہ جعفر میکو بالکل نظر انداز کردیا گیا تھا اور صدر ایک زکات کی وصولی کا بھی تھا۔ گراس اعلان میں فقہ جعفر میکو بالکل نظر انداز کردیا گیا تھا اور صدر مملکت نے ساتھ ہی یہ بھی کہا کہ ان اقدامات کی سفارش اسلامی نظریاتی کونسل نے متفقہ طور پر کی

وستورساز کمینی میں حکومت نے مفتی جعفر حسین صاحب کو ایک رکن نامزد کیا ۔ اس کمیٹی نے ایک قرار داد دمقاصد مقرر کی جو ملک کے آئین کی اصل واساس قراسپائی۔ مفتی جعفر حسین اس کمیٹی کے روح کر دوان تھے۔

بائس ٢٢ نكات

قائد اعظم محر علی جناح کی رصلت کے بعد اسلام دشمنوں نے یہ پرو پگنڈ اشروع کیا کہ
پاکستان میں نظام اسلام نافذ نہیں ہوسکتا۔ کیونکہ اسلام کے تہتر فرقے میں سے ہر فرقہ اپنے ہی
نظریات کو اصل اسلام سمجھتا ہے تو کون سااسلام نافذ کیا جائےگا۔ اس چینئے کے جواب میں ملک بحر کے
عقلف مکات فلر کے اکتیں مقدر علماء نے اکیس سے چوہیں جنوری <mark>(کا 1901ء ت</mark>ک کرا چی میں اجلاس کر
کے بائیس نکاتی دستاویز مرتب کی جسکی روشیٰ میں نافذ ہونے والا نظام تمام فرقوں سے سند قبولیت
صاصل کرسکتا تھا۔ مفتی جعفر حسین اور حافظ کفایت حسین اس اجلاس کے روح رواں تھے۔ نکھ تمہر بائیس
میں کہا گیا ہے۔ '' دستور کی کوئی الی تعبیر معتبر نہ ہوگی جو کتاب وسنت کے خلاف ہو' ۔ اس نکتے کے
میں کہا گیا ہے۔ '' دستور کی کوئی الی تعبیر معتبر نہ ہوگی جو کتاب وسنت کے خلاف ہو' ۔ اس نکتے کے
میں کہا گیا ہے۔ '' دستور کی کوئی الی تعبیر معتبر نہ ہوگی جو کتاب وسنت کے خلاف ہو' ۔ اس نکتے کے

نوٹ: "قرآن وسنت کے الفاظ جہاں جہاں آئے ہیں ان کا کی فرقہ پر اطلاق کے وقت وی مفہوم مرادلیا جائے گاجواس فرقہ کے فزد یک سیح اور سلم ہو۔"

HH

ڈویژن شلع بخصیل ادرموضع کی سطح پھی تحریک کے دفاتر قائم کے جا کیتھے۔

#### اسلام آباد كنفش

جزل ضیاء الحق نے اس کے جواب میں کراچی میں بدیبان جاری کردیا کہ ایک ملک میں دو قانون نافذنبیں کئے جائے ۔ پاکتانی عوام کی اکثریت حفی المذہب ہے اسلئے بیال فقد حفی ہی نافذ موكى ..... ٢٥- جولا في م ١٩٨ ع كواسلام آباد مين آل ياكتان تح يك نفاذ فقة جعفريه كونش طلب كرليا کیا .... حکومت نے کونش کوممنوع قرار دیدیا اسلام آباد کی جارول طرف سے نا کابندی کر دی گئی پھر بھی اسلام آباد کے لال کواٹری کے قریب ہاک گراؤنڈ اورا سکے آس باس کے علاقوں میں است جاں فروش جع ہو گئے تھے کہ بڑے بروں کا زہرہ آب ہونے لگا۔ ٢ رجولائی کوصدر مملکت کی دعوت پر مفتی صاحب نے ان سے رات کے وقت ۲ گفتے ملاقات بھی کی جبکا کوئی متیے نہیں لکلا مماور ۵ جولائی کو عکومت نے بہت سے پینتر ، بدلیکن شیعوں کا جوش وجذبہ کم نہ ہوااور ۵ رجولائی کی شام کوعوام فصدارتی سکریٹریٹ کا تھیراؤ کرلیااوردھرنادیکروہیں بیٹھ گئے۔ ۲رجولائی کوقا کدملت جعفر پیعلامہ مفتی جعفر حسین صاحب صدر مملکت کی دعوت پرایک بانچ رکی وفد کے ساتھ سکریٹریٹ میں تشریف لے گئے اور کم ویش بارہ گھنے تک صدر مملکت سے بذاکرات ہوتے رہے۔معاہدة اسلام آبادیس صدر نے بیلین ولایا کہ کی ایک فرق کی فقدورس فرق پرمساطنیس کی جائے گی۔شام کوقا کد ملت نے بابرآ كرمجع كسامن بياعلان كيا كصدر ملكت في جارامطالبه منظور كرليا باوربيلين ولايابك نه صرف عشر وز كوة بلكه برنع قانون مين فقة جعفرية كولمحوظ ركها جائيگا۔ اس طرح قائد ملت كى بدايت كمطابق دوردراز حآئة بوعوام اليظرول كودايس جانے لگے۔

ہے۔ مفتی جعفر حین صاحب نے ایک پریس کانفرنس بلا کر حکومت کو الٹی میٹم دیدیا کہ اگر فقہ جعفریہ کے بیروکاروں کے لئے با قائد وطور پرفقہ جعفریہ کے نفاذ کا اعلان نہ کیا گیا تو وہ ۱۹۷ پریل و 194 ہو اسلامی نظریاتی کوسل کی رکنیت ہے احتجاجا مستعفی ہو جا کینئے۔ (جب فوجی حکمر انوں نے اپنارو بید نہ بدلا تو مفتی جعفر حسین صاحب نے ۱۹۰۰ پریل کو استعفادے دیا ) مفتی صاحب کے نہ کورہ بالا پریس کا نفرنس کے بعد پچوشلص رہبران ملت نے یہ طے کیا کہ ایک آل پاکستان شیعہ کونش منعقد کیا جائے جس میں ایک متحدہ قومی پلیٹ فارم کی تفکیل کر کے اپنے حقوق کے حصول کے لئے منظم تحریک چلائی جائے۔ چنا نچہ ۱۱ سے متحدہ قومی پلیٹ فارم کی تفکیل کر کے اپنے حقوق کے حصول کے لئے منظم تحریک چلائی جائے۔ چنا نچہ ۱۱ سے بڑا اجتماع تھا۔ اس اجلاس میں کہلی بارشیعہ عوام نے براہ راست متفقہ طور پر اپنی مرکزی قیادت کا اجتمام مجلس نظام فقہ جعفریہ نے کیا تھا۔ امامیہ اسٹوڈنس آرگنا ٹرشن (۱.۵.۵) اور شیعہ اسکا وکش

اس کونشن میں علامہ مفتی جعفر حسین صاحب قبلہ کو شیعیان پاکستان کا متفقہ طور پر قائد تسلیم کیا گیا۔ اور پوری فضاایک ہی قائدایک ہی رہبر مفتی جعفر ہفتی جعفر ہفتی جعفر ہفتی جعفر سین جنوبی ایشیا کے دوسرے بڑے روحانی پیشوا تھے کہ جنہیں عوام کی آئی بڑی تعداد نے ووٹ دیا۔

مفتی صاحب نے اپنے خطاب میں حکومت سے مطالبہ کیا کہ • ۳ مراپر میں سے پہلے حکومت میں ہ ۳ مراپر میں سے پہلے حکومت میں ہ ۳ مراپر میں مطالبات کے تق میں ملک گیرتر کی شروع کر دینگے۔
اپر میں کے بعد شیعد اپنے مطالبات کے تق میں ملک گیرتر کی شروع کر دینگے۔

منريديد كرتح يك نفاذ فقة جعفريد كهلا يكى \_ الجمن كاصدر دفتر اسلام آباديس موكا \_صوب،

119

\$EEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEEE

HA

نے انظام میں معاونت کی۔

# جعفرعلی،میرزافصیحلکھنؤی

-IALAJ/SITARLE ميرزاجعفر على تصبح لكحنوى اديب كامل اورشاعرى مين استاد تيني آخر تمريش مكم معظمه كي عجاورت افتيار كى اورويس ١٢٩٥ ه ك يهل وفات يائى - انحول في تصيد عدم شيئ ، فزليل اور مثنویاں کھیں جن میں نان ونمك عرفانی مثنوى بے جولسنؤ میں وع الماء میں چھی ۔ ایک مثنوى برق لامع ہے جو کسی تی کی مشوی کے جواب میں ہے۔ بیجی مطبوعہ ہے اور میرے کتب خان میں موجود ہے۔اس میں وہ پہلے اس م مثنوی کا ایک محوافق کرتے ہیں چراس کا جواب لکھتے ہیں۔ خالف ک مثنوی کے مکووں کی سرخی ہوتی ہے ع" بیتول سنئی ہے آبرد ہے۔" اور جواب کی سرخی ہوتی ہے ت "جواب هيعيان نيك خوب-"ان كاعلاو وفل ماتم (مطبوعه) اورآب ونمك ب-

ان كے صاجزاد ، ميرزامحرعلى ابل علم وضل ميں تھے۔ آقائى بزرگ تيرائى في مولوى ذاكر حسين لكھنوى كے حوالے سے بيلھا بے كد ميرزا محملى نے حدود واسا هيں وفات بائى۔ انبیں مرزاع على في ١٩٩٠ هن اين والدكام كاتھم حوم لكھا --

(الكرام البررة جلداول ٢٢١-١٥٢١ الذريع)

(١) رّعه نج اللاغه (اردو)، (٢) رّجه صحيف كالمه (اردو)، (٣) يرت امير المؤمنين (جلداول)، (م) ديوان اير الموشين كامنظوم رجمه (اردو)

666666666666666666666666666666

طمعة جعفر سكاقيام

وع 19 ء من گوجرانوالد من آپ نے ایک عظیم الثان درسگاد، جامعہ جعفرید کا سنگ بنیاد ر کھا۔ تقریباً ایک تبائی عارت تعیر ہو چکی ہے جس پر اٹھارہ لا کھروپید کی لاگت آئی ہے۔ آپ خود بھی ال مين ودي وي تح يبال تك كم من الموت من مجى اگر ذرائعي طاقت محوى كرت تو لرزت لا كرائ مدر يوفي جات ايك طرف فونى ق كرت دوم ي طرف شرح لمدكا درى

بهارى اوروفات

المكر كؤش كے بعد شب وروز كے طوفاني دوروں نے آپ كی صحت كو برباد كرديا۔ ٢٩ رديمبر عدا المولا موركة اكثرون في تضيم كما كرآب كنري والي

٢٥ رجولائي ١٩٨٣ موآب كولندن لے جايا كيا جهان بدر يورث على كديسركا اثر بيعيمرون ے بڑھ کروماغ تک پیو کی چکا ہے۔ اور جوعلاج پاکتان میں بور ہا ہے وہی مناسب ہے۔ سار اگت کولندن ےوطن واپس ہوئے اور ٢٩ راگت کوطوع آفآب کے وقت آپ نے اس دار فانی ے رحلت فر مائی۔ جامعد ام پر بلائے گاہ شاہ می حسل وکفن کے بعد جناز ہ آخری دیدار کے لئے كويرانوالدروانداواج فكرآب كربالك عثاه يل فن كرن كي وصد فرما يك تصال لي ميت كو لا موروائس لایا گیاجہال دوسری نماز جنازه موئی اور مغرب سے چندلحق آپ کوپر داد کردیا گیا۔ ( بحوال منبرى حروف مرتبامير محارفائزي)

ESCHOLOGICA CONTRACTOR

کے عہد و پررہے۔ آپ نے وہاں بہت ہی گران قدر خدمات انجام دیے اور بہت سے مناظروں میں فمایاں کامیابی حاصل کی۔ اور وہیں پوری زندگی گذار دی۔ ۹۲ سال کی عمر میں طویل علالت کے بعد وہیں پر ۹۷ رمبر ۱۹۹۸ کورحات فرمائی اور جامعة العسكريہ کے احاط میں فرن ہوئے۔

آپ کے چھوٹے بھائی مولانا شخ علی حسین صاحب، صدر الافاضل تھے۔ آپ عدود الاقاضل تھے۔ آپ عدود الاقاضل تھے۔ آپ عدود الاقاضر بھر الفریقہ پہو نچے اور تا نزانیا، کینیا اور ہوگانڈ اکی بہت ی جماعتوں میں آخر بہا چوتھائی صدی تک دین خدمات انجام دینے کے بعدوطن واپس گئے۔ راقم الحروف سے اچھے تعلقات تھے۔ مبارک پور پہو نچ کرمدرسہ باب العلم کے رئیل ہوئے اور وہیں انتقال کیا۔

(اصلاح صدى نبر 1999ء داتى معلومات)

#### جوادعلی،میرزا

میرزاجوادعلی غفران مآب سیددلدارعلی کے شاگردول میں تھے۔سیدمبدی ابن سید جف علی فی تخصیل میں تھے۔سیدمبدی ابن سید جف علی فی تذکرة العلماء المحققین میں ان کے لئے بیالقاب لکھے ہیں: "الفاضل المدقق، النحر مراجعت، العلامة الفہامة ."

(الكرام البررة جلداول ص ٢٩١ متذكرة العلماء المحققين)

جواد، ملا، تشميري

بعداز ۲۲۳ م/ بعد ۱۸۱۸،

ملا جواد کشیری ملاجر علی پادشاہ کشیری کے صاحبز اوے تھے اور صاحب فضیات عالم تھے۔
نجوم السماء میں ان کو ملاجر علی پادشاہ کے ان فرزندوں میں شارکیا ہے جوزیورعلم وحلم ہے آ راستہ تھے۔
ان کی دو اولادی تھیں ایک ظیر الدین جن کی اولا دوقت تالیف نجوم السماء یعنی الا آیا ہے تک موجود
تھی۔ایک بیٹی رقیہ تھیں جومولوی حن یوسف کشمیری کی دادی تھیں۔صاحب الکرام البررة نے مولوی
حن یوسف کشمیری اخباری کے پاس کچو مخطوطات دیکھے تھے جو ملا جواد نے تحریر فرمائے تھے جن ہے
دو سے الدین کی وارغ ہوئے تھے۔اس سے بیدائدازہ ہوا کہ ان کی دفات اس سند کے بعد ہوئی

(الكرام البررة جلداول ص ٢٨٥-٢٨٨، تجوم السماء)

جواد سين، شخ

19.5/1512

-1991/1019

مولانا شخ جواد حمین صاحب مرحوم ابن عبد المجید صاحب مبارک پوضلع اعظم گرده کے رہے دیں میں میں المداری سے صدر الافاضل کرنے کے بعد مدرسة الواعظین میں داخلہ لیا اور بعد فراغت منگوضلع کو باث (سرحد) میں تبلغ کے لئے بھیج گئے اور وہاں قاضی شریعت

IFF

گونڈہ ہے دیور یا ٹرانسفرہ واجہاں چھسال رہے اور پھر بہرائج بھیجے گئے بہرائے میں محلّہ سید
واڑہ کے حسینہ قزلباش کو کسٹوڈین کے قبضے ہے واگذار کرایا۔ اور کر بلا اور اس کی بیش قیت اراضی جو
عاصبوں کے قبضے میں تقی اور عارت بتاہ ہو چکی تقی اُس کواُن لوگوں کے قبضے ہے نکال کراز سر ٹوتھیر کرایا
اور مومنین کے حوالے کر دیا۔ بہرائے میں تیرہ سال فرائض مصبی انجام دینے کے بعد ۲ مرابر بل ۱۹۲۳ء
کوریٹائرڈ ہوئے دوران تعلیم خصوصیت ہے سرکار باقر العلوم اور سرکارظہیر الملة کی سر پرتی حاصل رہی
اور سرکارنا صرائملة اور سرکار مجم العلماء بھی بہت مجت فرماتے تھے۔

فج وزيارات

و ۱۹۳۳ء اور ۱۹۳۳ء میں اوراس کے بعد تیسری بارعتبات عالیات کی زیارتیں کیں۔ اور دو بار جج سے بھی مشرف ہوئے۔ ۱۹۳۳ء والے سفر میں راقم الحروف سعید اختر رضوی کی نانی صاحب مرحومہ بھی ان کے ساتھ گئی تھیں۔

قو می خدمات

مولانا حامد حسین عشر وی کی پوری زندگی قوی خدمات کا ایک مرقع ہے۔ انجمن وظیفہ سا دات ومومنین

ا اوا میں انہوں نے انجمن سے وظیفہ طلب کیا جونیں ملا۔ آپ نے ای طالب العلمی کے دور میں ۱۹۲۰ء میں انہوں نے انجمن کی ممبری قبول کی اور پوری زندگی انجمن کی ترقی کی کوششوں میں گےرہے۔ راقم الحروف کو انہیں نے مگی و 192ء میں انجمن کا ممبر بنا کر بلور (ضلع بستی ) کالوکل سکر یٹری بنایا تھا۔ میری طرح نہ جانے کتنے لوکل سکر یٹری مولانا کے مقرر کئے ہوئے تھے۔ مولانا انجمن کی تمبی کے ممبر میں منصبی ممبر تھے۔ میں سال کے بعد انجمن کے دوائی ممبر بھی ہوگئے۔ واپسی قرضہ حسنہ کے اور بعد میں منصبی ممبر تھے۔ میں سال کے بعد انجمن کے دوائی ممبر بھی ہوگئے۔ واپسی قرضہ حسنہ کے

حامد حسين ،سيد ،عشروي

عاعاله العاد

مولانا سید حامد حسین عشروی ابن سید غلام حسنین صاحب موضع عشری خرد ( صلع سیوان ، بہار ) کے رہنے والے تھے۔ اور اگر چہ بعد میں انہوں نے گونڈہ اور بہرانے کو اپناوطن بنالیا تھالیکن اپنے نام کے ساتھ ہمیشہ ''عشروی'' لکھتے رہے۔

والدین کے مایہ ہے کمنی ہی میں محروم ہوگئے تھے۔ آپ کے بڑے بھائی حکیم سیدمحمد بشر صاحب (صدرالا فاضل) اور چھوٹے بھائی مولانا سیداظہار الحشین صاحب (صدرالا فاضل) تھے۔ والدین کی وفات کے بعد پتچا اور چچی نے ان متیوں بھائیوں کی اس شفقت اور محبت سے پرورش کی جس کی مثال بہت کم ملتی ہے۔

مولانا ابتدائی تعلیم اپنے بڑے بھائی ہے حاصل کرنے کے بعد کچھوہ گئے جہال مولانا سید محرفتی صاحب ہے عربی صرف ونحو اور منطق کی ابتدائی کتابیں پڑھیں۔ اس کے بعد الواء ہے سماوا میں مدرستے عالیہ دام پور میں ممال المدارس میں رہے۔ حالات نے ساتھ نددیا تو 1910ء میں مدرستے عالیہ دام پور میں داخلہ لیا۔ وہیں ہے 1919ء میں درس نظامی کی اعلی سندلی۔ 1919ء میں وہیں رہ کر پنجاب یو نیورش ہے مولوی فاصل اور ۱۹۲۱ء میں مثنی فاصل کی سندیں حاصل کیں۔

اعتلاء میں او پی گورنمنٹ کے شعبہ تعلیم میں ملازمت شروع کی اور ایھ کے گورنمنٹ ہائی اسکول میں عربی و فاری کے استاد مقرر ہوئے۔ پانچ سال بعد گونڈہ پنچ جہاں تقریباً میں سال قیام رہا۔ اس عرصہ میں گونڈہ میں اپنی جدوجہدے ایک نہایت خوبصورت امام ہاڑہ بنوایا جس کا نام حسینیہ اتخاد المومنین رکھا۔

117

وفات

٩ر مارچ ١٩٩٠ و (= ١١ رشعبان ١٣٠ هـ ) كورطت فرمانى اور حسينيا تحاد المسلمين كوند ويس ن موئ-

(ۋاكۇسىدەھورىقى فرزىدە مولانا خامدىسىن مشردى دۇاتى معلومات)

#### حسن،سید،حائری

حاجی مولوی سیدسن حائزی بمبئ کے مدرستدامین التجار میں مدرس اول تھے۔ان کے ایک رسالہ" قع المغالط' کا ذکر اصلاح جلد ۱۸ نمبر ۲ میں ہے جو اثبات معسومیت حضرت آدم میں "نبایت مل اور مفصل لکھا گیا ہے۔"

## حسن،سيد،ابن مفتى صاحب

1917 SITT.

منی غلام علی خان صاحب نے شیخ بہائی کے حالات میں مولا ناسید حسن مرحوم یا وگار جناب مفتی محرعباس صاحب کا تذکر دان الفاظ میں کیا ہے:

"مولا نامرحوم بزے مقدل، زاہداورمفتی تھے، بدمقام بسوال شلع سیتا پوردیاست عالیہ محود آبادی طرف سے امام جعدو جماعت کی حیثیت سے مقیم تھے۔ راقم الحروف کے حال پر از حد شفقت فرماتے تھے۔ جناب مفتی صاحب اعلی اللہ مقامہ کے چندر سائل اور کلام منظوم کے قلمی مسودات کی نقل مرحت فرمائی۔"

۱۲رجون ۱۹۱۲ء (=۲۹رجمادی الثانیه) و ۱۳۳۰ هدورطت فرمانی -

(اصلاح جلد ٢- منبر٥، جمادى الاول)

CONTRACTOR CONTRACTOR

شب كريزى تق اورلوكل سريزيوں كركراں بكى رب-آخريں الجمن كے نايب صدر منتنب موئے تھے۔

آل الذياشيعة يتم فانه

میتم خانہ کے سنہ آغاز لیخی ۱۹۱۲ء ہے ہمیشہ اس کے معین ویددگار ہے۔ 1908ء تک اسکی جزل کمیٹی کے ممبر بھی رہے۔ جہاں بھی جاتے المجمن وظیفہ سادات و موشین کی رسید بک اور ممبری فارم نیز بیتم خانہ کی رسید بک ضرور ساتھ رکھتے اور ہروقت ان دونوں اداروں کیلئے ایداد حاصل کرنے کی کوششوں میں گے رہے۔

ان دونوں اداروں کے علاوہ آپ آل انڈیا شیعہ کانفرنس کے سرگرم کارکن ہے۔ مدرسة الواعظین کی دو کمیشیوں کے ممبر ہے۔ امامیمشن کے رفیق کارادر سنظیم المکاتب کے دوائی مجبر ہے۔ جو گی پورہ، آگرہ اورد گرتمام مشہور تو می اداروں سے وابستہ ہے۔ ۱۹۲۸ء سے ۱۹۳۸ء تک انجمن عقد میوگان کے سکریئری دے۔

آپ کے مضامین اخبار اٹنا عشری (دبلی) ذوالفقار (لاہور) اخبار قرطاس ، اخبار اتحاد (امروبہ) اور زبانہ (کانپور) میں نگلتے رہے تھے۔ اور ادوا ممال کا ایک مجموعہ " وظایف محمریہ" بھی ترتیب دیاتھا جودومر تبدچپ چکا ہے۔

ئادمال

آپ نے دوشادیاں کیں۔آپ کی زوجدادلی کی نانی صاحبدراقم الحروف کے داداسید متبول مسین صاحب مرحوم کی بہن تھیں۔ اس طرح دورشتہ میں میری بہن ہوتی تھیں۔ ادار د

آپ نے آخوار کے اور شن اڑکیاں یادگار چھوڑیں۔

IFY

ضانف

شرح رسائل (۲ جلدي)،شرح كفاية الاصول، حاشية يوطى، ايمانى نصاب،تشدد كامقابله عدم تشدد سے،كون بول؟ كيا جا بتا بول؟ اور خطبات صديقه طاہره-

وفات

مولانا ہمیشہ بیاری کا شکار ہے۔ گر ۱۱ را کو برکوان کی طبیعت بہت زیادہ خراب ہوگئی اور انہیں سے گاندھی میڈیکل انسٹی ٹیوٹ میں داخل کیا گیا۔ جہاں آپ نے ۱۸ را کو بر 1991ء مطابق سرجہادی الثانیہ کا سماھ بروز جعد سے آٹھ بجے انقال فرمایا۔

(ملاذ العلماء: ايك تعارف، مرتبه عابدهسين حيدري وسيدهسين اختر نقوي)

37,50

ئىن، شخ

יעונף שפום/ מזאוי

شیخ حن صاحب جناب سلطان العلماء سیومحمد ابن غفران مآب کے شاگردوں میں ایک جید عالم تھے۔ آقائی بزرگ تہرائی نے سلطان العلماء کی تجوید کی کتاب ' السیع الشانی'' کا ایک مخطوط دیکھا تھا جوشخ حسن ہندی نے 177 ھیں لکھا تھا اور آخریں میر بھی ذکر کیا تھا کہ وہ مصنف کے شاگرد

(الكرام البررة جلداول ٢٠٢)

119

حن ،سيد ،نقوى ، ملاذ العلماء

1997/2115

مولا ناسید محد عرف میرن صاحب این مولا ناسید محرتقی صاحب قبلد نے تین اولا دیں یادگار چھوڑیں: مولا ناسید علی نقوی ،مولا ناسید حسن نقوی اور مولا ناسید حسین نقوی۔

مولاناسید حن نقوی ۸ رد بمبر ۱۹۳۴ و (= یم رمضان ۱۳۵۳ه) کوکھنو میں پیدا ہوئ۔ والد ماجد سے ابتدائی تعلیم حاصل کرنے کے بعد مدرسر ناظمیہ میں داخل ہوئے جہال سے متوسط درجات کی تعلیم کے بعد سلطان المدارس میں داخلہ لیا اور ۱۹۵۲ء میں صدر الا فاصل کی سند حاصل کی۔ درجات کی تعلیم کے بعد سلطان المدارس میں داخلہ لیا اور ۱۹۵۲ء میں صدر الا فاصل کی سند حاصل کی۔ درخوم رکھ 1908ء کونجف اشرف پہنچ جہاں تحصیل علوم میں مشغول ہوگئے۔

آپ نے الدآباد بورڈ ہے مولوی، عالم، فاضل، مثی، کامل کی سندیں حاصل کیں۔ لکھنو یونیورٹی سے فاضل ادب کیا اورشیعہ عربی کالج سے عمادالا دب اور عماد النفیر کی سندیں حاصل کیں۔

نجف اشرف سے والی کے بعد آپ (۱۹۲۱ء میں کینیا اور ۱۹۲۲ء میں پاکتان گئے۔

1970ء میں کینیا اور تا نزانیا کی جماعتوں میں ذہبی خدمات انجام دیئے۔ 1979ء میں مباسا میں دیے۔ 1979ء میں مباسا میں دیے۔ 1940ء میں انگلینڈ کا تبلیغی سفر کیا ۱۹۸۳ء میں وطن والی آئے اور تیرہ چودہ سال کا زمانہ درس وقدریس ، ذاکری اور تبلیغی خدمات میں گذارا۔

3

آپ نے ۱۹۸۸ ووا 199 واور ۱۹۹۳ ویل تین فج کئے۔

ITA

ضانف

شرح رسائل (۴ جلدي)،شرح كفاية الاصول، ماشيه يوفى اليماني نساب،تشد دكا مثلاليه عدم آشدد ، كون بول؟ كياج بتا بول؟ اورخطبات صديقه طاجرو-

260

مولانا ہیں بیاری کا فکارر ہے۔ گر ۱۱ را کو برکوان کی خبیعت بہت ذیادہ فراب ہوگئی اور انیس سے گاندھی میڈیکل انسٹی ٹیوٹ میں داخل کیا گیا۔ جہاں آپ نے ۱۸ را کو بر 1991ء مطابق ۱۲ رہادی الثان یہ سے ۱۳ اوبروز جمعی آخد ہے انتقال فر مایا۔

(خاذ اطلها دا ایک توارف مرتبه عابد حسین میدن کاربید حسین افز نیزی)

100

حن، شيخ

· IATO GIATANA

فیخ حسن صاحب جناب سلطان العلماء سید محد این غفران مآب کے شاگردول میں ایک جید عالم تھے۔آتا کی ہزرگ شہرائی نے سلطان العلماء کی تجوید کی آناب" السبع الشانی" کا ایک مخطوط ویکھا تھا جو فیخ حسن ہندی نے و ۲۳ اسلامی کھا تھا اورآخر میں بیسمی و کرکیا تھا کہ وہ مصنف سے شاگرد

(القرام) ليروي للاالمال الاستان

حسن، سيد، نقوى، ملا ذ العلماء

1970 6 gran

0000000000

مولانا سید تی مرف میران صاحب اتن مولانا سید تی آتی صاحب قبلے تین اولاوی یا وگار چھوڑیں: مولانا سید تلی فقوی مولانا سید حسن فقوی اور مولانا سید حسین فقوی۔

مولا تاسيد حن أفق في ٨ رؤم من ١٩٠٥ (= يَمُ رمضان ٢٠ ١٥ على ) كَلَّمَوَ عِن بيدا بوك .
والد ماجد من ارتدائي تعليم عاصل كرف ك بعد مدرسة تاظميه عن وافل بوك جهال من متوسط
ورجات في تعليم ك بعد سلطان المدارس عن واطله ليا اور ١٩٥١ وعن صدر الافاضل كي مند حاصل
ك من وجود واركو بنا المراش بني جهال تحصيل علوم عن مشغول بوك .

آپ نے الدآباد بود اے مولوی، عالم، فاضل بنتی، کال کی سندیں عالمل کیں۔ تکھنؤ یف دخلے الفظی الدب کیا اور شیعہ عربی کا ان سے عاد الدوب اور عاد الفیر کی سندیں عاصل کیں۔ نجف انٹرف سے والیتی کے بعد آپ دا اور اور عاد الدور میں کینیا اور عالا اور عاد الدور میں پاکستان گے۔ معاد اللہ میں کینیا اور تا نزانیا کی جماعتوں میں فریکی خدمات انجام دیتے۔ وادوا میں ممباسا میں دے۔ دیکی اور تیلی فرید کا تیلی مؤکر کیا عربی المیں والی آگا اور تیروچودوسال کا زماندوری وقد دیکی دو اکری اور تیلی خدمات میں گذار اد

3

- E & C. C. 1995 11 1991 19 19 19 2 - - T

ION

عريض القال في القال:

0.410

يون قرآب ك شاكردون كى اورت بهت لى جاكر سبولى شانده ك الماك أراى المالان الطيت ركان بين:

مولانا محد عباد صاحب، علام محقی حسن کامونیوری، مولوی سید فردت حسین بناری، اور ظفر المله مولانا سید ظفر المن صاحب اظفر المله کوان قدر وزیز رکتے ہے کہ جمله علوم کے ساتھ ساتھ علم جفر کی قصوصی تعلیم دی۔ نیز دوبار وجرت سے قبل ظفر المله سے طاقات کیلے لکھنو تھریف سے سمجے جہاں ووز رقعلیم تھے۔

(ميرمقابرمادب داري مولايك بعافي)

حسن سعيد، سيد، قاضي

TO THE PROPERTY OF THE PROPERT

حن رضا ،سيد

ن مولاہ مید خسن رضا موق مولوی ریجن صاحب دیاب مید عمد الرضا صاحب ساکن محلّه مولاہ مید خسن رضا موق مولوی ریجن صاحب دیاب مید عمد الرضا صاحب ساکن محلّه بعد کان (بناویس) کے فرز ند تھے۔ آپ نے مدرستا ایمانے (بناوی) میں تعلیم حاصل کی اور واپس مدرس بعد گئے۔ 1917 میں مشخول ہوگا ۔ آپ بناویس میں امامت جمعود مقاعت کے فرائن بھی انجام دیے تھے۔ آپ نبایت میں مشخول ہو گئے۔ آپ بناویس میں امامت جمعود مقاعت کے فرائن بھی انجام دیے میں آپ کے بہت ہی معتقد ہے۔

و الوارش مواده في مواده في التعال فربايد و الوارش مواده فرق صاحب الي والده اور ميال كرما في دوياره جرت كرك ترباك معلى بيل من جبال" ما تا با ١٥٥٥ - ١٩٣٥م من الوارش التعال فربايد"

مولانات اشتال كايك بفته بعدان كى والدوكا مجى انتقال بولايا يوكد وميت ناسرش مولانات الني الميكون والمن جائ كى جايت كي فى المطنع ودوالمن آلكي . "وميت نامه عن ايك خصوصت بيد يكف كوفى كه موصوف في اين اورا في والدوكى تاريخ وفات بوقوي فر ما كي فن اثين

20000000000

(٢) كالس حسينيد جس رسيدة اكرحسين كي تقريظ بداس كاذكر الذرايداوراصلاح جلد

حسين احمد ،سيد ، بار موي

١١ يس --

اواخرا كتوبر لا <u>ي او او كى الحجه لا ۱۳۹</u> هه) من رحلت فريائي . (پيام على الا بور، جلد ۲۰ نبر ۱۰ نجر مالحرام <u>۹۹ سا</u>ه)

ترقی حاصل بونی۔ خان کا خطاب طا اور د بلی میں قاضی القعناة مقرر ہوئے اور آخر عمر تک ای عہد ہ پر رہو۔

رہے۔

ہور شاک کیا گیا۔

ہور شاک کیا گیا۔

حسن نواب ،سید ، نونہر دی

الا المردول المردول مردوم علاه ش ایک نمایال حیث کے مالک تھے۔
مولا تامید حن نواب صاحب نونبردی مردوم علاه ش ایک نمایال حیث کے مالک تھے۔
ہندوستان کے بعد نجف الشرف میں تعلیم حاصل کی۔ نجف سے واپس آگر قوم کی خدمت میں منہمک
ہوگئے اور مختلف مقامات پراپنے فریعند دین کو اواکرتے رہے۔ آپ نے گجرات کے دور قیام میں
بہت سے گم کشتگان راد فق کو اپنے حسن عمل اور حسن تبلغ سے راہ ہدایت دکھائی۔ آخر کار مهر جون
مرجون علی ایک کہا۔

(الجواد، جلد ٢٣، غير ٢، خروري ١٩٩٠)

# حسين على سبز وارى

مولانا حاجی حسین علی صاحب سبز واری مدرسة الاسلام ( کراچی) می شیعد د بیات کے مدرس تصحبیا کدرساله شیعد ( مجدو و ) مادی الله است معلوم بوتا ب-

## حفاظت حسين ،سيد ، بهيك بورى

יומים ליונים

وطن میں ابتدائی تعلیم کے بعد مدرسدایمانی (مظفر پور) میں داخل ہوئے۔اس کے بعد کئی سال تک مدرستہ سلیمانیہ پٹند میں رہے۔ پھر سلطان المدارس تشریف لے گئے جہال سے صدر الافاضل کیا۔ای دوران علم طب بھی حاصل کیا۔ بورڈ کے پچھامتحانات ویے۔ پھرکا پٹوراوررام پور

666666666666666666666666666666

#### نسين على اسيد

رمال اصلاح (محرم ٢٣ ملاه) می سکریزی مدرسه مشارع، الشرائع (ناظمیه) کی ایک تخریر چچی تخی نواب سید نصیر حسین خال خیال عظیم آبادی (کلکته) نے ایک سوال کیا تھا اس کے جواب میں سکریزی صاحب موصوف نے قیام مدرسہ (من ملاه) سے (۲ ملاه تک کے چند فارغ التصیل حضرات کے اسائے گرای شائع کئے تتھے۔ ان میں نواں نام'' مولوی سید حسین علی، مدرس و پیش نماز درستدیلہ''کا ہے۔

### حسين على ،خال

||\*\dagge=\frac{\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\tex{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\tex{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\text{|\ti\text{|\tii}\|\tixi{|\tix}|\tii\tii\|\tii\ti\tii\ti\tii\ti\tit

\$555555555555

جلدی بارش کے پانی سے بربادہونے سے بچ گئی ہیں۔ (۲) ذکر الثقلین (وس جلدوں میں) (۳) دستور الواعظین (۴) حضرت محمد رسول اللہ (۵) چہارد ومعصومین کے خرق عادات (دوجلدوں میں) (۲) مواعظ القرآن (تین جلدیں) اور تصیدوں اور نوحوں کے مختلف مجموعے۔

وفات

• اردئمبر ۱۹۲۳ وکوطن بحیک پوریس انقال فرمایا۔ (سیدآل ابرائیم فرزند، ذاتی مطومات «الجواد ، اصلاح، الذریعه)

حمزه علی ،سید

الماتياه الماتياء المروجة كريم اورصاحب علم فضل بزرگ تقد بهت ى الماتيان الم

٨١رجب ٣٣٠ ه (=٢٢ رفر وري ١٩٢٥ ء) كوانقال فرمايا

(املات)

حيات على

اصلاح ماہ ذی الحجہ اس الے ہیں جناب مولوی حیات علی صاحب کا نام بطور مدرس مدرسہ سلطان المدارس ( تکھنؤ ) ماتا ہے۔

ے ہوتے ہوئے بنجاب پہنے اور مولوی فاضل کی سند حاصل کی۔ بعد کے دور میں پٹند یو نیورٹی ہے

طازمت

لى اے كاردوادب كامتحان ديا۔

مظفر پورکی جامع سجد (محلّہ کرو) میں آپ پیش نمازر ہے، آپ بہترین معلم اور باعمل عالم ہونے کے ساتھ ساتھ اعلیٰ پاید کے ذاکر بھی تھے۔ نہایت خلیق، منکسر المزاج اور خود دار انسان تھے۔ وقت کے قدر دال تھے اور ضرور کی مشخولیات کے بعد اپناسار اوقت مطالعہ اور تصنیف میں صرف کرتے تھے۔

ضانف

آپ کے صاحبزادے سیدآل ابراہیم صاحب کی تحریر کے مطابق آپ نے ای ۸۰ کتابیں کھیں۔ ان میں بہت کی اسکول کی دری کتابیں تھیں۔ علمی کتابوں میں چھٹا نکع ہو گیں، ہار وخطوطات ان کے صاحبزادے کے پاس میں۔ باتی یا توضائع ہوگئیں یاان کا پید نہیں چلتا۔

مطبوعه كتابيل

(۱)فدک(۲) چهارده معصوم (۳) مثنوی مردهٔ مومنان (۴) مثنوی یادگارهٔ تعظیم (۵) ۱۲ صفح کاایک منظوم رساله بخیک بور "(۲) تغییر آیتظیر جورسالهٔ اصلاح میں بطور ضیر چیجی تھی۔ فیر مطبوعہ کتابول میں سب سے اہم تغییر معارف قرآن (بدزبان اردو) ہے جس کی پانچ

## خوب الله، قاضي ، جو نيوري

· 1719/21100

قاضی خوب الله ملامحمد حفیظ جو نبوری کے نبیرہ تھے۔ ان کی ذات سخجید عادم تھی، أفضل المحد ثین سمجھ جاتے تھے۔ کہا جاتا ہے کہ ان کو گیارہ سوحدیثیں مع اسادیاد تھیں۔ شاہ دیلی کی طرف ہے آپ کوالہ آباد میں قاضی القصاق معین کیا گیا تھا۔ اور آپ نے بیا ہم ذمہ داری بہاحس وجوہ باہی۔

\*\*\*\*

جب نواب شجاع الدولدالد آباد گے تو قاضی صاحب موصوف ہے ملاقات ہوئی۔ شجاع الدولد نے نام پوچھاتو بتایا: خوب اللہ ، نواب نے کہا کہ خوب فاری لفظ ہے اور اللہ عربی ہے۔ یہ ترکیب کیونکر درست ہو عتی ہے۔ قاضی صاحب نے کہا کہ نام کا بامعنی ہونا ضروری نہیں ہے۔ نواب نے کہا کہ قاضی اور اس کا نام بے معنی ہو؟ یعنی چے؟ قاضی خوب اللہ نے کہا: جب میرایینام رکھا گیا اس وقت میں قاضی نہیں تھا۔ شجاع الدولداس جواب پر ہنے اور ان کو گھ لگایا۔

ایک روز قاضی خوب اللہ قاضی ثناء اللہ جو نپوری کی ملاقات کیلئے گئے۔ دونوں میں بہت دوئی تھی۔رمی تعارفات کے بعد خدمتگار کواشارہ کیا کہ حقد لائے۔قاضی ثناء اللہ نے حقد اور تنہا کو کی ندمت میں کچھے باتیں کہیں۔

قاضی خوب اللہ نے فی البدیہ بیقطع نظم کر کے پڑھا تناکو اگر چہ ہت زیاں کار ہے زاو فائدہ نیج گہد ندیدہ است کے آخر بد ازیں چہ خوب باشد کہ ترا خاموش کند زہر زہ گفتن نشے (نتناکواگرچہ بہت نقصان دہ ہے اوراس سے کی نے بھی کوئی فائدہ ٹیس پایا ہے۔ لیکن اس

خادم حسين ، الفاصل البندي

نواب محن الملک نے شیعوں کی روییں آیات بیمنات کھی تھی۔ اس کا جواب مولوی خادم حسین صاحب نے ری المجر ات کے نام سے تین جلدوں میں کھکر شائع کیا۔ جب بیرصاحب قطب شاہ (سنی) نے ری المجر ات کا جواب شوائظ البرقات کے نام سے کھا تو مشہور شیعہ مناظر مرز الحری صاحب امر تسری نے اس کے جواب میں مفاتح البرکات کھی۔

## سيدخالق بخش

آپ مدرستا ایمانیه (مظفر پور) میں مدری دوم تھے (صاحب لوائع الاحزان مولانا سید محمد مبدی صاحب مولانا سید محمد مبدی صاحب مدری اعلی الله مقامه الله مقامه الله علی الله مقامه الله علی الله مقامه الله علی الله مقامه الله علی الله مقامه علی مدرسته خدکور میں واقل ہوئے تو مولانا سید خالق بخش صاحب مرحوم سے شرح ما قاعال پرجی۔

(دياد اوشرة فرت)

IFA

اوپ کے بیان سے قابر ہوتا ہے کہ انھوں نے الدا آباد کی سکونت اڑک کر کے جو ٹیور کا اپنا ہمان بنالیا تھا۔ اور بعد انتقال جو ٹیور می میں ڈن ہوئے۔ آپ کی اوالد شہر الدا آباد (وائرہ شاو ہمل) میں آباد ہے۔

(はないないはしないないのかないないないないはんしいというしかいきいき)

#### خيرالله، قاضي ، جو نيوري

قاضی فیرانلدصا حب عتی سیدمبارک جو نیوری کے چھوٹے فرزند تھے۔ تمام علوم اپنے والد ماجدے حاصل مجے اور تھوڑی ہی مدت جس فارخ انتھسیل ہو تھے۔

آپ جو نپور کے قاضی مقرر کے گئے۔ درس وقد رلیں اور اپنے فرائض مصبی کی انہا م دہی کے ملاوہ کی دوسر سے کام میں دلچنی نیقی۔ جو نپور ہی میں وفات پائی۔ سندوفات معلوم نہیں۔ (عملہ نجوم اسماء بعلداول میں وا)

#### ولبرحسن اسيد انونهروي

من من الدين المحدالات المحدد المحدد

العدار المالا الم المنظم المن المنظم المن المنظم المن المنظم المن المنظم المنظم المنظم المن المنظم المن المنظم المن المنظم المن

قاضى اطهر مبادك بودى في مولوى فير الدين كرك باد من لكما ب:

"مولوى فير الدين فيرفي الدين في فيدرى كابيان كافى بدوه جها عدار شاوكى فدمت شراء به في الدول كالمون في من الدول كالمون في العالم المون في الدول كالمون في كالب الذكرة العالم الدول الدول كالب الذكرة العالم الدول المون في المون في كالب الذكرة العالم المون المون في كالب الذكرة العالم المون في المون في المون في المون في كالب الذكرة العالم المون في المون في المون في كالب الذكرة العالم المون في المون في المون في كالب الذكرة العالم المون في المون في المون في كالب الذكرة العالم المون في المون في كالب المون في المون في المون في كالب المون في المون في المون في المون في كالب المون في المون في المون في كالب المون في المون في المون في كالب المون في المون في المون في المون في كالب المون في المون في المون في المون في كالب المون في المون في المون في المون في كالب المون في المون في المون في كالب المون في المون في المون في كالمون في كالمون في كالب المون في كالمون ف

(متونى ١٨٢١هـ) كازندگى يركهي كانتي

اولاد

آپ كين فرزند تے:

(۱) سیوتح تقی جنہوں نے تعیم علی تحر ہے طب پڑھی اوراستاد نے ان کو ۱۲۸۵ ہے میں طب کا اجازہ دیا۔ اس اجازہ میں سید تحر تقی کے والد ہزرگوار مفتی سید دلدار حسین کے جوار سید الشہد اء میں وُن ہونے کا ذکر ہے۔ اس بنا پر آتا ہے ہزرگ نے سینتجہ اخذ کیا ہے کہ مفتی سید دلدار حسین ۱۲۸۴ ہا واور ۱۲۸۵ ہے کہ درمیان فوت ہوئے تھے۔ لیکن بی خیال اس وقت صحیح ہوسکتا ہے جب بیہ معلوم ہوکہ انہوں نے '' ججة الاسلام'' سلطان العلماء کی زندگی کے آخری سال میں کھی تھی۔ بہر حال اس سے بیہ معلوم ہوگیا کہ وہ کر بلائے معلی میں وفن ہوئے۔

(٢)سيد محدرضا -جن كى ايك تصنيف آداب الجالس ب\_

(٣) سيدعلى نقى، تيسر ، بينے كا ذكر مطلع انوار ميں ہے كہ وہ كتاب ميں زندہ تھے اور رسالہ تحف سليمانيه بيان كي تقريظ ہے ان كے علم برروشنى يزتى ہے۔

Average recommendation of the commence of the

(الكرام البررة جلدووم عن ١٥٥ مطلع انوار)

1910ء میں آپ دوسال کیلئے تا نزانیا تشریف لے گئے۔ (مولانا کا پرمٹ سپریم کا وُنسل کی طرف سے میں نے بی بنوایا تھالیکن ملاقات ان کے ورود دارالسلام کے بعد ہوئی۔) افریقدے واپس جا کر تقریبًا پانچ سال تک کلکتہ کی بھراوی مجد میں امامت جعہ و جماعت کی ذمہ داری سنجالی محفل حیدری (کلکتہ) میں خطابت فرماتے تھے۔

۱۹۸۳ سال کی عربی ۲۲ رجنوری ۱۹۸۳ (= ۷ روزیج الثانی سومیاه ) کوکلهنو میں وفات پائی - ۸۲ سال کی عمر کے مطابق مولانا کی پیدائش حدود ۱۹۰۱ء میں ہوئی ہوگی۔ (سطین آباد رسٹ گزٹ (کلکتہ) جلد ۲، شارہ ا، مورید ۲۳ روزی الثانی، سومیا دوزاتی معلومات)

### دلدار حسين مفتى ، بلكراى

تبل از ۱۹۸۱ه اله ۱۹۸۸ه مختی سید دلد ارحسین ابن سید عمل رضائر ندی دا می پوری اصل میں بلگرام کے رہے والے تنے اور وہیں آپ کی ولادت ہوئی تھی۔ آ قائی بزرگ تہرائی نے آپ کو' عالم جلیل وصولف فاضل' کلھا ہے۔ آ قائی بزرگ نے ان کو سلطان العلماء سید محمد کا معاصر اور مرتضی حسین فاضل نے مطلع انوارا میں ان کو سلطان العلماء کا شاگر دنگھا ہے۔ سلطان العلماء نے ان کو حکومت اور ھیں مفتی کا عہد ودلوایا تھا اور کے ۱۸۵ ء کی جنگ آزادی کے بعد آپ عراق چلے گئے۔

آپ نے منتبی الکام کی رد میں ججة الاسلام (بدزبان فاری ) لکھی تھی جوسلطان العلماء

**POPOPOPOPOPOPOPOPOPO** 

In

#### دوست محرزا

"مرزادوست محمصاحب كربلائي، حيدرآ بادسنده من نهايت باعلم تقي كوياتماى اللسنده كم رجع تقرشب وروز مخالفين ع مناظره مي مشغول رجيد مولوى سعدالله (سى) كم مناظره میں دوسوسنی کی کتاب مجمعی در میصنے اب اس کے چھینے کا کیاسامان موتا ہے (خداد ثد عالم ان کے فرز ند مرزا گل حن صاحب کواس کی توفیق دے کہ وہ اپنے والد مرحوم کی اس یاد گار کو جلد چھیوادیں۔) افسوں کہ دہ بھی موشین کو بے دست و یا کر کے عین عاشور کو ۵ بجے شام کے وقت راہ گرائے

اور کا بیان رسالهٔ اصلاح ذیقعده و ذی لحجه ۱۳۳۸ سے ماخوذ ہے۔ یہ پرچہ بہت تاخیرے لین رائع الثانی وسی کے بعد چھیا تھا (جیسا کداس کے مندرجات سے صاف ظاہر ہے) اس کا مطلب بيهوا كدم زادوست محرصاحب كانقال وارجم وسسا (=٢٨ رغم و١٩٢) وبوا-

# ذا كرحسين ، اختر ، جريلوي

عليم سيد ذاكر حسين اختر بحريلوي، بحريلي ضلع انباله (پنجاب) كريخ والے مشہور سحانی اورصاحب قلم تھے۔اخبارا تناعشری (وہلی) کے مدیر تھے لیکن اسسالے پہلے اس علیدہ ہو چکے تحداصلاح (ذی الحبد ١٣٣٨) علوم ہوتا ہے كدآب اس وقت ماہنامدعرفان مجريلى سے

1904/0174 مولانا عكيم سيد ولدار حسين صاحب عظيم آباد (كلد نوزركره) مي رج تحد سلطان المدار كالعنو عدرالا فاصل كى اعلى سند حاصل كرنے كے بعد حدود 1979ء ميں مدرسة عباسيد يشند - とりいがしいんさ

اسكے بعد مدرسہ سليمانيد پشذيين مترائي فرائض انجام ديئے على صلاحيت كے علاوہ تو ي كامول ع بحى برى ولي الحيال محى -آب ذاكر المليت بحى تھے-آب نهايت فليق اور ملنسار، نهايت صاف گواور نے ماک تھے۔

1900ء من جب الجمن معين العزايشة كا قيام عمل من آياتو آب ال كالهم باندل مي

آ \_ كانقال ١٩٥٤ و(=٨- عدم اله ) من بوا-صاحب مطلع انواركو" ان كے احوال نبيس مل سكے"

( تذكرهٔ شيعه علاء وافاضل- ذاتی معلومات)

## ذا كرهبين ، فارو تي

ذاكر حسين فاروقى خطيب، ذاكر، اديب، جرنلت ادر ما برتعليم تقديم ي اوران كي پلى ملاقات شهركندى (نا تكازيك اب تازانيا) مي و ١٩٩١ مي بوئي مي نے پوچها كه آپ "فاروتى" كوكر بوگ و ي ايك كه ١٩٣٩ كوكون كا ايكي فيشن كرانے مي الل سنت كى طرف سے بر دوسرے تيسر نے روز بڑے بڑے پوشر چھپتے تھے جن ميں "مولانا عبدالشكور مناوتى" كى تقريروں كا اعلان ہوتا تھا۔ ادارة تنظيم المونين ( لكھنؤ) كوان كے مقابلے كے لئے كى فاروتى كى ضرورت تھى ۔ قرعه فال ذاكر حسين كے نام پر پڑااوراب شيعوں كى طرف سے" مولانا فاكر مسين فاروتى كى ضرورت تھى۔ قرعه فال ذاكر حسين كے نام پر پڑااوراب شيعوں كى طرف سے" مولانا فاكر حسين فاروتى "كى تقريروں كے پوشر نكلنے كے اور بينام اس طرح چپكا كه دوآ خرعمر تك فاروتى رو

وولی اے کر کے روز نامدانقلاب (جمبئی) کے سب ایڈیٹر ہوگئے۔ 191 میں مشرقی افریقہ فالریک کیلئے بلائے گئے۔ اس کے بعدانھوں نے سپریم کا وُنسل کی طرف سے زنجار، ٹا نگا نیکا، کینیا اور یوگانڈ اکا دورہ کیا۔ اور کا وُنسل کیلئے دینیات کی پانچ کتابیں اردو میں تکھیں (بید کتابیں کا وُنسل کی طرف سے کرا چی میں چھییں) ان سب کا موں میں وہ ایک سال سے زیادہ مشرقی افریقہ میں مقیم رہے۔ پھر جمبئی واپس بطے گئے۔

انھوں نے بمبئی یو نیورٹی ہے ڈاکٹریٹ کرنے کی ایپیش اجازت حاصل کی ( کیونکہ وہ صرف بی اے بی ایپیش اجازت حاصل کی ( کیونکہ وہ صرف بی اے بی ان کاموضوع تھا'' مرزاد بیر کے تلانہ و' اس تحقیقی کام کے بعد وہ ڈاکٹر ڈاکر حسین فاروقی پی آئے ڈی ہوگئے ۔ وہی کتاب'' دبستان دبیر'' کے نام نے متعدد بارچیپ پیکی ہے۔ ان کا ایک اور شاہ کار ہے'' فتح مین' اس میں بید کھایا ہے کہ کر بلا میں اصل فتح حسین اور

تکالتے تھے۔ ای پر چدیش آپ کے نام کے ساتھ" سابق ایڈیٹر اخبار امامیہ بکھنٹو" کھھا ہے۔ اس طرح مختف اوقات میں ان کے زیرادارت نکلنے والے دواخباروں اور ایک ماہنامہ کا پید چاتا ہے۔ تصاففہ:

- (۱) نج البلاغة كاردور جمد" نير مگ فصاحت" كام سے كيا جو مطبع يوسنى، دبلى سے شائع ہوا۔ سند طباعت درج نيس بے ليكن اس كا ايك نسخد اكتوبر والوار ميں زنجار يُنج چكا تھا جو اب مير بے پاس بے۔ بير جمد ٥٩٠ مغات پر شتل ہے۔ اس ميں عربي متن نبيس ہے۔
- (r) ان کی ایک اور مختفر تالیف" خوناب اشک" میرے پاس ہے جو برکات محرم فنڈ کے سلسلے کا آخوال رسالہ ہے۔ یہ اسسال میں مطبع ہوشتی ، دبلی ۔ ے شاکع ہوا تھا۔
  - (٣) الذريع جلد ١٣ ين ان كي ايك تعنيف" سرة فاطمة الصديقة" كاذكر ملك ب-
  - م) الذريدي عن ان كاك اور سالة مار عراقتي كي شان "كاذكر ب-

ما حظ:

الذر بعد میں ایک کتاب کاؤکر ملتا ہے: " فتح الغالب فی روشرح المطالب" جس پر بہت سے علی می تقریف میں اور اس کے مصنف کا نام ہے:

سيد ذاكر حسين بن السيد احد حسين اللكھنوي الطبيب الخصوص لمتاز الملك المير زاجعفرعلي

"

یہ کتاب و سیایی چی تھی مصنفوں کے وطن کی نبتوں کے فرق (مجریلوی اور لکھنوی) سے گمان قوی ہوتا ہے کہ بید و ملیحہ و مجتمعیتیں تھیں۔

16

#### ذيشان حيدر، جوادي، علامه

HEADES.

Fees/IFF

<u>۱۹۲۵ یا ۲۹۱ میں</u> وہ ہندوستان واپس آئے اور ایک عرصہ تک مظفر پور (بہار) کی کمرہ جامع مجد میں پیش نماز دے۔

تری کام آپ نے زبانہ طالب العلی سے شروع کردیے تھے۔ موسوف کے صاحبزاد سے سیداحیان حدید جوادی صاحب سلمہ نے اپنی مضمون ' والدعلام کی پہلی کتاب' (شقیم الکا تب) میں بی خیال ظاہر کیا ہے کہ مرحوم کی پہلی کتاب' ترجمہ کتاب سلیم بن قیس' ہے جوانھوں نے د' اوائل دورطابعلی میں کیا تھا' اس کے مقد ہے کے خاتمہ پرذ کرشدہ تاریخ کیم ڈیقعہ والم سااھ ہے (یعنی لا ماہر بل ۱۹۲۲ء)۔

جوادی صاحب سلمہ نے ای مضمون میں بیلکھا ہے کدان کے والد مرحوم کی تحریر کردو کتب (تصنیف وتالیف یاتر جمہ) کی تعداد تین سوے زائد ہے۔لیکن بدشمتی سے اکثر کتا ہیں تایاب ہو پھی حسین والول کی ہوئی تھی۔ راقم الحروف سے بہت تاساز تعلقات تھے۔

( وَاتِّي معلومات )

## ذوالفقارعلى ،رضوى عظيم آبادي

ATT W/ITT 9 W

میرے کتب خاندریاض معارف میں ایک مخطوط ہے۔ زادالعاقب ۔ ویکھنے ہے معلوم ہوا
کدسید و والفقار علی رضوی عظیم آبادی نے علامہ مجلی کی زادالمعاد کا اردو میں ملحض ترجمہ کیا ہے۔ کیم
رجب و سیرا اوکو پر ترجمہ تمام ہوااور ہم رجمادی الاولی سیریا اور مطابق ۲۰ راگت ۱۳۳۵ فصلی کو ایک کتابت تمام ہوئی۔ کا جب نجف علی تھے جن کے لکھے ہوئے بہت مے مخطوطات میرے کتب خاند میں محفوظ ہیں۔

سید ذوالفقار علی محلّہ گولک پور عظیم آباد کے رہنے والے تنے اور غالباً کتاب کی کتابت کے وقت زعرہ تنے۔ اس سے زیادہ کوئی حال معلوم نہ ہوسکا۔

اللَّهُ إِو يَس الْحُول في كار فير معنى اور تظيم في وزكوة نامي ووادار عالم ك جن ك ذربيدال روت عصقق شرعيه حاصل كرك نادار موشين كي حاجتي بوري كي جاتى بين مدرسة انوارالعلوم جامعدامامیدالدة بادیس ان کی مستقل یادگار ب جوان کے بوے صاحبز ادے مواناتاسید جوادالحيد ري ساحب سلمدي مديريت من رق كررباب-دواعلى درجك شاع عظ كليم كلس كرت تفے کلام کیم ،سلام کیم وغیرہ مجبوعیان کی بادگار ہیں۔

انقلاب اسلامی کے بعد ایران کے علمی طقول میں آپ کا بہت وقار تھا۔ لندن اور ایران میں منعقد ہونے والی اسلامی کانفرنسوں میں آب ہیشہ بلائے جاتے تھے اور قصیح عربی زبان میں آب كالقريرين بهت زياده پسندكي جاتى تحيين-آب كى دفات ے كچيم صقبل رجر انقلاب اسلائ آية الله سيوعلى خامنداي وام ظلدني آب كومهار اشتر اورجنوني مبندوستان كے لئے اپنا نمائند ومقر ركيا تھا اور اسبب ے آب ابرظمی چھوڑ کرممی معلل ہوئے تھے۔ وہاں برآب نے ادارة اسلام شنای قائم كيا

جب آب ابرطمی مے ممئی کیلئے روانہ ہوئے تو الل ابوظمی نے آب سے وعد و لیا تھا کہ محرم كعشرة اولى اورشب ا ٢ رمضان كى جلسين آب ابظى من يرساكرين ك\_اس وعده يرشل كرت ہوئے آ با س کے عرم میں بھی ابوظمی گئے تھے۔عاشور کے روز صب معمول اٹمال کرائے بھلس شہادت بڑھی۔ نمازظہرین بڑھائی۔ جلوس عزاکی قیادت کی۔ فاقد ملنی کے بعد آب استراحت کیلے اہنے داماد کے گھر چلے گئے۔ وہال طبیعت خراب ہونے لگی تو ایمولینس کے لئے فون کیا گیا۔ جب تك ايمبولينس آئے حسين كابيذ اكر حسين كى بارگاه ميں پنج حكا تھا۔ وہ عاشور كادن تھااور دوسرے دن جب الدة باديش سير دلد كيئ محة ووجى مندوياك ين عاشوركادن تعا-

جنازہ ہوائی جہاز کے ذریعہ دیلی اور وہاں سے تلعنو پہو نچا۔ تلعنو سے جیب کے ذریعہ ال

ابوطالب موس قريش (استادعبدالله نعيزى كي تفنيف) كار جدافول في ١٩٦٥ مين يدرودن كاعركياتا-

انحول في سيد باقر العدر شهيد كى كتابول- اقتصادنا اور البنك الاربوى في الاسلام اور فلسلتا \_ كرت ع ك \_ استاد آية الله حيد ركى الامام الصادق والمذاب الاربعة كالرجم، جمة الاسلام و عدى ري شرى كام في كتاب كاترجمه (ابليت عليم السلام كتاب وسنت كي روشي بيس)، شخ صدوق کی کتاب الضال کا خلاصہ (انوارعصمت)، شخ مفید کے فلیفہ حسین بن محر حلوانی کی کتاب نزية الناظر وحيد الخواطر كا ترجمه (تبذيب قلب ونظر)، علامه سيد مرتضى عمرى كى كتاب معالم المدرسين كي پيلي جلد كا ترجمه (مكاتب خلافت وامامت كے امتيازي نشانات) اور دوسري اور تيسري جلد کی تنخیص وتر جمہ ( خطائے اجتبادی کی کرشمہ سازیاں )،استاد احمر صبین یعقوب کی نظریۃ عدالیۃ الصحابة كاترجمه (نظريه عدالت صحابه)، علامه امني كي سيرتنا وستَّنا كاترجمه (جهاري عزاداري) بدان كے چداہم رہے إلى بوب كيس شالع موسك إلى-

ان كيد يكرتفنيفات من جو چندنام جي السكوويد بن:

انوار القرآن ، اصول وفروع ، مين منى ، خطائ اجتبادى، ذكر وفكر ( تين جلدول مين ) عقيده وجهاد، مجموعه احاديث قدسيه (تالف وترجمه) مطالع قرآن يد

خطيب اعظم مولانا سيدغلام عسكرى صاحب مرحوم كى دوى آب وتحييج كرادارة تنظيم الكاتب على الله في جبال آب يمل مين عمير ب إلرنائب مدراورا خري مدارت كيك مخف ود. ادارہ کے اخبار عظیم الکاتب (بدرہ روزہ) میں مسائل کے جوابات کا ایک صفحدان کے لئے تخصوص

# راحت حسين ،سيد، كويال بوري

יווט לפונים

صدرالمشرین آیة الله مولانا سید راحت حسین رضوی این وطن مالوف و پال پور می ۵ رجب کو ۱۱ اور ۱۲ ارجون و ۱۸۸ و پیدا ہوئے۔ آپ کے والد کانام سید طاہر حسین اقا۔ آپ کا تاریخی نام سید حیار رضا تھا۔ وطن میں ابتدائی تعلیم کے بعد آپ کچھو ہ گئے جہال سید حسن با خدا سے کب فیفل کیا۔ پھر تااتا ہ میں مظفر پور تشریف لے گئے جہال مدرسا کاندیش داخل ہوئے۔ وہال آپ نے مولوی سید خالق بخش صاحب مدرس دوم سے شرح مایة عالی ، اور مولانا سید محرم میدی صاحب بھیکیو ری مدرس اعلی سید وہات ایش اور شرح جائی اور شرح تہذیب بڑھی۔ مولانا سید حابد حسین صاحب بھیکیو ری مدرس اعلی سے ابواب البحان ، شرح جائی اور شرح تہذیب بڑھی۔ مولانا سید حابد حسین صاحب بھیکیو ری مروک کی معجد میں امام جعد و جماعت تھے آپ نے ان سے قبی ، میبذی، شرائع الاسلام اور معالم الاصول کا درس لیا۔ مولانا سیدنظر حسن صاحب بھیکیو ری بڑھن پورہ (برہم شرائع الاسلام اور معالم الاصول کا درس لیا۔ مولانا سیدنظر حسن صاحب بھیکیو ری بڑھی نیز شرح المد پورہ) کی معجد میں امام جماعت تھے۔ آپ نے ان سے ملاحسن اور مختفر المعانی پڑھی نیز شرح المد کتاب الج تک کا درس لیا۔

بڑھن پورہ کے قیام کے دوران وہاں مدرسہ ایمانید (نواب کو نظے صاحب مرحوم) میں مدرس اول بھی رہے۔ وہیں قاری مرزامحد صاحب سے قر اُت اور نواب عمد وجان صاحب سے حاب سیکھا۔ نیز بجائے خود طب کی قاری کیابوں کا اس طرح مطالعہ کیا کہ معمولی امراض کے شیخ مجویز کرنے پرقادر ہوگئے۔

لكسنو مي مدرسة سلطان المدارس قائم موا (عهداء مي جو ١٢ - السلاء كم مطابق ب) وسلاء مي مولانا سيدعابد حين صاحب كوكسنو بلايا كيا- اورسلطان المدارس كامدرس ووم ينايا حميا- آبادلایا گیا۔ جہاں اسلامیدائز کا لی کے میدان میں ججہ الاسلام مولانا سیدعلی عابد صاحب نے تماز جناز ویر حائی اور دریاباد کے قبرستان میں آپ کو سرولد کر دیا گیا۔

عاري وفات على وارج ما ١٣١١ مطابق ١٥١ماريل ووو ١١٥١ماريل كوتد فين بولي-

راحت حسين ،سيد

مولانا سیدراحت حسین کے والد ماجد جناب می البند کیم مولوی سید حسین صاحب شمرہ افاق طبیب تے۔ جن کا سلسلہ نب جناب حسین الاصغرابین امام زین العابدین علیدالسلام تک پہنچتا ہے۔ آپ نے وی تعلیم مولانا سیوعلی جواد صاحب سے حاصل کی تقی ۔ فن طبابت میں بھی مہارت تامہ حاصل تھی۔ بہت خلیق اور بامروت تھے۔ تامہ حاصل تھی۔ برت خلیق اور بامروت تھے۔ میت خلیق اور بامروت تھے۔ میت خلیق اور بامروت تھے۔ میت فلیق میں زیاد کی ماجیز اور کی ماجیز اور کا سے مولی تھی۔ آپ کی شادی پارو (ضلع غازی پور) کے مید تھے موالے کے مید تھے۔ اس کی شادی پارو (ضلع غازی پور)

- (١) يزے بي عيم سيد سيان فوقتر مروم ثاويخ (ضلع جو نيور) مي رہے تھے۔
  - (٢) دور عيضيد على حادث في إكتان علي كا.
  - (٣) تيرے ج عليم بيد حادثين ين مولى يل تھ۔
  - (m) چے بیے سرولی میں عالم شاب میں انقال کر گئے۔

مولوی سیدفردت حسین صاحب بناری مرحوم آپ کے حقیق بھا نج تھے۔ مولانا الغیراستخارہ کوئی کام زکرتے تھے تی کرم یعنوں کونیز بھی استخارہ کے بعد تجویز کرتے تھے۔

IOT

وساوايل عليحده موكروطن من مقيم موع تب يحى يبي سلساريا-

استاذ الواعظين مولانا سيدعديل اخر صاحب (پرلسل مدرسة الواعظين) في ٨ رشوال مرسة الواعظين) في ٨ رشوال مع ١١ (= ١٣ جولائي ١٩٥١) كوانقال فرمايا - چندمهينوں بعدمولانا سيدراحت حسين صاحب قبلاكو مدرسة الواعظين كاپرلسل نيزمتولي نشظم بنايا كيااورتقر يباً پاچ سال تك آپ في يودمت انجام دى - جب ذيابيطس كرم فل في مجور كرديا تو وطن واپس آگئے - اور چندمهينوں كه بعد ٢٦ رمضان ٢٧ جب ذيابيطس كرم فل في محدور كرديا تو وطن واپس آگئے - اور چندمهينوں كه بعد ٢٦ رمضان ٢٢ ساز (٢١ مرابيريل ١٩٥٧) بروز جعدر صاحب فرمائي -

آپ کارسالہ عملیہ (اردو) توشئہ فرت حدود وہ اللہ میں چھپا تھا۔ اس کے دیباچہ میں اللہ عملیہ (اردو) توشئہ فرت حدود وہ اللہ میں چھپا تھا۔ اس کے دیباچہ میں آپ کے اس وقت تک کے مفصل سوائح حیات اور تصنیفات کی فہرست درج ہے۔ بعد کے حالات یہاں ذاتی معلومات کی بنیاد پر لکھے گئے ہیں۔ (مولانا مرحوم کی چھوٹی صاحبزادی کی شادی میرے چھوٹے ماموں سیدسیط صن صاحب مرحوم عشر دی ہے ہوئی تھی۔)

آپ کے تمام تصنیفات کا بہاں درج کرنا طول مل کا باعث ہوگا اس لئے چندا ہم کتابوں کا ام کھندر ہاہوں۔

(۱) تغییر انوار القرآن۔ اردو میں بیتغیر پہلے مولانا سید اظہار الحنین صاحب عشروی (پدرس اعلی مدرسہ اسلامیہ کچھوا) کے زیر اہتمام اصلاح پریس کچھوا سے ماہوار رسالہ الشمس کے نام سے چھی تھی یعنی چاپس صفح تغییر کے ہوتے تھے۔ ان پر اشمس کا ٹائھٹل لگا دیا جا تا تھا اور خریداروں کے نام بھیجا جا تا تھا۔ جب مولانا راحت حسین صاحب وطن آ کررو گئے تو ایک مومن نے ایک دئی پریس آپ کو ہدیہ کیا اور تفییر کے صفحات (۴۰ معنی ) ای طرح ماہوار چھیتے رہے۔ مقدمات انوار القرآن تنفیر سورہ فاتحہ مورہ بقرة اور آل عمران کی پھوآ بیتی شائع ہوئیں۔ معلوم نیس کتا حصہ فیر مطوع درہ گیا۔

مولانا راحت حین صاحب بھی ای وقت تکھنؤ چلے گئے اور مدرسہ مذکورہ میں داخل ہوکر تحصیلات کا سلسلہ جاری رکھا۔ نیز سلطان المداری میں مدری بھی مقرر ہوئے۔ تکھنؤ میں آپ نے جناب باقر العلوم اور جناب عابد حین صاحب سے کسب فیض کیا نیز جناب علیم سیدا میر حسین صاحب سے طب کا دری لیا۔

ماوذیقعدہ سیستا ہیں اپنے ضرمعظم مولانا سید شار حسین پالوی ٹم حیدرآبادی کی تحریک و سیستا ہوئی گئریک و سیستا ہوئی کے گئے۔ وسیستا ہوائی کے باکہ وطن والیس آئے۔ مجموعاً نوسال نجف میں قیام فرمایا۔ اس عرصے میں جن حضرات سے فیض حاصل کیاان کے اسائے گرای ذیل میں درج کئے جاتے ہیں:

آ قائے شخطی گونابادی، آقائے ملارضا، آقائے مرزافیرعلی رشتی، آقائے سیدمجریزدی، آقائے سیدمجریزدی، آقائے سید احمد آقائے سید حسین بروجردی، آقائے شید احمد احمد الله من اصلبانی، آقائے سید کاظم خراسانی، آقائے سید کاظم یزدی طاب شراہم۔

ان میں سے اکثر حضرات نے آپ کوردایت اور اجتہاد کے اجازے دیے۔ آپ فقہ و
اصول فقہ کے علاوہ علم رجال اور درایۃ الحدیث میں فخر روز گار تنے اور تغیر قر آن کا خاص ذوق تھا۔
مول فقہ کے علاوہ میں جب عراق پر (جو اس وقت ترکی کے قبضے میں تھا) انگریزوں نے حملہ کیا تو
مولانا راحت حسین صاحب بہزار دقت اہل وعیال کے ساتھ صغر ۱۳۳۳ ھ (= دعمر 1910ء) میں
مولانا راحت حسین صاحب بہزار دقت اہل وعیال کے ساتھ صغر ۱۳۳۳ ھ (= دعمر 1910ء) میں

آپ کا قیام ریاست حسین آباد (طلع مولیر) میں رہا۔ تصنیف و تالیف اور مطالعہ کت یکی دو دود دور یہ آپ کی زندگی کا محور تھیں۔ چنا نچے حسین آباد میں بھی یہی مشغلہ رہا اور جب وہاں سے صدود

# راحت حسين ،سيد ، بهيك يوري ،

. MANGET . .1901/51744

ابوالخليل مولوي سيدراحت حسين صاحب بحيك يوري (ابن مولوي سيد مخد ابراتيم متوني صفر و ساه) كيم حم ال اله (= ٤ رسم ١٨٨٨) كوطن مالوف على تكر جبك يور ( ضلع سارن ) من پیدا ہوئے۔ تین سال کے تھے کہ سائے بدری سے محروم ہو گئے۔ ابتدائی تعلیم کے بعد آپ نے اپنے خالومولانا سيدمجر مبدي صاحب لواعج الاحزان كي سريرتي مين مظفر يوريش عربي وفاري يرهي \_ پجر مدرسه سليمانيد (بينه ) مين مولانا حافظ سيدفر مان على صاحب عدكب فيض كيااور ٢٢ ساره من سلطان المدارس (للحنو) بنجے-اور مسسل هيں فارغ التحصيل ہوئے-آل انڈياشيعة كز ف عدر مقرر موے۔عراق واران کی زیارتوں سے مشرف ہوے۔ رام پور میں مولانا مقبول احمد ساحب کی سر برئتی میں مولوی فاصل کا کورس بورا کیا۔

الساسا هيں اخبارا ثناعشري كيدر موئ وسي اهيں وطن واليس آئ ال كے كچھ عرصه بعد مجرات اور کا تھیا واڑ ملے گئے جہاں امام جعد وجماعت کی دیثیت سے خدمات آخر عرتک انجام دیتے رہے۔ اوائل جون ١٩٥٨ء میں مجرات سے وطن آ رہے تھے کانپور اسٹیٹن پر پانی ہے کے لئے انڑے غالبًالولگ عمی اورو ہیں انتیشن پر انتقال فر مایا۔ ریلوے کے ذمہ داروں نے مسلمانان کا نیور کوخبر کی جنھوں نے اپنے طور سے جبینر وتلفین کرکے ڈن کردیا۔ تاریخ وفات ۵ رجون ۱۹۵۸ ومطابق ١١ ر ذيقعده ك ١٢ هدوز پنجشنه ب جبيا كه آب كے صاحبزادے مولانا سيطيل عباس صاحب

مضامين نكارى كاذوق وشوق تها يجلسين يزعن كاانداز بهت دليس تعار (الجمن وظيفة سادات وموثين كولدن جو بلي غيروذ اتى معلومات)

(٢) مرشدامت ( جارجلدول مين ): يدكتاب مولانامرهم كي نظرون مين باعدايميت ر محتی تی بھی سے مذہب شیعد کی حقانیت اور دوس فرقوں کا بطلان روز روثن کی طرح واضح ہوجاتا تھا۔ اوار واصلاح مجھوائے بیک اب مولا نامر حوم سے چھائے کے لئے ماتی اور کی برس تک اپنے پاس ر کھ کروائی کردی۔اب بھی غیر مطبوعہ۔

(٣) زندگی کے آخری دور میں آ ب علم رجال پرایک مفصل تحقیق کتاب و بی میں تصنیف فرمارے تھے۔(اس کانام ذہن سے نکل گیاہے) مینا تعمل روگئی۔

(m) : 190 م كالك بحك جبآب في زيارت كى غرض عراق وايران كاسفركيا تو آیة الشاعظمی سید حسین برد جردی نے آپ سے فرمائش کی کدایے کچھ تصنیفات کوم بی میں منتقل کیجئے تا كدايران وعراق كي لوگ متنفيد بول اوريبال كي على موآب كي جلالت قدر كا ادراك بو - وطن آ كرآب نے اسے تقنيفات ميں سے بارہ ايے رسالوں كوجن كا فقد استدلالى سے تعلق تفاعر بى قالب میں و حالا اور الا تناعشریة کے نام سے یکھائی شائع کیا۔ اور علماء ایران وعراق کے یاس بھیجا۔

دومری کتابول کے نام جواس وقت پیش نظر ہیں حسب ذیل ہیں:

قاطع لجاج ورميراث از واج (اردو)، الغناء والاسلام، تعدية الكاح (عربي) الانتصار في حرمة الادبار (اردو) ، بسط اليدين (اردو) سبيل الهدى في فضائل العلم والعلماء (اردو) جواز بكابرسيد الشبداء (اردو) حسين اوريزيد كالمخصيت دنياكي مذابب مي (اردو) وغيره

آپ کا زندگی زیاده رحین آباداورگویال پورجیسی کورده جگہوں میں گذری اورآپ نے زیادہ تراردد میں کیا بیل کھیں۔ان دوعوال نے آب کوشہرت ومقبولیت کی اس بلندی تک ندی بینے ویا المات في عد

(دياچ توفية فرت وذاتي معلومات)

\$0000000000

راقم الحروف نے آپ سے ایک سال تعلیلات گرمایش از صارالعرب پڑھی تھی اور جولائی معن اور جولائی معن اور جولائی میں آپ تی کے کمرویش رو کر مدر سلیمانیہ سے فوقائی کا امتحان دیا تھا۔ پلنداور لکھؤی میں آپ کے تلافدہ کا احساء کرنا بہت دشوار ہے۔
فقد کی ایک کتاب مجراتی زبان میں (مطبوعہ) آپ کی یادگار ہے۔

#### اولاد

آپ کے بڑے صاحبزادے مولانا سیدلیافت حسین صاحب (ممتاز الافاضل، سابق واعظ مدرسة الواعظین) اب مجرات میں مقیم بیں۔ دوسرے صاحبزادے مولانا سید اطافت حسین صاحب (صدرالافاضل) مدرسسلیمانید (پشنه) میں نائب مدرس اعلیٰ بیں۔

(زاتی معلومات)

#### رضاحسين،شاه،سيد

مدود ۱۹۷۵ ماره ۱۹۷۵ م

مولوی الحاج سیدر صاحبین شاہ مرعوم خاص بنگو کے رہنے والے تھے۔ آپ نے بزرگوں سے ضروری ند ہی تعلیم حاصل کی۔ فوج میں صوبیدار تھے گرریٹائر ڈ ہونے کے بعد بنگو میں مولوی کے فرائض سرانجام دیتے رہے۔ فرائض سرانجام دیتے رہے۔ فرائض سرانجام دیتے رہے۔ فرائض سرانجام دیتے رہے۔ فرائض سرانجا کا عضر نمایاں تھا۔

# رسول احر،سيد، گويال پوري

وویا هر دورا، مولانا سیدرسول احمداین سید حیون احمداین سیدلیا فت حیون کا وطن گوپال پور (بهار) میں مولانا سیدرسول احمداین سید حیون احمداین سیدلیا فت حیون کا وطن گوپال پور (بهار) میں بیدا ہوئ۔

ارتدائی تعلیم وظن میں حاصل کرنے کے بعد مولانا سیدراحت حیون صاحب قبلہ گوپال پوری کی سر پری میں داخل میں حین آباد (منطقع موظیر) میں تحصیل کرتے رہے۔ اس کے بعد مدرسدایمانیہ (بناری) میں داخل موعی کے داور موعی کے داور مولی کا امتحان پاس کرکے وہیں مدرس ہوگے۔ اور وہیں کام کرتے ہوئے رہاں کام کرتے ہوئے ہواں میں ہوگے۔ اور مدرست خورہ میں کو میں ایس کے۔ مدرست خورہ میں کی مرکز ہوگئے جہاں وہ اور ایس کے۔ مدرست خورہ میں بال میک گرات میں مہوا اور بھاؤ گرکی خوجہ جماعتوں میں بطور عالم دین رہے۔ وہوا میں بھور عالم دین رہے۔

19.7 61FF

المرام المرام على جب مرض كى شدت على اضافه موا تو وطن آگئے اور يمين ۱۳ رمحرم الحرام على المرام المرا

راقم الحروف ك والد ماجد مولانا سيد ابو الحن صاحب مرحوم سے آپ كے بہت گرے روابط تھے۔ چناني والد مرحوم نے انھيں كي فرمائش پر كو پال پور كي عيد كاه بنوائي كيكن تعمير كي كراني انھيں برق الحاقق ۔ جے مرحوم نے باحن وجوہ پوراكيا۔

TOA

(r) سبيل الرشاد (اردو): ١٥ صفي كاليرسالداس شبك جواب على بكرة يت وضوي "الى الرافق" من الر" الى" انتاك لئے على شيد كنى عدون كى ابتدا كول كرتے إلى -

(٣) بنيان مرصوص (مضبوط بنياد) (اردو) ۲+ ۱۴ صفى كابدرسالداس عديث كي تشريح بيس ب- كداجمع احتى على الشوالة بدونون رسال ١٤ مردي الاول والم الحروكات الحديد

نہارید بہارید (اردو): اہل سنت کے ایک اعتراض کے جواب میں ہے۔ چونکہ طلوع آ قآب سے فروب تک میں بدرسالہ بورا ہو گیا۔ اس لئے اس کا نام نہار بدر کھا گیا۔ اس کے ۲۴ رصفیات میرے مجموعہ میں ہیں۔ لیکن بدنا مکمل ہے۔ ممکن سے ۵ریا اس صفح اور رے ہوں جوضا کع ہو گئے۔

قران السعدين في حقوق الزوجين: مرزا رضاعلي كي اس كتاب كاذكر الذرايد مين ماتا ہے۔

كلمة الفصل: ميرعنائية حسين ( ملازم رياسة محودة باد ) في ١٣ اله عيم ملحض الاحاديث نام كا بني تالف للحور عشائع كتفي جس عصادر من مرزارضاعي صاحب كي "كلمة الفصل" بحى شامل ب\_اورىيكها بكريدسالد بنوز جها يانبيل كيا-(اس كااستدراك كتاب كة خريس ديكهيس)

#### رضى الدين

جناب مولانا سيدرضي الدين صاحب مرشد آباديس مقيم تقے اور 1910 و كي شيعه دينيات کی میٹی میں شامل تھے۔

(ما بنامه شيعه، جون 1910 م)

آب سط مولوی تف که موشین بقش کونماز باجهاعت پر اهانی - دور در از سے موشین آپ کی نماز جدين آكر شركت كرت تقدمونين بقش آب يفي عاصل كركائي عاقبت سنوارت آب نے ٨٨ رسال كى عرض وفات يائى اورائي قبرستان يس ابدى نينوسور بي بي -(يام على لا بور، تمبر (2010) نوك: ٨٨٠ رمال كى عرب الدار موتا بكرآب مع ١١٥ ما ١٨٩٠ ميل بيدا موك שננפחום ח-דוחום

رضاعلی ،مرزا

مولوی مرزارضاعلی صاحب کے حالات تو معلوم نبیں لیکن ان کی چار چھوٹی بری تصنیفیں میرے کتب خاندریاض معارف میں موجود ہیں۔ جن سے اندازہ ہوتا ہے کہ وہ صاحب علم وصل

رسول اسلام ے لے رفیب کبری تک کی تاریخ ۔ اس کا سال تعنیف ۱۲۸۸ ه اور كابت كى تاريخ عاردى الحب سوساد عكاتب كانام بدم زامحد رضاعلى ابن مرزا محرفضل على ممكن سے يه مصنف كابي يورانام مع ولديت مو-اس كے علاوه ايك مجموعه بين ان كے تين جيو في جيوف رسالے بخط مصنف موجود ہيں۔

حیین انٹر کالی ہو چکا ہے آپ آل انٹریا شیعہ کا نفونس کی مجلس عالمہ عظم میر ، یو پی اسٹیٹ شیعہ کا نفونس کے جز ل سکریٹری شیعہ دقف بورڈ اور امامیمشن کے ممبر بھی رہے۔

تصانيف

رسول کی بیٹی بھیفدرسول، مسین، گرید کے متعلق علائے نفسیات کے قباوی، کتاب انسا نیت کے ممشدہ اور اق مسلم ابن عقیل، افریقہ کی ڈائری (پیسب کتابیں مطبوعہ بیں)

فيرمطبوعه

امریکہ کی ڈائری، سفر نامہ ج ، یادوں کے چراخ ، شم رسالت اور اس کی کرنیں ، علی کے خطوط معاوید کے نام

١٩٨٣ و حسوم اله ) من و بلي مين انقال فرمايا

(الجمن وظيف سادات دمونين و المنذجو في نمبرو اتي معلومات)

رضى حسن

مولانا سندالعلماء مولی سیدرضی حسن جائسی، امام جمعه و جماعت جائس، کا ذکر رساله الشهید (آگره) ماه صفر ۴۳ ۱۳ هیس ملتا ہے۔

رضى الدين حيدر، اله آبادي

19AF/18+F

**POODOOOOOOO** 

جب مولوی رضی الدین حیدرصاحب کے والد ماجد جناب احرحیین صاحب نے انتقال کیا اس وقت رضی الدین حیدر بہت کم من عقے آپ کے نانا نواب سراج الدین احمد خال (چھوٹی رائی صاحبہ بلیمر و کے بھائی ) نے لکھوٹو میں و کچھ بھال کی، چیسال کی عمر میں آپ الدآباد چلے گئے دی سال کے تقے کہ والد و کا سایہ بھی سرے اٹھ گیا تب آپ کی نانی صاحبہ نے آپ کی پرورش کی۔

888888888888888888888888888888888

قاری، عربی کی اعلی تعلیم حاصل کرے آپ نے ۱۹۳۵ء میں بی اے اور ۱۹۳۷ء میں ایم اے (عربی) کیا۔

۱۹۳۸ میں ماموں کی بیٹی سے شادی ہوئی، ۱۹۴۴ میں اہلیہ نے داغ مفارقت دیا ایک بی ایک اوگار چھوڑی۔ بائیس سال بعد عقد ان کیاان سے بھی ایک از کی ہے۔

۱۹۲۷ء میں آپ بلز قیکس ڈپارٹمنٹ سے بحثیت انسکٹر وابستہ ہوئے اور جنوری ۱۹۷۷ء میں سکدوش ہوئے۔

ابتداش آپ نے مجلسوں میں انیس ودبیر کے مراثی پڑھے۔ پھر ذاکری شروع کی اور جلد علی استخصر ذاکروں شروع کی اور جلد علی استخصر ذاکروں میں شارہونے لگا ہندوستان کے چھوٹے بڑے شہروں میں مجلسیں پڑھیں۔ 24-191ء میں خوجہ شیدا شاعشری سپر یم کا ڈنسل کی دعوت پر تائز انیا اور کینیا میں مجلسیں پڑھیں۔ 24-1921ء میں شخص انگلینڈ اور امر کید کے مختلف شہروں میں ہتا تا اسلام اور مصائب امام بیان کئے۔ 1924ء میں شج

يلية بدرساعاني (الدآباد) كمكريش مقرد موع بددرسرق كركابيادكار

# روش على، شخ

1940/100

مولانا شیخ روش علی صاحب ملیبار پور (ضلع سلطان پور) کے باشندے تھے آپ ۲۰ ارمضان المبارک ۱۳۵۳ ہ مطابق ۵، فروری ۱۹۳۸ ، کو پیدا ہوئے تھے ابتدائی تعلیم کے بعد مدرسہ ناظمیہ میں داخل ہوئے جہاں ہے ۱۹۵۸ ، میں ممتاز الا فاضل کی سندحاصل کی۔ ۱۹۵۹ ، میں نجف اشرف تشریف لے گئے اور وہاں ہے واپس آ کر مدرسہ ناظمیہ میں مدرس ہوگئے ۔ یہ بات قابل ذکر ہے کہ آپ دوران طالب العلمی میں بھی مدرسہ فذکورہ میں قدرلیں فرماتے تھے۔ ناظمیہ کے بعد مصبیہ عربی اسکول (میرشد) میں رئیس رئیس رہا ہے۔

تلانده

آپ کے شاگر دوں کی ایک کثر تعداد ہندو پاک میں پھیلی ہوئی ہے چھرنام جو بہت نمایاں بیں یہاں درج کئے جاتے ہیں۔ جناب ادیب البندی (لکھنو)، جناب سید ذکی باقری (کنیڈا)، جناب سید منظور محسن، ڈین شیعہ تضیالو جی (علیکڑھ)، جناب سید ناظم علی خیر آبای، جناب سیر صفی حیدر (سکریٹری بخظیم المکاتب کلھئو) وغیر ہم۔

3.17

آپ نے تقریبا اٹھارہ کتابیں عربی وفاری نے اردو میں ترجمہ کرے شائع کیں جن میں جیتی موسوی لاری، محمد تیجانی سادی، علامہ محمد مہدی آصفی اور ساز مان تبلیغات اسلامی کی کتابیں شامل ہیں۔

ر فیق علی ،سید

متاز العلماء سيد حرتق صاحب طاب راه ك شاكردون بين مولوي سيدر فيق على كانام ملتاب-

رمضان على مشخ ،مبار كيوري

· IAIC/SIFF9 U

مولانا قاضی اطهرمبار کیوری فی شیر وظیب تذکر وعلائے مبارک پوریش لکھا ہے۔
مولانا رمضان علی صاحب پنجاب کے علاقے سے مبارک پورآئے۔ اثنا عشری فدہب کے
عالم ومعلم اور مبلغ تھے۔ شاہ محد پور (مبارک پور) میں امام باڑہ تعمیر کرایا (امام باڑہ شیخ دمضان علی)
1874 ھے بیٹ مسلمانوں کا قلعہ بندمور چہ ثابت ہوا۔ 1879 ھے پہلے انتقال فرمایا۔

### روح الله، مفتى، جو نبورى

مفتی سیدروح اللہ جو نپوری مفتی سیدمبارک جو نپوری کے فرزند سے یہ جو نپور کے جلیل القدر
علما میں سے تمام علوم میں مہارت رکھتے سے اور علوم عقلیہ وتقلیہ میں استادا فددرجدر کھتے سے ان کے
تمام جھیلات ان کے والد ماجد سے سے ۱۹۹۸ ھیں اپنے پدر ہزرگوار کی وفات کے بعد جو نپور کے
مفتی مقرر کے گئے ۔ اور مورد فی خانقاو میں بچاد فشین ہوئے ۔ پوری زندگی درس وقد رئیس میں گزاردی
اور بہت سے تلافدہ کوفیض پہنچا یا سال وفات معلوم فدہ و سکا جو نپور میں وفن ہیں ۔
اور بہت سے تلافدہ کوفیض پہنچا یا سال وفات معلوم فدہ و سکا جو نپور میں وفن ہیں ۔
(جملہ نیوم السمار بعلداول میں۔ ۱۳۔ ۱۳۔

DE

Excess excess

# زابد حسين شخ بناري

. IAIT SIPP

1997 61F H

مولوی کیم شخ زابر سین صاحب بناری کیم مولوی عابد سین صاحب مردم کفرزند سخے
آپ کی پیدائش ۲۱، مارچ ۱۹۱۲ء مطابق کم رفع الثانی ۱۳۳۰ دکو بوئی ابتدائی تعلیم کے بعد جامع
العلوم جوادیہ میں داخلہ لیا جہاں سے فخر الافاضل کی سندھاصل کی۔الد آباد کا نج سے طب یونانی کی تعلیم
حاصل کی۔ نیز ہومیو پیتھک طریقہ علاج میں بھی مہارت حاصل کی۔ آپ کا شار بنادی کے ایجھے
طبیبوں میں ہوتا تھا۔

آپ نے 2/ جولائی ۱۹۹۲ء مطابق ۲/محرم الحرام ۱۳ اھا کو بدروز سے شنبدر حلت فرمائی آپ کی قبرامام بارگاہ (لاٹ) میں ہے۔

### زی حسین میرزا

آ قائے بزرگ تبرانی نے لکھا ہے کہ بیعلاء وفضلاء میں تنے اور جناب شیخ زین العابدین مازندرانی طاب ثراہ کے شاگرد تنے۔ ان کے ایک صاحبزادے عالم جلیل میرز المحد لکھنوی حائزی (متونی ۱۳۳۵ھ) تنے۔

(الكرام المررة جلددوم ع ٥٨٠)

آپ آیة الذبید تر روحانی طاب ژاو کے نمائند وخاص تھے۔ آپ وفات ہے تی سال پہلے ہے ایران میں مقیم تھے آخری بار جب تکھنو تشریف لائے تو چند میمیوں کے اندر ۲۵ /مئی ۱۹۹۵، (= ۵ مردی الحجر فات الله هر) کی میں کو بستر پر مشتبر حالات میں مردو پائے گئے۔ پونکہ دلاش کا پوسٹ بارٹم نیس ہوا تھا اس لئے سب موت کے بارے میں جو بچھے سا گیا ہے

(الواعظ جلد نمير 2 مرئة الآخر ١١ ما داورواقف كارهفرات)

#### رياست على خان

اے کھیاد شواریاں پیدا کرسکتا ہے۔

میرے تا تا جناب مولوی علیم سیدزین العابدین صاحب طاب ثراہ کے پرانے کاغذات میں مدرسہ مشار ٹا الشرائع کی ایک سند به نام المولوی ریاست علی خان فی ہے جو ماہ شعبان ساا سا اھ کے احتجان سالانہ کے بعد دی گئی تھی مولوی صاحب موصوف نے درجہ اول فریق دوم کا امتحان دیا تھا جس کے نصاب میں شرح لمعہ کتاب المیر اٹ اور تو انین الاصول تھی بانی مدرسہ کی طرف سے موصوف کومن لا یحضر والفقیہ ہردوجلد بطور انعام دی گئی تھی۔

یت بیں چل کہ بیریزر گوارگون تھاور کہاں کرنے والے تھے۔

# ز وارعلی،خان،نواب

المعنارة المعناء المع

نواب صاحب مرحوم صرف رئیس، فیاض، نخیر بی ندیجے بلکہ جامع الریاشین تھے۔ ریاست د نیوی کے ساتھ علمی ریاست کو کم لوگ جمع کرتے ہیں۔ علم ادب میں ایسا پدطولی تھا کہ عربی قصا کہ بہت سے محدوج کے یادگار زبانہ ہیں۔ جس کی فصاح<mark>ت و</mark>بلاغت وسلاست کا ذاکتہ وہی جان سکتا ہے جواس فن سے آشا ہو۔

ممدوح نے ایک شرح کتاب مستطاب نیج البلاغ بھی تھی جس میں ابن الجا ید کے اغلاط پر بتفصیل بحث کی تھی اور بہت ہے نکات و دقائق لکھے تھے۔ ممدوح آیک عرصہ نے وازل بلکہ سل میں مبتلا تھے۔ اس کے ساتھ ملمی شوق اس درجہ غالب تھا کہ شرح ند کورکواس علالت میں بھی لکھتے رہے۔ جناب نخر انحکما ، کو لکھا تھا کہ بہت جلد بعد تبدیش حاضر کروں گا۔ شاید بھی تو شد آخرت ہو۔ مرحوم کا خلق اکسار فروتی علی لیافت ایک تھی کہ مدتوں ان کی یادر ہے گی۔ مرحوم کا خلق اکسار فروتی علی لیافت ایک تھی کہ مدتوں ان کی یادر ہے گی۔ (اصلاح بھروروزہ کے بیمادی النامید و تر تیاہ ہو)

زوار حين ،سيد،نو گانوي

مولانا سیدزوار حیین صاحب، نوگانوی جناب سیدکاظم حیین صاحب کے بیٹے سے چار
سال کے بیٹے کہ ماں کا سایہ سرے اٹھ گیا ان کے والد صاحب ان کولکھنو لائے جہاں انہوں نے
سیس علم شروع کی تعلیم کی ابتداء مدرسہ ناظمیہ ہے ہوئی پھر مدرسہ عابدیہ بین پڑھا پچھ عرصہ باب
العلم نوگانو ان بین رہے پھر تاظمیہ واپس آئے ۲ ۱۹۳۱ء میں مدرسہ سلطان المداری سے صدرالا فاضل
کیا اس عرصہ بین قاضل اوب کی سند بھی حاصل کی سرکار جم العلماء، مولانا سید محمد صاحب، آتا سید
ابوالحن اصفیانی اور آتا ہادی کاشف الفطاء و غیر ہم ہے چیش نمازی کے اجازات حاصل ہوئے۔

بڈولی (منطع مظفر گر) جوگی پورہ (بجنور) اور کرنال میں آپ نے خدمات انجام دیئے اور تھیری کام کے 9 ۱۹۳ میں مشرقی افریقہ گئے اور ٹا نگانیکا (کیکو مااور کو وشہ جماعتیں) کینیا (نیرونی اور مہاسا) یوگا نڈ الرمبالے) اور ماڈا گاسکر میں دینی خدمتیں انجام دیتے رہے۔ راقم الحروف نے ال کو اواخر ۱۹۲۰ میں مہاسا میں اور خالبا ۱۹۲۳ میں جو نگا (ماڈا گاسکر) میں دیکھا تھا آپ موگا دیثو (صوبالیہ) میں جماعی آپ موگا دیثو (صوبالیہ) میں جماعی دے تھے۔

(انجمن وظيف سادات وموشين گولذن جو بلي نمبروذ اتى معلومات)

کے ساتھ گفتگو کرتے تھے۔ حقہ کا دور چاتا رہتا تھا۔ علمی اوراد بی بحش چیز جاتی اور کلیم صاحب کا قول حرف آخر ہوتا تھا۔

ناناصاحب نے تا تار پورہی میں کے بعد دیگرے دو مکانات گرائے پر گئے تھے۔ دونوں مکانات بہت وسی سے مادود دو پورا گھر باہرے مکانات بہت وسی سے ملاود دو وپورا گھر باہرے آئے ہوئے مریضوں اور تیار داروں کے لئے وقف رہتا تھا۔ بیم یض کھیار اور پورنیے ہے آگے براہ کر فیرمنظم بنگال کے ہر گوشدے آیا کرتے تھے۔ (تقشیم کے بعد باہر کے مریضوں کی تعداد کم ہوگئی)

#### ما جي خد مات

ناناصاحب مرحوم کواللہ تعالی نے عزت وقار کے ساتھ وسعت رزق بھی عطا کی تھی لیکن وہ جو پچھ بھی کماتے تھے وہ اہل خاندان کے ضروری اخراجات کونکال کرسب کا سب دوسروں کی بھلائی پر صرف ہوجا تا تھا۔ ان کی ایک عادت اول عمر سے آخر عمر تک بدری کدروزانہ کی آبد وخرج بالنفسیل کلصتے تھے۔ اگر وہ بھی کھاتے مل جاتے تو ان کی زندگی کی ایک ایک پائی کے آبد وخرج کا حساب معلوم ہوجا تا۔ انھوں نے اپنی نانیہالی زمین پر ایک چھوٹی اور شکتہ مسجد کی جگہ پر ایک عالیشان اور مستحکم مجد تھیر کر ائی اور اس کے سامنے کنوال بھی بنوایا۔ جب آپ کی ایک بٹی عا تکہ قبل شادی رصات کر گئیس تو تھیر کر ائی اور اس کے سامنے کنوال بھی بنوایا۔ جب آپ کی ایک بٹی عا تکہ قبل شادی رصات کر گئیس تو رسیان داہاندی کے لئے جو طلائی اور نظر کی نے لاور ات بنوائے تھے آئیس حسن پورا اور عشری کے درمیان داہاندی کے آبئی پل کی تھیر میں بطور اعانت مرحمت فرمادیا۔ بدیل ابھی تک باتی ہے۔

ا پن ایک بھا نے اور مجتبے کو بی اے تک تعلیم داوائی۔ اپنا اور اپنی ابلیہ کے بسمبار ارشتہ داروں میں سات الریوں اور پانچ لڑکوں کی شادیاں اس طرح انجام دیں کدان کواپنا میتم یا بسمبار ا

<del>}</del>

زین العابدین،سید،عشروی

שנו באום דונו.

يرے نانامولانا عليم سيدزين العابدين صاحب ابن مولانا سيد احد على ابن سيد حمايت حسین موضع عشری خروضلع سیوان کے باشند و تھے۔ آپ کے والد بھاگل بور کی گولے گھاٹ کی محید میں وش نماز تھے۔ بعد میں جنا بجنی حسین صاحب محلّد اساند پور ( بھاگل پور ) کے یہاں قیام فر مایا۔ يدينانا مشكل ك كانا تصاحب كى عمر بوقت وفات كياتحى ويصائداز و يحطور يركها جاسكتا ي كدان کی پیدائش مرم اهاور ۱۲۸ ماھ کے درمیان ہوئی ہوگی۔ ابھی موصوف زرتعلیم تھے کہ سابہ پدری ہے محروم ہو گئے اور بیوہ مال اور ایک بھائی اور دو بہنوں کی نگہداشت کا باران کے کندھوں پر آپڑا۔ ليكن ان كالحوصله انتابلنداور بهت اتني استوارتني كداين تعليم بحي جاري ركهي اور كحر والول كوسهار ابهي دیا۔آپ درسمشارع الشرائع (جامعہ ناظمید لکھؤ) کے ابتدائی دور کے طلبہ میں تھے جہاں ہے متاز الافاضل كى سندحاصل كى -اى دوران آب طب كى تعليم بحى حاصل كرتے رے دافسوں بے كرآب ك طب كاستادكا نام معلوم بيل بوسكا-فارغ التحسيل بون كي بعدا ب يحير صدتك يورنيد من مطب كرتے دے جہال كوك آب كے بہت معتقد ہو كئے تھے۔ پھر بھا كلور معالى ہو كئے اور وہاں كي بورج - بحاكل يورين آب كي يوري زندگي محلّ تا تار يورين گذري من في ١٩٣١ء اور ت اور میان کی مرتبہ بھاگل بور کا سفر کیا ۔ خیج میں مطب میں مریضوں کی بھیٹر ہوا کرتی تھی اور شام میں بھاگل اور کی اعلیٰ سوسائل کے ارکان بلاتفریق غرب وملت تکیم صاحب کی بیٹھک میں حاضري ديتے تھے۔ان ميں رؤسااورٽوا بين بھي تھے اور بيرسٹر وجج صاحبان بھي تھے۔مختلف نداق اور مخلف طرز فكرك افرادجمع موت تحاور حكيم صاحب برايك ساس كاعقل وفكر كمطابق فوشدل

بائی این مدر دا کوست فیاش دامن یا خدا باشد صاب او تا بیم الحساب

ميردا آيد جو بالفظ گلد بد نهال قبل مهاس على خان بهاور با صد آب

عم على الله شود ظاهر برار باب فرد

شاديال اوراولاو

آپ کی پہلی شادی عشری ہی میں لی لی کنیز بانو بنت سید مباوت حسین صاحب مرحوم سے او کی تخی ان کو کی اوال دنیس ہو کی اور و و جلد ہی اس و تیا ہے رحلت کر سکیں۔

آپ کی دومری شادی مولا تاسید محد مهدی صاحب بیک پوری (مصنف اوائج الاحزان)
کی صاحبز اوی پی پی باجروے ہوئی۔ ان ہے آپ کو پاٹھ اوالا دیں ہوئیں۔ سب ہوئی راقم
الحروف کی والد ومرحومہ پی بی صدیقہ تھیں جن کی پیدائش اورمضان و سالا می المرافظ ہو اس مید و سالا می اورسب ہے چھوٹے جناب سید سیطاحین صاحب تھے جن کی پیدائش و سیرمضان شب مید و سالا میں ہوئی ہیں ہوئی ۔ ان کا تاریخی تام خیرات حق تھا۔

وفات

ایک عرصہ سے آپ کو ہائی بلد پریٹر کی شکارے تھی۔ مرد فق الثانی واسیارے معرب ہوری وور د مشار کی تماز میں آپ جدو میں گھاتو پھر سر ندا فعایا۔ میدائے معبود کی خدمت میں جا اگیا۔

عوف كا احمال ند و كار جمال إلى يور كمسلم الني أوت كر يبل جل ين ( عراق و ) آپ كا د يا العاف كا احمال ند و رووا و العاد العاف العاد ين العراق الم العال اور تهذيب للس كا اجماع من أما يا العاف العاد ين العراق الم العرف أو آپ في ال كا المحكام من أما يا مصرايا - ال كا يعال إلى العرف العرب بهارة الم يورث العرب المحل المها المحتال العرف العرب المحل المحتال المحل العرب المحل المحتال المحل المحل العرب المحل المحل

سرگار آقت میرزاشیرازی طاب ژاد کا ایک مملید بنام طریق النوة بمبی اوراس کے بعد لا بوریش جمپاتفات سرکار تیم العلماء کی فرمائش پرآپ نے اس کا اردو تر بررا تر برطریق النوق ان کے نام سے کیا تھا۔ جو جواسیا دیم لکھو سے شاکع ہوا۔ اور افرایت اور زنجپار تک پہنچا (تر جر کی پیٹسے پر اس کا نام مراط النواق کھا ہے۔)

390

آپ فاری میں قسائد لکھتے ہے اور عالم تھلی کرتے تھے۔ راقم الحروف نے ان کی بیاش میں دئی دہارہ فاری قصائد و کھے تھے۔ اب اس کے چند پوسید داوراق پرانے کا نذات میں الم ہیں۔ ایک قسیدہ ایام طالب ملی کا ہے جے جامعہ ناظمیہ کے جلسے تشتیم اسناد کے لئے 10 در یقعد والا سال کا کہاور پڑھا تھا۔ (ایک دوسری تھریہ ہے چاتا ہے کہ اس سال دوشر تا لمعہ، قوانی الاصول اور مماسد وقیر د پڑھتے تھے۔ ) اس قسیدہ میں سرکار جم العلماء کی عدت کے بعد بافی کا در تو اب میرزا تھ حیاس فی دان جہاد رکانام مای اس طرح تھم کیا گیا ہے۔

KAT

# سبط الحن ،سید ، ہنسوی

1944/1194

مولا ناسيد سبط الحن بنسوى ابن سيدفيض ألحن رضوى ، الدآباد كرقريب فتح يور بنسوه مين پيدا ہوئے -مرحوم نے درجہ عالم (يا فاضل) تك تعليم مدرسدائياني (بنارس) ميں جواد العلماء سيدعلى جوادصاحب طاب ژاه اورمولا ناسير تحد سجاد صاحب طاب ژاه کي تمراني مين حاصل کي عربي وفاري کے بورڈ کے امتحانات بھی باس کئے۔فارغ التحصیل ہونے کے بعد بعض انگریزی اسکولوں میں ٹیچر رہے۔ چرریات محمور آبادے نسلک ہو گئے جہاں راجیصا حب کے کتب خاند کے گرال تھے۔ آخر میں علی گذرہ یو نیورٹی کے شعبدالسند مشرقیہ کے کتب خانے مولانا ابوالکلام آزاولا بمریری (سابق لئن لاعبرری) میں شعبہ مخطوطات کے سربراہ رہے۔موصوف ہمارے عبدے فاضل محقق، کت شناس، اور ماہرعلم رجال وتاریخ تھے۔ چھان بین اور تحقیق ان کا مشغلہ تھا۔ تج وزیارات کے سفر اور تبلیغی دوروں میں بھی ان کامحبوب مشغلد کتب خانوں کی جھان مین تھا۔ انھوں نے بہت سے اہم اور تادر موضوعات برکام کیا۔ان کی ان علمی خدمات کے اعتراف کے طور پرمنتدی النشر (نجف) انجمن حبلیغات اسلامی (تہران)، اسلامک ریسرچ الیوی ایشن (جمینی) اور دوسر علمی اداروں نے آپ کواپنامبر بنالیاتھا۔ مرحوم خوبھی علمی اور تحقیق کام کرتے تھے۔ اوراس راوپر چلنے والے جوانوں کی پوری ہمت افرائی کرتے تھے۔ راقم الحروف جب ان سے پہلی بار 1900ء میں آ زادلا بریری میں طا تومرحوم في جس طرح ميرا فيرمقدم كياد وان كفس كى بلندى اوردل كى بردائى كامظير تفا\_آب ببت ہی گوشنشین اور متقی تھے لیکن آپ کے لا تعداد علمی مقالات اور تحقیقی کتابوں کے ذریعہ آپ کی عظمت علمي د نيامين مسلم تھي۔

اگرچہ گر والوں میں سے کوئی موجو دنیس تھا لیکن جناز و بہت شان وشوکت سے اٹھا۔ پورے شہر کی
وہ کا نیس بند ہوگئیں۔ اسکولوں اور کالجوں میں تعطیل کر دی گئی اور اسمانند پور کے قبر ستان میں آپ کو
پروہاک کر دیا گیا۔

زین العباو ، آ عا

ما نیم زنازین العباد صاحب ، رئیس مراد آباد ، ریاست مالیر کوئلہ میں کورٹ انسیکو تھے۔

آ خامیرزازین العباد صاحب، رئیس مرادآ باد، ریاست مالیر کونله میں کورٹ انسپکٹر تھے۔ دین علوم اپنے شوق سے حاصل کئے تھے۔مطالعہ بہت وسیع تھا۔ کئی کتابیں یادگار چھوڑی ہیں۔

- (1) しきりん(シューリンクをによ)
- (۳) بادم، اصلاح خادم معروف به نورتن خادم حسین بھیروی قادیانی کے رسالہ کے جواب میں بجس میں اس نے تشخ اور نفر انبیت کو ایک ٹابت کرنے کی کوشش کی تھی ۔ بادم کا پہلا حصہ ۱۹ صفحہ پر ۱۳۳۳ ھیں چھیا تھا۔ اور لکھا تھا کہ '' دوسرا حصہ عنقریب شالع ہوگا''
  - (٣) ناصرالايمان (٢ جلدي)
    - (٣) النور
  - (۵) الجوامر، يبيعى خادم حين قاديانى كايك دوم عدسالذك جواب مي ب-

مخطوطات عرتي

الكتب والمكتبات قبل الاسلام، الكتب والمكتبات في ادوار التضيع ، مسالك المشابد وتقويم

(الجرادي معود ما بمادي الاولى دوس دولد وسلم ووظام الوار)

سبط حسين ،سيد

1901/01/4

ججة الاسلام مولانا سير سبط حسين صاحب قبله علم كاج حياد وردورتك تحابه فقه واصول كع عمده عالم تحے يطبى كمالات كابھى كافى شهروتھا۔

٥ رجمادي الاخرى اعماره مين رحلت فرمائي -

(الواعظ جلد ٥ منبر ٣ - ٢ جمادي الله ولي والاخرى اعتاره)

مزار شید فالت (آگره) عمر عوم کوجو والباند لگاؤ تقااس سے اس وقت کے موثین باخیر یو تے۔ آپ مرتے وقت تک مزار شید فالت کے آخریری سکریٹری رہے۔ شبید فالت پر آپ کی کتاب " می کر وقعید احوال نور الله شبید" بہت مقبول ہوئی۔ اس کا تیسر الله یشن و عوا ویس شائع ہوا

آپ نے ملی گذرہ میں 1 ماپریل (<u>ے 1</u>9 ہوسز آخرت اختیار کیا۔ آپ کے مطبوعہ تصانیف اور مخطوطات کی فہرست مطلع انوار سے پچھ ضروری تر میمات کے ساتھ درج قبل ہے۔

مطبوعات اردو

اثبات عزاداری، عزاداری کی تارخ، فلف نماز، ازاحة الوسوسه، اظهار حقیقت (رد کتاب شبید انسانیت)، امام جعفر صادق واشاعت علوم، عربی مرثیه کی تارخ، منهاج نبج البلاند، متعدد مقالات ورسائل، مندوقوم اورعزاداری، آثار علمیه علویه، کشف المامیه، فاتح نیبر، پس منظر کر بلا، بجده محاور دستورع وی میزیدین معاویه، شریکة الحسین آسکین قلب، مورخ مسعودی اوراس کاند بب

مطبوعات عربي

كف الدابيد (عربيم ثيد)

مخطوطات اردو

شباب تا قب شرح دیوان حضرت ایوطالب ،الدرالمنظوم من کلام المعصوم ،لسان الصدق در هختین فارقلیطا دایلیا، قول سدید (روانل سنت) ابوذر خفاری ،رساله الحقوق امام زین العابدین علیه السلام اردوش جمه اور تواثی و قرضیجات کے ساتھ ،مجموعه مضایین علمیه

144

127

(٩) الدرييين ان كايك مطبوع كتاب "مملك الخالف" كاذكر ماتا بـ

فات

اصلاح جلد ۲۴ نبر ۱۰ ۱۲۱ (شوال تاذی الحجه وسساه) می (جو فالبار فی الثانی وسساه کریب شائع بواقعار) پذیر چین تقی -

" جناب سید سجاد حسین صاحب ساکن میروه سادات صلع مظفر تکرنے سمرر بع الاول وسی الدول علم ندر کھتے تھے تکر وسی الدول کیا۔ ایک دونیس صد بارسائل کے مصنف تھے۔ باوجود کیا۔ زیادہ علم ندر کھتے تھے تکر مذہب شیعد کے ایے شیدائی اور عاشق تھے کہ بجوائل شغل کے کوئی شغل ندتھا۔ "
مدہب شیعد کے ایے شیدائی اور عاشق تھے کہ بجوائل شغل کے کوئی شغل ندتھا۔ "
مدہب تقویم سمرزی الاول وسی سیاھ ۵ رنوم را ۱۹۲ ءے مطابق تھی

#### سجاد حسين ،سيد

المالالا مولانا سيد سجاد حسين صاحب جون پورك باشد عقد كنن دبال حرك سكونت كرك مالانا سيد سجاد حسين ماحب جون پورك باشند عقد كنن دبال حرك سكونت كرك نانياره (ضلع بهرائج) من مقيم بوگئ تقدان كاجداد كابنوا يا بواغاندانی حسيني آخ بحی ملا تولد (جو نبور) من موجود ب-مولانا مجدار شاديد (ردولي ضلع باروبكي ) من امام جعد و جماعت بحی رب تقد

آپ کے صاحبز اوے مولانا سید ابن حن صاحب نانپاروی ہیں۔ مولانا سید جاد حسین نے ۱۲ رحوم الحرام ۱۲ ساتھ اور ۲۱ رجولائی ۱۹۹۱ء) کورحلت فرمائی۔

(املاح، يخ بنزى الاراماد)

سجاد حسين ، بار بوي

وسی المالی و المالی مظر گرکے باشدے تھے۔ صاحب تصانیف کیرو تھے۔ انداز تو برد اللہ مظر گرکے باشدے تھے۔ صاحب تصانیف کیرو تھے۔ انداز تو برد لئیں اور عام فہم تھا۔ ان کی تقریباً تمام تصانیف مناظر وال سے اور مولوی عجم تا تا مصاحب تی المذہب سے ہوا تھا جس میں فخر الحکما و سید علی اظہر صاحب و محلو مارن ) بھی تحریف لے تھے۔ مناظر و میں کامیابی سے سید جاد حسین صاحب کومناظر و کاشوق ہوا۔ اور بقول اصلاح" صدباکتا میں لکھ ڈالیس جواکثر چھپ بھی پھی میں "
مدباکتا میں لکھ ڈالیس جواکثر چھپ بھی پھی میں اسکی بعض کتا ہوں کے دیا میں۔

دیردست مناظر ہونے کی وجہ سے شیعوں نے "شیر پنجاب" کا خطاب دیا تھا۔

ان کی بعض کتا ہوں کے دیا میں۔

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

- (١) سرمه خاموثی
- (۲) رماله تجادید
- (٣) وربي بها (اثبات ايمان امير الموشين مطابق قواعد خوارج)
- (٣) تقریردلیدیر(۲۰۰ سفی)ای می فابت کیا گیا ہے کداسلام میں صرف دوفرق بیں شیعد درخوارج یکی کوئی فرقینیں ہےاں کا دجود مقلا محال ہے۔
  - (٥) رافع ويم (وراثبات آفيه)
  - (١) اصل الحقيقت بروالحقيقت (١٠ ١ صفى)
    - (4) شرح كنز كمتوم في على عقدام كلوم
  - (٨) الهادي يشيد، تن اورسيالي كامناظره ب

# سعادت حسين، شيخ ،افتخارالعلماء

.19.4 SIFTS . 19/19/610 +9

افتخار العلماء مولا ناسعادت حسين خان صاحب ابن منور حسين ابن محر حسين ابن يخشى خان، امب صلع سلطان پورے مالياز فرزى تقدآب نے اپن تاريخ ولادت فودات قلم الا رصفر ٢٠١ ه تحرير فرمائي بي جو ١٩٠٨ يل ١٩٠٤ ء بي مطابق بي يين كانام فقير حسين تفاليكن جامعه ناظمید میں داخل ہوئ توسید بادی حسن صاحب مرحوم نے جوملم جفر کے ماہر استاد تھا ہے بدل کر سعادت حسين كرديا\_ (الذريعيض تاريخ ولادت حدود وساتا درج بجوتساع ب-)

افتخار العلماء کے جداعلی برپارٹنگی مسلمان ہو گئے تھے۔جس کے بعد ان کا نام برپارخان ہوگیا۔آپ کی مسلم اولا دیں سلطان بور اور برتاب گڈھ میں بڑاروں کی تعداد میں آباد ہیں۔مولاتا موصوف تحريفرماتے ہيں۔

"امهد من تشيع بهار عدادا كرداد الجش خان كسب سآياسك كرانحول في خودى سرورعالم كي خواب مين زيارت كي تحى \_ محرجب حضرت كوسلام كيا تو حضرت في منه يجيرا البخشي خان نے حضرت سے اس کا سب یو جھا تو آنخضرت نے فرمایا کہ میں نے اس لئے تمہاری طرف سے منھ پھیرلیا کہتم جارے اہل بیت کودوست نہیں رکھتے ۔ تو بخشی خان نے عرض کی اب سے ان کودوست

ان کے ایک دوست زمینداروں میں سے بر مے لکھے تھے۔ان سے خوال قا کیا تو انھوں نے خواب کی تعبیر بتائی کہ آپ کوشیعہ ہونے کی ہدایت کی گئی ہے۔ چنانچہ ووشیعہ ہو گئے اور ان کے ساتھ كل آيادى شيعه ہوگئى۔

میرزا سوادعلی المتخلص برفیضی الذراید میں ہے کہ م119 ھیں اصول دین پر ایک رسالہ لكها\_الك اورتفنيف"مواردالكم" > الذريعة بي جاوعي كي ايك اورتصنيف" غليه حيدري المعروف بدميت نامه" كا ذكرماتا ے۔ جوسات جلدوں میں تھی اور جس کی چوتھی جلد س<sup>و</sup> سا ھیں چھی تھی۔ كياب سجهاجائ كديدونول نام يعنى جادعى اورمير زا جادعى فيضى ايك بى شخصيت كے بين؟ سيرعلى، حاتسي سيدمبدي ابن تجف على عظيم آبادي في تذكرة العلماء الحققين من ان كوغفران مآبسيد

ولدار بل طاب ثراو کے شاگردوں میں شار کیا ہے۔ اور ان کے لئے" عالم عال وعارف کال" کے القاب استعال كے بيں۔

( مَذَكِرةَ العلماء الحقلين والكرام البررة جلدوم ٥٩٧)

سخاوت على ،سيد

سيد خاوت على عبر وارى آگر و كري خوالے تھے۔ آپ نے عالس المونين كاردور جمد كالقارجس كالمجوهد فيب يكافنا

(الذراف)

2222222222

فيض آباد

وطن والهن آئے تو سرکار ناصر المانة کی فرمائش پرفیض آباد بلے گئے۔ وہاں وہیقہ عربی کا کی کے درہم برہم تعلیمی نظام اور انتظابات کو درست کیا طلباء کی اتعداد بر حاتی اور مدرسہ بن دوبار و زندگی پیدا کی۔ مدرسہ کی اصلاح کے بعد آپ نے مساجد کی طرف تو جہ کی حسن آ خاکا تھی ہے چوک مجد کے کا غذات حاصل کئے اور نوعیت بجو کر نماز جماعت کے لئے ایک چوشماز مقرد کر ویا۔ اس پر ایک طوفان اٹھ کھڑ اہوا۔ بنگامہ ہوا مقدمہ چلا کین آپ کے پائے استقامت بن اخرش ن ہوئی۔ ماہری مسجد

۲۲ دعبر (۱۹۳۷ م و شرک مجسل یک نازگی سازش سے راتوں رات بایری مجدیں مورتی رکھ دی گئی تی مشید تمام افراد حرکت میں آگئی سب سے زیادہ فم وفصد کا مظاہرہ افتار العلمیاء فی کیا حضرات اللی سنت بھی آپ کے ساتھ ہو گئے۔ ایک جلسه عام کی بناہو کی دیگر مقررین کی پر جوش تقریروں کے بعد افتار العلماء نے اپنی کھی ہو گئ تقریر پڑھی جس میں مسلمانوں کو قانون کا سہارا لینے کا مشورہ دیا۔ آخر میں فر مایا: اگر آپ حضرات پر سول میرے ساتھ چلیں تو خود سعادت حسین مسجدے مورتی ہٹادیگا۔ اس اعلان کی فلک شکاف نعروں سے پذیرائی کی گئی لیکن مقررہ دن کوئی بھی مسلمان وہاں حاضر نہیں ہوا۔

بابری معجد کے تفییعے کی ابتدا ۲ روتمبر ۱۹۹۳ء کی "انتہا" کے تنی ہم آ ہنگ ہے جس طرح ا ابتدا میں مسلمان عملی اقد ام سے گریز ال رہے ای طرح ۲ روتمبر ۱۹۹۳ء کو وی پی شکھ سابق وزیر اعظم تو اجود هیا میں معجد کی تمایت کے لئے موجود تھے لیکن بابری معجد کے نام پر پورے ہندوستانی مسلمانوں کو مضتعل کرنے والے مسلم لیڈران میں سے ایک کا بھی پیدنہ تھا۔

IAP SOCIETY SO

ទូសសសសសសសសសសសសសសសសសសសសសសសសសសសស

مولا تا كوان كے بي بخآور في خان ئے تقعيل علم كاشوق دلايا۔ آپ اپن تقصيل علم كا حال خود الكامة بين -

وظن کے تعدیق 19 مطابق وسی الدی وارد ہوارا اور سرکار ناصر الملة کے یہاں تیام کیااور انھی کے زیر سایق تعیل علوم کا سلسلہ شروع کیا۔ جامعہ ناظمیہ میں مقد بات کی تخصیل کی، شیعہ عربی کالی وسلطان المداری میں پڑھتار ہااور لکھٹ ہونیورٹی سے فاضل ادب کی سندھاصل کی۔

لکھٹو کے مداری ہے فارغ ہونے کے بعد آپ حیدر آبادیں ایک رئیس کے بچوں کے اتالیق مقرر ہوگئے تھے۔ وہاں ہرطر ن کا آرام تھالیکن آپ کو نجف جا کرعلم دین کے اعلی مداری تک پیچنامقصود تھا۔ آپ کے جذبہ صادق نے ان رئیس کواں پر مجبور کردیا کہ وہ آپ کے عراق جانے کا بندوب سے کردیں۔ آپ اوافر دجب میں جف گئے۔

دمان قیام نجف میں آپ نے آقائی شخ ایراہیم رشی، آقائے شخ عبد المتین رشی، آقائے سے حسن بجنورہ کی اور آقائے مرزامحہ باقر زنجانی سے فقہ واصول کی تعلیم حاصل کی۔ علم کلام میں آقائے سید جواو جمریزی اور عربی اوب میں آقائے سید محمد عاوی کے سامنے زانو سے اوب تہد کیا۔ اصول فقد میں آپ نے آقائے شخ ضیاء الدین عراقی کے درس خارج میں شرکت کی۔ اور فقہ میں آقائے سید ایوائی ن اصفیانی کے درس خارج میں شرکت کی۔ اور فقہ میں آقائے سید ایوائی ن اصفیانی کے درس خارج میں شرکت کی۔ اور فقہ میں اوب آتا ہے اوب اللہ میں الموسوی، آقائے میزرگ تبرانی، شخ عباس تی، آقائی سید ایوائین اصفیانی، شخ ضیاء الدین عراقی، آقائی سید محمد رضا میزرگ تبرانی، شخ عباس تی، آقائی سید اور انتار العلماء نے بھی میزرگ تبرانی، آقائی سید شہاب الدین مرحقی طاب شاہم اجمعین شائل ہیں۔ (افتار العلماء نے بھی گھیا پڑھائی، آقائی سید شہاب الدین مرحقی طاب شاہم اجمعین شائل ہیں۔ (افتار العلماء نے بھی آقائی مرحقی واجاز دو بیا تھا۔ یہ بھی شائل ہیں۔ (افتار العلماء نے بھی

山田のためたのでいるのでいるのはいいはい

Scanned by **TapScanner** 

اہتمام،اس کے علاوہ شیعی سیاست سے متعلق امور میں دلیسی آب کودم لینے کاموقع نبیس دیا تھی لیکن انبیں ہنگاموں میں آ بے تصنیف و تالف کا وقت زکال لیتے تھے۔ (تصانیف کی فہرست آ کے دی جائے گی) آپ علی گڈھ یو نیورٹی کے شعبۂ دینات کے متحن تھے۔ مدرسہ ناصربہ جو نیورکی مجلس انتظام کے صدر تھے۔شیعہ کالج العوع کے بورڈ آف ارسٹیز کے مبراورشیعمر بی کالج کے رہال تھے۔ مدسة الواعظين كى مجلس انتظاميه كاممبر ہونے كے ساتھ ساتھ رسالہ الواعظ كے مستقل گرال تھے۔ مدسة الواعظين كےمتعقل ممبرنجي تھے۔حوزہ علمہ مظفرنگر كے نگرال بھی تھے تنظیم المكاتب كے بانيوں ميں تحداورا سكے يملے نائب صدراوردوس صصدر بھی رہے۔

مولانا وصى محرصا حب قبله طاب ثراه كى علالت كرزمان مين مدرسة الواعظين من درس وقدرایس کاسلمدجاری رکھنے کے لئے آب اعزازی طور برتیارہو گئے۔اوراے ایک متعل ڈیوٹی کی طرح انجام دیتے رہے۔روزانہ پابندی کے ساتھ سات بچ میں مدرسہ جاتے مدرسہ کے اوقات کے بعدوبان سے کتب خاند ناصر بیتشریف لے جاتے تھے اور تحریری مشاغل اور مطالعہ میں مشغول رجے تھے۔وہاں سے تین بجے سہ پہرکوشیعہ کالج تشریف لے جاتے اور چھ بج شام کو گھر پینجیتے۔اور بیرسب كچهاس وقت تفاجب آپ كى عمراى سال كقريب پنج چكى تھى۔

سلطان پور کے امام باڑے کی تغییر، تالاب تکیت رائے کی مجد کی تغییر و واگذاری منصور تگر کی دومجدوں کی تغیر کے لئے مومنین کی جیج آپ انجمن تغیر مساجد کے بانی اور سر پرست تھے جنت البقيع تال كۋر دروۋى تغيير مين سرگرى د كھائى امېك مين مكاتب كا قيام اور جامع مىجد كى تغيير - پيسب آپ کے قوی وقعیری خدمات کے گواہ ہیں۔

و1910ء میں آب افریقہ تشریف لے گئے تھے اور وہیں لنڈی میں راقم الحروف کو ان سے نیاز حاصل کرنے کا موقع ملاجہاں آپ دورہ کرتے ہوئے تشریف لائے تھے۔مولا ٹااور جناب ذاکر قیام فیض آباد کے زمانہ میں تواب حسن رضا خان کی مجد کی واگذ اری اور خدام المجالس کی نشاۃ ٹانیہ قابل ذکر ہے۔ ای طرح کانپور کے فسادات کے بعد آپ نے گورنمنٹ کی نارامنی کی بروا کے بغیر جلسمام میں زبروست تقریر کی۔ ڈیٹ کمشنر نے مدرسہ کی گرانٹ بند کردی۔ آپ نے لکھؤ ے دوبارہ گرانٹ جاری کرالی۔ درمیانی عرصہ میں اساتذہ وطلبہ کومسوس نہ ہونے دیا کہ گرانٹ رک

باروسال تک فیض آباد میں دینی وقلمی وقوی خدمات انجام دینے کے بعد ١٩٥٢ء مین آب سر کارنسیرالملة کے مشورہ کے لعو تشریف لائے۔ اور شیعہ عربی کالج کے برنیل کی حیثیت ہے آخر زندگی تک خدمات میں مشغول رہے۔ اس ادارہ میں جامعہ ناظمید اورسلطان المدارس کے بہت سے طلباء عمادالادب، عماد النفير اور عماد الكلام كردرجات مين داخله ليتربخ تقيران طرح آب ك شاگردوں کی تعدادایک سوے متحاوز ہوتی ہے۔جن میں سے چندنام یماں پیش کئے جاتے ہیں۔ سعيد الملة مولانا سيرمجر سعيد، فخ العلماء م زامجر عالم، امير العلماء سيد امير ألحن ( بركبيل جامعة اللميه )، مولانا محرصين تحقى مرحوم، مولانامحود الحن (بركيل مدرسة ناصريه جو نيور) مظفر حسين طاهر جرو في مرحوم ، مرز امحد اشفاق ، مولا تا تاظم على ، مرز امجد اطهر ، سيد ضياء الحن موسوى (يا كستان) قاضي محري (مدر مجلّد وحيدايران) سيدمجه جابرجوراي (مديرسالهُ اصلاح) مولاناسيداين حن (فيض آباد) مولا ناسيدشبيها كسن نونهروي مولا ناسجادسين مولا نامحد زايد مولا ناابن حسن مجفي .. للحو من بى آب كى نفيس ترين تصانف بحى سامنة آئيں۔ يبال مختلف ادارول كا

انتظام، وفي وغربي ادارول كا اجراء، محافل ومحالس بنشر فضائل ابل بيت، مساجد مين مواعظ كا

السلام، بدعت تراوی، اما منظر (ایک منی عالمی آهنیف البیان کا ترجمه) شهنشاه حبشه النهای ، سرکام ناصر الملت ، حالات السرالملت ، حال باب چهارم تخفه ، جواب باب جهم تخفه ، وزیر تربیب ) مخضر حالات استدا شداش المحالات استدا شده منافق اسلام (حصد دوم) احمن المطالب (از زبان ایم المومنین علی بن ابی طالب بمقابله مشوری ) فضائل ابی تراب عن رواید عمر بن الخطاب ، مناقب امیر المومنین از زبان امیر المومنین ، مغضین حضرت علی ، معاوید و ناصی حکومتی مرتبه ابوجعفر اسکانی ، دلائل المومنین از زبان امیر المومنین ، مغضین حضرت علی ، معاوید و ناصی حکومتی مرتبه ابوجعفر اسکانی ، دلائل ماهینید ترجمه خلاصه کتاب العثمانید ، نماز شب ، ترجمه صادق آل محمد ، گنابان کبیره (نامکس ترجمه) و با تیجین اور ان کا طریقه کار ، ما خذ عبقات الانوار ، مواعظ محبد کوفه ، منافع البلانه شیعیت اور اسلام (شیعوں پر کفر کے فتوی کا جواب ) ترجمه احقاق الحق (تو حید و نبوت مطبوعه ) صاحب الام ، کارنامه تبلیغ ملاعلی قاری ۔

#### اخلاق حسنه

افغارالعلماء کی زندگی بردی سادی اور مرنجان مرخ تھی ، دوسرول کے دکھ کواپناد کھ در دینا لینے تھے ، دین طلبہ پر خاص شفقت فرماتے تھے۔ ان کی لغزشوں کو انتہائی بردباری نے نظرا نماز فرماجاتے تھے۔ دین طلبہ پر خاص شفقت فرماتے تھے۔ اپ بحسنوں اور بزرگوں کی ندمت برداشت نہیں کر سکتے تھے۔ فورا شمشیر برہندہ وجاتے تھے۔ خاص طور سے اپنے ان اساتذہ سے ان کو بڑی مجت تھی۔ جضول نے آپ کی زندگی سنواری تھی۔ خاص طور سے اپنی شفقت وزمی اوراحیان کا برتا و تھا۔ جس طرح خود دوسروں کے کام آتے تھے۔ خاص طرح خود دوسروں کے کام آتے تھے۔ اس سلسلے میں زبان سے زیادہ عمل کو برو کے کارلاتے ۔ فیض آباد کے مونین کا بیان ہے کہ جب آپ وثیقہ کے پرٹیل تھے تو طلبہ و مدر مین پرشفقت

Constitution of the consti

حسین فاروتی میرے بی مکرومیں مقیم تھاور بہت دلچپ اور علی صحبتیں رہیں۔ ایک بننے کے بعد بید حضرات دارالسلام تشریف نے گئے۔

تقنفان

لکھو کی طالب علی ہی کے زمانے سے جریدہ" السراط" کی اوارت کے فرائض تقریباً چار سال تک انجام دیے۔ جناب نصیر الملة کی صدارت میں نادی الا دباء کی بنیاورکھی جس میں مدرسہ باقلیہ اور مدرسہ سلطانیہ کے فاضل طلاب ہر ہفتہ جمع ہوتے ہے اور عربی میں مقالے پڑھتے ہے۔
"اللادیب" کے نام سے ایک ماہوار مجلّہ بھی جاری کیا گیا۔ نجف پہنے کر آتا تا ابوالحن اصفہانی کے عملیہ کا اوروز جر کیا۔ جونجف بی میں طبع ہوا۔ اس کے علاوہ مقتل کی مشہور کتاب" ابسار العین فی انسار العین فی انسار العین فی انسار العین فی انسار العین فی

ويرتمانف كافرست حب ديل بـ

تحقیق حق (مسلد طافت بربیر حاصل بحث) احتجاجات (عربی، پائی جلدی ناتمام) نیاه اهین (زعرگانی علامه سید حاد حسین) مصائب الشیعة آئی جلد (اب تک سات جلدی طبع بو پهلی بیل) عصر حاضر اور علامات ظیور، ترجمه احقاق الحق (بابت امامت غیر مطبوعه) جوابر صدف رسالت، ترجمه رساله محقق امام زین العابدین فی فیبت (ترجمه رساله شخ مفید) جواز لعن بزید، مناظره بشام بن حکم، اصحاب امیر الموضین کی قربانیال (تین جلدول میل) شهداه اربعه، النجف الا شرف، تغییر روضه سید الشیداه عظمت شیداه کربلا دود ناصر ، تاریخ کتب خان ناصریه، حیات النعیر اصیات بقول جلیل (در دد کتب ها سامام اساعیل ملاحسین علی ۔) بوجره ندیب: حقیقت کے آئین میں، صدراسلام کے افریقی مسلمان الله سین علی ۔) بوجره ندیب: حقیقت کے آئین میں، صدراسلام کے افریقی مسلمان (داری کتب کا آئی بره ندیب: حقیقت کے آئین میں، صدراسلام کے افریقی مسلمان کا بیام کا آئی و ویکایت) امام محر باقر علیه السلام، امام محر توقی علیه

AY

# سعيدالرحمٰن،سيد،شهيد

1911/01/01

سيدسعيد الرحن مرحوم بلرام يور تحصيل ضلع كونذ وك موضع بما تحرك رين والمستقي جو ع پڑواائیشن سے کئی میل کے فاصلہ یر ہے۔رستہ پیدل یا سائل کا ہے۔اگر چداکتوبرو عوام مين جبراقم الحروف وبال كيا تحاتو سعيد الرحمن مرحوم كي وشش عقور اسارات ركشاس طع وا-سعيد الرحن عي خاندان مي بيدا مو ي - ٢٥- ٠ ٣٠ برس كي عمر مي مولانا سيد عي كويال پوری (اتروله) کے فیض صحبت سے حلقہ بگوش تشیع ہوئے اور اپنے مطالعہ سے اسلامی معلومات کا خزانہ وماغ مين محفوظ كرليا\_انتباكي يرجوش مبلغ تقدان فحروالون ابل خاندان اورقرب وجوار كالوكول کوراہ حق دکھائی۔اس کے نتیجہ میں مخالفین کی طرف سے ان کو مادی نقصانات بھی اٹھانے پڑے۔ پچھ عرصہ کے بعد انھوں نے ہندوؤں کے اچھوت طبقے کی طرف توجہ کی جن کو آج کل" وات" کہاجاتا ب\_ساى مصالح كى بنياد يرانبون في اسلام قبول كرف والے تمام الچيوتوں كوية اكيد كردى تحى كد مجھی کمی غیر کے سامنے اپنے مسلمان ہونے کا اقرار ندکریں نداینا اسلامی نام استعال کریں۔اس وقت ہوئی اسمبلی کے بعض دات اراکین بھی ان کے ساتھ ہو گئے تھے کیونکہ انہوں نے بدد یکھا کہ بد ا چھوتوں کی بہود کے لئے دن رات کوشاں ہیں۔ جب بھی حکومت کی انتظامیہ یا عبد پداران پولیس اچھوتوں پرظلم کرتے تھےتوان مظلوموں کی حمایت میں سب سے پہلے بلندہونے والی آ واز سعیدالرحمٰن کی ہوتی تھی۔ اور جب تک وہ معاملہ ان کے حب منشاطے ند ہوجاتا وہ چین سے نہ جیستے تھے۔ ۵/ ابریل ۱۹۸۸ء (بیتاری ۱۲ معبان ۱۰ ماه عاص عطابق تحی ) کوان کے تعافے کا داروغدان کے دروازے برآ یااور یہ کتے ہوئے کدد کھو پولیس کی مخالفت کابیانجام ہوتا ہے۔ان کی پیشائی برگولی مار

ورِ حم کی ایسی بارش فرمائے تھے اس قدر خیال رکھتے تھے کہ جس طرح خاندان کا بزرگ خیال رکھتا ہے۔ لیکن پیشفقت ور حم کی عاوت اصولوں سے متصادم نیس ہوتی تھی اگر بات اصول کی ہوتی تھی تو اپنوں کو بھی نظراند ارکر دیتے تھے۔ اور تائید حق کے سلسلے میں خانفین سے بھی ہاتھ ملا لیتے تھے بلکہ ہرممکن تعاون پر آمادہ ہوجاتے تھے۔ ان کی نفرت وجبت کا معیار شریعت اور ند ہب تھا۔

21/91

آپ كونى اولا وقريد نيقى - پائى بينيال بوكيس آپ كدود داد مولا ناملى عباس صاحب اور مولا نامحد دابد خان صاحب خدمت وين ش معروف بين - آپ نے اپنى زندگى كے آخرى ايام اپنے خویش صغیر احمد صاحب كر ما تھ دستم تكر (كلعن ) بين گذار ،

وفات

مسردی الحجہ و میں احد مطابق سراگت و 1900ء شام کے سات بجے کے قریب جب
سوری و وب رہا تھا اس وقت علم و دائش فقہ ودیانت کا یہ آفاب بھی غروب ہوگیا یعنی شب کم محرم
الحرام اس اللہ کو۔ دوسرے دن تقریباً نو بج درگاہ شاہ نجف میں تاج العلماء مولانا محد زکی صاحب
فیماز جناز و پڑھائی۔ وہاں سے جناز وروضتہ کاظمین لایا گیا جہال مولانا محمد الحسن صاحب فیماز
جنازہ پڑھائی۔ الربیج امہت کے لئے یہ قافلہ روانہ ہوا۔ وہال مولانا محمد حسین صاحب نجنی نے نماز
جنازہ پڑھائی اور پانی جیج شام کو آپ کے فائدانی حسینہ کے محن میں سپر داد کیا گیا۔

IAA

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

یں کبور ول کے شور کی آ واز آئی جب وہ دہاں پہنچا تو ایک سانپ نے اس کے ہاتھ یں ڈی لیا۔ دہ چلانے لگا'' میرے بغض اہل بیت کی وجہ سے سانپ نے مجھے ڈی لیا'' آخر کا رائی شب دومر آلیا۔ تب اس مجلس کے حاضرین نے مجم الدین سکندر سے فرمائش کی کدوہ ایک رسالہ تعییں جس سے حق واضح ہوجائے۔ اس بنا پر انھوں نے '' مرآ ۃ المذاہب فی کشف المناقب'' لکھی جس میں ایک مقدمہ، چارار کان ، یا فی مرآ ت اور ایک خاتمہ ہے۔

(الذراعة جلد ٢٠)

وہ برارے کشمیر گئے۔ پھر بنگال کا سفر کیا وہاں سے علی تلی بیک اصفہانی سے وابستہ ہوئے جن کی فرمائش سے ان کے فرزند محرتق کے نام پر'' مرآ ۃ التی''لکھی۔

ا پن نام سکندر کی مناسبت سے انھوں نے اپنے کئی تصانیف کا نام "مرآ ة" بیعن آئیدر کھا تھا۔ ان میں سے کئی مخطوط رسالوں کو آ قائی ہزرگ تہرانی نے ایران کے کتب خانوں میں دیکھا تھا۔ اور کئی کاذکر الذریع میں کیا ہے۔

سکندر ہندی شاعر بھی تھے۔فاری میں سکندر اور عربی میں اسکندر خلص کرتے تھے۔ان کے قصا کدوغز لیات کے دیوان کا تذکر و آقائی بزرگ تہرانی نے کیا ہے۔

تصانيف

(۱) مرآة المذابب في كشف المناقب (۲) مرآة الآيات (٣) مرآة البنان (٣) مرآة البنان (٣) مرآة البنان (٣) مرآة السعادة (۵) مرآة الشهود (٢) مرآة القلوب (محيك بي ينيس چلتا كه فيمر ٢ في فيم مرآت (۵) مرآة المين مرآت المذاب والميم مرآت بين يااس بي الك مستقل رسائي بين (٤) مرآة الكرامه (٨) مرآة الله مثال (٩) مرآة التي (١٠) مرآة الحقيقة في اصطلاحات الل الحال (١١) مرآة اللازواج (١٢) مرآة المراحة (١٢) مرآة الشروط في آداب الدعاء (١٣) جبارة مينه (١٥) التي يد (١١)

دی۔ اور دووویں جاں بی ہوگئے۔ جب ان کے بھائی اور اہل خاندان تھانے میں رپورٹ کرنے پیوٹے تو ان لوگوں کو تل کے الزام میں گرفآر کرلیا گیا۔ عرصہ دراز تک مقدمہ چاتا رہا۔ جب تک بیہ لوگ چھوٹیں سارا کھریر یاد ہوگیا۔

سیدسعیدالر حن مرحوم کی چھوٹی چھوٹی چند تھسنیفیں بھی شائع ہوئی تھیں جن کے نام حسب ذیل ہیں۔ (۱) تہتر قرقے میں ایک (۱۱ صفی) (الجواد جلد ۲۲ اگت اے ۱۹ میں بطور ضیمہ شائع ہوا۔)

- (۲) شي كول شعه بوا
- (۲) جوارتغز پيداري

سكندر، بحم الدين

بعدانون او الان المنظم الله من القرن الحادي عشر في البند الكوا المنظم القرن الحادي عشر في البند الكوا عبد المحين القرن الحادي عشر في البند الكوا عبد المحين القرن الحادي عشر في البند الكوا عبد المحين المعلم على موتا ب المحين المعلم الموتا بي المحين المعلم الموتا بي المحين المحرم المعلم المعلم المحرم ال

## سلمان احر، حاجی ،میار کیوری

er for

عاتی علیم مولانا سلمان احمد ساحب این مولانا طی تعاوسا جب مبار کیوری اعلمی شاوهه ید از مبارکیور) شده مولانا سلمان احمد ساحب این مولانا طی بیدا اور عندا آپ کوالد ماجدا پنه وقت کے جید علا ویس شار ہوتے تھے اور سلمان احمد ساحب نے ابتدائی تعلیم اُنیس سے حاصل کی گیر مدر ساب علم (مبارک ہور) شی داخل ہو ہوا دیوان سے جامع اطوم جوادیوان ان بینی جہاں سے فحر الا قاصل کی سند حاصل کی دویلی تو میں کے بعد طب کا کورس کمل کیا۔ سمے 19 اور ہوا اور دوران تعلیم مرکا دافقر الملة نے مولانا کو مکسوناری کی مدرسہ باب احلم (مبارکیور) کے برتیل دے (دوران تعلیم سرکا دافقر الملة نے مولانا کو مکسوناری (منطلح آرو بیار) ویش نمازی کیلئے بیجانا تھا)

عدود ۱۹۸۰ میں مولانا فلام مشکری ساحب مرحوم نے حاتی سلمان اتھ ساحب کوسوران کوٹ (پونچی، تشمیر) میں معین کیا کرتھ مالکات کی طرف سے جامعہ قائم کریں اور تدریجی فرائنش انجام دیں چنا ہے وہاں جامعہ امامیہ قائم ہوا جس کی بقا اور ترقی مولانا سلمان اتھ ساحب کے جوش و جذبہ کی مردون منت تھی بعد میں بعض وجود سے ہوا معہ سوران کوٹ سے منتقل دوکر پیاڑ کے اوپ موضین کی ہتی میں چاا گیا۔

وطن ے دور ہو تھے میں مواد ناسلمان احد صاحب نے ۲۰ماری ۱۹۸۳ میروز یکشنبر (۱۱۰ میدادی الله ۱۹۸۳ میروز یکشنبر (۱۱۰ میدادی الله ۱۳ مید میراک اور دیال سے آپ کے وطن میارکپور پیشی جہال آپ کے جسد فاکی کوشید میرکاوش پر دفاک کیا گیا۔
مواد کا سید کر ارجیس صاحب مرحوم نے اسٹ ایک مضمون "ہم اسلم بی طلح تھے۔" میں

معرفة الذات والسفات كن الل العفم (عدا) الاخلاق الجميلة (١٨) الافعال القيد (١٩) وكايات ولات على قدرة الخالق (٢٠) رسالة العروش والقافية (٢١) تتنب اخلاق ناصرى (٢٠) تتنب روحنة الشهداء (٢٣) بشت بيشت (٢٣) معرفت تقويم (١٢ مرآت يمن) (٢٥) كويرشناى . (٤٣) بشت بيشت المعرفة القويم (١٢ مرآت يمن)

#### سلامتعلى

Market Street of the Street of

# مثمل لحن ،سید ، بجنوری

مولا ناسید شمس المحن صاحب باسی فسلع بجنور کر ہنے والے تتے بڑے عبادت گزار نہایت خوش کر دار دوستوں کے لئے باغ و بہار اور دشمنوں کے لئے صاعق شعلہ بار تتے ۔ لکھنو میں تحمیل علوم کے لئے آئے اور ممتاز الا فاضل کی سند حاصل کی ۔ خوش گفتار ذاکر اور بے عدیل واعظ تتے ۔ شب جعد ۲، جنوری ۱۹۲۳ء مرمضان ۱۳۸۳ ہیں رصلت فر مائی۔ شب جعد ۲، جنوری ۱۹۲۳ء مرمضان ۱۳۸۳ ہیں رصلت فر مائی۔ (الجواد یارس جلد نہر مرما ہونہ وری ۱۹۲۸ء)

#### صابرهسین،سید،امروهوی

معتارها و المادار المادار المادار المادار المادار والمادة المروب. حب كي ولادت المروب.

مولاناسیرصابر حین نقوی امروہوی ابن جناب سیدذاکر حسین صاحب کی ولادت امروہ به بیل ۱۹۱۵ء بیل ہوئی ان کی تعلیم سیدالمداری امروہ بہت شروع ہوئی اور پورڈ کے اردو، قاری اور عربی بیل ۱۹۱۵ء بیل ہوئی ان کی تعلیم میر سلطان المداری بیل درجہ سندالا فاضل میں داخل ہوئے لیکن کچھ پریشانیوں کی وجہ سے تعلیم مچھوڑنی پڑی اور سیدالمداری (امروہ به) میں بطور مدری کام کرنے گئے۔ پھر اسلامیداسکول (فیروز آباد) میں عربی ٹیچر کی حیثیت سے کام کیا اس کے بعدر ضالا تبری کام کرتے رہے۔ ۱۹۱۹ء میں افریقہ (تانزانیہ) گئے جہاں (رامپوراسٹیٹ) میں پانچ چوسال تک کام کرتے رہے۔ ۱۹۲۰ء میں افریقہ (تانزانیہ) گئے جہاں

تحریر فرمایا ہے۔ ''جامعہ (امامیہ پونچھ) اس وقت تک کام کرتار ہاجب تک مولانا سلمان احمصاحب مرحوم حیات رہے میں تنظیم کے وفتر میں تھا خطیب اعظم تشریف نہیں رکھتے تھے نماز صح کے وقت مولوی منیرصاحب اپنے ایک رفیق کے ہمراہ جب مولانا سلمان احمد مرحوم کی لاش لے کرآئے ان کی موت کے ساتھ جامعہ بھی وفن ہوگیا۔''

(مولانافيروزعياس اين مولاناعلى ارشادصاحب مباركوري اخبار عظيم المكاتب (جشن يميس كاياد كارى كبله ١٩٩٣ م)

5666666666666666666666666666666666

سلمان حيدرسيد

۱۸ ، شعبان المعظم ۱۳ ۱۲ هـ/۱۱ فروری ۱۹۹۳ ، کوداعتی اجل کولبیک کها (اصلاح جلدنبر ۸۸ نبر ۲ رمضان البارک ۱۳۱۳هـ)

## سادقعلى

1901/015 4.

آپ کا ذکر خیر میں نے بار ہاالحاج علی مجر جعفر شریف مرحوم سے سنا کہ مولانا صادق علی صاحب بہت ہی تخلص اور بے باک واعظ تھے اور بلاخوف لومۃ لائم برائیوں سے رو کئے اوراچھائیوں کی طرف رغبت دلاتے تھے ممباسا سے ماڈ اگا سکر جانے کیلئے شیروانی ٹو پی وغیرہ پہن کر ہاتھ میں چھڑی گئے ہوئے آرام کری پر بیٹھ کر ایسٹ افریقن ایرویز کی گاڑی کے انتظار میں بیٹھے تھے تاکہ ممباسا ایر پورٹ جا کیں اورای حالت میں روح قنس عضری سے پرواز کرگئی ماڈ اگا سکر کے بجائے آخرت کے سفر پر روانہ ہوگئے۔ سنگ مزار پر تاریخ وفات سم، رجب ۲۰ ساھ پنجشنب کھی ہے۔ (۱۲، اپریل ا ۱۹۵ء) پہلے مجھے اتی تو جہنہ ہوئی کہ ان کے ذاتی کو ائف معلوم کرنے کی کوشش کرتا۔

#### صبغته الله،سيد

بعد بے بارھ بعد ہے۔ اللہ بن السید جعفر الموسوی الدارانی المشہور بہ ' کشفی بنجفی'' تیرہویں صدی ججری سید صبحت اللہ بن السید جعفر الموسوی الدارانی المشہور بہ ' کشفی منظومہ کی شرح لکھی دیباچہ علی منظومہ کی شرح لکھی دیباچہ علی اس کا نام مفتاح المفاتح لکھا ہے لیکن ننچہ کی پشت پر مفاتح الکلام درج ہے اور لکھا ہے کہ فی دارالسلطنة لکھنوفی رجب ۱۲۷ھ اے سلطان العلماء کے اشارہ سے شاہ اودھ کو ہدیہ کیا۔ فی سفر مہدوستان۔

19.4 \$<del>\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$</del> عروشا، سونگیا اور مٹاما جماعتوں میں امام جمعہ، و جماعت کی حیثیت سے خدمات انجام دیے راقم الحروف ایک ہفتہ تک مٹاما میں ان کامہمان رہاتھا (اس وقت میں لنڈی میں مقیم تھا جو مٹاما سے تقریباً جالیس میل کے فاصلہ بر ہے)

مثاماے آپ امروبہدوالیس آئے اوروبیں ۱۹۸۲ء کے بعدانقال کیا۔ (الجمن وظیفسادات موشن کولڈن جو بی نبر-واتی معلومات)

#### صادق اصفهانی

آ قائے صادق بن صالح اصفہانی، اصفہان کے فضلاء و کملا میں تھے عبد صفوی میں ایران سے ہندوستان آئے۔الذربعہ جلد فہرسا، میں ان کی دوتصنیفوں کا ذکر ملتا ہے۔جن کے موضوعات ان کے علمی معیار کو بلندی کی نشان دی کرتے ہیں۔

(۱) شابرصادق (مختف موضوعات میں)

(۲) صبح صادق (علم رجال میں ایک مفصل کتاب ہے جو کئی مجلدات پر مشتمل ہے۔) (الذر یوجلد غیر ۳

یا کتان آگرآپ نے جامعہ المنظر میں اور پہل تر رہی کافر اُش منیا گاآپ کے خلوص اور تکن نے جاری آپ کو علاء کی صف میں ایک متاز درجہ عطا کر دیا اور مودت اولوں سے پر تیم پر داروں میں آپ کا شار ہونے ذکار

آپ نے محض ۵۹ مرس کی ترجی بزاروں ملا می تربیت کی اور میکروں و بی مدارس قائم کے آپ کے قائم کردود بنی مدارس پاکستان اوردوس میکوں جی و بی ملوم کی تروی جی مشغول جی ۔ تصنیفات و تراجم

آپ فرنس کا داری این ایست الله سال ۱۱ دوری و بر کیاا مام این کی ایست کی میان ان کی رحلت مشہور کتاب کا دلایت الله سی اس اردوی و بر کیاا در آب الله سید کی کا مین کا ام ویش کر بر کیا اورا آب یا کتان میں امام فینی کے وکیل بھی کے بعد پاکتان میں امام فینی کے وکیل بھی سے ایک بات میں امام فینی کے وکیل بھی سے آپ کا شار ملت جھفر یہ کے ان چند علما و میں بوتا تی جنہوں نے اپنی زیر کی علوم فیر وآل اور کی تھے۔ آپ کا شار ملت جھفر یہ کے ان چند علما و میں بوتا تی جنہوں نے اپنی زیر کی علوم فیر وآل اور کی تو واث واث اور کا اسر منفر حسین فیلی ایک باند پاید عالم و مین اور معلم ہوئے کے ساتھ ساتھ اللی اطابی اور کی ماری اور مراکز موجود ہیں جن کے بات والی کی مرتباز مواور دیں جن کے بات اور میر وال ملک آپ بیش کی مرتباز مواور دیر گرا کیک اسلامی کا مرتباز مواور دیر رک موجود ہیں جن کی داری اسلامی کا مرتباز مواور دیر رک موجود ہیں جن کے اسلامی کا مرتباز مواور دیر رک موجود ہیں خوال کی داری اور مراکز موجود ہیں خوال کی داری کا مرتباز موجود ہیں خوال آپ کی ذات امیش فیر متباز مواور دیر رک موجود ہیں خوال میں موجود ہیں خوال موجود ہیں خوال میں موجود ہیں خوال میں موجود ہیں خوال میں موجود ہیں خوال میں موجود ہیں خوال موجود ہیں خوال موجود ہیں م

ال قَ اليك بالديد باقر منط الدول الن سيركو سلطان العلماء كواى و ١٥ الدي بدير كاتفي. معقير حسن سيد

سید مینی مستند بیدی الواسطی و بلوی التخلص بیش بطیع یا فی و بلی کے مالک تصان کی ایک تصنیف محیقه قور (سوائع حیات جناب سید نور الله شبید تالث ، آگرو) کا ذکر الذریعه بش ہے مقل ساوات کی ووجلد یں بھی مالیا تیش کی آھنیف میں الن کے ملاووان کے آتار میں دوکما میں اور ہیں۔ ا- سوائع مری محاد این افراد میدا تھی

י לעיב ונודוני

# صغدر حسين اسيدنجل

1949/01/1

مولانا ميد مندرسين فحق بيناب ميد نلام مرور نقل كفرز كدين آپ مع احا ما ميداد عن الى پير شلع مقل از در كه يك نواتى كادن عن بيدادوك سات سال كافر عن ١٩٨٠ من الي يجا علامه سيد في ياد شاد فجق كى خدمت عن زانوت تلذ تهد كيان ١٩٥١ من اللي تعليم كيلي نجف الثرف تشريف في كادر آبت الله في آتى آل راضى ، آبت الله النونى اور آبت الله صن مكيم هما همائى اور ويكر جهته إن سر من في كرت رب ١٩٥٠ و عن يا كتان آخر يف ال

اس وقت آپ کی عرتمی سال درج باس حاب ے آپ کی پیدائش حدود ۱۸۹۴ء میں مجھنی چاہئے۔

آپ نے تقریباً ٣٣ سال تک سلطان المداری میں تدریبی خدمات انجام دیے اور شاگردوں کی ایک کیر تعداد کوفیض پینجایا

مولانا ١٩٥٤ء كاواخر مي عليل ہوئے مرحوم كے برے صاحبزادے بغرض علاج آپ كو بليا لے گئے جہاں وہ خود مقیم تھے آپ نے وجیں ٢٣، مارچ ١٩٥٨ء (٢، رمضان ٢٤ ١٣ ه كو دائق اجل كولبيك كہااورو بيں فن ہوئے۔

(سيرطى المام صاحب محدة بادى وجود حرى سيدسبط محدصا حب أقتوى)

#### ضامن حسين ،سيد ، الحائري

آپ اپ زہدوتقوی اور قبم وفراست کی ہدولت معاشرے کے مختلف طبقات ہیں عزت و
احتر ام کی نگاوے ویکھے جاتے تھے
وفات
دورہ ایران کے دوران علالت کے سب تبران اسپتال میں داخل کیا گیا وطن والہی پر
گزاچی کے ایک اسپتال میں داخل ہو گئے لیکن وفات کے چندروز قبل اسپتال ہے گھر چلے آئے تھے۔
گزاچی کے ایک اسپتال میں داخل ہو گئے لیکن وفات کے چندروز قبل اسپتال ہے گھر چلے آئے تھے۔
گزاچی کے ایک اسپتال میں داخل ہو گئے لیکن وفات کے چندروز قبل اسپتال ہے گھر چلے آئے تھے۔
گزاچی کے ایک ایو اے کہ نجرے پورے ملک میں رہنی وفاح کی ایک فضا پیدا ہوگئے۔
(رضا کار ملائور کی تاکہ وئی 1944ء)

صغيرسن،سيد، محدآبادي

علاتا الم 1904ء
علانا سرم في حن صاحب قصب محمد آباد گو مند (ضلع مئو) كے باشندے تقے آپ كے دادا
سيد حن عباس صاحب اورمولانا سيد الطاف حيدرصاحب كے والد سيد مظامر عباس صاحب سكے بجائی
سيد حن عباس طرح مولانا الطاف حيدرصاحب مولانا صغير حن صاحب كے بچا تھے۔
ابتدائی آفیلیم وطن میں حاصل كرنے كے بعد سيد صغير حن صاحب مدرسہ ايماني (بنارس)
ابتدائی آفیلیم وطن میں حاصل كرنے كے بعد سيد صغير حن صاحب مدرسہ ايماني (بنارس)
میں آتے اورمولانا سيد على جوادصاحب طاب را اوكى زير محمرانی تخصيل علم میں معروف رہ بچرسلطان
الدارس كے جہاں آخر میں باقر العلوم اور بادى الملة طاب را ایما ہے استفادہ كاموقع ملا

0000000000

# ظفرالحنسيد،آية الله

. IRAT GIT .T

آية الله مولانا سيدظفر ألحن صاحب الني نضيال موضع خطيب يورضلع اعظم كره عن اس، رمضان البارك ١٣٢٩ ه (مطابق ١٩١٠) كو بيدا ، و ع آب ك والدمولوي سيظمير الحن صاحب ابن سیدتقدق حسین صاحب موضع منحن بورضلع اعظم گڑھ کے باشندے تھے جنہوں نے آپ کا تاریخی نام ظفرالحن رکھاابتدائی تعلیم اینے والد بزرگوارے حاصل کر کے مدرساسلامی نظام آباد شلع اعظم كره مين داخل موع \_ بجريدرسدايماني بنارس من تعليم حاصل كى \_ بجرسلطان المدارس الصنوع جہاں سے ١٩٣٥ء من صدر الافاضل كيا \_ لكھنو كے اسا تذہ من بادى الملة مولانا سيدمحمد بادك صاحب، مولانا سيرمح صاحب مولانا سيدعالم حيين صاحب، مولانا عبد الحيين صاحب، مولانا سيد الطاف حدرصاحب اورمولاناسدائن صن صاحب نونبروى كاساء كرامي قابل ذكرين- قيام كلحنو کے دوران کھنو یو نیورٹی کے عربی وفاری کے امتحانات بھی امتیاز کے ساتھ یاس کئے۔فارغ التحصیل ہونے کے بعد ۱۹۳۵ء ہے ۱۹۳۷ء تک آپ مدرسہ باب العلم مبار کیور (اعظم کڑھ) میں مدرس اعلیٰ رے۔ ۱۹۳۷ء میں نجف انٹرف تشریف لے گئے جہاں آپ نے آیت الله عبدالحسین رشتی، آیت الله سيد ابوالحن اصفهاني آيت الله سيد ضياء الدين عراقي آيت الله سيد جواد تبريزي ، آيت الله ابراجيم رشى، آيت الله سيد جمال كليا يُركاني اورآيت الله سيدعبدالله شيرازي طاب راتهم ع كب فيض كيااور ان حضرات اوردوسرے علماءے اجاز ہائے اجتہاد کیکر • ۱۹۳ء میں ہندوستان واپس آئے۔

• ١٩٢٠ء = زندگی کے آخری لحات تک جامع العلوم جوادید بنارس کی خدمت میں مشغول رے اولا وائس بر مل کی حیثیت سے اور اسکے بعد بر مل کی حیثیت سے راقم الحروف نے جولائی ضاءالله، سيد، فيض آبادي

مولانا سید ضیاء الله مولانا سیدمظم علی فیض آبادی کے برے صاحبز ادے تھے ماہر معقولات ومنتولات تصصاحب تحتیق وتعنیف تھے نماز جمعہ یران کا ایک قلمی رسالہ خدا بخش لا بمریری (یشنہ) سے باک عرصہ تک بحاقل پور (بہار) میں امام جعدو جماعت رہ مولانا کی وفات ان کے يدرين ركوارك زعركي ش بوكل-

8888888888888888888888888888888888

(الجوادينارس اكت ١٩٨٧م)

### و طالب حسين كريالوي، شهيد

19012/SIF45 1996/61111

2000000000

مولانا طالب حسین کریالوی عمره خطیب اورتقریاایک سوکتابوں کے مصنف تھے مولاناسید محد جار جورای (مدیراصلاح لکھنو) کی تحریر کے مطابق طالب حسین صاحب نے توحید پر بندرہ جلدي سرت رسول برتس جلدي اورسرت امير المومنين يربينتاليس جلدي للهي تحيس مرجلد ايك خاص موضوع يرب اوراوسطاؤ حائى تمن سوسفات يرضمل بمسلة تحريف قرآن والى جلد جيسو ذا كم فحات يرميط ٢٠

راقم الحروف في مولانا موصوف كوصرف ايك بارقم من ويكما تمار ٢ - جولائي ١٩٩٤ م كم رقع الاول ١٨ ١١ وكومورسائيل يرسوارساوساء عاريدول في ال فعال عقل كولا مورش شبيد كرديا وقت شبادت ان كى عمر ٢٥-٥٠ مال كري يعلى .

Scanned by **TapScanner** 

میں آپ عاقل تلفی کرتے ہے اور بناری کے مشاعروں میں قصائد کہدکر آپ ہا نے موادی سید مناظر الحن مرحوم کواورد ومرے طلبا م کودید ہے تھے دوسرے شاگردوں کے قصائد کی اصلاح مشزادتی راقم الحروف کو بھی آپ کی شاگر دی کاشرف حاصل ہے الجوادی بھی بھی آپ کے قصیدے گمنام اعظمی کے نام سے چھتے رہے ہیں عربی اشعار کا ایک نموند وہ طویل مرشدہ جو آپ نے سرکار ناصر الملہ کی وفات پر ۲۱ سال میں کہا تھا جس کا آخری شعر سے ہے۔

> لمانعیت به فقلت مورخا ساد الجنان بنشره العقبات ۱۳۲۱ه

ای طرح حفرت جه کی شان میں ایک قصیدہ دالیہ ہے۔

تصانف

آپ کی ایک اردوتصنیف انتظار قائم آل محمد بہائیوں کی کتاب ظہور قائم آل محمد کے جواب میں تین جلدوں میں شائع ہوئی ہے۔ لیکن اس ایک نام ہے مصحح صورت حال کا انداز وقیمیں کیا جاسکتا۔ اشعار وقصا کد کی طرح نہ جانے آپ کی کتی تحریروں نے دوسروں کو مصنف بنادیا۔ الجواد میں ایک طویل عرصہ تک تغییر رضی چیتی رہی اس میں بھی بیزی حد تک آپ کی کا وشوں کا حصہ تھا بابا خلیل داس کی چید کتا میں (جنہیں حکومت نے ضبط کرلیا) ایک لئے گئے بھی حوالوں کی فراہمی کا فی حد تک ظفر الملة کی آوجہ کی مربون منت تھی۔ امیر المونین علیہ السلام کا وہ فی البدیبہ خطبہ جس میں کہیں حرف الف نہیں آیا کی مربون منت تھی۔ امیر المونین علیہ السلام کا وہ فی البدیبہ خطبہ جس میں کہیں حرف الف نہیں آیا الف نہیں ہوئی۔ ہے آپ نے اس مجز انہ حیث میں آورد محسوس نہیں ہوئی۔

ا ١٩٢١ء ٢ ١٩٢٠ء ك أفرتك آب عالب فيض كيار

الانده

باب اعظم اور جوادیہ یں آپ کے طلباء کی فہرست طویل ہے۔ ان میں سے صرف چند نام یمال درج کے جاتے ہیں۔

مولانا سيد وزيرسن صاحب، ؤاكر سيد اقبال احمد صاحب، ؤاكر سيد امير صن عابدى،
مولانا سيد و فقارز في پورى، مولانا فياض سين وليد پورى، حييم سيد ظفر مهدى صاحب، اعظم گرده، حكيم
سيد دياض حن صاحب كراچى، مولانا سيد محمد صاحب زقى پورى (سابق پزيبل مدرسه سليمانيه پنينه)،
مولانا سيد محر حين صاحب، مولانا على ارشاد صاحب مباد كورى، مولانا سيد كراد حسين صاحب مرحوم،
واحظ مولانا سيد احمد صن صاحب (پرنيل مدرسه ايمانيه بنادي)، مولانا عابد حسين صاحب كرادوى اور
مولانا سيد هيم الحن صاحب (جنبول ني عراق به والين آفي كا بعد مدرسه جواديدى ترئيل بياسادى
واحد در سينجال في تحيى اوراب اپني والد برز گوادى جگد پرجامع العلوم جواديدك پرئيل بير)،

جنوری ۱۹۵۰ء ہے آپ نے ماہنا مدالجواد کا اجراء کیا اور ایک عرصد درازتک اس کوایے مقالہ نگاروں کا تعاون حاصل رہاجن کی ہر تحریح تحقیق کا مرقع ہوتی تھی مجھے بھی دس سال تک (افریقہ جائے کے پچھے دنوں بعد تک) پیشرف حاصل رہا کہ ان اساطین نقد ونظر کی صف نعال میں جگہ ملتی رہی۔

ناعرى

آپ كيم في اوراردوقعا كوفعاحت و باغت اوردواني وسلاست كام تع بوت تحاردو

تحاس کی وجہ ہے بہت ہے مونین باہمی تناز مات ئے نصلے کیلئے آب بی کی طرف رجو ٹ ار سے تھے موشین میں قد بی بیداری پیدائر نے کی فرض ہے آ ہے نے مظمر اور دیشلع میں انجین رفا والموشین قائم كى تحل جس كالك بنيادى مقعد يدقعا كه موشين بين أمركوني تفازيد بيدا جوتو كورت يجبري كي دورًا كاف كے بجائے حاكم شرع سے اس كافيعلد كراليں \_اس الجمن كاسالان جلس سى ايك شوياد بيات ش ( قريداندازي کي ہناء پر ) منعقد کیا جاتا تھا۔ جس میں دو تین دن تبلیغی مجلسیں ہوئی تھیں اور الجمن کی ر پورٹ اور حساب و کتاب چیش ہوتا تھا بعد میں سال میں دو تھن جلے ہوئے گئے تھے اس انجمن کے وريع بهت ي ساجي اصلاحي بوكي اورمونين من اتحادوا تفاق كاجذبه بيدا بوا

الك عرصد بي بالى بلد يريشرين مبتلات الدراس عالم بن بهي مونين عدما كل ومشاكل عل كرنے ميں مشخول رہتے تھے مدرسہ كے علاو وشير بناري اور اصلات اعظم الذي و غازى بوركى ايك ایک شیعه آبادی کی دادری کرتے رہے تھے آخرشب مقد جم مادر فتح الاول ۲۰ ۱۱ دمطابق کم جنوری ١٩٨٣ ، جبكه مدرسه مين آپ كي بنا كرده ١٤ ، رئي الاول كى مخفل مقاصده كا انتظام عروج پرتخااورشع اءو سامعین آ کر بیٹے ہوئے تھے کدسر کارظفر الملة مولانا سيد ظفر الحن خدمت رسول وآل رسول على بہنچ تاریخی نام ظفر الحن الملة کے پہلے سید کے اعداد (۴۰) جوز دینے سے سنہ وفات نکا ہے۔ بیسر کار ظفر الملة كي زندگي كا ايك مختصر خاكه تفاليكن اس الكي علمي انتظامي اورسايتي خدمات كا انداز ونيس ہوسکتا۔مولانا سیدظفرانسن صاحب بلاشیہ ایک عظیم اور مہدآ فرین بستی کے مالک تھے آپ کو بیک وقت مجتبد فقيد مضر محدث يتكلم فلسفي منطقى اديب شاعر صحافى ناقد مصنف اور بهترين مترجم نيز ندبب تق كالكرال مدارى دينيه كاياسيان ، جامعه جواديه كاز يم على اسلام كانديم قوم وطت كالكبيان مجالس و

مقدمه غازي يور

زقی پورٹی ای، رمضان کوجلوں نکا ہے۔ ایک سال ایک اجراری محض نے ایک زہریا منفلت تجرا كالعنتي جلوس شائع كياغازى بورك تى كلفرن اس اشتعال انكيز سمجما اوراعلى دكام ب اجازت ليكراس اجراري كفاف كورنمن كاطرف عمقدمددا لزكرويا كورنمن بليفر جوبندو تق انکویشوں شب کے وقت بھا کرمر کارظفر الملد نے صدر اسلام کی مفصل اسلامی تاریخ حوالوں کے ساتھ بتائی اور جب ڈسٹر کٹ جج کے بہال مقد مدشروع ہواتو بندرہ دن تک مولا نام حوم اجلاس میں حاضررے جبال فی نے آپ کوکری پر میضنے کی اجازت دی تھی جبکہ فریق مخالف کے علماء کھڑے رہتے تحال مقدمه كاشاء اركامياني مولاناكى دين فدمات كاليك روش نموند ب

تعقیم الکاتب کی تایس سرکارظفر الملة اورمولاناسیدغلام عکری مرحوم کے باہمی مشوره ے بوئی تھی ادارہ کے قائم ہوتے ہی سرکارظفر الملة نے مین کے اپنے ایک معتقد کواس سلسلے میں خط الکھااورانبول نے مامکات کافری اے ذمہ لیا تاہیں کے فرزابعد مامکات کے قیام سے ادارہ کی ساکھ بڑی اور دوسرے علاء اور بزرگان قوم اس میں شامل ہوتے چلے گئے۔ سرکار ظفر الملة عظيم الكاتب كاندكى جرمدررب-

الجمن رفاه المومنين

ي في عصرتى اطلاع اورفاعي طور عاعظم كرده ضلع عن سركارظفر الملة كاجوار ورسوخ

## ظفرحسن،سيد،اديب اعظم

-1191/21T .A-9 .19A9/sir .9

ادیب اعظم مولا ناسیدظفر حسن صاحب کے والدسید دلشادیلی صاحب امر وبیشلع مرادآ باد كرب والے تع جبال اديب اعظم كى دلادت اوراء موسار من اولى ابتدائى تعليم امروبہ میں حاصل کی۔ اس کے بعد مدرسہ ناظمیہ تکھنؤ سے فاضل پاس کیا۔ تکھنؤ سے واپس آگر سرکاری نصاب تعلیم کی طرف تو چیفر مائی۔ اورالد آیا دوہ بخاب یو نیورش سے ملا ہنشی فاصل وغیرہ کے امتحانات یاس کے۔ان امتحانات کی تیاری امروبد کے مشہور ومعروف قاری وعربی کے ادیب کائل مولانا سید جواد حسین صاحب (خویش سرکار مجم العلماء) کے زیر تعلیم رہ کرکی ۔ لکھنٹو جانے سے قبل آپ نے فقیبدلا ٹانی فاضل نبیل عالی جناب مولا ناسیداولاد حن صاحب نورانشد مرقدہ سے فقد کی تعلیم حاصل كى ركعنو مين سركار فجم العلماءاورخطيب ابلبيت مولاناسيد سبط حسن صاحب قبله مرحوم وجناب مولا ناسيدعالم حين صاحب عشرف تلمند حاصل موا-

ندہب کی مجت میں آپ نے پرائیویٹ طور پر اگریزی بھی پڑھی۔ پنجاب یو نیورٹ سے ايم \_اليں \_امل كامتحان ياس كيا \_

ااواء ے ملازمت كاسلىلىشروع بواساواء سى 191، تك آپ كانبورش تھیوسوفیکل اسکول میں ہیڈمولوی رہے۔ جب بداسکول کالج ہوگیاتو آپ بحثیت پروفیسر کام کرتے رے ١٩١٧ء من آپ كے والد ماجدسيد ولشادعلى صاحب كا انقال ہوگيا۔ اب آپ كو وطن سے

محاقل كى جان ، قرياء ومساكين كا بعدر د اور بيانوا بتيمول اوريواؤل كالجاو ماوي محدول اور امام بازول كيلي مركز نفرت اورمح اب ومنبركيك باعث زينت ويكرخلق وانكسار اورعابد شب زنده دارجي -6.6.2

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

مولاتا سيد ظفر الحن صاحب طاب شراه يرالله تعالى في جوافضال وانعام ك عقران من ایک اہم فعت میتی کا کے سب بینے اور دامادخواہ انہوں نے مدرسوں میں پر هاہو یا کالجول میں پوری طرح يا يندند ب صاحب كروارين اورامامت غماز كي صلاحت ركعة بين \_آب في جديث اورجار ينيال ياد كارچيوزي (١) جمة الاسلام مولاناسيد شيم الحن صاحب جواسة يدر بزرگوار كے معنوں على جانظين إلى \_(٢) ورالحن جوانحين بحى بين اور ذاكر و فيش نماز بحى بين \_(٣) حكيم سيدخوشنود حن جنیوں نے جوادیہ عالم یاس کر عطبید کالئ پٹنے صلب کی اعلیٰ سندحاصل کی اوراب نظام آبادی مطب کردے ہیں۔ (م)سیوعلی الحن صاحب جوجامعد ملیدولی میں انجینیر مگ کے شعبہ کے میڈیں اور کیسورکی ایک فیلڈیس دنیا کے مانے ہوئ ماہرین میں شار کے جاتے ہیں۔ (۵)سیدولی الحن صاحب جنبول نے ملیکر داور بنارس دونوں جگہوں سے قاری میں ایم اے کیا اور اب ایران من إلى الميدرض ألحن صاحب جوبندرام خيني پيروكيمكل لميديد مين الجينزين-

تہیں رکھتے سے رسالہ تورین ہونی بعض مضایین متعدون طوں بیں شائع ہوتے رہے جیسے حقیقت انسانیہ اسلام فطری دین ہے۔ روحوں کی حاضرات علامہ برزخی کا مکالہ وغیرہ توربی پرموتو فی ٹیس ہے بلکہ بہت سے اخبار وجرائد بیں آ کچے مضامین چھتے رہے ہیں۔ آ پ کے ادبی خدمات کی قدر یو پی گورنمنٹ کے گھڑ تعلیم نے بھی کی اور ایک عرصہ تک آ پ کے تصنیفات بطور فلسف بک کالجول ہائی اسکولوں اور ورنیکلر مدارس میں پڑھائی جاتی رہیں گئی مرتبہ آپ کو مضمون تو ہی پر گورنمنٹ اور پبلک سوسائیٹیوں کی طرف سے انعامات بھی ملے اویب اعظم کی تصنیفات دوشم کی ہیں۔ اول وہ کہا ہیں جو تھا تھا ہم کی تو بین خدمت کے لئے لکھے گئے تھا تھا وہ کی تو جو کہا ہیں اور رسائل جود نی خدمت کے لئے لکھے گئے آپ کی تو جو لئے میں ان کا تو جہ تا ہے گئے میں ان کا ترجمہ علی انہوں میں گیا۔ تغییر القرآن کے ترجمہ کے علاوہ منا قب این شہرآ شوب کا ترجمہ علی اغضائل کے نام سے دوجلدوں میں گیا۔ تغییر القرآن کے نام سے ان کا قرآن کا اردو ترجمہ علی ہم شائع ہو چکا ہے۔

وفات

۸ مرکی ۱۹۸۹ء (= ۲ رشوال ۹ م ۱<u>۱ می</u>) کو بروز دوشنبه ساڑھے دیں بیجے دن میں کراچی (پاکستان) میں وفات پائی اوراک روز ۲ بیج شام کوجامعد امامیہ میں سپر دخاک کئے گئے۔ (الواعظ می جولائی ۱۹۸۹ء تا ۲۲ ش- ۴۵ ۲ مضمون سیر جہذیب اُمحن امروبہ کلّہ تقانی شلع سراد آباد، شوال ذیقعدہ - ذی الحجہ و ۱۳۵۰ء قریب رہنے کی قلر ہوئی۔ <u>۱۹۲۰ء میں</u> آپ کا تقر ربطور ہیڈ مولوی پارکر ہائی اسکول مراد آباد میں ہوگیا۔ بیاسکول بھی چندسال بعد کالج ہوگیا۔ س<u>ااوا ،</u> تک آپ اس کالج میں رہے۔ ذاکر کی

سااوا میں کا پورے ذاکری شروع کی جس کا سلمہ و ۱۹۸۰ ، تک جاری رہا۔ آپ کا شار بعد دستان کے صف اوّل کے واعظین میں تھا۔ امر و بہ کلہ جعفری میں ، ما و صفر کے عشر وَ اول میں شب کو بھل پڑھتے رہے۔ رات کو تمن بج وہاں ہے مراد آباد جانا شام کو پانچ بج واپسی۔ دن میں اسکول کی ڈیوٹی۔ کھا تارات کو بعد مجلس اا بج کھاتے تھے دس روز تک اتی تخت محنت کرنا انہی کا کام تھا متا کی ہونے کے باوجود اٹل وطن آپ کی تقریب بحد پند کرتے تھے۔ و ۱۹۲ ، و ایک عشر و کیم محرم متا کی ہونے کے باوجود اٹل وطن آپ کی تقریب بحد پند کرتے تھے۔ و ۱۹۲ ، و ایک عشر و کیم محرم سے ۱۹۲۰ میں دیاست پٹیالہ میں فلیف خاندان کے عزاجانے میں پڑھتے رہے تقسیم ملک کے بعد جب وہ خاندان لا ہورشتان ہوگیا اور گئی و ۱۹۵ ، میں او یب اعظیم بھی کر اپنی تشریف لے گئے۔ تو پچر بیسلم شروع ہوا اور ۲۲ سال لا ہور میں ایسٹ روڈ خلیفد لاح میں ذاکری فرماتے رہے۔ واعظین سے سلم ایک میں مزیر پر ۵۰ سال تک میں بڑھی ہوں۔

کراپی پیونچ کرناظم آبادی اپناذاتی مکان تغیر کیا جوظفر منزل کبلا تا ہے۔ ایک دیلی مدرسہ جامعہ امامیہ کے نام سے قائم کیا۔ تصاففہ

تقریباً ۱۲ (باسفہ) سال آپ ملمی خدمات انجام دیتے رہے۔ دماغ اتنار سااور طبیعت اتنی روش کے جس مضمون پر قلم اٹھاتے ور بابہا دیتے تھے جس مضمون پر تقریر کرتے اس کے کسی پہلو کو تھے:

Personance of the second

Scanned by **TapScanner** 

نہیں رکھتے تھے رسالہ توریش بعض بعض مضایین متعدد تنظوں پی شائع ہوتے رہے بھے حقیقت انسانیہ اسلام فطری دین ہے۔ روحوں کی حاضرات علامہ برزخی کا مکالمہ وغیرہ توربی پرموتو ف نہیں ہے بلکہ بہت سے اخبار وجرائد میں آ کچے مضامین چھتے رہے ہیں۔ آپ کے ادبی خدمات کی قدر یو پی گور منت کے تکہ تعلیم نے بھی کی اورائیک عرصہ تک آپ کے تصنیفات بطور فلسٹ بک کالجوں بائی اسکولوں اور ورنیکر مدارس میں پڑھائی جاتی رہیں گئی مرتبہ آپ کو مضمون نو ہی پر گور نمنٹ اور پیلک سوسائیٹیوں کی طرف سے افعامات بھی سلے ادب اعظم کی تصنیفات دوشم کی ہیں۔ اول وہ کتا ہیں جو ککمہ تعلیم کی ضرورت کے لئاظ سے تھیں۔ دوم وہ کتا ہیں اور رسائل جود بی خدمت کے لئے کہتے گئے تھے تھے۔ اصول کافی کے ترجمہ آپ کا وجہ کے علاوہ منا قب ابن شہر آشوب کا ترجمہ علی الفضائل کے نام سے دوجلدوں میں کیا۔ تغییر القرآن کے نام سے دوجلدوں میں کیا۔ تغییر القرآن کے نام سے ان کا قرآن کا اردو ترجمہ علی ہو چکا ہے۔

<del>}}</del>

فات

۸ (منی ۱۹۸۹ء (=۲ رشوال ۹ مسامیه) کو بروز دوشنبه ساژ سے دی بج دن میں کرا پی (پاکستان) میں وفات پائی اوراک روز ۲ بج شام کوجامعدامامیہ میں سپر دخاک کئے گئے۔ (الواعظ می -جولائی ۱۹۸۹ء ت ۲۱ شمون سید جند ہب الحن ۔ امرویہ کلّه حقانی شلع مراوآ باد، شوال دی لقعدہ - دی الحد و ۱۹۰۰ھ) قریب رہنے کی آگر ہوئی۔ <u>۱۹۳۰ء میں</u> آپ کا تقر ربطور ہیڈ مولوی پارکر ہائی اسکول مراد آباد میں ہوگیا۔ بیاسکول بھی چندسال بعد کالج ہوگیا۔ ۱<u>۹۱۳ء ت</u>ک آپ اس کالج میں رہے۔ قاکری

سااوا میں کا پیورے فاکری شروع کی جس کا سلسلہ و ۱۹۱۸ ، تک جاری رہا۔ آپ کا شار پندوستان کے صف اوّل کے واعظین میں تھا۔ امر وبد گلہ جعفری میں ، ماہ صفر کے عشر وَاول میں شب کو چلی پڑھتے رہے۔ رات کو بین بج وہاں ہے مراو آباد جانا شام کو پانچ بج واپس ۔ دن میں اسکول کی ڈیوٹی۔ کھانا رات کو بعد مجلس اا بج کھاتے تھے دی روز تک اتی تخت محنت کرنا انہی کا کام تھا مقالی ہونے کے باوجود اہل وطن آپ کی تقریب یحد پند کرتے تھے۔ و 191، ہے ایک عشرہ کی محرم سال ہونے کے باوجود اہل وطن آپ کی تقریب عدد پند کرتے تھے۔ و 191، ہے ایک عشرہ کی محرم سے ملک کے بعد سے مارم تک ریاست پٹیالہ میں خلیفہ خاندان کے عزا خانے میں پڑھتے رہے تقسیم ملک کے بعد جب وہ خاندان لا بورشقل ہوگیا اور می واقع ایم میں او یب اعظیم بھی کرا چی تشریف لے گئے۔ تو پھر بیسلہ شروع ہوا اور ۲۲ سال لا بور میں ایسٹ روڈ خلیفہ لاح میں واکری فرماتے رہے۔ واعظین کے میں کرام کی فہرست میں شاید ہی کوئی واعظ آپ کوالیا نظر آئے جس نے ایک ہی مغیر پر ۵۰ سال تک میں بیست میں شاید ہی کوئی واعظ آپ کوالیا نظر آئے جس نے ایک ہی مغیر پر ۵۰ سال تک میں بول ہوں۔

کراچی پیو فی کرناظم آبادی اپناذاتی مکان تغیر کیا جوظفر منزل کبلاتا ب-ایک دین مدرسجامعدالمید کتام سے قائم کیا۔

تصانف

تقریباً ۱۲ (باسم ) سال آپ ملمی خدمات انجام دیتے رہے۔ دماغ اتنار سااور طبیعت اتن روشن کہ جس مضمون برقلم اٹھاتے دریابہادیتے تھے جس مضمون برتقر ریکرتے اس کے کسی پہلو کو تھا۔

ظفرمهدى سيد، اثيم

سید ظفر مہدی المتخلص با اٹیم ، ابن سید حسن ابن سید علی نقتوی جرول شلع بارہ بھی کے سادات موسوی میں سے سے اور علی تکر جرول کے تعلقہ دار سے انہوں نے اپنا نسب نامہ اپنی کتاب '' روش الصادقین'' کے مقدے میں دیا ہے۔ کتاب کے مطالعہ سے اندازہ ہوتا ہے کہ وہ علم وفضل کے اعلی مراتب پر فائز سے یعنی دولت علم اور دولت و نیا دونوں سے مالا مال سے موصوف قاری نظم ونثر پر کیساں قدرت رکھتے ہے۔ کتاب کے سم ورق پر ان کے لئے'' حمر علام اور بح طمطام راس المتالیسین رکھی المور نیمین وارتبا کھے ہیں۔

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

ید کتاب امیر الموشین علید السلام کی سوائح عمری کے طور پرنے۔ اس کی تصنیف ۲۹۲ او میں شروع ہو کر استاد هیں ختم ہوئی تھی۔ اس لئے اس کا تاریخی نام "روض الصادقین (۱۳۹۱ هـ) الملقب بدسرة المتقین (۱۳۳۱) " ہے۔ (الذر بعد جلد یاز دہم میں اس کا نام روض الصادقین فی احوال النبی وامیر الومین لکھاہے، جو غلط ہے)۔

کتاب ایک مقدمہ، پانچ روضوں اور ایک خاتمہ پر مشتمل ہے۔ میرے کتب خانے بیں پہلاھتہ ہے جومطیع عین الفوض (جرول) میں رئیسانہ اہتمام ہے چھپا ہے۔ اس میں شروع بیں پوری کتاب کی مفصل فہرست مفتی صاحب اعلی اللہ مقامہ کی روائح القرآن کی طرز پر ۲۳۳ صفحات پر محیط ہے۔ اس کے بعد امیر الموشین کے اساء والقاب خوشما کچولدار چوکھوں میں تروف بھی کی ترتیب ہے دیے ہیں جواسم اعظم کے ہم عدد (۱۱۱۲) ہیں اور ۴۸ صفحات تک چلے گئے ہیں۔ اس کے بعد صفح فہر اس معلوم نہیں باتی جلدیں جھپ گئے تھیں۔ اس کے بعد صفح فہر اس معلوم نہیں باتی جلدیں جھپ گئے تھیں۔

ظفرمېدى، څخ، جو نپورې

انساری میں داخل ہوئے اور صدر الا فاضل کیا۔ مولانا سید ظفر الحن صاحب (پرنیل جامع العلوم المداری میں داخل ہوئے اور صدر الا فاضل کیا۔ مولانا سید ظفر الحن صاحب (پرنیل جامع العلوم بولادی میں داخل ہوئے اور صدر الا فاضل کیا۔ مولانا سید ظفر الحن صاحب (پرنیل جامع العلوم بولادی کے بعد ایک اخبار میں مولانا کے علم اور تقذی کا احتراف کرتے ہوئے ان کے قومی خدمات کو سراہا گیا تھا۔ ختم تعلیم کے بعد ایک عرصہ تک حسین سخنج ہائی اسکول (حسین سخنج بنتلع سیوان، بہار) میں اردواور فاری کے ٹیچر رہے۔ ساتھ ہی ساتھ حسین سخنج کی اسکول (حسین سخنج بنتل ہوں سے بہت چانا مجد ہیں امام جمدہ جماعت کے فرائض بھی انجام دیتے رہے۔ بعض اخبارات کی تحریر سے بہت چانا ہوگی (بہار) میں امام جماعت سے ۔ معلوم نہیں بیسلما کرسے کب تک حاری رہا۔

مولانا بہت بی نیک سیرت بخلص ، اور عالم باعمل تھے حدّ ت ذہن سے دومرتبدد ماغ مخل ہوگیا تھا لیکن چُر تندرست ہوگئے۔ حدود (1904ء میں جوادید (بناری) میں مدری مقرر ہوئے تھے (یعنی را فجی کا سلسلہ بناری کے بعد شروع ہوا ہوگا)۔ آخر عمر میں جوادید میں آ کر مقیم ہوگئے تھے اور دیس سے مرد مبر (1904ء) = (۲۵ / رکھ الاول اس میا اور ایک جنت ہوئے۔ اور دیس سے مرد مبر (1904ء) = (اصلاح برب الرجب الرجب مطلق افوار، ذاتی معلومات)

FIF

# عابد سين، شيخ، نجفي

1979 IFF

1997/1017

مولانا شخ عابر حمین کی پیدائش ۵رجنوری ۱۹۲۹ و (۱۳۳۸ر جب عرصی ها) و بناری شن بولی تھی۔ آپ ایک جید عالم فاضل تھے۔ آپ امام زمانہ مجل اللہ تعالی فرجہ الشریف کے عاشق وشیدائی تھے۔ جہال بھی جاتے امام زمانہ مج کی زیارت اوران حضرت مے تعلق اعمال میں موشین کو ضرور شریک کرتے۔

آپ نے ۱۳ رجنوری ۱۹۹۲ (۸رجب ۱۳۱۲ ه) کولکھؤ میں رحلت فرمائی اور حسینیہ، غفرانمآب میں دفن ہوئے۔ آپ کفرزندوں میں ایک مولانانا صرمبدی صاحب ہیں۔

(اصلاع جدے ۸رمنیان ۱۳۱۳/مارچ ۱۹۹۲)

## عابد حسين ،مولوي ، حكيم

111-11-1

1901/11-6.

حکیم مولوی عابد حین ابن کیم محر عبدالله قاضی سعدالله پوره (بنارس) میں ۱۰ر جب المرجب کو ۱۳ در المرجب کا ۱۳ در در المرجب کو ایمان در المرب کا در ال

حمد ونعت ومنقبت وغیر و منتق و منقل عبارت بی ہے۔ حمد پرور دگار میں اپنی ایک فاری نظم ورج کی ہے۔ نعت میں ۱۰ شعر کا ایک قصید ولکھا ہے جو صنعت تاہیے میں ہے یعنی اس کا پہلام صرعدار دو اور دوسرافاری میں ہے۔ دوشعر بطور نمونہ:

تمتا ہے ظیل اللہ کو اوس کی باغبانی کی عصا برداری او مغیر موی عمرانی متدر قعا کہ ہوے ان سے نور کبریا ظاہر ازیں باعث زاما عیل برگر دید قربانی متدر قعا کہ ہوے ان سے نور کبریا ظاہر ازی باعث زاما عیل بروزعید غدیرار تجالاً نظم کر کے منقبت میں منقبت میں منا اشعار کا فاری تصیدہ ہے جمنے میں پیش کیا تھا اس کے پہلے دونوں شعر بیا ہے کہ طباطبائی (صاحب ریاض المسائل) کی خدمت میں پیش کیا تھا اس کے پہلے دونوں شعر بیا

زلف مشکین زلخ گشت مستور تجاب یوسف زری قبااز, رخ برا گلنده نقاب اللی پرده نشین اندر حجاب تجله شد قیس مجنول زد بصحرا خیمه زری طناب صاحب الذریعه نے ان کو" انکیم" کلھا ہے۔ شائد طب میں بھی دخل رہا ہوگا۔

ظهیرالدین شمیری فیض آبادی

ملاظمیر الدین تشمیری ملاجواد کے فرزنداور ملامحم علی پادشاہ کے پوتے تھے کی کھنؤ کے افاضل میں تھے اور علم و کمال نیز صلاح و تقوی کے حال تھے۔

صاحب نجوم السماء في الممال ه شرك المحاتفا كه ملاظه بير الدين كي اولا دابجي موجود بـ ر (الكرام البررة جلد عن ١٨٣)

THE

اگریس روضة مبارک سیدالشبد اوکوایی آ محصول سے ندد کیے۔ کا تو بحرم جانا ہی بہتر ہے۔ آپ جس مكان من فروكش عقداس ك زناند حص من عورتي مقر تحس - آب بابرى دالان مين زمين يرفرش پچوا كر لينے \_شدت درد سے نينونيس آئى تھى مناجاتيں كرتے ہوئ نعف شب گذر كى اچا ك يورا مكان ايك اليي خشبوے جركيا جيسي بھي دماغ تك ندين تي تھي تھي اور ايما نور ظاہر ہواكة تحصين خرگ كرنے لكيس -ايے من كى فخص نے يشت كى طرف سے دائے شاند ير باتھ ركھ كر يو چھا كدا سے عابد على إكياحال ٢٠ جواب دياكه جوكيفيت ٢ وه ظاهر إور حاجت بيان نبين بدفرماياكدتو دعائے نور کیول نہیں پڑھتا، جواب دیا کہ مجھے یادنیں ہے۔اور نہ کوئی ایسی کتاب ساتھ ہے جس میں ید دعالکھی ہو فرمایا کہ ہم معیدیں گے۔ اب عابدعلی صاحب کے دل میں خیال آیا کہ بیکوئی خدا رسیدہ بزرگ ہیں جومیرے حال پرائ طرح مہر بانی فرمارہ ہیں۔ جایا کہ کروٹ بدل کر چیرہ انور ويكسيل - كروث بدلناممكن نه جواله مجر باتحه بزها كردامن بكرنا جابا مكروه بحيممكن نه جوااس وقت فرمايا اے عابد علی اید زمان نفیت ہے تو ہم کوئیں دیکھ سکتا۔ لے اب ہم جاتے ہیں۔ تو سجھ تندرست ہوگیا۔شکر بجالا۔اب نہوہ آشوب چشم تھا نہ کرب واضطراب ۔ بعد نماز مبح تعقیبات میں معروف تھے کدایک جبٹی نے آ کرسلام کیااورایک سبزرنگ کا کاغذ عابد علی صاحب کودیااور کہا کہ صاحب نے دیا ہے۔ بد کرد و نظروں سے غایب ہوگیا۔ مولوی صاحب نے کاغذ کو کھولاتواں میں وعائے نور مرقوم تھی۔اے پابندی سے پڑھتے رہے۔جب پڑھتے پڑھتے دعابالکل یاد ہوگئ تو کاغذ پرے حروف غایب ہو گئے ۔ البتہ وہ سز کاغذآ ب کے باس محفوظ رہا جو حسب وسیت ان کے گفن میں رکھدیا گیا۔

آپ نے گئ مرجہ زیارتیں کیں اور کر بلاۓ معلی کے قیام کے زمانہ میں جم اقدی میں نماز جماعت بھی پڑھاتے تھے۔

آخرى بارزيارت كے لئے تشريف لے جارے تھے توبيل گاڑى كے ذريع بمبئ پنچ ايك

یبال تک کری علماء مولوی ایوالقاسم صاحب اور مولوی عبد لآخرصاحب این شاگردول کوفلفداور منطق پڑھنے کے لئے مولوی عابد حین صاحب کے پاس جیجے تھے۔

لندن مشن اسكول (موجودہ نام كنگ ميموريل كالح) ميں فارى اور اردوك استاد مقرر بوئيكن آزادى كى جدوجد كے سلط ميں نوكرى سے استعفاديديا۔خودا پنامطب بحى كرتے تھے۔ استعفاديديا۔خودا پنامطب بحى كرتے تھے اور خطيب بحى تھے۔

کم جون ا<u>۹۵ مار شعبان مع ۱۳ ه</u> کواس دار فانی سے رحلت کی۔ (سید میم الحن رکیل جوادید ۲۵ نبر سرمضان وشوال ۱۳۱۳

### عابرعلی،سید،جو نپوری

جناب سيد عابد على صاحب محلّم طا أولد (جو نبور) كربّ والـ ايك انتهائى مختاط ومتورع عالم تح جومورد مختايات مصومين عليم السلام تق - ان ك فرزندا كبر مير زابد على صاحب كابيان تحاكد جب ان كـ والديم على مرتب زيارات عنبات عاليات كـ لئے رواند ہوئة وابل وعيال بحى ہمراہ عقد ان كـ والديم عن مرتب زيارات عنبات عاليات كـ لئے رواند ہوئة وابل وعيال بحى ہمراہ تقد ان وقت جو نبور بيم من كا سفر بيل گاڑيوں يا دوسرى الي بى سواريوں كـ ذريعد طے كيا جاتا تحداث وقت جو نبور بين آپ آشوب چشم ميں مبتلا ہوئة اور تكيف كى شدت بى زندگى بى مايوں ہوگئة و بين كى قصب من كرايد پرمكان ليكر متم ہوئے - وہاں ايك متعصب من حكيم رہتا تھا آپ اس بوگة و بين كرار بين تو آ كھوں كود كيكر كيات رئونت بين كو الله بين الله الله ميں ہوئة ديل كو بان حيدر كرار بين تو آ كھوں كود كيكر كم بايت رئونت بى كہا كہ اس آ زار كا على خين بين ہاگر آ كھيں چوٹ نہ گئين تو بينائى تو يقينا ضا بي معاوم ہوا كہ يوگئة اور كہا كہ مجمعے على كرانا منظور نہيں ہے۔ معاوم ہوا كہ دوگئة اور كہا كہ مجمعے على كرانا منظور نہيں ہے۔ موجائے گی۔ آپ اس پر عناور و بيد بين كرانا منظور نہيں ہے۔ اگر آ كھيں گھو على كرانا منظور نہيں ہے۔ موجائے گی۔ آپ اس پر عناور و بيد بين كرانا منظور نہيں ہے۔ دل برداشتہ ہوگئة اور كہا كہ مجمعے على كرانا منظور نہيں ہے۔ موجائے گی۔ آپ اس پر عناور و بيد بي دل برداشتہ ہوگئة اور كہا كہ مجمعے على كرانا منظور نہيں ہے۔

LI,

میں حسب معمول تمام اوراد واعمال بجالائے۔ نماز سے کا ول وقت کی نے دق الباب کیا۔ مولانا تھر حسن صاحب (جو اتفاقا خود بھی علیل ہے) دروازہ پرآئے تو دیکھا کہ آقائی ہے ذین العابدین مازندرانی کھڑے ہیں۔ سلام ووعا کے بعد ہے صاحب موصوف نے دریافت کیا کہ آپ کے والد ماجد کیے ہیں۔ عرض کی کہ وہ سور ہے ہیں۔ ہے صاحب نے فرمایا کہ ووسوئیس رہے ہیں ان کا انقال ہو چکا ہے۔ اور امام مظلوم نے بچھے تھم دیا ہے کہ ہیں ان کی ججہنے وقفین کے فرائض اوا کروں۔ اب جوآ کر دیکھا تو واقعی مولانا سید عابدعلی صاحب رحات فرما بچکے تھے۔ سید الشہد او کے تھم کے بموجب تمام مراسم ججہنے وتلفین اوا کئے گئے اور حرم اقدی میں فن کے گئے۔

(عان سيدائن شن نانواروي)

### عابدعلى قزلباش

آ عا عابد على قزلباش مرادآ بادكرب والے اورفن تاريخ ميں يكنا تھے يہلى نعمانى كى الفاروق رمفصل تقيد كلهى جس كانام بالفرق فى تزييف الفاروق \_

مافرفان على قيام كيا- جاز كالك فريدليا بكردور عاصرات بكى زيارت ك لخ جار بي تف اورو ہیں مقیم تھے۔آب نے ال لوگوں سے کہا کہ جب آب لوگ جہاز برسوار جول تو مجھے بھی سوار كر فيجة كان معزات في آب كاسامان جهاز يرافواد ياليكن الجي آب كوسوار ندكرا منك تفي كه جهاز چھوٹ گیا۔ جب آپ کو جہاز چھوٹ جانے کی اطلاع ملی تو نہایت اضطراب کے ساتھ امام زبانہ کو يكارت بوع متدرك كنار الكطرف كوروان بوكار ايك مناسب جكدد كم كوضوك ناشروع كيا كفاز يزه يكس \_كياد يكهة بين كدكونى چيز بتى بوئى ان كى طرف چلى آرى ب جب وه قريب يَجْيَى توان كى وى مُخْرى تقى جس مِن ان كالحقر ساز ادراه، ايك معمولى بسرت، جائے تماز، حمائل، اورادو وطائف كى كتاب، جباز كالكت اورايك جوڑا كير اتفاجو چھوٹ جانے والے جباز پر چلا كيا تھا۔اسے الخياياتوكييل = وو تخرى بيكل تك يتحى - نمازشكراداكى - فارغ بوئ توايك فحض آياكم آب عراق جانا جا ج بي تو چلئے مارا جہاز جارہا ہموصوف اس دوسرے جہازے بھر و پہنچے۔اس واقع کی اطلاع موضین كر باكوبوكى توعلاء وضلاء آب كى ملاقات كوا يا اورحرم اقدى مي جراعال كيا كيا-آپ نے ال واقعہ کی اطلاع جو نبور میں اپنے چھوٹے فرزند آ قائی سیدمحرضن صاحب ججتد كودى خط ملاقة تالى موصوف إين الميه بمشره اورجي كراته كربا كي دونول مخدرات اذن وخول يزه يغيرم من واظل موكئين - جب ال كي اطلاع مولانا عابدعلى صاحب كو موئى تو آب بہت تاراض ہوتے اور بغیراؤن دخول جرم عل داخل ہونے سے منع کیا۔ان کی سرزنش سے متاثر ہوكر دوروز تک عورتی حرم نیس کئی ۔مولانا موسوف نے شب میں خواب میں امام مظلوم کودیکھا کہ قرماتے میں کیتم نے ان کوزیارت سے کول روک دیا۔ عرض کیا کہ مولا! بیلوگ دعائے اذن وخول یاد كريس كي قوج كي كي مولانا فرمايات عابد على إيكو يا البليت من ع بين ان كوزيارت ك لن جائے دو۔ چددوں بعد آپ وہی کر بلائل علیل موے اورائ علالت میں انتقال فرمایا۔ شب

A CONTRACTOR OF THE PROPERTY O

8888888888888888888888888888888

19

# عباس على بنجفي

HALL HOLE

مولانا عباس على جي اين ماي حن على الغارى مبدى آباده الكري اللع جريد والاستان اسكول واكريني ين ماصل كى داس ك بعدائ يا بيا بيد الاسلام ولا تا قام مبدى بيني عد في الوم عاصل كرف كلى و يحد مرصد ك بعدة ب جائع علويدمشارع العلوم ( حيدة باد) على داهل بعد ا جال سيد العلما مولانا سيد فرحن زيدى = كب فيض كيا- ١٩٩٥ ما على آب نجف الشرف تقريف العصر جهال آية التدسيد الخوكي اورآية التدسيد محد باقر العدد شبيد وقيرة التعلى فيوش ماسل كارآية الشفين كياياى دروى عرائلي الريورشركت كار نجف الثرف على آب كالم معروال من شبید عارف مسین الحسین ، علامه طالب جو بری اور حافظ سیدریاض مسین وفیر به علی ام تمایال

وعاوا ومن حراق عدوالهي يدرسه شارع العلوم من قد راي كاسلسل شروع كيا بعد على بكوم مد بال ارت آف ياكتان كالبلق رايت كاد عداية د بدال رويت كاد عليمان ك بعد جب موادا نا غلام مبدى جي في في والش كاوجعفريكى بنيادر كلي أو مواد نا عماس على الى عد والسة مو گئے۔وری وقد رہی کے ساتھ ساتھ سندھ کے تلف اطلاع میں تلیق سر کرمیاں جاری رکھی ۱۲۴ جوري ١٩٨٣ مرورا الالامميدي كي رحلت كي بعدة ب وأش كاو بعفريكم يرست قرار إك-آپ کی دان رات کی محت اور کن کے بیتے میں تین سال کے مرسے میں وَحالَیٰ ایکر اتبے پر بھیلے وع درسد الله الك خواصورت مجده اساتة واورطلب ك لفي عليد وعليده وو يوعل اوروضو خاند

\$99999999999999999999999999999999

عاشق عماس سيد مولانا ميد ما تق عبال صاحب بعدائي جناب ميدهمين صاحب مرادم ساكن منعور تكر (اللهو) كرز ترت والإمام المستاه عن ولادت دو في مططان المداري عدر الافاضل كيا-اى دوران اردوائى قابليت داورد يركال كاحتات يال كارادرطب كالعليم بلى إدى والمام بعدو يمامت وجشيد الأعرق مج بمن عن الم بعدو يمامت رباور ميسين مجي يزعة رب روقم المروف في 100 د (نوبر) ين مكى بار افريقه جات او يا بمني على موجه كي خدمت شراعام في وي كي مرجوم بمخل شراية وفول ميم ميد كاب مين صاحب مرجوم عصب يافي يتفيق آپ ٹا اواند ذوق بھی دیجے تھے۔اگرچہ ہا قامد وطور پر کسی کی ٹا گردی افتیار نیس کی تھی۔ يتدفوني اورضائدان كيادكارين الماييل المايد عالدى الحديدا ما الدولاتا ما كورطت كار (コルンリカット)

عبال حسين ،سيد بش العلماء

حس العلماء سيدها ل حسين صاحب معلم يوغوري على كذه عن او في ك يروفيس تقداد عرم المرام و على المريد المريد المرامة المرامة والمرامة

المان ولده ولير القالاول والا

0000000000

Scanned by TapScanner

والشگاه كاماط يشى آپ كوپروغاك آيا آيا ۔ آپ كى پاڭى تۇل شى تىن عالم يى ۔ آپ كى بىلازاد بھائى مولانا محرشن مېدوى كى كوآپ كاجائشىن مقرد آيا آيا ہے۔ (مخدرمانے ديات نائل مولانا محرشن ميدوى كى كوآپ كاجائشىن مقرد آيا آيا ہے۔

### عبدالجواد،سيد،نقوي

سيدهبد الجواد نقوى سيد العلماء سيدهبين عليين مكان كسب سي چوٿ بيشے ہے۔ تذكرة العلماء اورور في الانجياء ش آپ كو الزج الناس كيا كيا ہيا ہے۔ فاضل آفي جليل ہے۔ ( اكرام) اوروس موس موس

## عبدالكيم، ملا، تشميري

صاحب نجوم السماء في ما توطى بإدشاء كه حالات شي للساب كده وطاعبد الكيم ك شاكرة تقد جن كوالراست كوالكها جا تا تفاريداز وكياجا سكنا ب كدا يصعالم عارف كاستاد خود مى ايك عالم بزرگ ووگار

( يوم إسما مأكر ام الميرة جلدوم على ١٩٤٠)

ميت تنف هيروات والم يوسائد السلط يل يواللاف مين الوبانى بريرات يرات كيدات したなりもでからかんりというと يدون والله كالحيل كربعة إلى الوجر مندوك إماندو طاقول عن وي تعليم كافر و في رم كالأ كرون آب روز الد النظف شيرون اور تعبون كا دوروكر في اوروبان كي ديني آب كى خدمت على حاضر يوكرو وبإخطرية عابنا بالى تقاون وش كرت رمويد سنده على عا ه ارتى كا قيام ب شار ه دين اورا الله مساجد ك في ماباند وظالف اور سادات وفير سادات موضين كالدادكا بإندانكام إبكاد في اورفائي فدمات كافوت إلى - مولاة الل ياي عظي على تقديم الوام عن فلف شرول عن عالى عد خطاب فريائية القادين المسلمين بدوردية - برنو جندي جعرات أوعل حيى (حيدة باد) عمادي تغير دے قدم گاوموالی (جیدآباد) کرونزی بر بعداور پر بغت کے بائدی کے ماتھ بائے تھے۔ آپ كور إلى يا الله عيد القار على الله على الله المديد تقريري المحاكيل سآب منده كالإسماندو علاقول على وفي تعليم وربيت كالتقام متقل بنيادول يرقام كرنا وإعرف 一直中心中的學者以此此的 عَمِ السَّت عِدِيدًا مِكُوَّا بِ فَي حِيدًا بِإِدوا فِي مُن مُعروف دن كذارا- بالح في كاكر ٢٥ من يعض كفرش يبيض بيض اليا مك طبيعت قراب اولى -اى حالت شرايل وميال كون من وما كى اور شين وفعد يا على كا وروكر ت اوت وفيات وقصت اوك مكل لما : بناز ومحفل حيين (جيدة باد) شي رات كولياده يج مولانا ليق حين جني في يزهاني رومري الماز جنازه ٢ ماكت كو علىد سيد ساجد على فقوى في بارون كره ٢ رون يروائل كاوجه على والكريكي عن يرصال اوراي

Scanned by TapScanner

مواوى سيدعيد الحميد صادب مرحوم كاولن موضع بكافوت يوشلع أعقم كذرة قامرحوم كاقيام زیادہ ترمین على ربتا تھا۔ راقم الحروف كے والد ماجدے مرحوم كے افتے تعاقبات تقے۔اور راقم الحروف في اليد بين شراك ووباران كوديكما تهارم حوم في اليد موضع عن أيك مجداورامام باژو كافقير كرادى محراسية خام مكان كى طرف كونى وجدن كار يرت ايوار وسلمان كالكيدا تدهمون

0000000000000000000000000

مروم في الذي الحد مد الما المراك عدد المواقال فرايا-والى مطورات والجواداك علاجور ماري الاول عدساء

### عبدالخالق، يزدي

رسالة شيد ( كجو و) ين آب كانام إلى لكما ب-" تغية العرقاء فالسنة الفصلاء بناب مولوى مرزاعبدالخالق يزدي" آپ رياست كعبات ( جرات ) شرامام جماعت تهد آپ کی دو کابوں کے عمل سے میں: (۱) براین الحاب (۲) گا العاد اس دوری سكاب ين ضروريات غديب اوراصول وين وفروخ وين كوعام فهم اسلوب يحي بيان كيا حياب-(دمال شعرفيود)

جتب طامبرائيم بالكوفى مبدئاه جبال داورتك زيب كمشيور مالم اوراستاد تهدان كالدكايم عن الدين قدا أقال برزك تيرانى فرياض العلماء جلد موص عاكوال تكسائ ومدالكيم ساكدني اكارملاه اورمشاير فنطاه ش تقائد كي جرى مشهورد بي يكن م في ك بعدوب ووويت المدكول كيا جواسة بين كـ وم لكما قاتوان من اسية شيد عقيد وكالحكم كلا الخياركيا تغااه رايك يتنقل صندوق تثر ايك مفصل دساله اثبات امامت امير الموثين اورابطال ولأك والفين ال كالتعنيف كيا والما تيز شيعه قديب في دومرى الأول الحاصندوق ش ليس - ان عرفر زيركا - BUSHINGS

سيداطير عيال رشوق مراوم في الى A Socio-intellectual history على علاقيد الليم الكول اوراك ايراني اجرد بار (ما عقيعالى يزدى) كدرمان ايك مباحث كازكريا بجرور وى الحيد والما حاسم والمرود والمراجع الى عن ووا قاد شاه جال في معدالله قال وزيرة كلم مترركيا قلاء موضوع مباحث آية الماك نعبد والماك تتعين كالوال كامعني قداء ايك طويل ماد كابد سداف قان فرداو المرية الكيمال قراداياء

طاعمية الليم سيالكولى في شريف جرجاني و علامة تلكازاني اور دواني كي كابون يرحوافي اور ميراهيم (٣) الإات الدالمة سان كما والتيريضاوى اورشرح مواقف يران كرواي كاذكرا عد المعان على آب كن الأوقات ١٨ ساق الدول عدور أسى عد

A Socio intellectual history Vol.2.p 224 من المان الم

# عبدالرشيد، فيخ ،كو پا سخى

INCE PRINT

(A) (C) (C)

مواوی شیخ عبدارشدان مولوی او نسیرالدین کو پائی شلع اظم گذر کے باضد سے۔

(مطلع افراد میں کو پال تنج للط تعما ہے۔) خصیل طم کے شوق میں آلمدہ آئے اور سیدا تعرفی تعدآ باوی میں از روست جبت اور مدر سے کسب فیش کیا۔ ان کے دوسرے اساتڈ و تھے تاج احلماء میتاز العلماء اور جناب سیدا براہیم صاحب و فیرو رقر یب بدرج اجتباد تھے۔ جسمانی طور پر بہت قد اور الاقر سے کے رحم رہن و لیرو اور جال کے ہے۔ آپ کے تالغ و میں آپ کے فرز تدمولوی مطاحبین صاحب کے علاوہ مولوی کا تقرمین اور مولوی تلام حسین صاحب کے علاوہ مولوی کا تقرمین اور مولوی تلام حسین صاحبان قابل ذکر ہیں۔

مناظروش کال ہے۔ ایے مخفر کرسکت جواب دیے ہے کہ فریق قالف کو خاصول ہوجانا

پڑتا تھا۔ آپ کے مریدوں میں ایک صاحب ہے بندو کی۔ انھوں نے پور بی زبان میں ایک طویل

منتیت رہتے بند کے طور پر کھی تھی۔ میں میں آخر بیا پر بند کی جو طیحہ و تھی ہر بند کے آخر میں بوشھرو ہرایا

ہاتا تھا اس سے بی خاہر ہوتا تھا کہ بندو ملی کی ابندہ ہے۔ مرشد نے بین شق مبدارشید نے یہ منتیت کی

ٹویتھم دیا کہ اسے لوگوں کے سامنے پڑھو۔ جب بندو ملی نے بینی مام میں یہ منتیت سائی تو ملائ الله

سنت نے فتوی دیا کہ بندو ملی کافر ہوگیا ہے۔ وہ پر بیٹان ہوگر مرشد کے پاس آسے تو آپ نے قربایا

گدان لوگوں سے پوچھو کہ کیا تم نے قائدہ بافتدادی بھی فیش پڑھا ہے۔ کونگر اس کے آخر میں اللہ

منا کہ اس است نے مناور کی اس کے بین ۔ اس میں دیکھو کہ خدا کا نام ملی ہے کرفیں ۔ کون ہے ہے مخل کا

بندہ وہ نے نے انگار ہے۔ یہ جو اب من کرومر افتوی دیا گیا کہ بندہ ملی کافرفیس بلکہ سلمان ہے۔

مئونا تھے بھی میں آپ میں کے فیش سے شیدہ ذیب کی ابتداء و گی۔ مواد تا نے 10 درسال کی

QQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQQ

سيرعبدالرسول (ضع جان آقا)

الت المائن الما

(دادد الدوول)

0000000000

## عبدالعلى مرزا

HILL STOK

چونک ماختی قریب تک علم الله بدان اور ظم الله و یان لازم وطروم تصداس کے آپ کا ذکر اس توکر وطاریش کیا گیا۔

## عبدالعلى خال بحيك بوري

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

大きないといることにもいってきましているいでいるにはいないないと احسان المستين (فارى) ازجار الجائين (اولي) نسح مشيح ، حل طيل، رخ الجار، خطش الوامب الرمالة اليدم (الربي) في التون (مربي منطق) (19453)しいいかいところか) عبدالعلی،سید، جو نیوری سيد ميد أهلي جو ټوري اور مولوي مخشن طي انساري جو ټوري كدرميان اكثر او لي مسائل ي جاب مي سيد ميد أهل في علما ومغرب للمي يديد ميد أهل في عدر جب الرجب والا ما ١٢٠ الت العالم المورود بعد وطت فرما في. (サーナリンクでこしかかんしから)

Scanned by TapScanner

ان کی درج میں فاری میں نظم کہی۔ وہ اشعار پھی نرائن نے اپ فاری کے رفعات میں درق کے ہیں۔ سید عبد العلی کو آ قائی محد باقر حائری اصفہائی نے اجازہ مرصت فر بایا تھا۔ جب طامحد علی پادشاہ میں انسال کی وجہ سے معذور ہو گئے تو ان کی تجویز پر ۱۸۳ اور میں نواب اور و نے مولانا عبد العلی کو فیض آ باد کا پیش نماز مقرر کیا۔ جب طامحہ علی پادشاہ کی تحریک پر سرفراز الدولہ نواب حسن رضا خان نائب السلطنت نے ۲۵ سرجب و ۱۳ مرشی ۲۵ می ایک ایک المحت میں المحق میں نائب السلطنت نے ۲۵ سرور فیض آ باد میں مولانا عبد العلی کی امامت میں نماز جدقائم ہوئی۔ نواب کی نماز جدقائم ہوئی۔ نواب آ صف الدولہ نے مولانا موصوف کو دوگاؤں ابطور جا گیر عطا کے بینے جن کی آ مدنی ایک بڑارر و پید سالان بھی۔ اس جا گیر کا ایک بڑا رو پید سالان بھی۔ اس جا گیر کا ایک بڑا حصر خاتمہ زمینداری تک ان کے خاندان کے قبضے میں رہا۔ اگر چہ ایک گاؤں کے بڑے حق میں اپنے ان کے خاندان کے قبضے میں رہا۔ اگر چہ ایک گاؤں کے بڑے حق میں اختار کے قبند کر لیا تھا۔

مولانانے دیو کھیا ہیں ایک وسیع مجد تعیر کی تھی جواب تک موجود ہے۔ انھوں نے اپنے ایک فرزند، سید کلب علی کو لکھ بھیجا جہاں انھوں نے ففران مآب سے علوم دینیہ حاصل گئے۔ بہت صاحب علم و کمال سے لیکن انھوں نے مین عالم جوانی میں داغ مفارقت دیا۔ مولانا کے دوسر نے فرزند سید محرکانام بھی غفران مآب کے شاگر دوں کی فہرست میں ملتا ہے۔ (پچھ تذکرہ فگاروں نے مولانا سیدعبد العلی کو بھی غفران مآب کا شاگر دبنا دیا ہے۔ لیکن یہ بات بالکل غلط اور بہ بنیاد ہے۔ ) مولانا برے عابد وزاہد سے محرم کا چائد نظر آتے ہی رونے اور ذکر سید الشہد او سنے اور سنانے کے علاوہ کوئی مضافیوں نے مشافیوں نے مشافیوں نے مشافیوں نے مشافیوں نے مشافیوں نے بہر نگا بھی موجوباتا تھا۔ سیم تا اھ میں انھوں نے مشافیوں نے مشافیوں نے بھی آباد میں وفات پائی اور حیور شخ میں ''مولوی کا باغ'' (جوان کا خاندانی قبرستان ہے ) میں ایک میں آباد میں وفات پائی اور حیور شخ میں ''مولوی کا باغ'' (جوان کا خاندانی قبرستان ہے ) میں ایک حجم و میں فون ہوئے۔

(تذكره بيباس المعطاق الرس والالدالجواد ماداكت (1941)

چدسطري كاتبومكتوب اليك يادكار كطور يرورج كى جاتى بين:

باسعه سيحاته

الحمد لله الذي تسبح له الاطبار في او كارها+ ويحمده من في السموت والارض طائعا او كارها + رفع السموت بغير عمد وامسك + و دحى الارض عليها الجبال لها و تدام سك + زين بالعبون انسانا + وزان العبون انسانا + فضل الانسان بين مخلوقاته و كرمه + و شرفه في سائر مبدعاته و اكرمه.

(مولانا تومسطنی کا ذاتی بیاض یا تحکول) بعد می سید منظور دو عالم بحیک پوری نے بتایا کد موصوف مدر سرسلیمانید میں بھی مدرس رے تھے۔

عبدالعلى سيد، ديو كشياوي

279/119r

IATA/IFFF

TT+

## عبدالله، ملا، پيرپيائي

30-21/3-001

ملاعبدالله قصبه بيريا كي ضلع بيثاور كراب والے تنے اور ي كحرانے كے چشم و چراخ تنے آپ نے اپنے بزرگوں سے ضروری وی تعلیم حاصل کی۔ان معلومات نے آپ کے اندر علاش حق کا ایک بیقرارجذب پیدا کردیا۔ جس کی بنایرآپ نے اطراف عالم یں محومناشروع کردیا۔ الل بنود کی نہ ہی گنابوں کے مطالعہ کے لئے آپ نے ہندوستان جا کرسٹسکرت عیمی اور مندروں میں بھی حاضری دی گرآ ہے کی تشفی ندہوئی۔ ہندوستان ہے آ ہا افغانستان گئے اور تی صاحب کے مزار پر چندسال قیام کر کے اہل سنت کی ندہجی کتابیں بالاستیعاب دیکھیں گر نتیجہ کچھ نہ نگا۔ اب آپ حج وزیارت کے لئے پایادہ رواندہوئے۔ایران وعراق کے مقدی مقامات کی زیارتوں کے بعد آپ معظمہ پنجے اور جے ہے مشرف ہوئے۔ وہاں کچھ عرصہ قیام کرکے کئی عالموں سے تبادلہ خالات کیا۔ پھر مدینہ منورہ میں حاضریٰ دی۔ یبال بھی آ پ کے شکوک رفع نہ ہو سکے اب آپ واپس کر بلائے معلیٰ اور نجف اشرف بہنچ عراق سے ایران گئے اورقم میں زعیم حوزہ سے معنحوں نے فم کی قیمتی لائبریریوں کے دروازے ان کے لئے کھلواد بے۔ آخر کار بحار الانوار کے مطالعہ نے آپ کو پوری طرح مطمئن کردیا۔اورآب نے شیعہ فرہب اختیار کرلیا۔ایران سے یا کتان واپس آ کرموضع شرکوٹ میں ملک وہاب علی کے بہاں قیام کیا۔ یہیں آپ کی پہلی ملاقات علامہ عبدالعلی ہردی سے ہوئی۔موغین شیعہ بنگش آپ کی بدایتوں سے مستفید ہوتے رہے۔ دور دراز کے علاقوں سے لوگ آپ کے پاس آ کراپی محقیاں سلجھاتے رہے۔آپ نے تمام عمرارشاد وہدایت میں گذاردی۔ اپنی وفات سے دو سال قبل آپ نے علاقہ غیر تیراہ کے موقع کا ایدین تارک الصلوة اوگوں کواسے مواعظ حندے یابند

عبدالله،القرويي

مولی عبد الله القرویی شاہ طہماپ (یاشاہ عباس) صفوی کے دور میں ایران سے بندوستان آئے اور قطب شاہی سلاطین سے نسلک ہوگئے۔ یہاں آگر فاری میں شرح حدیث الغدیکھی جے الذریعیش" کتاب جلیل حن الغوائد" لکھا گیاہے۔ اور صاحب ریاض کا بی خیال نقل کیا گیاہے کہ اے مصنف نے حیدر آباد میں لکھا تھا۔

### عبداللهمجلسي

حوساناه المسترات می الماری الله می الماری الله می الماری الله می الله الله می الله الله می ال

ملاعبداللہ نے اپ والد ماجد اور آقائی حسین خوانساری کے کب فیض کیا تھا۔ جب ان کے والد ماجد نے وی والد ماجد اور یہیں کے والد ماجد نے وی اصفہان میں رحلت فرمائی تو ملاعبداللہ ہندوستان چلے آئے اور یہیں مو گئے۔ (میں نے کہیں پڑھا تھا کہ آپ حسین آباد مو گئیر میں تھے اب حوالہ یا ذہیں آتا) ملا صاحب موصوف پڑے مقدی محدث اور فقیعہ تھے۔ ان کی علامہ مجلس سے خط و کتابت رہی تھی۔ علامہ مجلس نے ان کی علامہ مجلس کے کھے سوالات کا جواب المسائل البند ہے کام سے لکھا تھا۔

ملاعبداللہ نے عمر اللہ اللہ کا سے لاء کے حدود میں رحلت فرمائی۔ آپ کے تصنیفات میں شرح تبذیب الاحکام اور حاشیہ حدیقة المتقین ہیں جن ہے آپ کے فضل و کمال کا انداز وہوتا ہے۔ اولا د: مجد نصیر ، زین الدین ، مجم تق

(طبقات اعلام الشيعه جلد بنجم ص ١٥٣)

ACCOUNT OF THE POST OF THE POS

TTT

# عبدالجيد، عيم، مولانا، مبارك يوري

19.A/IFFAZ

1944/1744

عليم مولانا عبدالجيدصاحب ابن على احد صاحب اين وطن محلَّد يراني لهتي بمحرى قصب مبارک پوریس حدود (۱۹۰۸ء میں تولد ہوئے۔ ابتدائی تعلیم گھریر حاصل کرنے کے بعد مدرسدا بھائید (بنارس) میں داخلہ لیا۔ پھر جامع العلوم جوادیہ سے فخر الا فاضل اور سلطان المدارس (لکھنؤ ) ہے سند الافاضل كيا-اس كے بعد بنارس ميں علم طب حاصل كيا۔ وطن ميں مطب كرتے تھے۔ جب مولا ناسيد ظفر الحن صاحب عراق تشريف لے محے تو مولانا عبد الجيد صاحب نے باب العلم (مباركور) من مدر اعلى كى حيثيت عقر ريس ونظامت كفر الفن انجام دي-

19 سال كاعمر مين ٨ر جب المرجب ١٣٩٤ جرى/٢٢ جون ١٩٤٧ مكور طن من رحلت كي-(لائق حسن فرزندمولاناموسوف)

## عبدالمجيد سيدفيض آبادي

ابراہم قزوین (صاحب ضوابط) سے شرف تلمذ حاصل تھا۔

سيدعبد المجيد فيض آبادي اعلى درجه كے فضل و كمال ير فائيز تقطل محدود ميں سلطان العلماء سيدمحركا ايك خط ان كے نام ورج ہے جس ميں ان كے لئے حسب ويل القاب استعال كئے بن: البحرالقمقام ، الفاضل المجيد البارع المجيد ، المبذب ، الوحيد ، ذي الفكر والرائ السديد " آغابزرگ تبرانی نے ای خط سے مینتجداخذ کیا ہے کہ سدعبدالجید مذکور کو کر با میں سید

( على مدود الكرام البررة جلد ١ صفي ١١٧)

ارکان دین مادیا۔آپ کے یاوں میں ایک معولی ساز فم ہواجس نے ناسور کی شکل اختیار کرلی اور وى آپ كى وفات كاسب بنا-آپ كى وصيت كمطابق آپ كى سى تقير شد وعظيم الثان المام باڑو میں دیواد سے مصل قبر کوور کر اس میں آپ کو میرو خاک کیا گیا۔ وقت وفات آپ کی عمر (يام على الا بور تمير (1946) أعاعبد على بيك فزلباش وبلوى صاحب علم وكمال مصنف تصحب يران كى كتاب آيات جلى فى شان مولاناعلى كواه ، عبدالفتاح،سد

سيدعبدالفتاح المعروف بداشرف على كاشن آبادى بندى الذريعة مين ان كي تصنيف اشرف اللغات كاذكرماتا ٢- جوبندى، فارى عربي اورانكريزى كى لغت ٢- يدهمه مصادرا فعال يرمشمل ب- دوس احد جواساه معلق ب- ال كانام عامع الاساء ب- بدافت مندوستان من عمالاه

Scanned by TapScanner

٨٨رمال في ـ

عبدعلی بیگ

## عبدالجيد عكيم ، مولانا ، مبارك يوري

JATA/IFFAZ

1922/194

حکیم مولانا عبدالجید صاحب ابن علی احمد صاحب این وطن محلّه پرانی بهتی بگھری قصب مبارک پور میں صدود ۱۹۰۸ میں تولد ہوئے ۔ ابتدائی تعلیم گھر پر حاصل کرنے کے بعد مدرسا ایجائیہ (بناری) میں داخلہ لیا۔ پھر جامع العلوم جواد سے نخر الافاضل اور سلطان المداری (لکھٹؤ) ہے سند الافاضل کیا۔ اس کے بعد بناری میں علم طب حاصل کیا۔ وطن میں مطب کرتے تھے۔ جب مولانا سید ظفر الحن صاحب عراق تشریف لے گئے تو مولانا عبد الجید صاحب نے باب العلم (مبارکپور) میں مدری اعلی کی حیثیت سے قدریس ونظامت کے فرائش انجام دیئے۔

۱۹ سال کی عربی ۸ر جب المرجب ۱۳۹۷ جبری /۲۲ جون ۱۹۷۷ کو وطن مین رحلت کی۔ (لائع حسن فرزند مولانا میسوف)

## عبدالمجيدسيد فيض آبادي

سیدعبدالمجید فیض آبادی اعلی درجه کے فضل و کمال پر فائیز سے ظل محدود بی سلطان العلماء سیدمجر کا ایک خط ان کے نام درج ہے جس بی ان کے لئے حسب ذیل القاب استعمال کے بین: البحرالقمقام، الفاضل المجید البارع المجید، المہذب، الوحید، ذی الفکر والرائ السدید''
آ فا بزرگ تیمرانی نے اس خط ہے یہ نتیجہ اخذ کیا ہے کہ سیدعبدالمجید فذکور کو کر بلا بی سید ابراہیم قزوین (صاحب ضوالط) ہے شرف کمذ حاصل تھا۔

ابراہیم قزوین (صاحب ضوالط) ہے شرف کمذ حاصل تھا۔

(ظل مدود الکرام البررة جلد معضو علاء)

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

ارکان وین بیناویا۔ آپ کے پاؤل میں ایک معمولی سازخم ہواجس نے ناسور کی شکل اختیار کرلی اور وی آپ کی وفات کا سب بنا۔ آپ کی وحیت کے مطابق آپ کی سعی سے تغییر شدہ عظیم الشان امام باڑو میں ویوار سے متعمل قبر کھود کر اس میں آپ کو سپرد خاک کیا گیا۔ وقت وفات آپ کی عمر ۸۸ مرسال تھی۔

(ياممل، لا بورتبر ١عوام)

عبرعلی بیک

آ خاعبر ملی بیگ قزلباش د بلوی صاحب علم و کمال مصنف تنے جس پران کی کتاب آیات جلی فی شان مولانا علی گواہ ہے۔

عبدالفتاح ،سيد

سید عبدالفتاح المعروف بداشرف علی گشن آبادی بهندی - الذراید میں ان کی تصنیف اشرف اللغات کا ذکر ملتا ہے ۔ جو بهندی ، فاری ، عربی اور انگریزی کی لغت ہے ۔ بید حصد مصادرا فعال پرمشتمل ہے ۔ دوسرا حصہ جوا ساء مے متعلق ہے ۔ اس کا نام مجامع الاساء ہے ۔ بیلغت بهندوستان میں کے ۲۸ ادھیں طبع بوئی۔ میں طبع بوئی۔

(الذراجه)

LLA

Scanned by TapScanner

# عزيزالحن ،سيد ،نفوي

سيوريد أحن نقرى والار يوطل باعد شرك رين وال في آب كى إلارى التركي فوج عاموں ش كذرى - ير افريد على عجال ( 19 م = 19 او الله على فوج شيد الكامرى ير يم كفيل عدوابد رب يركن واني (١ زوانيا) عن رب عدالي عدا الاسكر على على

رے۔ جولائی ال کال عالم من وطن والی آگئے۔

صرف ايك دن يبارروكرشب ٠٠ أيمادى الثاني ١٣٩٨ جرى ا عبوال ٨ ١٤٠١ وا پنجشنبه عماایک بجرات کورطت فرمالی۔

آپ ك فرزىمىيد فليراكن صاحب لغۇ ى ايك مرمد تك ۋو باؤس (جميق) سے وابسة رے۔ا کے علاوہ تین بیٹیاں یادگار پھوڑیں۔

(الوروورال ٨عهم على ١٩ ولير الوزال معلوات)

عصمة الله، ملاسهار نيوري

1979-1-61079 صاحب بالرائكرام في طاعصمة الدسيار فيورى كوملاك الىسنت بين الاركياب يكران وقت جوان كى اولادسبار نيور ( كذكوث مير ) بن آباد بووسب شيعد بين اور طاصا ب كولكي شيعد

عبدالوباب دبيلي

ميد الوباب التن عيد الرحان ويل وفي ك دين وال تحد مغلد ملطنت كا دور قد ١٠١٢ ورى عرايك ايانى تاجراماتى على رضا وعدوستان آئ تقدان كرماته ايك ساحب م فنل مولانا ميداهي شيرادي بحي آئے تھے۔ ان حزات كا قيام ميدالوباب كے مكان ك قريب في قلد اورشير ازى سال في في كالتلويم في دان مها شات ك ينتي من مبدالوباب شيعه الا كالد الد فود سام علم تق اور خلا في كما يرتق يلي تو البول في فود ي ين こうしゅんしいとうどうしゅうとのアルーとうからという

But Jack

فبدالوباب فاب شيد يوف كامباب اورائ والداور وامر علاوت مباشات كالنسيل ابسار المستعرين يم لكحى بي جس كالكي للخاص نويرك باس موجود بي البول في كتاب ١٠ و الجرى شريكتي تني (الذريع جلد اول ش ال كاستر تصنيف ١٠٩٢ جرى لكها بي جو ورست فيك باعل في ال رماله كالترجم اردوش كيا قااور بير منزل نام ركها قايرتر جد يالن ے کم ہو گیا۔ ابساد المستمر ان قاماری مبدش ایان می چھی تھی۔ می نے اے صین کنی میں ويحماق يكن ال كاموقع دها كرائية في أخذ عد ال كامقاليد كرتار

سے واجری شروفی کے ایک تی عالم سے ان کامناظر وقفیہ قرطاس کے موضوع پر ہوا۔ ال مناظره اور چددوم عاحق كالنعيل أفول في" احتاج ديل"ك ام عاى سال للى يى كالك فطى لى م كر احياد براث اسلاى (قم ايدان) ين موجود بديد اليس منى كا رمالت الذريدين قالبادي ورمن ظرة فيدالوب البندي" كام عدرن كياب-(العبار المعتبع إن التربيد لوست لو بالطيم كرا الإدار الدالال)

آپ کاسندولادت کہیں درج نیس ہے لیکن بوت وفات لین ۱۲۸۵ جری ش آپ کی تر سر سال تھی اس سے بیاندازہ وہ تا ہے کہ آپ کی ولادت ۱۲۱۵ ش ہوئی ہوگی۔

تقریبادی سال وہاں مشغول دری رہے۔ وہاں کے ایک بجا دہ شین نے (جو قالبا آپ کے استاد بھی استاد بھی آپ کو اپناجا نشین بنانا چاہا۔ درگاہ کی جا گیریٹی گا وُں اور آبد ٹی کے دوسرے وَ دائع تھے جو بجا دوشین کے واتی تقرف میں رہے تھے۔ اس و نیاوی بھیڑے ہے کے لئے آپ پا بیادہ گھسٹو کے لئے روانہ ہوگئے۔ ایک مہینہ میں رہے تھے۔ اس و نیاوی بھیڑے ہے کے لئے آپ پا بیادہ گھسٹو کے لئے روانہ ہوگئے۔ ایک مہینہ میں بیس خرطے ہوا۔ بینان کی الدین جدرشاہ اور دھ کا دورتھا۔ گھسٹو بھی کے لئے روانہ ہوگئے۔ ایک مجد میں قیام کیا تھی وُن فاقہ سے گذر کے کین آپ نے فیرت کے مارے کی کر آپ نے ایک مجد میں قیام کیا تھی وُن کی کہارالبااگر مرارز تی و نیایش فیس رہاتو موت کی کر آب اور اور کا در وی کا در موت کی کہاں کہی کہا کہ کہا ہو تے ہی کی نے در مجد پر آپ کا نام لے کر پکارا کہ رہائی فلاس بھر طلاب کی دعوت ہے۔ آپ وہاں پہو نچ اس رکھی نے ور مجد پر آپ کا نام لے کر پکارا کہ رہائی مرطاب علم کو کھا نوں سے بجرا ہوا ایک خوان (جو کی دنوں کے لئے کا ٹی ہو کی گئی جو کی گئی دو سے بیش کئے گئے۔ وہ کھا ناور روپیہ جتنے دنوں چلااس بو صیش آپ کے لئے کا ٹی ہو انظام ہو گیا اور آپ نے دور کی لینا شروع کر دیا تھوڑی ہی مدت میں آپ سیدالعلماء سید حسین علیمین مکان کے تلا نہ و میں شامل ہو گئے۔ انہیں جناب نے آپ کینام میں ترمیم فرمائی جیسا کہ اوپروری کا کہا۔

سیدالعلماء نے آپ کوکی رئیس زادہ کی تعلیم کے لئے پندرہ روپیہ ماہوار پر مقرر کرادیا تا کہ آپ کی تشویش کے بغیر تھام کا انتظام بھی رئیس کی حویلی ہی میں تقاریکن سیدعلی صاحب کے چیرہ پر بھی خوش کے آٹار نظر نہیں آتے تھے۔رئیس ان کی پر بینز گار گی اور

مات ہیں۔ چوکھ اور نگ زیب کے استاد سے اس لئے تقید میں سے۔ ۱۱ ۱۱ اجری کے قریب ایک مقدمه اس مجد کے بارے میں ہوا تھا جو کوٹ میر میں واقع ہے اور وہاں ملا صاحب کی پڑتہ قبر بھی ہے۔ اس مقدمہ میں ملاصاحب کا شیعہ ہوتا ٹابت ہوگیا تھا اور شیعوں کی فتح ہوئی فتحیا بی مقدمہ کے دن نماز بہت وجوم دھام سے ہوئی تھی۔ پورے شہر کے موشین تجع سے اور صاحب تذکر و ب بہانے نماز پڑھائی تھی۔

طاصاحب، نابینا ہوگئے تھے گرآ تھے والوں کی رہنمائی فرماتے تھے۔ عمر کا زیادہ حصد درس و تدریس میں گذرا۔ ۱۹۳۹ء اجری میں انتقال فرمایا۔

تصانف

شرى تشريح الافلاك (بنام باب تشريح الافلاك) شرح خلاصه الحساب (بنام انو ارخلاصه الحساب) حاشيه شرح ملا جاى . (تذكروب بهامني ۲۰۱۸ مطلع انوار منى ۲۲۲ طبقات اعلام اشديد جلد ينجم مني ۲۲۱)

على سيد بحيك بورى

عندیدا ارائندیدا کا ایران المال الم

EFA

TO TO TO TO TO TO TO TO

کے علاوہ بیلغ ساٹھ روپے ماہوار ہدیہ پیش کیا جائے گا۔ علین مکان نے سیدعلی صاحب کو لکھا جب تک
سیدعلی صاحب وہاں پہنچیں ایک ایرانی فاضل وہاں پہنچ گئے تھے۔ جنہیں راجا صاحب نے اس جگہ
کے لئے مقرر کردیا تھا۔ سیدعلی صاحب واپس وطن کے لئے رواندہ وئے۔ چھیرا پہنچ تو وہاں کے روً سا
نے وہاں قیام کرنے کی استدعا کی۔ آپ وہاں چند سال وینی خدمات میں مشغول رہے۔ سنہ
مرکاظم علی خال (عرف چھوٹے میرن صاحب) کے یہاں ایک نہایت قلیل مشاہرہ یران کے بچول

گافلیم کے لئے مقررہوئے۔ تقریباً دوسال ای گم نامی اور بے قدری کے عالم میں گذر ہے۔

ای دوران کھنٹو کا ایک چرب زبان نائی علاء کالہاس پہن کرمظفر پور آیا۔ اس کی ظاہری وضع قطع ہے اہل مظفر پورم توب ہو گے اور اے اپنا پیش نماز بنالیا۔ پچھوٹوں ابعد فاضل نہیل مولا ناسیوعل صاحب کھنٹوی کس سلسلہ میں مظفر پورتشریف لا' ہے تو پیش نماز صاحب پر نظر پڑی۔ آپ نے فور آپوچھا: تو یہاں کب آیا؟ عاضرین بخت چران ہوئے کہ علاء آپس میں تو تڑا ق ہے گفتگو کرتے ہیں؟

تب مولا نا موصوف نے فر مایا کہ'' ارب بھی! یہ یہ تمارا نائی ہے۔ جامت کی اصلاح جانتا ہے نہ کہ شریعت کے مسائل'' اس کے بعد جب مولا نا موصوف مولا ناسیوعلی صاحب سے مطابق آپ سے تبحر علی اور فضائل نفسانی سے بہت متاکر ہوئے اور عوام کی جہال پروری پراور بھی تجب اور افسوں ہوا۔ الغرض انہوں نے نواب سید محر تقی خان صاحب رئیس کمرہ مظفر پورکومشورہ دیا کہ وہ مولا ناسیوعلی صاحب کو اپنی نو تقیر مجد میں اقامہ جمعہ و جماعت کی دعوت دیں۔ اس وقت سے اہل مظفر پور نے قدر پیچائی اور محتقد ہو گئے۔

علم وفضل ہے بہت متاکر سے اس لئے یہ سوچتے ہوئے کہ شائد یہ مشاہرہ کم ہے۔ انہوں نے تمیں روپے ماہوار کردیالین سید فل صاحب کا انتہاض فاطراور بڑھ گیا آپ کی دنیا ہے باتو ہی کا عالم یہ تھا کہ جو تھ والم اللہ اللہ ہوئی۔ تھا کہ جو تھ والم اللہ ہوئی۔ تھا کہ جو تھ والم اللہ ہوئی۔ آئر ہم ہوقو میں اور آپ نے ای روز رئیس نے قطا تعلق کرلیا۔ رئیس نے سیدالعلماء ہے مرض کیا کہ اگر رقم کم ہوقو میں اور بھی اضافہ کرنے کو تیار ہوں۔ سید علی صاحب نے سیدالعلماء ہے کہا کہ رقم تو میرے تو تعات سے بڑھ کر تھی لیکن ایک تو بچی ہوتی موجود تھی صاحب نے سیدالعلماء ہے کہا کہ رقم تو میرے تو تعات سے بڑھ کر تھی لیکن آئی ہوتے ہوتا تھا وہ بی بچھ پر بچ واجب ہوجائے گا اور میں اتنی مدت تک کے لئے تحصیل علم سیک اگر یو نہی رقم جوجود ہوتا تھا وہ بی بعد سیدالعلماء علیمین مکان نے اپنے سے مجروم ہوجاؤں گا جو میر کے گھنے کہ کہ اور میں اتنی مدت تک کے لئے تحصیل علم سے میں موجاؤں گا جو میر کے گھنے کہ اور میں اتنی مدت تک کے لئے تحصیل علم سے موجود کو اس موجم تی صاحب (زید قالعلماء) کی تعلیم پر آپ صاحب (ور مید قبل صاحب (زید قالعلماء) کی تعلیم پر آپ کے وامور فر مایا۔

بارہ سال تک علیمین مکان نے فیض حاصل کرنے کے بعد آپ نے (حدود ۲۵۲اھیم)
وطن کا قصد فرمایا۔ جب آپ دوبارہ لکھنو جانے گئے تو بہت سے افراد آپ کے ساتھ لکھنو کے لئے
رواندہوئے اوراس طرح ان اطراف کے لوگوں کا تخصیل علم کی غرض سے لکھنو آنا جانا شروع ہوگیا۔
فارغ التحصیل ہونے کے بعد آپ نے وطن میں قیام کر کے جعد و جماعت کا قیام فرمایا

قاری اسین ہوئے کے بعدا پ نے وئن میں قیام کرتے جمدہ جماعت کا قیام فرمایا امر بالمعروف ونجی کن المنکر میں مشغول ہو گئے۔جن لوگوں نے بھی قبلہ کی طرف منہیں کیا تھا پانچوں وقت کی نماز کے پابند ہو گئے۔ جولوگ تا ڈی شراب میں ڈو بے رہتے تھے وہ ان منہیات سے ایسے تا ئے ہوگئے کے زمیندار یوں میں جو تا ژاور کھجور کے درخت تھے ان کو بھی کثوادیا۔

حدودسند ۱۳۵۵ میں راجامومن علی خان رئیس پورنیہ نے علیمین مکان سے فر ماکش کی کد کی صاحب فضل و کمال عالم کو پورنی بھیجیں اور یہ بھی لکھا کہ جو ہزرگ تشریف لائیس گے ان کو قیام و طعام

rice

Personal Anna Pe

آب کی پہلی شاوی میں بارات جب کؤ کھر پیٹی تو سرال والوں فے وستورز بان کے مطابق گانے باہے کا انظام کیا تھا۔ آپ نے منع کیا لیکن وولوگ ندیانے تو آپ نے شادی والا جوڑا اتاركرماده لباس مكن ليااور بيدل بحيك يورك لخرواند وكائت وماوك دور ا عاور كانا باجار خصت كرديا كيااور برى منت اجت كركة بكوكو كروالى لاك .

ا يك مرتبه آب اين دوسري سسرال بقره ين مقيم تقديرون من كاناشروع موكيا-آب ان لوگوں کورو کنے پر قادر نہ تھے اس لئے نصف شب کے قریب دہاں سے یا پیاد ومظفر پور کے لئے

### تقذر معيشت اورجو دوسخاء

آپ وچھره يامظفر پوريم مجمى فارغ البالى نعيب ندموكى ليكن آپ في ايخ اجراجات کواس طرح سمیناتھا کدائ قبل شہریدے اندررہے ہوئے گھریلوا خراجات پورے کرتے تھے ادراس بجث كاايك حصددادود بش كے لئے بھى مخصوص كرر كھا تھا۔ غريبوں اور حاجت مندوں كى حاجت روائى فرماتے تھے۔ بہت ی غریب او کیوں کی شادیوں کے اخراجات برداشت کئے۔ وطن میں اپنی جیب خاص سے ایک مجد بنوائی اورایک کنوال کحدوایا۔

### آ ب كاستجاب الدعوات مونا

جب آب چھروتشریف لے گئے اس وقت وہاں زبردست ختک سال می ۔ ہر ندہب و ملت كول اعين اعين طور يردعائي كرك تحك عِلى تقرآب ني نماز استنقاء يرهائل ابحى نماز کے اعمال ختم بھی نہ ہوئے تھے کہ موسلاد ھاربارش شروع ہوگئے۔ 

### شاد مال اوراولا و س

آب كى عركاضف سے زيادہ حسي تحصيل علم ميں گذرا \_ تقريباً جاليس سال كى عربيس (يعني حدود ١٢٥٥ اهش ) اين والدين كي پيند يكو كمرضلع سارن من شادى كي-ان يبطن يكي اولادی ہو کی لیکن سب کی سب ایام رضاعت میں فوت ہو جاتی تھیں جس سے آب بہت رنجیدہ رہے تھ آخراحباب کے اصرارے بیٹروضلع مظفر پورٹس دوسری شادی کی جس سے دو میٹے ہوئے جوآ عے چل رجلیل القدر عالم ہوئے یعنی مولا ٹاسید محمد مبدی مصنف لواع الاحزان اور مولا ناحکیم -113. 24 -16

١٤٠٠ مال تك جدورياضت كى زعرى بركرك آپ نے بين صفر ١٨٥١ هذا بروز اربعين مظفر پورش بارضه فائ انقال فرمايا- جنازه دوس روز امحايا گيا-مولوي مرزامحه بادي صلحاء للحتوى مولف خلاصة المصائب في آب كي نماز جنازه يرهائي-آب كي تاريخ وفات لفظ "ففرو" فلى إلى عفقر مادة تاريخ نامكن تفا كيونكدان من بزارك لئ ايك حرف ميكره كے لئے ايك جرف و بالى كے لئے ايك جرف اوراكائى كے ايك جرف ب

آپ نے جیشہ سلمان وابوذ رجیسی زندگی بسر کی۔ کھانا بدمزہ کھاتے لباس مونا پہنتے، اکثر تخت یا بورے پر بغیرفرش کے سور جے ۔سفر کے دوران سواری ساتھ ہوتے ہوئے بھی کوسول پیدل ملتے۔ کی کانڈران قبول ندکرتے۔

一人のといいといいでしたとしてはると

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

Scanned by **TapScanner** 

## على،سيد،فيض آبادي

IARL A ITIO

مولا ناسیملی صاحب،مولا ناسیدم این سیدعبدالعلی دیو تھیاوی کے فرزندا کبر تھے۔ بہت بى روش خىم دخوش تديير، بزے عابد وزابداورصاحب تقوى تھے عالم تبحر اورصاحب عزت ہونے ك ساتھ بہت ہی باوقار تھے۔ان کے والد ہاجد کی وفات کے بعد نواب واجد علی شاہ مرحوم نے سیدعلی صاحب کوفیض آباد کا امام جعہ و جماعت مقرر کیا۔ جب بھی فیض آبادے دیو کھیا جانے کا قصد فرماتے تھے تو تقریباوں باروچو بداران کی حفاظت کے لئے بمرکاب ہوتے تھے۔اس وقت کا انگریز گورزان سے بہت متا كر تحااورائے كرے يس مولانام حوم كافو أولكار كھاتھا۔

آپ نے ۱۱۳۱۵ م ۸ \_ ۱۸۹ و من رحلت فرمائی ۔ اور آبائی مقبرہ "مولوی کا باغ" من

سيدمحر حسين اورتين بيثيال-

سيد على ، رضوى بكھنوى

19-0/11-0

1940/10 .Y

مولانا سیدعلی صاحب باقر العلوم جناب سید محمد باقر صاحب اعلی الله مقامد کے چھوٹے صاجزادے تھے۔ان کی ولادت ۲۰ مرکی ۱۹۰۵ مرک الله فال و ۱۳۲ هولکھ على مولی ابتدائی ای طرح ایک مرجدمظفر پورش عشک سالی سے سباوگ پریشان تھے۔عیدالشخی کی نماز ك لئة إب موتين كول كرباير كامر بربند بوكربارش ك لئة وعاك اور فورأييند بن لكا-

ایک مرتبہ آ ب چھرہ یں کی ریس کے مہمان ہوئے۔ چونکہ میز بان کو اہل و نیا ہروت تھیرے رہے تھ اس لئے آپ نے میزبان کے ایک فیرمکونہ مکان میں شب باقی پند کی۔ لوگوں نے کہااس مکان برمتات کا تسلط ہے لین آپ نے توجدند کی ۔نصف شب کے بعد ایک پیرم و سندریش، سرعامہ باعد سے ہوئے ،عصابدست ظاہر ہوئے اور سلام علیک کے بعد کہا کہ میں قوم جن کا ایک فرد ہوں اور اس مکان میں سکونت رکھتا ہوں۔ آپ کو قیام کے لئے بہت سے مکانات مل عائي م ي جيك يرك لئے بي ايك مكان عليذا آب اس مكان كوچيوروس \_آب نے جواب وبا كه عجيهة ب كي فرمائش مان لين من كوئي عذر نيس ب ليكن رات آ دحى إزاده كذر يكل بداور اگر میں اس وقت بیان سے معمل ہونا جا ہوں تو بہترے افراد کے آ رام میں خلل ہوگا۔ آپ مجھے مؤمن معلوم ہوتے ہیں اور مالینا اس کو پندئیس کریں کے کدایک مؤمن کے آرام کے لئے متعدد موشين كوتكليف پينيائي جائے -لبذاآب آج كى دات جس طرح بوبسر كرليں ، ميں سيح كو جلا جاؤں گا ال ورمردن آب كابات مان لي اورنظرون عائب موكيا-

آپ كے برے صاحبزادے مولانا سيد محرمبدى صاحب نے آپ كے حالات برمشمل • الصفحات كاليك فارى رسالة تخذ الا برار لكها تعالى ذكوره بالا حالات من في الى تخذ الا براراورايي الف تجره طیبے اقتبار کر کے لکھے ہیں۔ (مطلع انوار میں آپ کے حالات میں بہت ہے تباعات بن حظية كركاية وقع نيس س) .

# على مسيد فيض آبادي

IARLIA PIO

مواد تا سيد ملی صاحب بمواد تا سيد تحد اتن سيد عبد أهل دي تخييا دي كفرز تداكير تهد بابت بي روش خير دفوش قد بير دين سابد و البداور صاحب آفق في قد ما لم بتجر اور صاحب الات بوف من سيد ملی ما تحد بهت بی باوقار تقد ان ك والد ما جد كی وفات كه بعد نواب واجد ملی شاه مرحوم في سيد ملی صاحب كوفيش آباد ك و يا تحد ان ك والد ما جد و بها عت مقرر كيار جب بحی فيش آباد ك و يا تخييا جائے كا قصد فرمات تقد تقريباوی باروج بدادان كی تفاظت كه لئے بمركاب بوت تھے دائل وقت كا انگريز كورزان سے بهت متاكم تقاورات كرے شي موانا عامر حوم كافر نو لگار كھا تھا۔

آ پ نے ۱۳۱۵ کر ۸ ر کو ۱۸ و میں رطات فر مائی ۔ اور آ بائی مقبر وال مولوی کا باغ "میں دفن دوئے۔

اولاو

سيد فرحسين اور تين بينيال-

سيد على ،رضوى بكصنوى

14-0 15-0

1410/17-1

مولانا سدعلی ساحب باقر العلوم جناب سدعم باقر صاحب الى الله مقامد ك تهوت ساجزادك عندان كى ولادت ٢٠٠٠ مرك ١٠٠٥ مراك الثاني ١٣٠٥ حرك التالي التدائي

ای طرح ایک مرجد مطفر پارش منظ سال سے ب لوگ پریٹان تھے۔ میدائمی کی الماد کے کہاد کے اس میں اللہ کے اللہ کے کہاد

ايك دليب واقد

ایک مرتبہ آپ چیرہ یک کی ریک کے میمان ہوئے۔ پوگد میز بان کو الل و نیا ہر وقت
گیرے دہتے تھاں گئے آپ نے میز بان کے ایک فیرسکونہ مکان میں شب باقی پند کی۔
لوگوں نے کہاں مکان پرخات کا تسلط ہے گئن آپ نے قرب نیک فیصف شب کے بعد ایک ویرم و
سلیدریش میز ہا اور اس مکان شر سکونت رکھتا ہوں۔ آپ کو قیام کے لئے بہت سے مکانات ل
کا ایک فرد ہوں اور اس مکان شر سکونت رکھتا ہوں۔ آپ کو قیام کے لئے بہت سے مکانات ل
بائیں کے فیکن میر سے نیک ایک مکان ہے لہذا آپ اس مکان کو چھوڑ ویں۔ آپ نے جواب ویا
کرش اس وقت میاں سے منتقل ہونا چاہوں تو بہتر سافر او کے آرام میں خلل ہوگا۔ آپ مجھورہ میں اور میں اور ایک موس کے آرام میں خلل ہوگا۔ آپ میرون موسی کا رام میں خلل ہوگا۔ آپ میرون موسی کو نام میں کا رام کے لئے متعدد موسیمین کو تکھی ہوئے گا جا وال

آپ کے بڑے صاحبزادے مولانا سید محدمیدی صاحب نے آپ کے حالات پر مشتل ۱۹۰ رسفات کا ایک فاری رسال تحقق الا برار کھا تھا۔ فہ کورہ بالا حالات میں نے ای تحق الا برار اور اپنی تالیف تجرو طبیع سے اقتباس کر کے لکھے ہیں۔ (مطلع افواد میں آپ کے حالات میں بہت سے تمام اور میں آپ کے حالات میں بہت سے تمام کا یہ موقع میں ہے)۔

گے۔ وہاں ے وائی پراپ والد ماجد کی مشہور تغییر افوار القرآن کی ماجوار اشاعت کا سلسلہ کو پال پورے شروع کیا۔ (اس سے پہلے یہ تغییر کجھووے رسالہ الشس کے نام سے ماجوار کھی تھی اراقم الحروف نے ای دور میں کرمیوں کی ایک تعطیل میں موادنا سید ملی صاحب سے قلسلہ کی ایک کتاب روحی تھی۔

قیام اقرولہ کے دورش آپ تم تشریف لے گا اور آیۃ اللہ یروجردی کی زیر پری علوم ویڈید کی تفصیل کے اعلی مداری ملے گئے۔ پھر اقرولہ والہی آئے۔ کئی یرسوں کے بعد بعض وجوہ ہے جناب راجہ صاحب اقرولہ سے اختما قات پیدا ہو گئے جس کی وجہ ہے آپ نے ریاست سے تعلق قتم کرلیا۔ لیکن موشین کے اصرادے اقرولہ ہی میں مقیم روکر موشین کی رہنمائی فریاتے رہے اور اقرولہ کو وطن جانی بیالیا۔

مولانا اللي ياييكة اكراور واعظ تصداردوشاعرى ش بحى آپ كاياييب بلندالله ماآل حكى كرت تصدام إلى من المحكم المراح الله المحكم المراح المحكم المراح المرا

اور يعقوب مريد ياو ربانى على ب اور يعقوب مريد ياو ربانى على ب باب كول كاكتول يحولا بي اور الميند الله مادر كاطفياتى على ب

تعلیم کرے ماحول میں ہوئی۔ اس کے بعد سلطان المداری میں واحد لیکر وہاں کے درسیات کی تحییل کی۔ پھر عراق سے وائی کے بعد سلطان المداری میں قد رسی فرائش انجام ویت رہے ہوئی المداری کی بعد سلطان المداری میں قد رسی فرائش انجام ویت رہے ہوئی سلطان المداری کی وقت کے بعد آپ بھور پر تیل متحق ہوئے اور آخری لحات تک اس فررواری کو جماتے رہے۔ عربی اور سے خصوصی و فیلی تھی۔ حاس اور حج کی کے اضعار برحل استعال کرتے تھے بھوم بی قضائد ومرائی استعال کرتے تھے بھوم بی قضائد ومرائی این کی وقت کے دور کی احتار و حج ہوئی قضائد ومرائی استعال کرتے تھے بھوم بی قضائد ومرائی این کی وقت کے دور کیا تھا۔

۱۳۵ رومبر ۱۹۸۵ ما ۱۲ روچان آن من الاستان موجع کے وقت رومات فر ما کی اور ففران مآب کے منام ماڑو میں وفن ہوئے۔

(الوافق عادى الافرى ومع العدمة فيرم)

### على سيد، رضوى، كويال يورى

1417/155.

144-/15 ..

مولانا سير على رضوى آية الله سيدراجت حين رضوى كو پال پورى كه ومر ساجزو سه اور ان كه طوم كه وارث عقد آپ ۱۵ رمضان البارك و ۱۳۳۳ ه كو تجف اشرف يمى يدا بوت عراق الى وقت تركى كذيرافقد ارقف ۱۸ ـ ۱۹۱۳ كى دومرى بنگ مخيم شي مولانا سيد راحت حسين صاحب به يزار دشوارى ماوسفر ۱۳۳۳ ه (=ويمبر ۱۹۱۵) يمن مع الى وجيال ولمن والحن آك مولانا سير على صاحب في الله وجيال ولمن والحن آك مولانا سير على صاحب في الله والد ماجد سهايتدا في تعليم صاحل كي داس كه بعد لكهو

یے تے لیکن بورد گف میں رہنے والے تھا مطلبہ ایک و ورے کو وست تھے۔ وری نظافی کے مالفہ مالی اور کیل الفہ الله و سول مالی الفہ الله و الله الله الله و ا

مولانا على ارشاد صاحب فقید و عالم دین و نے کے ساتھ ساتھ ایک خوددار پاکروار شخصیت کے بالک مضے نبخف اشرف کے جمتی مین کرام کے اجازت آپ کی علمی صلاحیت اور بلندی کردار پر گواہ جی ۔ ۱۸۸ میں آپ تے بیت اللہ اور شہات عالیات کی زیارتوں سے مشرف ہوئے۔ تراجم وقصائیف

آپ نے ایران کے کی علائے کرام کی کتابوں کرتے گئے۔ 1943ء شی ایران کی بین الاقوامی" الدیشہ اسلامی کا تفرنس" شی شرکت کیلئے تہران گئے تو سازمان مبلیغات اسلامی (تہران) کی فریائش پر رہبریت در مکومت اسلامی ورابطہ آنان باقوائی سرگانے کے منوان سے ایک کتابی کلساجو تفنيفات

آپ کی سب تصنیفیں اردو میں ہیں :الفرقة النابيد (مطبوم) تغیر رموز النو بل تین جلدی (مطبوم) منافع العرفان (مطبوم) جنات المعارف پائی جلدی (مطبوم) ان سے علاوہ مسعودی کی اثبات الومید کاردوز برے جو فیرمطبوم ہے۔

دوران طالب العلى عن آپ نے كرچين كائع (للعق) عن سيجيوں سے ايك كامياب معاظر وكيا قدائد بيال درن كرنے عن فوف آللويل ب.

٨ ردي الاول و ١١٥ م ١٩٤ م جوري و ١٩٨ م أو الرول عن رطات فرما في اوروي وفن

2 4

( والى معلمات درموز التو يل كاكرو ياق دوست كابات)

على ارشاد، شخ بنجفي

HEL/IFFO

MAG IF .A

Cooooooo

مولانا مجل مارشاد مجلی مولانا طی مداوسات مهارک بوری (دیکے احوال) این مولانا طی جاد ما حب کرز ترجے آپ اپ وشن مالوف مبارک پور (شلع سی) ش الرو ایقده و سیاله اسکی کی پیدا ہوئ ایتدائی العلیم اپ والد ماجد سے ماصل کرے مدرسا دیا داخلوم شی وشل ہوئ پیرایک سال مدرسیاب احم مبارک پورش رہ سے دبال سے مدست ناصری (جو نیور) تشریف لے گے وبال سے جامع الحلوم جوابی (بنادی) آگا۔ جوادیہ شی آپ راقم الحروف سے ایک یا دوورد

HITA.

# علی جواد، سیدزگی پوری ، بناری

madirar

قدوة العلماء العارفين مولانا سيد على جواد صاحب رقى بورى رفي الثانى المعارف الثانى المعارف مولانا سيد على جواد صاحب رقى بورى رفي الثانى المعارضات المعارف على بيدا بوعد آب كوالد ما بدسيد تحد طابر صاحب القال المعارف من بواجب آب كى هر سرف دوسال حقى - آب ك نانا سيد منايت حسين صاحب بادى كى شادى قاضى مولوى أضل على خان عرف بير منو صاحب ساكن تيليا ناله (بنارس) كى صاحبر ادى سام بولي تيليا باله (بنارس) كى صاحبر ادى سام بولي جواد صاحب ماكن تيليا باله (بنارس) كى ما جي وجي ادر كي جواد صاحب ماكن تيليا باله المعارف على وجي المائل على بوليانات المعارف المعارف

ابتدائی تعلیم مولوی احداد علی صاحب بناری اور مولوی رضاحیین صاحب نونهروی سے
حاصل کرنے کے بعد آپ لکھو گئے جہال حدر ستانیانیہ شن داخل ہوئے۔ بید در سعا مدکلو رق اور
جناب سیدانو صاحب اعلی الله مقامهما کی تحریک پر و ۱۸ یا شن قائم بواقا۔ جناب سید علی حیدر صاحب
قبلی ججہدا علی الله مقامه اس کے حدر تی اعلی ہے۔ آپ حدر سے مشاہر و نیس لینے تھے۔ مرف گر سے
حدر سرتک آنے جانے کا پاکی کا کرا یہ لینے تھے۔ سید علی جواد صاحب نے مواد تا علی حیدر صاحب قبلہ
کے علا وہ جناب سیدا یوصاحب سید حسن صاحب اور تاج العلما و بلی تھی آپ کو اجازہ مرتبت
فیض کیا۔ اور درج اجتما و تک پہنچے۔ آیة اللہ شخ زین العابدین ماز عدر ان نے بھی آپ کو اجازہ مرتبت
فرما یا تھا۔

جواد العلماء كروهاني فيوش كاذكر جامع طريق سيدم تشي حين قاضل في مطلع اثوار من ان القائل من كياب \_"مولا ناعلى جواد صاحب في بناري كود ارالاسلام بناف شن جوعت كى ب قارى ى يى ساد مان مايدات كالرف ك في دور كا توثى يى تتنيم كياكيا.

وفات

مولاناتے سازع مالحرام او ساندا ۸ رحم اعراد دور سے اور دور کے دور اور دور سے مولانات فرمال اور دوسر سے دور اس می شید مید کاوش ترفین دول ۔

(かんりいいいかいき)

### على اصغر ،سيد ، عابدي

موال تا سيد في احتر عابد في صاحب جونيور كايك كا دان في يمي بيدا بوئ - جوال طلح
احظم كذه هي با يبال تحق و جي يرورش يا في - حدرت احريد (جونيور) على تعليم حاصل كي - اور بهت
جلد هر في اور فارى اوب عن بردامقام حاصل كرايا - فارى عن ان كا كام الم معتم كي الحل حثال جيش
جلد هر في اور فارى اوب عن بردامقام حاصل كرايا - فارى عن ان كا كام الم معتم كي الحل حثال بي من الكي كام على من المربية فقاء ) برجل ايك
گرنا هي النصوري فاري عن واري عن موال اي حارى يردس - بحق بحل بحل كام كام مناسبت ب منواها
گريز فقار من كام جيري وجد و ميد ويب ال في موال الكي في محب ب فاري ير ميور حاصل كرايا
قد موال الكي في يك جيري وجد و ميد الله في فوايك ايرا في او يب في بهما كرايا ايران است" بي حالات موال تا كي فوايك اور وير عادري موال تا كي ايران است" بي حالات موال تا كي فوايك اور و الما تا تحقيم ميدرياض من صاحب (مقيم
كراي ) في لك كرد يك تقد أمين في قلما بها كرموال تا مي الما في احتر مناسب في مقارش في چنا في الل في احتر وي مناسب كي مقارش في چنا في الل في احتر وي مناسب كي مقارش في چنا في الل في احتر وي مناسب كي مقارش في چنا في الل في موال تا ميد في مناسب كي مقارش في چنا في الل في مناسب كي مقارش في هنا في الل في موال تا كي في در ويا يا

(ほじつびょう)

000000000

10.

ال کی مثال ثین بلتی بیده وقت کا سب بردام کرز جیال معدیوں سے مسلمان بنده المقافت سے بنده

قدا ہو پہلے مع مولانا علی جواد صاحب نے اپنی پاک باطنی ، ریاضت ، علم وقت ، وعظ وقیعت سے

انگذاب پیدا کردیا۔ مسلمانوں کو بنده وقل سے جدا کیا۔ افیص اسلای تقلیمات سے باخر کیا۔ ان کے

ہاتھ کا کھانا فتح کرلیا۔ مسلمانوں سے دوکا تین کھلوا کی۔ ان میں از سے تشن اوراحساس خد ب پیدا

کیا۔ شید سینوں کوشر وشکر کیا اور بندول سے وشنی نہ پیدا ہوئے دی۔ مجب کا پیغام اورا خلاق کا درس

دیا۔ آپ کی جلسوں میں بندو مسلمان سب شریک ہوتے تھے۔ تین تین چار چار کھنے کے بیان میں

میں کی دل آزادی نافر مائے۔

" دوردور سے لوگ مجلس و دوخذ عی شرکت کے لئے آئے تھے۔ خدائے زبان میں تا تھے اور بیان میں دردویا تھا۔ میدخد یر ومیدمیلا والتی صل اللہ علیہ وآلد وسلم کے ارزی الاول ر ۱۳ ررجب اور ر ۸ مرحفر کی جلسیں دوردورنک مشیور تھیں۔"

اور المحتوك مدرسدالهانيكا ذكراآ يا ب. بناب الوصاحب اور ملامد كنورى طاب را انها عند من المحتوك من المحتوك من المحتوك من المحتوك المحتوك المحتوك المحتول المحتو

مد مطلق افوار سخفیر ، ۳۵ - ۳۵ می سیدهل جواد صاحب کے والد کانام سید تی تکھا ہے۔ اور بیاک آب دی سال کے تھے کہ والد ماجد نے رحلت کی ان کے اسا تدویش جناب سید ابوصاحب اور جناب سید حیور کل صاحب کے نام حد ف کروے میں اور میرآ ما صاحب کانام بوصاویا ہے۔

مالا كديمرة ما صاحب كا فكرند كوير منظور يمل ب دنية كروب بها يمدة ب مدرد العالي كم مس أليل على المال من المولا فقد ميدا ك او روضاحت من تعماكيا ب رة ب ك بين كومر تفنى أو مطل عمد التي تعماكيا ب الناسب تما المولاد عمد المولاد المولاد

### على جواد،سيد،اله آبادي

HAT/HAT

مولانا سيد على جواد صاحب يسونه شلع الد آباد كرين والے تھے۔ م<u>ن الوا</u>ء كريب سلطان المدارس (لكھؤ) ہے اللی ڈگریاں حاصل کیں۔ آپ ایک اٹھے ذاكر اور سور ٹے، مقرر اور صاحب آھنیف بزرگ تھے۔

عرباری ۱۹۸۳ و ۱۹۸۳ منادی الاولی سوسیاه کی پروز جد ۸۳ رسال کی ترش انتقال فرملا \_ (اس طرع تخییناً آپ کی ولادت و والا می صدودش دو کی دوگی)

(الواديدة ١١٠١ع في ١٩٨٥م)

### على حسن، شخ

HERP/INIT

 في جواد ، سيد ، بحيك پوري على جواد ، سيد ، بحيك پوري على جواد ، سيد ، بحيك پوري على جواد ، سيد ، بحيك پوري

۱۹۱۵) ۱۳۸۵ مولانا سید طی جواد بیک پوری مولانا سید طی سجاد صاحب مرحوم کے صاحبر اور کے قصد (دیکھنے احوال) آپ نے سلطان المدارس ہے صدرالا فاصل کیا تھا۔ ایک عرصہ تک ہوگا ہا ا میں انتقاف خوجہ شیعدا شامخری بتمامخوں میں وہی خدمات انجام اوسے دہ بر 1910ء کر رہب وہاں ہے وائیں آئے تو ایپ والد ماجد کی جگہ پرگاز ارباغ (پنند) میں ویش نماز مقرر ہوئے۔ ۲۲ مرد جب هم ۱۲۲۲ء کی 1910ء میں ترکت قالب بند ہو جائے ساتھال فریالا۔

( وَالَّيْ معلومات منظوره وعالم بعيك يوري)

# ملي حين ،سيد، كجھو كي

MATE / WAS

HAT WE

مواا ناسيد على صيان صاحب رضوى موضع مجدوا (الشابع سيدان) كديت والمله عقد آپ

کا والاوت و ارشعبان و سياده ( و ارسار فا ۱۹۸۹ و ) بدروز جديدوني - آپ والا تحقيم سيد فير صاف عرق كري كري وي جهوف اور موالا نا سيد مرضى حسين كريو بيائي هيد ابتدائي تعييم كه بعد سلطان المداري محاور جناب باقر اطوم الحي الله مقام بي بوب بهائي هيد ابتدائي تعييم كه بعد سلطان مدرس مي بالموريدوس مقرد بوت اور رينا يرمن كروت تك وقت تك و إلى قد دلى فعد مات انهام وسية مرب بياس سال تك كراري طبع الرياد باوش ما ورمضان المبارك مي امامت كرت دب - كراري على مولا نا تحوزي مي بلندي بي كرك اورشد يد چوت آئي جراس كر بعد و بال ندجا تقد المحق من مين مولا نا تحوزي مي بلندي بي كرك اورشد يد چوت آئي جراس كر بعد و بال ندجا تقد المحق من مولا نا تحوزي مي بلندي بيار محك اورشد يد چوت آئي جراس كر بعد و بال ندجا تقد المحق من مهم دوجان ناصر على مين قيام ديتا تقال الار دخيان المبارك عن الدول من الهول في المحلول ال

اخلاف بین دا کشرسید دارث مسین صاحب اور دوصاحبر ادیال این -(دانی معلومات دارور موشد و شعبان سوسیان) حادَق داویب اور خطیب آل کر تھے۔ مولانا آیک ہار تی اور دو ہار زیارات متبات عالیات سے مشرف ہوئے تھے۔ آپ نے محار مغرام تعلی سام اور اگرائے میں اور قات پائی۔ اور اپ آبائی قبر متان عمل وُن ہوئے۔ قطور تاریخ کے دومعرہے ہیں

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$**\$\$\$\$\$\$\$\$** 

عالم کوی دیات کوئی ہے ممات کل اور اور قبر یہ لکھو وفات حق ۱۹۹۲ء

(المالة فيم المن ما ديداي)

## على حسين ،سيد ،عدة العلماء، كجهو كي

INA-/ITENE

عمرة العلماء جناب مولانا سير على حيين صاحب قبله امام جعد وجماعت رياست مرشد آباد في حيسال كي هو يسال كي عرض الرسطان المدارس كي متاز تعليم يافته افراد شي اور جناب باقر الطوم الحي الله مقامه كي ارشد الاندوب هيه سيسال هد يراست مرشد آباد شي و ين خد الماست مرشد آباد شي و ين خد الماست مرشد آباد شي و ين خد الماست مي و ين حد الماست مي و ين حد الماست مي و ين الماست و ين الماست مي و ين الماست و ين الماست و ين الماست و ين الماست

على ولادت ١٩٥٨ على المراوف المادودون بكرة بك ولادت ١٩٩٨ وعلى من المراوف على المراوف المراوف المراوف المراوف الم

TOT.

وطن بالوف على وقات بالى \_ رسالة اصلاح بغده الثارو ٨ شعبان عريس عنى آب كي فيروقات ان القاظ عن يمين هي \_

"اكابراقاهل موضع بحيك بورطلع مادن عديد بن أو على صاحب اللى الله مقامد على الله مقامد على الله مقامد تلك تم قال الله مقامد الكرية آب المامت عما عن أو حيد المان على الله مقامد وقل عن بورى و متاكا و ركعت تقد اور أن شاعرى عن قو وحيد المان تقد مكر الحموس كدائيا بزدك كم شعبان كو ريكرات فرووس بري بوجات بين بالم بالم وق الالقاب فهايت مهذب او يبت كير الاحباب تقد الحموس كدائية المان كوريكرات فرووس كرا عن بوجات بين بوجات بين بوجات بين بالمقاب على في ندوبات

(のからないとうないというなりとうのがれるからはないという

## علی زباد ، زنگی پوری

1414/574

مولانا سيد ملى زباد بيناب مولانا سيد محراطيف زكلي بورى (و يجيئة الوال) كفرز تدشق ملم كلام من تبحر تصد خطابت كابي عالم تها كه خطيب الل بيت سيد سيط من صاحب قبله مجى بحي الي جكه بهان كو بين و بية تصد منفوان شباب من هدرت ناظميه بي متناز الافاضل كيا اورو بين معقولات كه ه رس مقرر ووت مثاوى ك تين جارسال بعد بين جوائي من به مقام محد آباد كو بيث والاوقيده عرس الدن المست و 191 م) كوراى واربية بوت فيروقات اصلاح ماو دي تعده عرس الدي النافظ عن بيم مقام محد المناق الموقية و عرس الدي النافظ عن بيم مقام محد المناق الموقية الموق على حداد، شيخ مبارك پورى

mar/irra

مولانا على مراوسا حب قبل مولانا على مجاوسا حب مبارك بورى كرمها جزاد بقد آب كى ولادت والله من مراد بيادى الثان الله و الله الله و الله

مولانات اصلاح الموتن ك مام سالك قريك شروع كى جس ك دريع شادى عياه شركات باب كوردك كراس كى جك سراية عن كاردارة قائم كيا-

آپ كے منظ الرشيد مولانا على ارشاد صاحب فيفى مرحوم تھے. مولانا على جماد صاحب قبلد في مرحوم تھے. مولانا على جماد صاحب قبلد في مولانا على جمالاتي مولانا كي جمالاتي كي مولانا كي جمالاتي كي مولانا ك

### على رضا ،سيد ، زائر

1414/1110

مولوق سیدیلی رضا صاحب بیک پوری دیتاب سیداحمان بلی صاحب کے صاحبز اوے عدد ویکھیے احوال) آپ نے دیتاب مفتی سیدائد مہاس صاحب سے ملوم حاصل کے تھے۔ اوالے شام اور عدار الل دیت تھے اور زائر تھی کرتے تھے۔ کم شعبان ۱۳۳۴ء(= سردون ۱۹۱۹ء) کو

اشافى ومدوارى بحى سنبالى مادسفر عواج الدهي والاعتراصطفى ماحب بويرعات مدارى الى حيثيت عدر معايد عن آئه اوراى مال ١١٠ د جب وان وعدر الل الإيار اوران الرن تقريباً بدره مين كر بعدمولا على عادصاحب مدرسكي ذمددار على عدمول الدين مولانا مرحوم س راقم الحروف في آجي فحقر نافع (الناب الوقف سي آخر تك)سيقا ين في في معدوا و كريباً بإين في وار وطن والمن أكار اللها وش زيادت كالحدواد ووع ـ العروك في وقات يالى اوركر بال على شي مرفون وع عين كلتا وول كراهم والله كا طائرروح اشتياق زيارت يتى قض عضرى كوچوو كرح والركر أبيااورجند خاكى إحدث وبال يتفاء آب في مواد تاسير على جواد صاحب مرجوم جيسا طلف صالح دينا على تجوز ا(و يحف احوال)

( وَالْيُ معلومات منظورود عالم بعيك إرى)

على ظهيررضوي بكهنوي

مولاناسير في الميرر رضوى المعنول السواء على يداوع-آب شيد كائ على معلم اورشيد مريا كالح ين وينات كامتاد تعد موادنا في الكي كتب كى فياد كى رقى جوات كاسلام بالدويرن صاحب مرحوم على الل ديا ي . آب ٨ رجولا في ١٩٨٢ و (١١ درمضان عواميانه) كوراى مل عادو ... (are distanted beidi)

"ال كمنى يى درجهمتاز الافاضل درست الميدي إلى كيا قوت بيانيدادى الى درجدكى محىد تنام علاءان كواينا فور فيتم تصحيد اور مكارم اخلاق وآداب كالجويد تفار برطرت باعثل تفار

88888888888888888888888**666666** 

مورت الكاياكيزوافلاق ايا كودا

استادی العام موادة سيد ورفني افي الفسقام رفي يوري سان كركر سروابا في اوروونون ووستول كروميان فرقي مين مراسلت رئتي تحي مطاهد ميد فيرونني صاحب كايك فرني علا كالل بير ب ياك بيد يوم كل اليدكو ١٥ رجون و ١٥٠ ملا تعاريكن آن كل ك انحطاطلمي كو ويصح يوسي ال ورق كرة بياق كم و يكتابول.

قيس رقى يرى (سيعلى عباد) آب كيفوف بعالى قدر (ديكه اوال)

علی جاد،سید، بھیک پوری

20000000000

مولاة سيدفى جادصا حب بعيك بورى سيدفل حين صاحب ابن سيدفل تقى صاحب ابن سيد محان الى صاحب المن سيد ملامت على صاحب كرز عرض آب كروادا سيرسمان على صاحب جناب سيد احسان على صاحب (ويكيم احوال) كر بحالى تھے۔ مولانا على سجاد صاحب في سلطان الدارى عصدرالافاهل كاستدماصل كىدال كابعدام باتدى يكمونف الليث كالخزار باغ (پند) کی مجد می دام معاعت رہے۔ جب نواب مید محد صاحب مرحوم متولی وقف فدكور نے والمساعد على مدر عباسيقام كياتو عدادى الدولي المساع دي جناب باقر الطوم اللي الله مقامد ك حدود عدد تاسير في جادما حب كو عدر كا عدر اول عايا كيا ورآب فيش المازى كما ووب

# ٧ على فقى ،سيد ، نقوى ،سيد العلماء

112-11

BAX SITA

سيدانعلماه سيدمل فتى جناب ممثاز العلما هايواكس (من صاحب) كفرز تا تقييه بوطس العلماء سيدابرا يم بن بنت مآب سيدالى بن سيد العلماء سيدسين عليون مكان المن فقران ما بسيد ولدار على كرز عرف مولانا سيد على في ٢٦ رويب ٢٣ ١١ ها ١٥٠٥ مرالكسور من متولد و على اللي آب كي فرسور الإسال كرورميان في كدآب كروالد ماجد ١٣٥ ه يس مع متعلقين محيل علوم ك التي أبف الشرف تقريف لے سے ۔ آپ كى اور وريرى كي تقى جب ١٣٣٢ دري آپ ك والد كرا الى بندوستان والين آئے۔ اس وقت تك آب كي مرف وتوكي ابتدائي كتابي قتم بويكي تيس للمو والمراآ كرآب كوالدصاف طاب راوت آب كي تعليم اين وت ركى والدى علات ك زمائے بی آپ کے ہداور معظم مولانا سید میرون ما دب آپ کو براهاتے تھے۔ سرکارسید العلماء في مدرستناظميد ادرسلطان المدارس وون مكروا فلدليا مدرست المميد ك فاهل اورسلطان المدارس كيستدالا فاهل كاايك عي ساتحدا حقان ديا في روس سال دونون دريون تي هميمون كا اورقيس اسال متاز الافاهل اورصد رالافاهل كالك ي ساته احتمان ويااوران وبل بي في مالياة اورجناب باقر العلوم وفول عظمة حاصل وارعرفى اوب ش آب كى مبارت اورفى البدير قسائد ومراقی لکھنے کا ای دور عی بہت سے مظاہرے ہوئے اور مر فی شعردادب عی آپ کا اقتداد کو شام ومعروراق كماء تقول كيار علامدائي ماحب القدير" تي آب كالك تعيدو" القدير" عى شامل كيات، اور آ مائ يزرك تيراني طاب ثراه في شخ طوى ك مالات كوآب ك تلي موے مرمے پر حتم كيا ہے۔ طالب على على اى مرقر الكتماؤ ، الواعظ للمؤ اورشيد لا بورش آب ك

\*\*\*\*\*\*

على عباد ،قيس ، زگل يوري

عالم تیر ، طبیب حال مولانا سیدهی میاد صاحب زقی بوری کود نیاان کی شاعری کے حوالے ے والے ای ہے۔ کیا جا سکتا ہے کہ تھی او کی اور کی تے میم الی موات وفضا کی کو جمیا دیا۔ خُوْل مزائ ، بذل ت ميمولول على ميوف ، يزول على يزب، عربي اوب ك ماير، اردو كاستم الثبوت شام اورات وريق في بيادان كارتدكى استاره كاور يركروش كرتي تحي آب مولانا سيد تخد الطيف وكي كي وي ك دوس بيض تقد مدرست علم يش ممتاز الا قاصل مك تعليم يدى ك معلومين كيان واكمة فرى احمان كايد يديمود كرا محان كاه علا عد طب کوز ربعد آند فی شک عایا . زمینداری تحی ای عزت و آبروے زندگی بسر ہوگئی۔ جى زمان شايد على فطيب اعظم مولانا سيدهر صاحب والوى رياست دام يورش شعبة تغير كانجارة تحداورات ذى العلام مولانا سيد قد رضى زكى يورى تغيير لكورب تحد خطيب اعظم في فيس زكى يدى كى شام الدعمت كا يكره بر بالأش عيد واب ساحب بالقايدة ال كورام يور بالياد الثاق مهمان خاندش رج تصداور مورويها مواروغيد مثاقها ويدميون ياسله جارا يك شب كى دربارى في محبت خاص شراؤ اب صاحب مردم سے قبى صاحب كالى مشيور تعيد و كالاكركيا جوالم جارم طير السلام كي مدح عن ب- (شان دين العابدين، ايوان دين العابدين) - ثواب ساحب نے بنے کا اُنتیاق کا ہر کیا۔ قیم بھا کوفیر کی ہے۔ آپ نے استخارہ کیا اور مع آ جائے برقعیدہ على عالاركوبا على ومعاليات قادوه العنادم إدرا الملائم وكالد

موسوف كدوم في خطوط كي تقليل (جوائية فرز تدمول ناميد تداوش صاحب فيقي كو لكنامية هي أحد سايال موجود في -

00000000

Scanned by TapScanner

مندرجد بالا تمن مرافع تظیرے علاوه ووسرے جہتدین کیار نے بھی آپ کو اجازه بات اجتباده بے
سے دختلا آید اللہ فی عبدالکر بم بردی حائزی (موسس موزوعلیہ قم) آید اللہ فی محدسین استہائی،
آید اللہ سیدایرا تیم معروف برمیرزا آتا کے شیرازی، آید اللہ فی بادی آل کا شف العظام، آید اللہ
میرزاعلی بردانی، آید اللہ فی محدسین شیرانی، آید اللہ فی محدکاهم شیرازی، آید اللہ برزا الا اسن
معکنی داور آید اللہ سیدسید سن جہتد

سیدالعلماء نے علم تغییر اور علوم قرآن نیز عقائد اور علم کلام سے متعلق ہو تھیل تصانیف الدو یس کلھے ہیں۔ان کی فہرست بہت طویل ہے۔

وہابیت کے خلاف تحریک : جب وہاروں نے تھاز پراپنا تساط تا تم کیا اور ۱۹۲۵ میں الل بیت اطبیلا ، از دائ تی ، اور صحابہ کہار کے حزارات کو منہدم کردیا۔ اس دفت بھروہ تان کے تمام مسلمانوں خصوصاً شیعوں میں خلائم پر ہا ہوگیا۔ فرقی تل میں اجھن خدام الحریثن قائم ہوئی شیعوں کی طرف سے سرکار ٹیم الملہ کی سر پرتی میں وہابیت کے خلاف جو تحریک شروع ہوئی اس میں سید العلماء اب استاذ کے قوت ہاز و تھے۔ اس سلسلے میں جو کتا ہیں ایملیلی اور مضامین تکھے گئے۔ ان کا ذکر اس مضمون کو بہت طویل کردے گا۔

اماميشن

۱۳۵۰ دین آپ کی آخریف آوری کے بعد سیدائن حسین صاحب فقری مرحوم نے امامیہ مثن کی بنیادر کئی۔ جس کا خاص مقصد تھا سید العلماء کی اردو کتابیں اور تحریروں کی نظر واشاعت۔ ابتدائی دور میں ایس میں بہت ہی وقیع اور موقر کتابیں شائع ہو کیں۔ اگر چہ آخری دور میں ہے ۸۸۸ اور ۱۱ را ۱۱ مشخات کے محلف پیشائوں کی اشاعت تک محدودہ وکیا۔

على مغايين شائع دونے كے تھے۔ اور ٣٠٣ كَائِين جى حربي اور اردو ي اى زيائے بين شائع دوكيں۔ قدرين كا سلسله بحق جارى قوار كھي حرب تك بحيثيت درس ناظميہ بي بحى معقولات كى قدرين كى اس دور كے شاگردوں بين مولانا تھ ايئير صاحب فائح كلسلا۔ ملا مسيد جھي حسن صاحب كامون إور كاور جناب حيات اللہ انسارى شائل تھے۔

خزمواق

سیدالعلماء ۳۵ اومطابق ۱۹۲۰ مین تحیل علم کے لئے مراق آخریف کے گئے۔ قیام عراق آخریف کے گئے۔ قیام عراق کا بائی برسوں میں آپ نے فقہ دوسول میں دور مرحوم کی زندگی کا ایک زریں باب ہے۔ ان پائی برسوں میں آپ نے فقہ دوسول میں دو مطلب بیدا کیا کہ اس دور کے سار جمہتہ مین بعنی آبیۃ اللہ استر شیاء اللہ مین عراقی نے آپ کو واضح القائل میں اجتہادے اجازے دیے علم کلام اور دفائل نہ بب میں آپ کی مہارت کا لوبا سید صن امین عالمی، شخ جواد بلائی، شخط محر حسین کا شف الفطاء اور سید براجی اللہ میں موسوی نے مان ایا۔

نجف بمراح فجاتصانيف

تجف بی و دوبایت کے خلاف تھی جو بعد میں کشف ادھا ب من مقائد و بدالوباب کے ام سے شائع ہوئی۔ عراق داریان کے مشہورا الی علم نے ال کاب کوایک شابیکا رقر اردیا۔ دوسری کتاب" اقالة العاثر فی اقامة الشعائر" ما تم وغیرو کے جواز میں۔ تیسری کتاب" السیف الماضی علی مقائد الاباضی" خواری کی ردیمی جار روسنی کی کتاب ہے۔ ال کے علادوجی دو تین الرفی الساخی خدات دالاباضی " جواری کی ردیمی جار روسنی کی کتاب ہے۔ ال کے علادوجی دو تین الرفی الساخی خدات دالاباضی ہیں ہیں۔

إِنْ مال بعدرمشان البارك • ١٣٥٥ وعلى جب سيد العلما وبندوستان والحل آئة لو

### ياد كاركن

١١١ ١١ ه من مام فين كاشبادت كوه و ١٠ مال يور عبور بي تقدار مناسبت ع وا - تمن - سال جل ے آپ نے بندوستان کے کوشے میں برقم یک پھیلائی کہ ١٣٦١ ھ میں بادكار سكن الدخر عنافى جائ كديس عن برق مادر برخدب كالوكون كوشر يك كياجا عدادروه وك المام سين الى مقيدت كالقباركرين والكاريك كالكسب عدد امنعور والدكر بار الك بسوط الناب شائع أرة قاران كناب كالدوين عرف الكرايد يوريل بورة كالفكيل كاللي ليكن فيرمظتم بندوستان كرطول ومرش على تعطيه و عميران إدرة كااجماع المرا فيرمكن البت بوار ا فريل سد العلماء في ايك مينك على على على موف جد معزات فريك تف يمورت تجويد ك كدود خود كتاب لكوكر بورة كى ميشك عن استعواب رائ ك لخ ويل كروين روي الاول ۱۳ مار دری-ارج ۱۹۳۵م) ش ال کآب کا صود وطع کراے بورڈ کے عبران کے پاس بغرض التصواب بيج اليا ـ اداره يادكار من لكحة في العمن عن ايك فيعلد يا كدال مسود وشبيد انسانیت کے بیج ہوئے نول کوقیتا عام پبلک گوفروئت کیا جائے دمتعد جاہے نیک رہاہولیکن اس اقدام في من انتظارا ورافتراق بداكرديا مود وهبيد انسانيت كي كالفت بوكي اوركل كروولي . قفيان صفك يدحاك والس والسريرى كالاحلاق فالرعوك ويتابا كاوريمالى بمالى كاوشن اوكيا- يددوبنكاس فيز دورقاجب بتدومتان كأقست كافيسله بوف والاقعار اورة خركار دار المت كو بندوستان اورياكستان تتيم بوك يكن قوم كى تمام ز توج شيدانانيت كان ياباطل اور يوم بحزري على مسائل ش اختلافات خود شركعو ش يبلي بحي افحت رب تھے۔ ليكن وو مناظره بإرده قدع تحريراً بوتى تحي اوروه بحي اكثر فارى زبان مين \_اسلنة موام الناس تك اس كاارْ

بہت زیادہ نیک ہار پنتا تھا۔ شہید انسانیت کے سلسط میں ایک قیامت یہ اوٹی کے شرکو میدان مناظرہ اور موام الناس کو سلمی مسائل کا قاضی ہنادیا گیا۔ اور اس طرح یہ آگ بیسوں برس تک آوڑ کی رہی۔ میرا مقصد اس تحریرے شہید انسانیت کی تا تندیا تر ویونیش ہے۔ شراسرف اس تکلیف دوسورت حال کا تذکر وکر دیا ہوں جو اس قفیے ہے بیدا ہوگئی تھی۔

### فطابت

سیدالعلما وی خطابت کاایک خاص دیگ تھا ہومبارت آ رافی اور سستی کات آفریل کے بجائے علم اور تحقیق پر بخی تھا۔ اور ایک محمد کی جائے ہے ان کی آفریرا ور تحقیق پر بخی تھا۔ اور ایک محمد کی جائے ہے ان کی آفریرا ور تحریر میں بہت کم فرق ہوتا تھا۔ دوسری خاص بات ان کی آفریروں میں بیتی کہ جرند بب وطب کا بائے والا اے اطبینان قلب کے ساتھوین سکتا تھا۔ اور فیض یاب ہوسکتا تھا۔ کی جملہ ہے کی کی ول آزادی کا خطر وقیمی تھا۔

### للعنؤ يونيورش

عراق سے والی کے پکو عرصہ بعد ۱۹۳۲ء میں آپ لکھنڈ یو نیورٹی کے شعبہ عربی سے وابستہ ہو گئے۔ اور ستائیس برس تک طلباء کوفیش میو نجاتے رہے۔

### عليكڈھ يو نيورش

العلاد من مليلا د يو غور في في آپ وشيد د ينيات كشيد على بحيث ريار د موكيان الم المعليلا د يقل موكيان كا بعد آپ المعليلا د نقل دو كا د يار آپ شيد د ينيات ك يد فيسر بنائ كا در ينازمن ك بعد آپ المعلوك في مليلا داى من كون المتنياد كرلى د عدا و من للموك كيوش پندول في آپ كالمعلوك مكان عن آگ لكادى د جس عن بزادول فيق كاين جل كرداكه دوكتي دال من آپ كول

دری الیارطب کافن این عزیز اور مشہور طبیب سید باقر حسین صاحب مرحوم سے حاصل کیا۔ اشن آباد تا کت اسکول اور کنگ کا لیمیت لکھوٹو بٹی اعتران تک آگریزی تعلیم حاصل کی۔ بین سلط وجدیا، تک جاری رہے۔ اس کے بعد لال اسکول (لکھو) بٹی آگریزی کے معلم مقرر ہوئے۔ پھر سرکاری ملازمت میں واقع ہوئے۔ اور محکمہ و بوائی کے مختلف عہدوں پرسلطان بوراوروائے ہر فی وفیروش رہے۔ بالا خر ۱۹۲۱ و بین جی تفیف (لکھو) کی سرشہ داری کے عہدوے پیشن فی۔

شیعت افزنس کے جلسوں میں آخر بہا ہر سال ایک مسدی قو می حالات کے تہرہ پر منی پڑھے عصد الن تطموں کا مجموعہ لخت جگر کے نام سے شالع ہوا۔ قوم نے آپ کولسان القوم کا خطاب دیا۔ ایک سال آپ خودشیعہ کا نفرنس کے صدر محتب ہوئے اور اپنا خطبہ صدارت نظم میں چش کیا۔

### عنايت على ،سيد

افسوں کہ آپ کی حالات معلوم ندہ و سکے معرف اتا معلوم ہے کہ آپ کی اللہ اور میں وزیر آباد رہے ہوئے ہے۔ ایک مرتبہ ہتا ب مرتبہ ہتا ب سید علام شاہ (موضع کوٹ منایت خال ، وزیر آباد) کے گھر پر ایک انجائی متعصب کی نتمی خال سے مناظرہ کیا۔ دولوں کی دائے ہے لالہ جون ال کو تھم قرار دیا گیا۔ نتمی خال سید مناظرہ کی دائل و براہین کے مراش ندیک سکے اور جلس مناظرہ ہے فرار کر گئے۔

### دوسرامناظره

موصوف نے ٹورالدین اور سیدامیر شاو (سی المذیب) سے مناظر وفر بایا۔ دوران گفتگو نماز کا وقت ہوگیا۔ تی مولوی صاحبان نمازیز سے سے لیکن ویدو کرنے کے یادجود پھر دائیں نیس

تسائف كيفرمطور مودات كي تك دوك جن كان كوآخ عرتك مدمد بار

- 15-

آپ نے کیم شوال روز مید الفر روز میا داری ۱۹۸۵ رکوللموز می رملت فر مالی داور ویں پروخاک سے گئے۔

آپ کے تصانف کی جوفیرت کا پیرسید العلماء میں چھی ہے وہ ایک موا کالیس کا بول ور کا بچاں پر مشتل ہے۔ توف طول اے تقل کرنے سے اجتاب کر تا پڑا۔

## على فقى ،سيد مفى لكھنوى

ATT ITEA

على تلفتوى (مولاة سيد فل فتى) كم مورث اللى شاه مبارك فرزنى سنة كرو فل مين آباد يوئ يرسيد جلال مرجوم في وخباب كى سرحد يرقعب يكور كوآباد كيار جاث كردى كرزمات ش اوده شن آكرة باد يوگف

FIA

ייני שני בענו אנט ( ייל אין שי ייני בענו אנט ( ייל אין אין ייני בענו אנט ( ייל אין אין ייני בענו אור אין אין אי

صدر العلماء مواد تا سيد ظام مين اين جر اشرف هين صاحب بظوري في حيدة بادي راحت عزى كفض كه مطابق ال الما المدهدة المدهدة المدهدة المحافية المحافة المحافية الم

مولانا معقولات ومقولات میں کائی تھے۔خطیب یمی برے پایو کے تھے۔ اور پی وقاری بالکاف آلکتے اور اور کتے تھے۔ حید رآباد کے امراء وروسااور توام دونوں میں بہت حقیول تھے۔ أخدال مناظروش يفت كريان ماوريساني مدركش الدين وكم بناياكي تعاد (1911年できるかかりまりはいはないのかかったいの) غلام اصغرسيد، نقوى سيد خلام احترفقوى كجوه وهلع سارن كرين والماح فقد أتحريز ي تعليم ماصل كالحي يكي كونفت أفن ش مرشة وارتف خادم مين بجيروى قاديانى كدى سوالات كي جواب شي آب في" مشرة ميشرو" ناى الله (١٠٠ من المربان (اوميات) كرمشان و١١١ه ك الدويل PERSONAL PROPERTY AND ARREST

صدی سندی سندی او د اوری ہے ہیں ہی افسوستاک ہے۔ انجیسویں صدی کے خاتمہ سے قبل صدر العلمیا و ہندوستان والیس میلے گئے۔ لیکن ان کے صاحبز اور اور اور کے صاحبان جمت الاسلام کے مہران سے دابط ورقر اور کے دوئے تھے۔

مولانالقاعلی نے کئی جائیں اس دسالہ کی دوش پڑھیں جن کا پرطرف شروہ و کیا۔ ایک دون حیدی صاحب صدر العلماء کی جلس میں شرکت کے لئے گئے۔ بعد جلس دن بچ دن سے تین بچ تک برابر بحث کا سلسلہ جاری رہا۔" ما بڑا آ کر کہنے گئے میرا پر حقید وقیس ہے۔ علماء سے لوتی ظلب کیا ہے۔ میں نے کہا تو آپ مجھے تحرید یں کہ آپ کا پر حقید وقیس ہے پھر ش آپ سے دست بست معانی طلب کروں گا۔ کہنے گئے۔ تحریفی دونگا۔"

الخضرايك شب تقريرى مناظروط بإلى كين صدرالعلما وباره بيع دات تك في آك ...
ال ك بعدموالا نا محداقا ولى حيدرى في قد كوروبالا رسالد ك معلق فارى في ايك استختاء تياركرك مجتدين ك باس بعباد حسب ويل مجتدين وعلاء في كتاب كوكراى بيدا كرف والى كتاب اورايدا

عن الداه ١٠٠ و١٨٨١ من آ قال بيد مبد العين مرفى الف ع بمي او ي او ي ر نجار گے۔ وو خوجہ جماعت کے الی حل وحقد کی فرمائش پر جناب شخ زین العابدین مازیر الی کے كرانى زير يكم ماب الم فود معزات كرت في فاير بال طرع ملى وموهظ كاللائم موجاتا ہے۔ بیتا نی بھاعت نے طے کیا کرتقر یر کی فوض سے موانا تاسید نلام حسین صاحب کومیوا سے ر تجار بالا جائے۔ یکی دوں بعد سر عبدالحسین اور سید غلام حسین کے درمیان ایک علی مسئلہ پر اختاف يداءور بحث شروع تورق البات يركم الى معدومات عامقال دواب والسال طبط عن ميد غلام مين في منذ كروبالارسال كفاجس كالورانام ي: حس البدايلر ولي من مثل بقول ان علمه تعالى المعلق بالمعدومات ريكن شرجائ كول كرية ملسار دراز موكر مسئله مساوات تك ينتيج كيال يتى سيد غلام مسين متند وانه طور يرب كيتر تن كد جعزت على عليه السلام حفزت رمول مقبول معلى الشعليدة ليوطم ميص جمع الوجود مساوي جن يجبيه عيد مبدالحسين امير الموثين كورسول على الله عليه و آلدوسلم كے بعدب افغل كيتے تھے۔ يداخلاف اتا يرحا كرميد غلام حين صاحب كے عاميون في خوج شيعه الناطري قوت الاسلام عماعت ( زنجار ) عليده بوكرا في الك جماعت جت السام عامت كام عام كالم كرا دوراقي مجددام بارواورومرى فارتى الك يالين. جت الاملام بماعت كي ومؤلول عن عايد ووفود تق

خوجوں کی خالب اکٹویت پرائی جماعت میں ری۔ جبت الاسلام کے ممیروں کی تعداد مختف دجودے کھنے کھنے انگلیوں پر گئے کے لائن روگئی ہے۔ تمیں برس سے زیادہ کا عرصہ گذرا کد خوجہ پر کہا کا آئس کے لیڈران کوشش کررہے میں کہ بیافتقاف مٹ جائے اور دونوں بمامتیں ایک عوجا کی جگن ایمی تک کامیانی ٹین عوقی ہے۔ موشین کایک چھوٹے سے گردو میں بی تفرق جوایک

Scanned by TapScanner

1½r

فات

آب نے ١٩٩١ میں زنجار میں رطب فرمائی

نوب

ان کے ورفاء نے ان کی وفات کے تقریباً ۳ سال احداصلات شیعہ اور الواحظ کی پکھ جلدی اور اردو کی پکھ کا ایس مجھے بدیاً دیدیں۔ میری اس کتاب کی تر تیب ش الن پر چوں اور خصوصاً اصلاح سے کافی مدولی ہے۔

(اللاق كيرفي وهاري والي مطويات)

## غلام رضاءم ذاحكيم

ages letters

البيت البيت الموس في ال وبافول كى ايك الابري النفاكر كى بيل ال كال وفات كوت التفاكر فى بيل الدين المواهلة ( المسنو) التفريد وبيزاد كالين المحكوم المواهلة ( المسنو) الديم الموري الموري

12.Z

فات

آب لے 1971ء میں زنجار میں رطات قربائی

نوب

ان کے ورٹا و نے ان کی وفات کے تقریباً ۳ سال بعد اصلاح، شیعد اور الوا عظ کی پکھ جلدیں اور اردو کی پکھی کی آئیں مجھے بدیات ہے ہیں۔ میری اس کیا ب کی ترتیب میں ان پرچوں اور قصوصا اصلاح سے کافی مدد کی ہے۔

(الحاج) كيوطي وهواري والآني معلومات

غلام دضا ، مرزاحکیم

1905/2690

علیم مولانا مرزا نقام رضا صاحب نے پوری تعلیم سلطان المداری میں حاصل کی اور صدرالا فاضل کی سند فی۔ پہلے ایک صدرالا فاضل کی سند فی۔ پہلے ایک الفیار کی سند فی۔ پہلے ایک الفیار میں فاری کے درس مقررہوئے۔ پھر مدرسالھائیہ (بناری) میں مدرس الحل کے قائم مقام ہوئے۔ اس کے بعد لا ہور کے مدرسہ ناشراهلوم میں صدر مدرس کی حقیت سے خد مات انجام دیے۔ آخر میں سلطان المداری تکھنو میں مدرس ورجہ مقررہوئے اور عمر کے آخری ۲۳- ۲۳ سال قیارت مدرس درجہ مقررہوئے اور عمر کے آخری ۲۳- ۲۳ سال قیارت مدرسین روگر گذارے اور وہیں 10 سال کی عمر میں خویل طالت کے بعد ۲۳، جولائی ۲۵ اور وہی دن میں رادی ملک عدم ہوئے۔

# لمام عسكرى بسيد

1936 6 1936 - 2 1936 6 1930

مولانا سيد قلام مسكري صاحب مرحوم سيد فرقتي صاحب بجور ضلع تكسنو كم صاحبر ادر عظم آب ١٩٢٨ ه ي شهردات بريل عن بيدا دوع ر

ابتدائی تعلیم حاصل کرنے کے بعد والدین کو تمنا ہوئی کہ بچے ہے خدمت وین کی جائے اس بنا پر جامعہ ہاتھ پر کھنویں واخلہ ہوا جہاں ہے ممتاز الا فاضل کی سند حاصل کی، ساتھ دی ساتھ نظی، مولوی، عالم، فاضل، فاضل طب مفاضل فتہ وغیر و کے اسنادے بھی مزین ہوئے۔

ناظمیہ سے فارخ ہونے کے بعد مدرسة الواعظین میں داخلہ لیا اور علامہ سید عدیل اجر عماصب طاب شاہ ہے کاحقہ فیض حاصل کرتے ہوئے خود کو خدمت ملت جعفر یہ کیلے ممل طورے آبادہ کرلیا۔ حدرسة الواعظین سے ۱۸ سال تک دالسة رہ ۔ اور بحثیت واحظ و بحثیت آخرین سکر بیڑی ال تحلیق ادارے کی کامیاب خدعی انجام دیں۔ ادارہ مدرسة الواعظین سے آئیں گر الگا ہ قاموالا تا چند سال سے ادارہ کو سالا شاکل بیزاررہ پیوم صن فرمار ہے ہے۔ انگا ادادہ قاک ان پر بیج قاموالا تا چند سال سے ادارہ کو سالا شاکل بیزاررہ پیوم صن فرمار ہے ہے۔ انگا ادادہ قاک ان پر بیج ادارہ کا صرف ہوا قال سے بالا شاط اداکریں طرز بیان میں تا جمرائی فی کہ بہت جار مقبول ترین فاکرین کے جبلی سلط میں قرید، قریب جائے ہے آئیں اسکا اندازہ دواکر قوم میں طم کی بہت کی ہے لیا دام میں تا تا میں تا تا دوارہ کی جائے ہے۔ امال میں قابل ذکر ترقی کی ۔ بیان کا دہ شون کا دیا مہ سے جس کا قوم کو تبد دل سے اعتراف ہے۔ امال میں قابل دکر ترقی کی ۔ بیان کا دہ شون کی تا ہم کے قبار کا اجراف ہے۔ امال میں قابل میں جائے انہ انہ انہ انہ انہ انہ انہ ہم کے قبار کا اجراف ہوں کے بیاب سے ایک اخبار کا اجراء ہوں کا در درسائل منظر عام ہوئے گا ہوں گا ہوں دی اور ادارہ کی جائے ۔ ایک اخبار کا اجراء ہوں کا درسائل منظر عام ہوئے گا۔

بوقت انقال ۱۹ سال کی مربوئے سائداز و بوتا ہے کہ مولاتا کی ولادت مدود ۱۹۰۷ء می بولی بوگ

(1845 25 (11/1)

# غلام صاوق سيد كجھو كى

العلو وهداء

اساطین طاروز بادی سے تھے آپ کی وادت الداشوال ۱۲۹۱ در ۲۳ راگت ۱۸۵۰ م) کوبولی۔

آب سيدسن بإخدا (ديكية احوال) كريقاذاد بهائي اورشاكرد عيد ابتدائي تعليم مجدو من عاصل

كر كالمعنور يف الم كاور ميور مجتدين عدت دراز كل كرب فيل كرت دب-

تکھنوے واپس آگر کچو ونوں آرو (بہار) ش امام جعد و بھاعت رہے ۱۳۱۷ ہے۔ مستقل طورے کچھ وش اقامت اختیار فرمائی اور وطن ہی ش و بی خدمات انجام ویتے رہے۔ تج و زیارات ہے بھی مشرف ہوئے۔ ۱۳۵۲ ہ ش ۸۷ سال کی عمر ش آپ کو ایپنے صاحب فضل و کمال فرزیم مولانا علی مسین صاحب (ویکھیے احوال) کا واق افواع پڑا۔ اس کے ایک سال بعد آپ نے ۵۸ سال کی تعریض ساحب (ویکھیے احوال) کا واق افواع پڑا۔ اس کے ایک سال بعد آپ نے ۵۸ سال کی تعریض ساحب (دیکھیے احوال) کا واق افواع پڑا۔ اس کے ایک سال بعد آپ نے ۵۸

تصانف

عالى فشروافوا كدافعليم وفيرو

(امنان بلانير ٨٥٥ تارولير ٨٠ روب ١٥٥١ م)

Scanned by TapScanner

# غلام على المعيل، حاجي (حاجي ناجي)

HAT HEAD

ACT IN

مائی قلام ملی المعیل جن کوفوج شیعدا تا معری و نیامن قوم کہتی ہاور مائی ہائی گے نام علی المعیل جن کوفوج شیعدا تا معری و نیامن کی بیدا ہوئے تھے۔اس وقت ان کے والد جاش جن شی معروف تھے بتال ہوائی ہیر تی ساتا والا کی تبلغ سے مائی اسامیل نے اپنے بینے تلام ملی کے ساتھ شیعدا تا محری نہ بہتی لیاس وقت تک میں مرف ساا قراد شیعد ہوئے تھے اور شیعیت کی جھاب ایک خوج کو آنا مائی اسامیلیوں کی نظر میں واجب القتل بعاد تی تھی۔

طابق ناتی نے فربی تعلیم طاقادر حسین مدرای مرحوم سے حاصل کی۔ جن کوان وقت کے مرجع شیخ زین العابدین ماز غدرائی نے خوجوں بس تبلیغ وجارت کے لئے بھیجا تھا۔ یہ ۱۸۵۲ مرجع شیخ زین العابدین ماز غدرائی نے خوجوں بس تبلیغ وجارت کے لئے بھیجا تھا۔ یہ ۱۸۵۳ کی بات ہے۔ اور ملا قادر حسین اس وقت تمیں سال کے تھے۔ ان کے حالات ملیحہ وبیان کے سے جی سابق غلام ملی ان کے انتہائی ملیح وفر مانیر وارشا گرد تھے جب ملا سا حب باہر العنا جا جے تھے تو المام ملی ان کے لئے جو تے سید ھے کرتے رہے تھے۔ ایک دن استاد نے وعادی۔ جیاا آتی تم میری جو تیاں الفارے ووایک وقت آتے گا کہ لوگ تباری کفش برداری کریں گے۔

ملا قاور مسین سے تعلیم حاصل کرنے کے بعد انہوں نے مولوی سید قلام مسین حید رآبادی (ویکھے احوال) سے عربی زبان کی کتابیں پر حنی شروع کیں۔ بومبوہ میں آگئے تھے۔ حاجی غلام علی کی تحریر اور آخر پر لوگوں کو اپنی طرف بھٹے لیچی تھی۔ ان کی مجلسوں کے ور اید بہترے آنا خافی خوب اور دومرے مسلمان صلتہ گوش تھٹے ہوگئے۔ اور بوشید ہو بچکے تھے ان میں حقیقی جذبہ دیداری بیدا ہوگیا۔ جناب میر آنا صاحب طاب شراو ( تکھنڈ) نے ان کو افر الذاکرین "

قيام تقيم الكاحب

۱۹۹۸ کا دومبارک سال تھا جب مولانا نے ادارہ تھیم الکاتب کی بنیاد رکھدی۔ قوم کواں جاب سوچ کیا اور مرحوم کے انتقال کے وقت پورے ملک میں ۱۵ ان کمت عالم وجود میں آپتی ہے اور ویلی تھیم وینے میں سالم وجود میں آپتی ہے اور ویلی تھیم وینے میں سرگرم ہے۔ مدر مین مکاتب کی ترویت کا انتقام کیا افسران معا کہ وہرائ استخاص اینے بہاں استخاص انتیاج وں کی آخر رک گی۔ ایسا تقام تھیم مرتب کیا کہ آسانی ہے ہوتر یہ کوگ اسپنے بہاں ویلی کتب قائم کر تھیں۔ بیزون ہند بھی ادارہ تھیم الکاتب کی شاخیں قائم کیں۔ بیرون ہند بھی ادارہ تھیم الکاتب کی شاخیں قائم کیا۔ بیرون ہند بھی ادارہ تھیم الکاتب کی شاخیں قائم شاخی ہوئے ہوئے میں دھیات کا کمل نصاب تیاد کرتے ہوئے شائع کیا تا کہ برزبان پولے والے کواس کی مادری زبان میں دھیات کا کمل نصاب تیاد کرتے ہوئے میں جامعہ المامی تھیم الکاتب قائم کیا۔ تا کہ اس ادارہ کے قت دین کی دافقیت ہوئی رہے۔ ۱۹۸۳ء

ش كول شيعه والتوريا شهاد تن وت والسين، بال

قات

(الواحدُوظيب القم نبريون ١٩٨٥)

کافروں گی زبان بھی کیوں لکھاجا رہاہے۔ ویگر اقصا نیف

عاتی ناتی نے وعاوں ، مجلسوں ، مرضع ن ، اور مواملا کی بہت می آتا ہیں تصنیف کیں ، اور چھوا کی بہت می آتا ہیں تصنیف کیں اور چھوا کیں۔ خوجہ شیعدا شامشری قوم کی اکثریت عربی رہم الخط ہے آشنا تھیں جے اسکے باوجود ، بورپ سے الکیرام ریکے دکتا ہے ۔ اور سے لیکر امر یک کے گئے کا گا اور آشر یکیا تک جہاں جہاں خوجہ میں باحوم سے قرآت کے ساتھو وعا کی اور قبل بجالاتے ہیں۔ اور یہ طاقی ناتی کی کتابوں کا اثر ہے۔

ان کے تفنیفات کی تعداد کا سی انداز و مشکل ہے ۱۹۳۳ ش الجمن جمایت الاسلام بھی نے "راونجات" "کولڈن جیلی منائی تھی اور اس کے لئے بہت عالیشان تقریبات منائی تھی اس وقت جو سوسٹر المجمن کی طرف سے شائع ہوا تھا اس کے مطابق صاحب کے تعذیفات کی تعداد ۱۸۳ تھی "راونجات" کی پچاس جلدیں انورائیان کی ۲۰ جلدیں اور باغ ہدایت کی ۱۳ جلدیں اس کے ملاوو تھیں۔

۱۹ انومبر ۱۹۳۴ء (۱۳۵۱ء) کو احمد آبادیش آپ کا مکان، راه نجات کا آفس،مطبوعه گنابون کااشاک اور غیرمطبوعه مقالات اور کما بین نذ راتش بوکشی به

حاجی ناجی اوران کی فیلی تو خریت ہے باہر کل آئی کین حاجی معاجب کو بھی گرتھی کہ کئی طرح میری کئی جی اور پیتم خانے کے حسابات کی کتاب (جس میں قیموں کی امات ورج تھی) فا جائے۔ جس کا سارا ملمی اور دنیاوی سرمایہ جل کر راکھ ہو چکا ہو۔ اس کی عالی بھتی ای سے نظاہر ہوتی ہے کہ شکس سے شکایت کی شاکے آنسو بہایا۔ بلکہ سے سرے دو مرا پر ایس قائم کیا اور " راونجات" کی اشاعت جسب معمول جاری دی۔ کا خطاب دیا تھا۔ ۱۱ ۱۳ اوش ماتی صاحب زیادات متبات مالیات کے لئے حراق کے اور ما شورہ کے بعد آیت اللہ شخطی کو مسین (پر شخطی زین العابدین ماز ندرانی مرحوم) سے ملئے گئے تو انہوں نے فرمایا۔ آپ زیادتوں کے لئے بار بار کیوں آتے ہیں۔ جب کدآپ کا تبلیلی مشن زیادتوں سے زیادہ ایمیت دکھتا ہے۔

ھاتی تلام ملی کی رہبرانہ صلاحیتوں کو ہالموم سب نے تشکیم کرلیا۔ لوگ قدیمی سمایی اورتعلیم محتیوں کو سلھائے کے لئے اگل طرف رجون کرتے تھے اور دولوگوں کی حد ایت کی فوض ہے انتہائی کوردہ حلاقوں شرایجی جا کرحد ایت کی روشی پھیلاتے تھے۔

حاتی تاتی پہلے چھوے کی تجارت کرتے تھے پھر کم ذیا تھدہ وہ اسالہ کو انہوں نے اپنامایات رسالہ" راونجات" شروع کیا۔ ۱۳ اسالہ شی انہوں نے احد آباد شن ایک پر شاک پر این فریدا۔ جہکا نام ان محتری پر شاک پر بسی رکھا۔ اس پر ایس کی وجہ سے انہوں نے جماؤ تھر چھوڈ کراحم آباد آباد کیا۔ اور گھراتی رسم الخط شی دھاؤں ، ذیار تو ان اور سال کے اعمال کے طاور وقر آن مجید کی اشاعت کی فوض سے عربی کے تروف۔ ن بٹ بٹ ، فروس میں ، طروع اس نے بھی ان کے اور اسلوا کے۔ پر شاک تھداد میں انتظام ال کرئے تروف وضع کے اور اسلوا کے۔

نغيرقرآن

ا گُلَّقْيْرِقْرْ آن اب بهت كمياب هے دراقم الحروف نے زنجبار میں انکی جلدیں و يمنی قيمی ہے۔ بيزی آھنٹنا پرقر آنی آبات کو گھرائی رسم الخط میں جی آلکھا گیا ہے تا کہ ہو لی در جانے والے علاوت کا قواب حاصل کرئیس نے قرز جراور پر فِقْتر آئیر ،

ال تغير كابدى شديد فالفت كالن رب المم اوج فالفت يقى كدالله كالم

#### کافروں کی زبان میں کیوں لکھاجارہاہے۔ ویگر تصانیف

عاجی ناجی نے دعاؤں، مجلسوں، مرضوں، اور مواعظ کی بہت کی آبا بیں آلفنیف کیں اور چھوا کیں۔ خوجہ شیعہ اثنا عشری قوم کی اکثریت عربی رسم الخط سے آشافییں ھے اسکے باوجود، پورپ سے کیر امریکہ تک، افریقہ کی چھوٹی بڑی تمام جماعتوں میں اور حندو پاک سے لیکر ہا گگ کا گگ اور آسٹر یکیا تک جہاں جہاں خوجے میں بالعوم سے قرآت کے ساتھ دعا کیں اور عمل بجالاتے ہیں۔ اور یہ جاتی کی کتابوں کا اثر ہے۔

ان کے تصنیفات کی تعداد کا سیح انداز و مشکل ہے ۱۹۴۲ میں انجمن حمایت الاسلام بمبئی نے '' راہ نجات'' گولڈن جبلی منائی تھی اور اس کے لئے بہت عالیشان تقریبات منائی گئی تھی اس وقت جو سویٹر انجمن کی طرف ہے شائع ہوا تھا اس کے مطابق حاجی صاحب کے تصنیفات کی تعداد ۱۸۳ تھی '' راہ نجات'' کی پیچاس جلدیں، نورائیان کی ۲۷ جلدیں اور باغ ہدایت کی ۱۳ اجلدیں اس کے علاوہ تھیں۔

۱۹ نومبر ۱۹۳۲ء (۱۳۵۱ھ) کو احمد آباد میں آپ کا مکان، راہ نجات کا آفس،مطبوعہ ستابوں کا اشاک اورغیرمطبوعہ مقالات اور کتابیں نذر آتش ہوگئیں۔

حاجی ناجی اوران کی فیملی تو خیریت ہے باہر نکل آئی لیکن حاجی صاحب کو یہی فکر تھی کہ کئی کا طرح میری کتا ہیں اور میتیم خانے کے حسابات کی کتاب (جس میں بتیموں کی امانت درج تھی) فالح جائے۔جس کا ساراعلمی اور دنیاوی سرماییہ جل کررا کھ ہو چکا ہو۔اس کی عالی ہمتی اس خاہر ہوتی ہے کہ خدکسی سے شکایت کی خدا کی آنسو بہایا۔ بلکہ متے سرے سے دوسرا پریس قائم کیا اور '' راونجات'' کی اشاعت حسب معمول جاری رہی۔

<del>Variation de la constantion d</del>

کا خطاب دیا تھا۔ ۱۱ ۱۳ اویس حاجی صاحب زیارات متبات عالیات کے لئے عراق گئے اور عاشورہ کے بعد آیۃ اللہ شخ محرحسین (پسر شخ زین العابدین مازندرانی مرحوم) سے ملئے گئے تو انہوں نے فرمایا۔ آپ زیارتوں کے لئے بار بار کیوں آتے ہیں۔ جب کہ آپ کا تبلیغی مثن زیارتوں سے زیادہ اللہ سے کھتا ہے۔

حاتی غلام علی کی رہبرانہ صلاحیتوں کو ہالعوم سب نے تشکیم کرلیا۔لوگ نہ ہبی ساجی اور تعلیمی سختیوں کوسلجھانے کے لئے انکی طرف رجوع کرتے تنے اور وولوگوں کی حد ایت کی غرض سے انتہائی کوردہ علاقوں میں مجمی جا کرحد ایت کی روثنی پھیلاتے تنے۔

حابی ناتی پہلے چھڑے کی تجارت کرتے تھے پھر کم ذیققدہ ۱۳۱۰ ھوانہوں نے اپناماہانہ
رسالہ '' راہ تجات' 'شروع کیا۔ ۱۳ سا ھیں انہوں نے احمد آباد میں ایک پر بننگ پر لیس خریدا۔ جہکا
نام اثنا عشری پر مننگ پر لیس رکھا۔ اس پر لیس کی وجہ سے انہوں نے بھاؤ گرچھوڑ کراحمہ آباد آباد کیا۔ اور
گجراتی رسم الخط میں دعاؤں ، زیارتوں اور سال کے اعمال کے علاوہ قر آن مجید کی اشاعت کی غرض
سے عربی کے حروف ہے ۔ ج ، خ ، ث ، ن ، ن ، میں ، ط ، ظ ، غ ، ف ، ق کیلئے گجراتی رسم الخط کے حروف
برختف تعداد میں نقطے ڈال کرنے حروف وضع کے اور ڈھلوائے۔

تفيرقر آن

انگی تغییر قرآن اب بہت کمیاب ہے۔ راقم الحروف نے زنجبار میں اسکی جلدیں دیکھی تغییں۔ بری تعظیع پر قرآنی آیات کو گجراتی رہم الخط میں بھی لکھا گیا ہے تا کہ عربی نہ جانے والے تلاوت کا قواب حاصل کرسکیں۔ پھر ترجمہ اور پھر مختفر تغییر،

ال آفسير كى بدى شديد خالفت كى كنى -سب ي "اهم" وجد خالفت يقى كدالله ك كلام كو

Joog gaggaga

# غلام محمرتق خان

عالماه عالماء

الحاج مولانا فلام محرقتی خان این مولانا فلام محد مبدی خان صاحب مرحوم مدرای سے ایک فی علم گھرانے کے سر براو تھے۔ آپ تمل ناؤو کے چیف شیعہ قاضی تھے اور آستانہ کا وافعنس انعیاس علیدالسلام کے خاوم جینی شرست کے صدر اور مرکز فیض الاسلام کے بانی تھے۔

آپ کی وفات ۱۵رجنوری <u>۱۹۹۶</u> ه (۲ ررمضان ۱<u>۳۱۶ ج</u>) کو بوئی، آستانهٔ ابوافطش العباس علیدالسلام میں فن جوئے۔

﴿ إصلالَ عِلدُفِيرِ \* 9 جَارِيْ أَمِيرِ \* الدِينَقِيدِ وَيُوا مِنْ الدَّيْنِ عِلْوَا إِلَا مِنْ عَلَيْكِ ا

# غلام مصطفى ،سيد گوپال پورى

11375 GIFAS

آپ کی ولاوت آپائی وطن گوپال پور پس دوئی سند ولادت معلوم ند دوسکا آپ کے والد زراعت پیشر بھے۔ آپ نے تکھنٹو کے درس افلائی کی جیسل کی۔ فریت کی وجہ ہے جمحی وری کتا ہیں نہ طرید سکتے۔ ورجہ پس خاصوش جینے رہتے تھے۔ ایک روز استاد نے طنو آپوچھا کہ'' مولوی غلام مصطفے صاحب آ آپ بچو بچھتے بھی ہیں؟'' اس کے جواب میں آپ نے اس دن کے درس کو استے عمدہ طریقے سے بیان کیا کہ استاد کی تشریع بھی اس کے سامنے پھیکی پڑگئی۔ تب اساتھ واور ساتھیوں کو ان

} }aaaaaaaaaaaaaaa قد کورہ بالا" راہ نجات گولڈن جو بلی" کے وقت حارقی صاحب کی عمر ۲۸ سال ہو پکی تھی۔ تقریبات کے فور آباحد ان پرزیروست ہارت افیک ہوا اور گیارہ دن کے بعد و واس دنیا ہے رخصت

آپ نے اردو میں بھی پکورسا نے اور مضامان لکھے اور پھپوائے تھے ایک رسالہ'' صراط مستقیم "مفقی سید تھر عباس کے ایک فاری رسالہ کا ترجمہ تھا جو میرے کتب خانہ میں موجود ہے۔ ان کے انقال کے بعد ان کے صاحبز اوے کاظم علی کو ثری مرحوم نے رسالہ راونجات کو جاری دکھا اور ان کے انتقال کے بعد اب ان کے صاحبز اوے اے چاارے بیں تعتیم ہند کے بعد بیرخاندان یا کستان آگر کرا جی بیں تھیم ہوگیا اور اب بررسالہ (جود نیا میں

شيعة مكافد يم رين ما ماميد ) وين عارى ب

( وَالَّى معلومات رسال شيعه رسال المامتري ، راونجات معدى تبرر )

غلام على شاه

STO OFFE

20000000000

مولانا فلام على شاد خلف مولوق حافظ بهادر على شادم حوم كانتقال كى خير رسال أصلاح باد رجب عن سال ه يس چين تقي -

آپ زیردست ذاکر اور مناظر ہے۔ مناظر و کے لئے دوردورتک بلائے جاتے ہے۔ ۲۳ سامے میں طلع چوہیں پرگنا (بنگال) میں جو مناظرہ سنوں سے ہوئے والا تھا اس میں شیعوں کے خاص الماکندے آپ ہی قراردے گئے تھے۔

TAI

میں پڑھارے تھے۔ اور او اور اور اور اور اور اور کی مدرس دو کی تھے۔ مدرس طیمانیہ میں آئے سے تقر باسات آخرسال پہلے دوسری جگہ (لیتن بنادی میں) درس دیتے تھے۔

مدر سلیمانیے کے قریب مکان تھا جس میں ایک دی پائیں اپنے ساجزاد کے بھی ساحب کنام پر" مجتبائی پرلیں"کے نام سے قائم کیا تھا۔ جس سے اس دور میں بہت ہی دینی کنا ہیں شاکع مولی تھیں۔

وفات

منى ١٩٢٧ وي داى اجل كوليك كبا-

(الجمن وظيف مادات وموتين كولذن جو في أميرسة الى معلومات)

# غلام مهدى نجفى

1912 12 CO

چیة الاسلام مولانا خلام مبدی شینی این حاجی نبال خال لغاری، ۱۵ رشعبان و ۱۳۳۰ ای ۱۳۳ ای ۱۳۳ ای ۱۳۳ ای ۱

كي ملاحيت كالداز و يوار

آپ ئے طازمت کا آغاز بنادی ہے کیا اور وہیں کرنی شاوی کی۔ خدائے ووریٹیاں عطا کیس روومری شاوی پیندیش کی جس ہے دولز کیاں اور تین از کے ہوئے۔

ائے استاد مولانا حافظ فرمان علی صاحب اللی الله مقامہ کی تحریک پرآپ پیشا آئے۔ اور مدرسطیمائیدیں مدرس مقرر ہوئے۔ پھر ترقی کر کے ای مدرسہ کے پہلی ہوئے۔ راقم الحروف نے ۱۳۱۰ء ۱۹۹۳ء میں فوقائید کے درجیش آپ سے فسفہ پڑھا تھا۔ آپ معقولات کے ماہر سمجھ جاتے۔

آپ نے بھورٹوں تک طب کی تعلیم ہی حاصل کی تھی جو پوری نہ ہو تگی۔ پھر ہمی نہامٹی کا بید عالم تھا کہ تھر مالیمز کے بغیر جسمانی تر ارت بٹاویتے تھے۔

السلال هندوديس پيشابلد بهاري کسي وجب بدول او سك تھے۔ چنانچ اصلاح جلد نبر ۱۷ شارونبر ۱۶ رفع الآنی اسلامی انہوں نے "مفرورت معلم عربی وفاری" کے عنوان سے ایک اشتیار تھیوایا تھا جو بیال من وعن نقل کیاجا تا ہے۔

" تقریباد خارد انیس سال سے علوم تو بیدی ما تا دوں گیارہ سال سے تقریبا مدرسہ سلیمائید پنتہ شن دول اور بہ طلب اساد حاضر کرسکتا ہوں۔ گرچونکہ بھساٹ واتی و بھتھ بیات خصوصی میر سے گئے تیام پنتہ بلکہ بہاری کا قرک لازم ہے اس کے توش ہے کہ باد کا فاقا قات مشاہرہ جن صاحب کو عربی وفاری معلم کی شرورت ہوشل فریا تیں۔ بہارے جہاں تک وور دوگا میر سے کے جائے اس ومحقوظ موکا۔ خصوصا مدراس، بہمی، وجاب کے تی گوشے میں زیادہ عافیت سے گی۔ الشتم نہ تلام مصطفے مدرس دو محمد سرسلیمائیہ، بینن (بہار)"

ال اشتبار عملوم بوا كدمولانا غام مصطفى صاحب تقريبا ١٣١٥ ه عدر سليمانيا

لعیب ہوتی تقی راب آئی وسعت نیم کرآپ کی زیارت کے لئے عاضر ہوسکوں۔ ای حالت میں سات برس گذر گئے۔ ایک روز دو پہر کے وقت اپنے کئب خانہ میں مشخول مطالعہ تھا کہ وتی الباب ہوا۔ درواز و کھوال تو ویکھا کہ دو گھوڑے سوار نقاب پائی گھڑے ہیں۔ سلام کے ابتدا ندرآ گئے۔ میں نے بوچھا: آپ کون جیں؟ تو (ایک بزرگ نے) نقاب بنا کر جواب دیا بھر روز ہمیں بگارتے ہو پھر بے جو بھا: آپ کون جیں۔ لو تی بھر کرزیارت کرلو۔

آپ نے ١٢ جمادى الدول عوم اور = ٥ جورى رع ١٩٨٠ ) كوالى دارقائى عد طات كىد

#### فخرالدين ،سيد

مولانا سيد فخرالدين صاحب چندن پئي (بهار) كرين والے اور مولانا سيد فرمان على صاحب كے بچازاد بھائي اور براور ثبتی تھے۔ رسالہ اصلاح (حرم علاق اله ) بش سكر ينري مدرسہ مشارع الشرائع ناظميد ( تكونو ) كي ايك تحرير ميں ( نواب سيد نسير حسين خال خيال عظيم آبادی، عقيم كلكة ، كرموال كے جواب ميں ) قيام مدرسہ هو علاھ ہے الاسلام عظرات كنام شائع ہوئے ہيں جن ميں پيبلانام مولوی سيد فحرالدين صاحب، وهما دمظفر پور " كا

مظفر پور ک ایک پیفات سے بدہ چاتا ہے کہ آپ درسہ ناظمیہ کے پہلے متناز الاقاهل علی اورائے درج من تباتھے۔

راقم الحروف جب بینندیش تھا ( یعنی ( ۱۹۳۲ء سے ۱۹۳۱ء تک ) اس وقت مولانا موسوف گذری ( بینند ) کی محد بین امام بتماعت تھے۔اور خالباً آخر تر تک و بین رہے۔ تايد درنددما

(۱) قررافلم كاتر بهداورتغير (سترمی) (۲) في ابلاف كه يكوهون كاسندهی تر برد.
مولانا فلام مهد قرادندا ك قررت تقر قراده پريزگاری كامجمد شد. جب آپ اظميه ش شقر آپ كاستاه حافظ كفايت شيمن صاحب مرحوم فر ايا: اگر ندام مهدی فماز پره حات تو می ای فرافتد اگرون كار گرای شرمواد ناهم مصطفى جو براور آقات شريعت طاب شراها آپ لا سلمان تمان از كشف شد.

آپ ایک صاحب کرامت دبانی مالم شے۔آپ کٹ اگر دموانا سید طوید الرضا ما اب تقل کرتے ہیں کہ موانا نے فرمایا: تجف الرف ہے واپس کے بعد اکثر اوقات گرید کی صالت میں اجرالموضی علید السلام کو خطاب کرکے وض کرتا تھا۔ موانا جب نجف میں تھا تو روز آپ کی زیارت

# فرحت حين ،سيد عظيم آبادي

14.0 / FTF

421/1741

المن مرسوم المراح من المرسوم المراح من المواليات المحاليات المراح المرا

قداحسین اسید رسال اصلان (عرم ۱۳۳۶ه) ش شائع شده جس قریکا ذکرمولا تا سید فرالدین صاحب کسالات ش آیا به ای قریش دومراه م" مولوی سیدفداحین صاحب مدر ک درسرمظفر پود" کا ب-

فداحين سيد ، حاذق الملك

استان المام المام المام

رسال سيد ( مجموا) ماه كل المالية ش بيلها ب:

"مولوى تقييم سيد فدا حين صاحب قبل: آپ اكثر علوم وفون ش كال تصدفل فدوسط ق ش آپ كاش ندقد شاه او دو ك معالج خاص ره چك تصد" احتاد الدوله خان بها در حاذق الملك" كاهوزاد مؤاب شاه حطابوا قعاد رياست مالير كوظه او درياست رام پورش محى ره چك تصد " آپ في المؤيقعد و ١٦ " إحدار الرفوم راوا م) بروزس شنه به مقام تلعيد و طن مالوف انتقال فرمايا - ، ،

ال دمال عن آب كفر وعرهاى موادى ميد فد صاحب كانام مالا ب

#### فرحت حسين ،سيد ، بناري

HELPER.

مولانا میرفردت حسین صاحب بناری ماری او وارد ( دی الحجه ۱ استانی) شره طع جونیدر ش پیدا ہوئے آپ کے مورث افلی حافظ امان اللہ صاحب بناری اور نگ زیب کے استاد تھے۔ آپ کے دادا جناب محرطی صاحب بہت ہی باعمل عالم تھے جنیوں نے کافنی کے قلمت کدو میں فنع جاہت روشن کی۔

آپ نے مولی تعلیم مولانا تھر رضاصا حب مردوم سے حاصل کی مداور ویک مولا اور معلیا و سی مولا قاصل الدآ باد پورڈ سے باس کیا۔ اوب اور فقد کی اطح تعلیم مولانا سید شیر حسین صاحب (پرکیل وفیقة كالئی فیض آباد) سے حاصل کی مربی استاد سے ساتھ ساتھ ایم۔ اے اور ایم فیل بھی کیا۔

اموان میں کوئش کا بنی (بناری) میں اپنے دادا مولوی محرطی صاحب کی جگد پرآپ کا تقرر موان 1914ء میں علیکڈ ھ جادل ہو گیا۔ مسلم یو نیورٹی علیکڈ ھ کے دین محاطات میں آپ نے کافی عدد پہنچائی۔ بعدہ گورنمنٹ ہائی اسکول (غازی یور) میں ہیڈ مولوی ہوئے۔

جدیدطرز پرذاکری فرماتے تھے اوراس کا رخیر کو اپنیر کمی معاوضہ کے انجام دیتے تھے۔ ایک عرصہ تک فائح اور دما فی کمزوری میں جھار وکر ۲۹ داگست اے 19 دہشب جعد عمل عالم بعا کی طرف رطات کر گئے۔ (۴ در جب افراع ایچ)

( ألجن وكيف المات ومؤلق كالذي يوفي فير ما أواجل و المروب الروب المروب المروب المروب المروب المروب

معاطات اور افریقت کے عام ماحل کو بھے انھی طرح مجدادیا۔ ایک انہم طبعت بیتی کد" لوگوں ک دوکا قوں پرمت بیاے گا" میں دین کی ہو نہا تو اس طبعت کے مطابق گئی آنے جانے ہے پر ہور کرنا قداد لوگوں نے شکایتی شروع کی کد" آپ کے پہلے بو مولوی صاحب تھے وہ تو روزان ممارے بیاں آیا کرتے تھے ۔ آپ کیوں ٹیس آتے ""میں نے مواد کا فرحت میں صاحب کو تعالی کھر صورت حال بنائی تو مولانا نے تو یوفر بایا" جب گوش شینی کوفرور و تھی پر محمول کیا جار ہائے تی بہتر ہے کہ بھی

مولانا (1911ء شل فی بیت اللہ سے مشرف ہوئے اور 1911ء میں وطن والیک آگئے۔ عراق میں شید مجد (گیا) میں امام الجمعہ والجماعت مقرر ہوئے اور آخر مرتک وہاں سے وابست رہے۔ آخر میں زبان کا کینم موت کا بلا والا بت ہوا اور آپ نے 11 رشعبان (19 مالے در سے اکتوبر اے 11 مرد زیج شنبائ وارقانی سے کوئی کیا۔

موادنا عربی، فاری اور اردو کے بہترین شاعر ہے۔ ان زیالوں عی آپ کے قصائد لوسے اور فود کی موجود ہیں۔

( واتى معلومات مدّ كروشيد علاء وافاصل بسيدامات حسين )

PAP

The Control of the State of the

الکی پرٹیل کا مید و قبول کرلیا۔ اور انہوں نے مدر سرگوال درجہ ترقی دی کہ جب مدر سرکا چوتھا سالان میں اگر پر کمشوم میان خصوص ہے تو صاحب بہادر نے آپ کی جو تو بینے کی اور کہا کہ میں نے اور کہا کہ میں نے جو بینے سرکاری احداد کے کال رہی ہے۔ آپ کے حالم اور نے ایک محد و میں میں بروفیس و انجاز حسین جھٹری۔ بی ۔ انگار کا در النذن) صدر صوبہ مور بی ، و صاکا اور مولوی سید محد صاحب ایڈ و کیٹ ، جہند واڑ و مطفر بورک تام بائی لمایاں جی ۔

سادگی و خاکساری دوران عمافد فرمان علی صاحب نیایت ساده و زندگی بسر کرتے ہے۔

قریب پروری، خاکساری اور اقرباہ فوازی کے ساتھ ساتھ محت کی مظمت کے وال ہے قاکس تھے۔

مظفر پورکی پر پیش کے ذمائے میں بھی اپنا کام خود کرتے تھے۔ فریب رشتہ دارون اور طالب علمون کے ساتھ بہت کا موں میں ہاتھ بناتے تھے۔ اس وقت مظفر پوراور

کے ساتھ بہت کا فلف رمین پر چنے جاتے اور اسکے کاموں میں ہاتھ بناتے تھے۔ اس وقت مظفر پوراور

در بھنگ کے درمیان ریل میں تھی اور موانا تا سر کلومیٹر کا وہ سفر سائیک ہے کرتے تھے۔ یہاں علاقہ کی

میں کرتے تھے۔ اسکے باوجود مودواری اور فرات انس کو بھی ہاتھ ہے جائے ندریا۔ جیسا کے متدرجہ

فیل کرتے تھے۔ اسکے باوجود مودواری اور فرات انس کو بھی ہاتھ ہے جائے نددیا۔ جیسا کے متدرجہ

قریل واقعہے معلوم ہوگا۔

ایک بار مولانا کی اکلوتی بیٹی کی بیاری کی خبر آئی۔ آپ نے در بینظر جائے گئے گئے چھٹی کی دوخواست کی پیشت پر اپنا استعلی لکوئر بعض کی دوخواست کی پیشت پر اپنا استعلی لکوئر بعض دیا اور کھر پہلے آئے۔ یہ خبر غذی اور ساتی ملتوں میں ڈیٹیل تو پور سے بھیم آباد میں تبلک کی گیا۔ لوگ ان کورا بنی کرنے گئے گئے تھون کی تک آئے گئی آئے گئی آئے گئی آئے گئی آئے گئی آئے گئی کا رہ کھی کا کوار ا

مظفر إدرا تك بعدآب في مظفر إدا يس طبابت شروع كى عليم عادق كى حييت سان

فرمان على ، حافظ ،سيد

مولانا تحيم ما فعريد قربان في ماحب ان پندستيول بن يرس بن پرس دين بهاركو بها طور په تازې -آپ كوالد ما جد كان ميدامل في انن ميدامغر في قار جوموض پندن پئي شلع در بهظرك د بندوال فقد مولانا مرحوم كي وقات عركي ١٩١٩ وكومو كي جب الحي عمر جاليس ١٩٠٠ مال فتي اس احتباد الحي بيدائش ال ١٨٤ و كان دو دش قراد ياتى ي

عدرة المي للعنو ك تايس عادى الأولى المعتلا ما والمروري والما وكوبولي في

اور موانا عافر مان على كالمنتقى بيها زاد بعائى اور برادر شيق موانا عافر الدين استكسب سے پہلے متاز الله قاضى بوت الله بعد والله بين استكاب بير فر مان على موانا على الله الله بير في الله بير وي بير الله بير وي بير الله بير وي الله بير

بدومه سليمانيه بينند

ا المراقي الدول ٣٢٣ عدمة إلى ١٥٠٥ و واركو بندين شي جب مرسطيماني في بنيادر كل المراقية المراق

Scanned by TapScanner

#### تفنيفات وتاليفات

مدرمد سلیمانیہ کے نصاب کی ترجیب کے سلسلد عی آئے ادوود بینیات کی عود کتا عی تعصی جن عیں سے قبین طبع ہو کی اور آئ تک پرلیں والے اس کی ما تک کے مذکر آسے چھاہتے استے جیں ۔اس کے علاوہ " سمال اُنوا" اور" سمال الصرف" الكھی تھی جو بہت اُنوں تک مقبول رہی۔

اقل حدیث کے امور عالم مولوی ٹا دائد امرتسری الی یفر افل حدیث (امرتسر) ہے آیا اللہ اللہ عدیث (امرتسر) ہے آیا اللہ والدیث کی تغییر پرآپ ہے تجریری مناظر و ہوتا رہا جو افل حدیث اور اصلاح شد مولایا حافظ سید اصلاح نے ان مضابیان کا مجبورا الولی کے نام ہے شائع کیا ہے جی جس چیز نے مولانا حافظ سید فرمان فل کو زیدہ جا وہ وہ ان کا ترجمہ قرآن مجید ہے۔ چیزت ہوئی ہے کہ بہار کے ایک و بہات کی رہان فل کو زیدہ جو الے کی زبان جس الیک شخطی مطاست و معنی فیزی کہاں ہے آگی اور الیک کو ثر جس دحلی ہوئی نے زبان ان کو کہاں ہے ل گئی رکو جو بہت مولوں ہے استاوٹن نے پرکسا کر اسمبر اعقیدہ ہے کہ اگر کتاب الشدار دو زبان جس نازل ہوئی تو آپ کے ترجمہ جس اور اس جس ایک افرق تو تی ہوئی ہوئی تو آپ کے ترجمہ جس اور اس جس ایک افرق تو تی سے دور اس میں ایک افتال اہل میٹ کی محتجر موجو ہے کہ جس کی ہے۔ اور اس چیز نے آپ کے ترجمہ قرآن کو مولانا مقبول احمد صاحب مرجوم کے ترجمہ اور حواثی ہے متاز کرویا ہے۔

کراچی کے ماتی مس بلی، فی ایرائیم مرحوم بانی دمتولی پیر تجدایرائیم فرست نے اس ترجد کو چھوانا جا با تو مولانا سید جم ایسن کراروی مرحوم (پیٹاور) سے فریائش کی کدوہ ترجد دعواثی پر نظر عائی کریں۔ مولانا نے مقدمہ میں بیکھا ہے کہ نہوں نے ان تبدیلوں کومولانا تحد مصطلی جو تیرکود یکھالیا

ى ئىرىيى كىلى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىدى كىلىدى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىدى ئىلىد ئىلىدى ئىلىد

#### شاديال اوراولاد

آپ کی شادی آپ کے بھاسید طبیر الدین این سید اصغرطی کی صاحبر ادی کیوسیدہ سے ہوئی معلی ہوئی ہے۔ جو مولانا سید افزالدین کی بھن مجس کی اولادوں میں صرف ایک بھی لی با باترہ زیدہ رجس ۔ اولاوزید کی آفنامیں مولانا مرحوم نے محلہ کر و مطفر پور میں ایک بیو و مومد ہے بھی شادی کی آئی گران ہے بھی صرف ایک بھی بیدا ہوئی ہو کہ سی میں انتقال کرگی ۔ مولانا مرحوم کے انتقال کے بعد فی باتھ کی بیدا ہوئی ہو کہ سی میں انتقال کرگی ۔ مولانا مرحوم کے انتقال کے بعد فی باتھ کی کہ درس سیمانے میں مدری

4

0000000

راقم الحروف نے جب استاد مح موان کا مصطلی ہو ہرے اس کے بارے بیں پو چھا قا انہوں نے کیا کہ موان کی آمن صاحب نے چند ہی ہی ادھراُ دھرے پڑھ کر سا کی تھیں۔ بی نے بالاستیعاب ان کے ترمیمات کوئیں و یکھا ہے۔ ان مطبور کہ ہوں کے علاوہ "فدک" اور سوائح مری جناب" قاطر نے برا سکھی تمی ہو منائع ہوگئے۔

-16.

الله مظر بورش میندگی دیا آئی جس مین آند دن بینا رو کرموالانا فر بان علی نے المدرجب سیستاند در کروالانا فر بان علی نے المدرجب سیستاند در کروالانا کورطت فربائی - اور کینی باغ مظر بور کر بالامی فرن ہوئ مدر مورک کی مولی تاریخ وقات سال تھی۔ موالانا میر مسطنی جو بر نے محص فی آنستوی مردوم کی کی مولی تاریخ وقات سال تھی۔ گر نے کو کی کی توید اللی تاریخ ایک "الحد" کو ب مافظ قرآن محان

1974-F1=1919 F1

ووسرے معرب کے اعداد میں ہے" کوو" کے اعداد (۳۱) کا تخر چرکیا گیا ہے شخ عمد جان طروق فیض آبادی کا قصد تاریخ مولانا کی سیرت وتاریخ دفات پر روشنی وال ہے۔ اس کے نفش کیا جاتا ہے

واور بھا، اللہ گیا ونیا ہے وہ یکنا نے عمر جس کا اب عمکن قبین اس دور على الى کور کا کہن علم علم علیہ علی اللہ دور علی اللہ کی مرزعن پر جیئ گردوں تشین ماحظ واللہ عدف مادن آئل عبد کال علم کلام ومالم وین مشین مشی واحظ واللہ علی مادن آئل عبد کال علم کلام ومالم وین مشین مشی و محلان جان دارہ علی اللہ کان گردو موشین سے معلون جان وول سے دول سے

Proposer

Scanned by TapScanner

مندرجہذیل بیان ای کتاب سے لقل کیاجا تا ہے: -الحاج مولوی بھیم ، شیخ فقیر حسین مظیم سے مرز اور صاحب کے ان شاگردوں میں شامل ہیں ، جن برخوداستاد کی ذات بھی تاز کر سکتی ہے۔

وہ جمادی الآخر علی اللہ خر علی اللہ میں مجود بطلع ساران بہاری ہیں ہوا۔

ہوئے ، جہاں ان کی تا نہال تھی ، اصل رہنے والے صین سیخ طبع ساران کے بھان کے والد حکیم شیخ تفضل حین اپنے علاقے کے رہیں امقم اور طورب حاذق تھے موروثی جا کا اواور طبابت کے علاوہ نیل کی کوفیوں بھی تھیں اور اعلی بیانہ پر تبارتی کاروبار چاتا تھا۔ مظیم نیٹا شیخ محد اور اعلی بیانہ پر تبارتی کاروبار چاتا تھا۔ مظیم نیٹا شیخ محد اور اعلی میں اور اعلی بیانہ پر تباوی کا موران کا سلسلی نشب مطرت تھر بن ابی کمر بہتھی ہوتا ہے۔ ور بارحسین میں ان کے مورث اعلی کانام ابو بر برووری ہے لیکن ایک افراد خاندان سے معلوم ہوا کہ یہ بالگس تلاء ہے۔

مورث اعلی کانام ابو بر برووری ہے لیکن ایک افراد خاندان سے معلوم ہوا کہ یہ بالگس تلاء ہے۔

مورث اعلی کانام ابو بر برووری ہے لیکن ایک خیل کھنو میں کی اوجیں شعر وخن کاؤ وق بیدا ہوا تو مرزاد پر صاحب کے حلق میں شامل ہوگے۔

وظن والهن ہوئ تو مطب شروع کیا جوجلدی چک اٹھا، دور، دور ہے لوگ علاق کرانے آتے ہے 19 اٹھا، دور، دور ہے لوگ علاق کرانے آتے ہے 19 اٹھا، دور، دور ہے تو گا ہے ، تج کرانے آتے ہے 19 اٹھا ہی گے ، تج ہے دو اور دوم تبرکر بلائے معلیٰ بھی گے ، تج ہے دو اپھی پر بمبنی میں مطب شروع کیا جس میں بدی کامیانی ہوئی اُمراء و گھاراُن ہے ملائ کراتے تھے جس سے بزاروں کی آند ٹی تھی ،لیکن جب سنا کہ ان کا ایک فریب دشتہ دار بھار ہوکر حسین سیج آیا ہوا ہے قراروں کی آند ٹی اور جماجا یا مطب چھوڑ کر حسین گئے چلے گئے اور اس فریب کا علاج کیا۔

مظلم، عالم بأعمل من كؤكرُ التي جازُ ول من بحي تمازشب ناغريس بوتي عني مقاوت اور

ففلصينسيد

HATT OF AL

موادیا سیدفتش مین صاحب فرالافاضل، بناری کرقدیم فائدان کرکن رکین اور تلیا بالد، کراروک باشندے تھے۔ جامع العلوم جوادیہ سے فارخ القصیل ہونے کے بعد و جی پر مدری ہوگے۔ ماہت مدالجواد کے افرازی مدیم می تھے۔

000000000000000000000000000

آپ نے ۲۹ رماری ۱۹۹۳ د (= ۲۲ رشوال ۱۳۸۱ د) کورطات فرمائی (وائی معلومات دانوروجاد نیر ۱۵ کالحراف السام

فقرصين في عظيم

HATALITET

00000000

WINGA GITTE

مولوی علیم ماجی افتر حسین صاحب المخلص بدهیم ، حسین کی هلع ساران کرو ساجی سے اور بہت میں باکال ہے۔ شامری میں مرزادی اللی اللہ مقامہ کے ختی شاگردوں میں ہے۔ اور ایسے باکمال ہے کہ ایک بارمرزا صاحب مرحوم کمی سالان مجلس کے لئے نیا مرشد کرے سکے و عظیم کا مرشد کے ایک ایک میں میں کہ مار شد کے ایک میں میں کہ مارے برحا۔

شی نے ان کا حال ان کے درجاء ہے حاصل کر کے اپنے دوست ڈاکر صیمن فارد تی مرحوم (مینی) کو بیجیاتھا جے انہیں نے اپنی فی ۔ انگا۔ ڈی کی تھیس '' دیستان دیتر'' میں شامل کیا تھا۔ اور

# فیاض حسین ،مبارک پوری

1949/19122

1967/1987

#### ضانيف

(۱) تاریخ وطائد شید امامیه (۲) صاحب الامریخ (۳) نفه وفغال (مرثیه وقصائد کا مجموعه ) تنبول کتابی اردوش بی اور مطبوعه بین به پانچ لژک اور چاراژ کیان یادگار تیجوژین بارچ لژک اور چاراژ کیان یادگار تیجوژین ۲۲ رجمادی الاولی ۱۳۹۳ / ۱۸ رجون ۴ کیاوی کو ۱۵ سال کی عرش اشکال فریا یا اور

مبارک پور کے قبرستان (شاہ پنجه ) پس دفن ہوئے۔

مهمان فوازی پی فروقے۔ خط بوا پا کیزوقعا۔ چنانچیراقم الحروف ( فاکر حسین فاروقی ) کے پاس ان کے ہاتھ کا نکھا ہوااک مرٹیہ ہے۔ جس کا خطا تناول کش اور نئیس ہے کہ بی خوش ہو جاتا ہے۔ مہمان فواز ایسے تھے کہ جب تک دستر خوان پرمہمان نہ ہوں کھانانیس کھاتے تھے اکثر تومہما نوں کے انتظار ٹیس آ دھی ، آ دھی دات تک جاگتے رہجے تھے۔

فریوں ہے بہت جگ کے ملتے تھے۔ اور اگر کوئی فریب مجلس کرتا تو اس بی سب
ہے پہلے پردوغی جاتے تھے ۔ اگر ووجین وقت پر فرمائش کر دیتا تو ہے تکلف منبر پر بیٹے جاتے
ہے اور خوائند گی شروع کر دیتے تھے۔ آواز میں ایک کھنگ پائی تھی کہ چند جملوں میں پٹس ڈال
دیتے تھے۔ مظلم کے دو بیٹے ان کی تگاہوں کے سامنے دنیا ہے اٹھے گئے جس کے میلتے میں ان کی
محت خراب ہوگئی اور آخر۔۔۔۔

9 رفع الكَّنَّ <u>17 ا</u>ه مطابق ٢٦ رؤير <u>١٨٩٨ م كو خود بح</u>ى عالم قائل سے دار باقی كو سدھار گے۔

(وبستان ديراز داكر سين قاروقي)

يضحسين

الذريق علوم ہوتا باكسيدفيض حسين نے ملامه طی كی تناب التھر وكا ترجمه الدو من شريعة الرسول كام سے كيا تھا۔

الذريعة كى دوسرى جلدول شي سيد فيض مسين البندى كا وكرب بير عالبا حيداً بادش رج تصداور حسب ويل كنافي لكني تحيي -

- (1) فيا مالحيين في توارخ الحيين ( جلداول حيدرآ باديس چين هي)
- (۲) مين أيقين في مناظرة بإب النه ة (طبع حيداً باد) سي يدنه چل سكاكدان دونول بكبول برايك على فض كاذكر ب يابيده وطبعد وفضيتين قيس -

# قاسم حسين ، شيخ ، واعظ

Her/wes

1505 HT.

مولانا شخ قاسم حمين واحظ ابن شخ تو تقى صاحب ، محلّه كمال إورود ، مارس من سارر مضاك المبارك سي الدول المارس من سارر مضاك المبارك سي الدول المرابي في المولوم جواديد من المبارك سي الدول المرابي و المرابي المرابي و المرابي و المرابي المرابي و المراب

فياض حسين ، وليد يوري

HOLDETLIN

1960/1740

مولانا فی فیاض مین این تیم محرفی مرجوم افلہ بھلا جدا اولید پور بھلع سو ( یو پی ) میں حدود

و و ا ( = ع م الله ) میں پیدا ہوئے۔ ابتدائی تعلیم می مدرسہ نورالا سلام میں پائی۔ نیم سہارک

پورے مدرسہ باب العلم میں تعلیم حاصل کی۔ اس کے بعد جاسع العلوم جوادیہ میں واقل ہوئے جہال

عرف الله قاصل کیا۔ اس الله الم میں جب در آم الحروف جوادیہ ہی اس وقت مولانا فیاض میں مصاحب

مدرسے آخری و درجوں میں مقے اور ال کی فیر معمولی قابلیت و الملاجیت کا برخض کو اعتراف تھا۔ فخر

الله خاص کرنے کے بعد گرے کاروبارے معملی ہوگے۔ لیکن وین خدمتوں کا سلسلہ جاری دکھا۔

ابت الحص متر راور ذاکر تھے بچاہیں تھ ویز سے تھے۔

معن المنظم المن

ادشال المكرّم وه ساحا ها داكور وعوا دكوائد ولى عرفى كالمادك العصليديد معطف الدائل حالت عن باركادالى عن يدو في كاد وطن عن كرستان عن فرن دوساد (ديدار مين دايد بار دوسان عروب كالدارس

# فائم حسين

الذراید معلوم دوتا ب کدآپ رجود سادات شن امام عماعت تقدادرآپ في آيك كتاب دراه جنت دا تبات مزاداري شن آهنيف كي تقي

#### قربان على ،سيد

رسالد) صلاح (عرم عوسیاه) میں شائع شده جس آخریکا ذکر مولانا سیدففر الدین صاحب کے حالات میں آیا ہے، ای تحریر میں پانچوال نام" مولوی سیدقر پان بلی صاحب بلیب ورمنظفر پور" کا ہے۔

#### قمرالدين ۋاكثر

(410) 1555

علیم ڈاکٹر قرالدین صاحب دینٹریزی ڈاکٹر تھے۔اور ملکمری پی مقیم تھے ڈاکٹر صاحب کا ایک مدو چھیٹی مضمون اصلاح جلد نمبر ۱۷ ( ڈی الحبہ ۱۳۳۱ء ) پس چھپاتھا۔

آپ كاشكال كافراملان جارنيم ٨١ نبر ١٠ (رفاق في ٢٣٣٥هـ) من ان الفاظ من يتي هي:

" علم مناظر ویس بدی دستگاور کتے تھے۔ صدیا آومیوں کوراوی وکھائی پنجاب میں جہاں مناظر و بواویاں آپ کی صلاح اور مشور و کوشر ور ڈھل بوتا تھاافسوں کسان کی وقات ہے تر وقتی وین میں براار خند بڑا۔"

رائے پورد دکار پور بی مواد است کائی دیمار اور گیرات میں دبی خدمات انجام دئے بخسوس انداز میں قاربات پر سے تے ہو موئین کو بہت پہند قال بذبی مضامین بھی لکھتے تے ہو الجواد میں شائع ہوئے۔ گیرات میں مواد تا کو ول کا دور و پرا اور و ہیں ۱۱ رفو ہر سر ۱۹۸۹ (= سوس انداز) کو انتقال فر مایا۔ ہوار شرید فالٹ (آگرہ) میں وقی ہوئے۔ (مواد تا میر مجمع کی مان ساب)

#### قاسم على مرزا

مرزا قامم على صاحب (جومولوى قامم على رضاكر بلائى مشبدى كام م مشبور تقے ) لكھنؤ كى باشد سادر مشبورة اكر الى بيت تھے۔

- ا) عالى كالك مفسل تاب تبرالسائب (٥ جلدون يس) للعي تقي-
  - ۲) پھراس کی تحقیص شرعة المسائب سے تام سے تصحی۔ باتی تسانف حب ذیل میں:۔
    - (٣) تذكرة الطايرين (٥ جلدي)
  - (١٠) نيد المعالب (٨ جلدي)مطبوع در ١٠٠٠ اد
    - (٥) درالسائب(الذرييبلدنبرم)

و 1907ء میں آپ نے ایک جیتی کتب خانداہ روارالطالد حوام اورطلبہ کے فاکد سے کے لئے کا کم کیا۔ انجمن ترتی اردو (بند) کی شاخ کا کم کی جیگا الحاق انجمن ترتی اردو (بند) ہے 1907ء میں ہوگیا۔ 1907ء میں تج بیت اللہ ہے مشرف ہوئے۔ دوران سفر طبیعت قراب ہوگی اور مرش نے طول کا کرایا جس کا سلسلہ مرصد تک رہا۔ آپ کی بیماری اور شکسین کی ہے تو جی سے ادارة عالیہ اسلامی فیتم ہوگیا۔ محسستیالی کے بعد آپ دوبارہ جا مع العلوم جوادیہ میں ابطور وائیس رہیل وائیس آگے۔

جس زماند میں سید العلماء مولانا سید علی تقل صاحب مسلم یو نیورش علیکڈ دے شعبہ شیعد وینیات کے ڈین مجے ، انہوں نے مولانا کا قلم حسین صاحب کو بعثیت شیعد و عسماز علیکا دہ بالایا۔ وفاریت

۸رشعبان ۱۳۸۳ ها ۲۵ رومبر ۱۹۳۳ مادوکر کت قلب بند ہوئے سے انتقال فر مایا اور سلم یو نیورش کے قبرستان میں فرن ہوئے۔

آپ کے صاحبزادے مولوی فربان حین صاحب مسلم یو نیوری کے شیعہ و بیات کے شعبہ میں یہ وفیریں۔ مسلم میں اور ان کے شعبہ میں یہ وفیریں۔

(مولاة ميد فيم أفن مادين)

كاظم على سيد

سید کاظم علی صاحب نے گئی کتا بین آنسنیف کین جن بیں ہے چند کے تام یہ بین۔ ا۔اہم اعظم (امیر الموثنین کی سواتھ مر ک) مطبوع ۲۔اصلاح المراہم یہ مطبوع ۳۔ فاروق اعظم (سواتھ می خلیفہ کا وم حسب روایات الل سنت)

m=25

# كاظم حسين، شيخ

1414 11572

INTE VIENT

Zoooooooo

ابتدائی تعلیم کے بعد مدر سرایمانی (بناری) ی داخل ہوئے جہاں سے الدآباد بورڈ کے احتاات، مولوی (استاد مرادی اور عالم (ستاد اور) ہاں ہے۔ پھر سلطان المداری تشریف لے گے جہاں سے مدر دالا قاصل کی سند حاصل کی۔ قیام کھنٹو کے زمانہ یں کھنٹو یو تورٹی سے فاصل اوب جہاں سے معد دالا قاصل کی سند حاصل کی۔ قیام کھنٹو کے زمانہ یں کھنٹو یورڈ سے فاصل فقہ (۱۹۳۴ء) کی احتمانات ہاں گئے۔ بحیل کے بعد بنادی دائیں آئے تو جامع العلوم جوادیہ یں مدری مقرر ہوئے ۔ اس اور میں جب راقم احروف جوادیہ میں دائیں آئے تو جامع العلوم جوادیہ میں مدری مقرر ہوئے ۔ اس اور میں المدن کی اور دیوان منتی ( قافید وال دائیں ) جوادیہ میں المدن کی اور دیوان منتی ( قافید وال

ادارة عاليداسلاميه

مولانا نے (۱۹۳۲ ویش بھوں کے لئے ایک شہید کتب قائم کیا تھا۔ تھے مطرات کے تعاون،
ہماری میونیل بورڈ اور سرکاری الجنسیوں کی تحقر گراف سے یہ کتب ترقی کرے ایک بڑے مکان بٹی
خطل ہو گیا اور اس کانام" اوار ڈ عالیہ اسلامیہ" رکھا گیا۔ 1971ء بٹی یہ اوارو و ۱۸۸ ء کے ایک الا
کے تحت رجمز ڈ ہوگیا۔ اوارو کے بڑھتے ہوئے کام کوسنجا لئے کے لئے آپ نے مدرسہ جوادیہ سے 197ء میں استعمی دیدیا اور اسٹے کو اوارو کے لئے وقف کردیا۔

THA.

داكرى

جب ١٩٥٥ من الحراث التي الحول في الحرى شروع كى قوال دقت كم مقبول را كان كوما من المستخد عود من الحراث الدائم الموسد على المستخد المستخ

ان کی تقریر برادران افل سنت جی جی مقبول تھی چنانچہ برے اور میلادا لیمی کے جلسوں بھی اکثر دائے جاتے تھے۔

ضانف

زباد طالب العلى على ان كمضائين الجواد (بنارس) الواحظ (كلسنو) اورد يكرقوى اخبارات ورسايل يش شالع و ترج تھے۔

مستقل تصانف حسب ذيل جي

(۱) با نتل قا نتل (۲) نورونار (۳) با فی (قفیهٔ فدک پر مفصل بحث) (۴) سازش (واقعهٔ قرطاس) (۵) بجرم (به جواب انکشاف حقیقت) (۲) ناریخ اهید (۵) دلیل مزا (۸) ملیکهٔ العرب (حضرت خدیجه الکبری کی مفصل سوانح عمری) (۹) ام الموشین عائش (۱۰) علی ولی الله (۱۱) كراحيين سيد وكيس الواعظين

we Lliest

reselver.

رئيس الواعظين موادنا سيد كراد حسين صاحب النية ولمن بمر يود شلع اعظم كذه (يولي) عن عاد الكت علي الإدراء رجمادى الثانية وهي الدراء وعدان كروالدسيد رفيع الحن صاحب عجد وفق ميال كنام عنظمور تقدر فق ميال آية الذظفر الملة كربو جاتق

وطن على ابتدائی تعلیم کے بعد کرار صاحب (۱۹۳۸ء علی جوادید لائے گئے۔ اور پکھ مرصد تک ابتدائی عربی علی سرکار تلفر الملہ علی ہے بہمی۔ تخر الاقاضل کرنے کے بعد وہ مدرسة الواصطین علی واضل ہوئے۔ وہاں کی تعلیم کمل کر کے تئی سال مدرسة الواصطین کی طرف سے تبلیقی خد مات انجام ویے۔ پھراہے طور برطول وحرض ہندویاک بلکہ بیرون ہندہ می جائے رہے۔

ان کی ذاکری 1909ء میں شروع ہوئی تھی۔ان کے توری خدمات کا سلسلہ 1917ء میں شروع ہوئی تھی۔ان کے توری خدمات کا سلسلہ 1917ء میں شروع ہوا جب انہوں نے نلام جبیانی برق کی کتاب" ہمائی بھائی "کے جواب میں" ہاتل قاتل" کھی ۔یان کی طالب العلمی کا آخری زمانے تھا۔

ان گر و و ترین بال می این کی این کاران کار اسلوب می پنیال تفاجس ک موجده ای تص (اور شاید خاتم بھی) و و اخیاے سلف کے حالات میں آئی ب ساختی ہے کتابی اور تھی ان کا استعال کرتے تھے کہ الخیر توجود اے ہوئے پار صفا و دینے والوں کا فران خود بخو و صدر اسلام کے واقعات کی طرف ملاحت ہوجاتا تھا۔ ای طرح صدر اسلام کے بیامی جوڑ تو دکا پر تو مصر حاضر کے توب و فراز کو احا گر کرد ہاتھا۔

HIS

Scanned by TapScanner

(ملع مو) سے شائع ہوا۔ اس کے مضافین قائل قدر دوئے تھے۔ خافین کی سازشوں کے نتیبہ شدد سال کے بعد آقائی موسوی نے اس کی تمک بند کر دی جب سے اسکی اشاعت میں پابندی شدی۔ محمد آباد کو ہدند کی سکونٹ

آپ کا وطن میر پور تھا لیکن وہاں ہے آ مدورفت میں بیت وشوار پال تھیں اس گے آپ
نے سید واڑ و گھر آ باو گو بدر میں سکونت اختیار کر لی۔ وہاں کے قیام میں آپ نے شائ سمجد میں تھالا
مجھا نداور تماز جعد کی امامت شروع کی اور اس طرح مجد کو جاسمیوں کے قیند ہے بچاہا۔ سید واڑ و گ
و بی فضا میں ترقی کے اثر ات قرب و جوار کی بستیوں میں بھی محسوں کے جانے گے۔ اور اصلاح
معاشر و کا کام جیزی ہے آگے بر ہے لگا۔

مرض اوروفات

اگست ۱۹۸۸ ویش رئیس الواسطین کے ملق میں کینس (سرطان) کے آجاد ظاہرہ وئے میمین کے ملائ ہے وقتی سکون ہوا کین پھر مرض پر حتا گیا۔ آخری دنوں میں جائع العلوم بھوادید ( بھارت ) میں آ کر تھیم ہوئے اور ملائ جاری رہا۔ آخر وہیں پر ۲۰ مددی الیت و ۱۳ ایدا کے ۲ ساری و ۱۰۰۰ مادی و ۱۰۰۰ میل کی آپ نے رحلت فربائی۔ لاش محمد آباد کو بد لے جائی گی۔ اس آخری سفر کے پہلے جائع العلوم بھوادید میں تماز جناز و پڑھی گئی۔ پھر محمد آباد کو بدد میں ۲۰ مددی الحج کو موادی سید شیم السن صاحب نے دوبارہ مماز جناز و پڑھی گئی۔ پھر محمد آباد کو بدد میں ۲۰ مدد امام ہاڑ وہیں پر دھاک کر دیا گیا۔

المازقر آن ومزت كرة يندش (١١) عليد فدي (١٣) ميار يكورش كي كي قري علول ك

یکو ایے مضاعی یا پیغلٹ بھی ہوتے تھے جن کو دو اپنانام سے شائع کرنے کہ بجائے تھی ناموں (مشاالان د فیع ) سے مضوب کرتے تھے۔ اوار و تیم الم کا تب

تظیب اعظم مولانا تلام مستری صاحب مرحوم کے مالات میں ادارہ تنظیم الکاتب ک تاہیں کا صالی تضییدا تلما جائے گا۔ یہاں اتنا تکھنا مغروری ہے کہ خطیب اعظم نے مولا نا کرار حمین کے" ساتھ دیے" کے وعد و کے بعد ی تنظیم الکاتب کے قیام کیلئے استخارہ کیا۔ اور ۱۵ ارجمادی الاول المر سالے الاسالیت الم 19 اور جو کہا کہٹی تی اس میں خطیب اعظم سکر یزی اور کرار حمین جواشک سکر یزی ختی ہوئے۔ خطیب اعظم کی وفات کے بعد دوائی کے شکر یزی ہوئے۔ مولانا سعادت حمین صاحب نے جب صدارت چھوڑی تو علامہ ذیان حیور جوادی (جونائب صدر تھے) صدر ہوگے اور مولانا کر ارجمین نائے معدد بنائے گئے۔

اخبار عقيم الكاتب

جب بيا خيار ( ينده روزه ) جاري عوالو ايك فرص تك مولاة كرار هين صاحب اسك

مجذالبيان

بيد ماى رسال بيد الاسلام سيد قد موسوى ( في بالاس مين) كى سر يركى عن جارى بوا جس كاليد بير مولانا كرد رحسين صاحب هد بيبلا شاره ( عرم تاريخ الاول كالمواحد) قد آباد كورند

۱۹۱۸ می مناز الافاهل کا احقان دیا اور تنام طلباه ش اول آسے بعض پر مدرسا خاص افعام مها اور تامد ماصل کیا۔

اواور میں درستہ الواعظین لکھنؤ میں داخلہ لیا۔ اداکل و 191 میں ایٹ عی خاعدان میں پہلی شادی دو تی جن سے بھن سے سائز کیاں دورائیک کا موجود ہے۔

س معلی و شرکار ایم میلی کے بیادر دوانہ کا گھے۔ معلی و شرکار جم العلما وافی الله مقامہ نے میلی دونے کا سر فیکلیٹ میں بیت فر مایا۔

۔۔ <u>۱۹۲۵ء میں حکومت کی طرف سے مرحدی علاقے کا حکہ تضا آپ کے پروہ وا۔</u> چنا نید موصوف کڑم ایجنبی تشریف نے گئے جہاں اوگوں نے پر چوش استقبال کیا۔ وہیں ۹ ماہ کی مت میں چنتو زبان پر پوری دسترس حاصل کی تاکہ فیعلوں میں تلطی کا امکان ند ہے۔ کرم ایجنبی میں آپ نے انجمن شباب المشیعہ والجمن حین کی بنیا در کھی اور حفظ قرآن کا ایک مدرسر قائم کیا۔

۱۲۰ رجولائی ۱۹۲۵ میالگوت شی حفظ قرآن کے معرکة الآراد مناظرہ کواس طرح جیتا کہ محدایراتیم میر سیالکوٹی اور سید محدشاہ طفی نے لکے دیا کہ" مولوی حافظ کفایت صاحب نہایت الحی درجہ کے حافظ قرآن میں اور من جیت الحفظ خواس سے تم نیس ۔ صاحب موصوف نے عام مجمع شی پائی ارب سنا کے اور ایک محف سے ایک منت بھی زیادہ و نہونے دیا۔"

الكامياني عشيمت كيلف كيافي الميدان بمواريوكيا-

ع الما ويس آب في كلد قضاع بحكم معزت عم العلما والتعلى ويديا-

- ساور می آپ مناب عومت دناب وسرمد ع محكد اوقاف ك تاب مول

المعالي آب وملفائل موت كاعز الداور مركار في الملت كى جانب عدات اليرين

ے کفایت صین ارکیس الحفاظ

144A / 15-19

HANDE AA

ریس افتحاظ طامہ کا بہت میں صاحب سے ضروری حالات زعرگی ای " سوافی خاکر" ہے تقل سے جاتے ہیں جو کتاب کا بیہ الوامظین (جلداول) ہی شائع ہوا تھا۔:۔

"موسوف وهدا وي وكار إرطل بلدشرري في يرادو يد

آباء واجداد کے تفارف کے لئے بقول طامہ موصوف فقدا تی عی بات کا فی ہے کہ وہ ب کے سب شیعہ تھے۔ والد ماجد کا نام عبداللہ تھا اور پیشر تجارت تھا، جنبوں نے نیت کی تھی کہ اگر فرز تدمطا ہوا تو خدمت امام حسین " کے لئے وقف کردیں گے۔ چنا نچہ بنچ کی والاوت کے بعد نام "کفایت حسین" رکھا گیا۔

ابتدائی تعلیم کے لئے علی العلما و مولانا کیم الحن صاحب تبلہ کے ایک شاگر د مولانا محد موض صاحب کے قائم کردہ مدرسہ احمن المداری میں داخل کر دایا گیا۔ جہاں ہے آپ نے حافظ مبدی حسن صاحب سے دس یارے یاد کے۔ ان کے بعد حافظ سید غلام حسین صاحب مدرس مقرر ہوئے۔ جن سے آخر تک کام یاک مفظ کیا۔

ا المعافظة فياض جب قرآن مجيد تعمل حفظ كرليا قرآب كومواد نا حافظة فياض تعين صاحب مدرى مدرس مصيد كي خدمت على سنان كي فرض س الجبعا كياجهان آب المادقيام بذرير ب- والله و من المعافظة من المعافز من حاصل كي الله و من اله و من الله و

الوى سيم اوال وال وال وال وال وال وال وال والم مدة المي المستوع ما ال في والله من مولوق المن المولوق المن الم والله والمن المرابع الم

#### كلب حسين ،سيد

HELLIFTE

00000000000000000000000000

مولانا کی شادی مولانا سیدوسی محرصاحب قبلہ (نمیاء الواعظین) کی جھلی یمن سے جوئی

آپ نے بلرام پورسپتال (لکھنؤ) میں انتقال قربایا۔ لاش فیض آباد لا فی گئے۔ جنازہ کو کلام پاک کے سوروں کی گونٹی میں مولوی با ٹے لا یا کہا جہاں آپ میر دلد سے سکھے۔

الجادمار فأعكان

يخ خطاب طار وسعودا ويس شيعه البي تيش تلعنو يس تمايان خدمات مرانجام وي اگر حافظ صاحب وفا اورم مدے ملك د والله عالى الله الله الله الله الله الله والماء على والمرام ورمنا في مروم في قيرة أن مرب ك ع ك آب ك \_ يو ١٩٣٧ ويك بعد ومتان چود كراه بوركريف في الم الكاورم ت وم تك ويل اب-عدوا ويل حومت باكتان نے آب كو لاكيشن كا مبر مقرركيا۔ ١٩٩٣ وي اوقاف يورة كي ميرة موديو ي - اوراى سال صدر ملكت في آب كواسلاى مشاور في أوسل كالمبر مقر ركرويا-ايريل ١٩١٥ مثل آب يركرا في شراع الح كالمله والـ ١٩١١ مثل مرحوم ذيارات مقامات مقدر اور في بيت الله ك ال الله ما الأفحن أكليم في اين طبيب فاص ال كا علان كروابا\_اى مغرض بحرين من منتي فلسطين سي ملاقات كى - كعبة الله حاكر مناسك في بحالائه ـ كانى محت مند موكراد مورقشر يف لائ المريكين أقرار ك قابل تادم مرك ندمو تكيد الماريل ١١١١ مر ١٥ مرم ١٨٨ ١ هروز بنشيرات كوه ربي كفارام بسيتال عي آب ت داق اجل کولیک کیااور ۱۵ دار فی بعددو پیران مور کسب عقد کرامام باز ساکر بازگا عشاه ين يروخاك بوع

ri4

LIL

221

قرال سے اس طویل دور عن میکرون افرادا پ سے چشر علم سے فیض باب ہو نے ان عمل سے چھ عام دیل عمل درج سے جاتے ہیں۔

مولانا آغا چعفر (پاکستان) مولانا رضی جعفر (پاکستان) مولانا هرزامحد مالم جولانا هرزامخد اظهر مولانا سیدهسن فقوی مولانا افخار هسین (تحشیر) مولانا منظور محسن وفیر جم

شادى اوراولاد

۱۹۴۳ء میں حضرت باقر العلوم طاب ثراہ کی صاحبز ادی ہے آپ کا عقد ہوا جن ہے دہ بیٹے اور تین وظیال پیدا ہو کئی مولانا سید کلب جواداب آپ کے جاتھین جیں۔

ساتی اور قومی اداروں سے وابقی: عراق سے داپھی کے بعد ۱۹۹۳ء تک وقی فرق امیر آمفی میں اپنے والد ماجد عمدة العلماء مولانا سیر کلب حسین صاحب کی عدم موجود کی میں نماز جمد پڑھا یا کرتے تھے۔ عمدة العلماء کی وفات کے بعد آپ نے پید منصب مشتقل طور سے سنجال لیا اور آخر عمرتک پرفریشدانجام و بینے دہے۔

آپ آل اغریا مسلم پرش الابورؤ کے نائب صدر ہے۔ جس کی صدارت مواد نا او آئسن ملی ہوئی کے ہاتھوں میں آئی ۔ منظر ل ج کیمٹی اور اردو اگیڈی کے ممبر رہے۔ نیز ایک بار آل اغریا شیعد کا نظر اس کے صدر بھی ختی ہوئے۔ مسلم بو نورش کے گورٹ کے مہر تھے۔ یوفنگ انوش مناصب آپ کی ہر کیم شخصے میں مناوی او آئی ہے۔ آپ کی ہر کیم شخصے میں مناوی او آئی ہے۔ جو اس ذیا ہے گار ان اور اس کے اور اس کے اگر منظم علی خیاد کی انشان دی ہو آئی ہے۔ جو اس ذیا نے میں کہریت افر کا تھم رکھتی ہے۔

بقول پروفيسر موانا عنديد المن نوميروي" ان عل عجيد كي اورمنانت ك اعربين عي س

كلب عابد ،سيد ، آقائ شريعت

. Herrison

14A1/11+2

£0000000000

۱۹۳۹ء میں حراق تشریف نے مصلے جہاں آیۃ اللہ سیدمبدی شیرازی، آیۃ اللہ سید مبدی شیرازی، آیۃ اللہ سید مس انگیم، آیۃ اللہ سیدمحود شاہ رودی اور دوسرے اسا آندہ سے فیض حاصل کیا۔ 1<u>س 191</u>1ء میں حراق سے لکھنڈ والی آئے۔

تدريىمشاغل

ومیر دیوا دے جون ۱۹۷۴ تک مدرسطفان المدارس میں نائب مدرس الحی کی حیثیت عدر نی اور انتقای فراکش انجام دے ۔ کی ترصیعدا پ مسلم یو نورش علیکڈ دیس شیعر تھیولو تی کے ڈین کی حیثیت سے بلائے گئے جہال نومبر ۱۹۷۴ء سے جنوری ۱۹۸۳ء تک اس عہد و پر فائز

4

FIA

140

ترری سے اس مولی دور عی میکروں افرادا پ سے چشر ملم سے فیش یاب دو سے ان ان سے ان سے ان سے ان سے ان سے ان سے ان س عل سے چند عام دیل عی درج سے جاتے ہیں۔

مولانا آنا جعفر ( پاکستان ) مولانا رضی جعفر ( پاکستان ) مولانا مرز اقد عالم مولانا مرز الله اطبر مولانا سیدسس نقق می مولانا افغار حسین ( تعشیر ) مولانا منظور محسن و فیرجم \_

شادى اوراولاد

۱۹۴۳ء میں حضرت باقر العلوم طاب الراو کی صاحبز ادی ہے آپ کا عشد ہوا جن ہے دو جنے اور تین وشیال پیدا ہو کئی مولا ناسید کاب جواداب آپ کے جائشین جیں۔

عاتی اور قومی اداروں سے وابطی: حراق سے وابھی کے بعد ۱۹۲۳ ، تک وقی فرقی سے آمنی میں اسپر اور قومی اداروں سے وابطی تراق سے وابھی میں اسپر وابد ما جد عمدة العلماء مولا تا سید کلب حسین صاحب کی عدم موجود گی میں تماز جعد پر صایا کرتے تھے۔ عمدة العلماء کی وفات کے بعد آپ نے بیامت مستقل طور سے سنجال ایا اور آخر عمر تک بدفر بیضا انجام دیتے دہے۔

آپ آل الله باسلم پرسل الدورة ك نائب صدر تقد يس كى صدارت موادا نائه أيسن ملى الدوى ك باتون مثل الدوى ك باتون مثل الدورة ك نائب مدر تقد يستر ايك باد آل الله باشيد كافرنس كه صدر بحى ختب بوت مسلم يو غورش ك كورث ك مهر تقد به مختلف النوع مناصب كافرنس كه مدر مجمع ختب بوت مسلم يو غورش ك كورث ك مهر تقد به مختلف النوع مناصب آپ كى بعد كر بخضيت كى عكاى كرت إلى - اوراس ب الكي مشتم على بنياد كى نشان وى دو تى بوتى به واس ذيا في بارد شي كريت المركام كمتى بها دي المواس بالكي مشتم على بنياد كى نشان وى دو تى بوتى به جواس ذيا في مشتم على بنياد كى نشان وى دو تى بوتى به جواس ذيا في من كريت المركام كمتى بهد

بقول پروفیسرمواد تا شبید السن نونبروی" ان شی جیدگی اورمتات سے آتا را بھین می سے

كلب عابد ،سيد ، آقائ شريعت

.urr/eri

19AY/15+4

£000000000

000000000000000000000000000000

۱۹۳۹ء میں مراق تشریف نے مجان آیة اللہ سیدمہدی شیرازی، آیة اللہ سیدمبدی شیرازی، آیة اللہ سیدمبدی انگیم، آیة اللہ سیدمحود شاہر دوری اور دوسرے اساتک وے فیض حاصل کیا۔ ۱۹۸۹ء میں مراق سے کھنٹو واٹن آئے۔

تدريىمشاغل

واجر و 1940ء جون 1947 کل در رساطان المداری ش تا بدر آلی کی حیثیت مند کی اور اشکالی فر اُنفی انجام دئے۔ پی ور مد بعد آپ مسلم بوندرش علیکڈ دش شید تھیولو تی کالین کی حیثیت سے بلائے گئے جہال لوہر ۱۹۷۴ء ہے جوری ۱۹۸۳ء تک اس عبد و پر فائز

MIA

آباد كروب ترياسان عراف فريدات والك الك في الكادك يجد على دياس ال مركاداً قائد شريعت مؤكروب تقد لاش دات إجرعالم كس ميرى يس يؤى ري يكن الا مدعمرك من وقد وقد جب ريد يواد وكرورائع الله في الن فركوماروا لك عالم ثن يساا و إلا تي ایک عالمگیرز از ایم ابور رقم الورف کے جی آقائے شریعت سے ساتھ تکامیان تعلقات تصاور ش نے پی خرتا نزانیا میں ایک تلیفی سفر یہ جاتے ہوئے کار میں کی تھی ۔ نواب کی تھانہ ہے ایم انس کے وريداش ميذيك كالح الدآبادلا في يحرون كالجمع أفرولكار باتها كدمولانا كايست ماراتهمي اوسكا ے جب بہال حواروں بوسٹ مارقم حوجا کمی جناب سلیم شروانی جمیر بارانیا منت نے اعلی افسران ے مصورو کے بعد املان کیا کہ افلی حضرت کی لاش کوکوئی چھوچھی ٹیس مکتا ہے۔ ڈاکٹری معائد کے بعدميدُ يكل كالى كم كماؤه عن ميت زيارت كيك اللي في محرووباروايموينس عن ركاي في - تين بع سه پېرے قریب ایمونس آ سته آسته تکعنو کے لئے روانہ حوتی۔ ہرقدم برقافلہ بروحتا جار ما تھا۔ ایک جیب جس پرمسلم مجلس کا جھنڈ انگا تھا سورہ رشن علاوت کرتی جارہی تھی ۔ نکھنٹو سے جالیس کلومیٹر يملي أيك كثير جمع استقبال كے لئے كمز القار وہيں آ قائے شريعت كے جند اطبر كو تابوت شي منتقل كرك ايك على كارى بي ركما كيا- ٩ يج رات حقريب اطلان كيا كيا كدم كارة الاعتربيت كي الماز جنازه كل ٩ يج مح اواكى جا يكل يور المعنو عن كرام عاقل جن رات على عدد با المارازے كى طرف يزها جاتا تھا جہال عمل وكفن كے بعد تابوت محد آصفی كے مركزي ورثي ركھا قار و بح مع جنازے کی مغین ۱۰ امارے کے محق سے مزجوں تک اور وہاں سے لان تک پيونيين پر بھي سب لوگ شرف نماز جناز و عاصل نه كريكة بن العلماء مولانا سيد تحد ذكي صاحب في الماز جناز وير حالي مرآ واز كاوكر في آع برجي تو غلد والي مجد عرقريب براوران اهل سنت لماز جنازه يزعة كم الح كرب تقداجات ليكايت في مجد كما عدا العدا على موالنا فعل

000000000000000000000000000000

موجود معظر یکی بھی وہ جوئ وقف و قفر پرت تھے۔ متانت اور حفظ مراجب کے ساتھ ان کی الفظی اور کشادہ و تقی ان کے دو اس اف کا ان بھی ہے تھا ان کی بھی ہے ان کی اور سب بی ان کی فیک تھی ہے ہے اور سب بی ان کی فیک تھی ہے ہے اور ان کی بھی ہے کہ اور ان کی بھی ہے اور ان کی بھی ہے ہے اور ان کی بھی ہے ہے کہ اگر ان کا میں ہوت ہو کررہ جاتا تھا۔ ان تمام او صاف کے ساتھ ساتھ واقعات کا ایسا سلسلہ والب ہے کہ اگر ان کا اور سادگی کے یہ اور ساتھ واقعات کا ایسا سلسلہ والب ہے کہ اگر ان کا اوساف بھی ان کے ذاتی کا من کے معلا ہ والے وراث کے بھی ان کے ذاتی کا من کے معلا ہ والے وراث کے وراث میں ہے اور اس کے پور مالی مقد ادر جناب می والے ان کے مادو اس کی وراث سے جوانی ان کے پور مالی مقد ادر جناب می والے ان کے مادو اس کی وراث سے جوانی ان کے پور مالی مقد ادر جناب می والے ان کے مادو ان کے دار است میں و نے تھے۔ "

معلی زندگی شراوائل ہونے کے بعد قیادت و خطابت کے نبغتہ اوصاف بھی وقتہ رفتہ ان شراخیور پنہ یہ ہونے گے اور پھر تو وواس قدر معروف ہوئے کہ ان کی پوری زندگی معرے سرکرنے شراکندرگئا۔ ان کی مملی جدو جہد اور مجاہدات اور مواصیرت کے جو ہراس وقت کھل کر سامنے آئے کہ جب مدر سلطان المداری کے جوجہ کی تو یک نے برصغیرا وربیر وٹی ممالک شراجی بل جل ہی ہیدا کردی۔ اس مدرسہ کا اپنی موجود و فعادت میں رہنا، جس مجموقی قیادت کا کار نامد ہے۔ اس میں آئا کے شریعت طاب ڈراوکی کمک اور مرفر وشائے جدو جہدئے اہم کر دار اوا کیا ہے۔

حادثاوقات

آپ ۱۳ وجر ۱۹۸۹ مروز شند (۱ رفظ الله في ۱۳۰ هـ) كونسير آ بارشلع رائ ير يلي محلس يد عند ك شف وبال سال آباد كيك دائوي دوري هي كد تقريباً يدر و كومير يبل جا بها موضلع النا

- Endis

نماز جناز و کے بعد تا ہوت ہا لیس، پہاس طول کے سابے بی امام ہا اُو ففرال مآب کے لئے روانہ ہوا۔ درمیان راوش جنازے کو آخری دیداد کے لئے گھر کے اندر بیجا آلیا ، تھوڑی دیر کے بعد میت اپنے آخری سفر پر روانہ ہوگئی۔ آ دھا تھے کا رستہ کی تھنٹوں میں طے ہوا۔ ہمد قالعلما موالا تا سید کلب حسین صاحب کے پہلوش ان کے فرزندا کیرکوسلادیا آلیا۔

الرض قبل عام جدور مناعت الحل منت كى افتداه عن فماز جنازه شروع الدكى بزارول شيد موكوار جو شركت مع وم روك تقديمناب موادنا كى افتداه عن فماز جنازه كيك كوز مع الكام يبال دوز عدر والم تقديد كالك افتراس وش كرمانا مناسب وحوكاء

"مولانا سيد كلب عابد جميته كاماتم جمل بعد كيريان پر بواادداب تك بود باب و ولاسنوك كروان الدراب تك بود باب و ولاسنوك دوارت اور حوان كفاف كام و المام و

Laggaggggg

wil notices

شاز جناز و کے بعد تا ہوت جالیں، بھال طول کے سائے شی امام ہاڑ و ففرال آپ کے لئے روانہ موارد میں ان اوش بنازے کو آخری و بدار کے لئے گر کے اندر بھیا کیا آخوزی ویر کے بعد میت اپنے آخری سفر پر روانہ موگئی ۔ آوصا کھنے کارستہ کی گھنٹوں میں ملے بوار محمد قالعلما و مواد تا میں کلب حسین صاحب کے پہلوش ان کفرز تھا کہ کو ملاویا کیا۔

اردو، بندی، اور انگریزی کے اخبارات کی ون تک آقائے شریحت کے تذکروں سے بھرے دہ ہندی، اور انگریزی کے اخبارات کی ون تک آقائے شریعت میں قبل ویا گرالدآیا و کے گئون کی سیاست میں قبل ویا گرالدآیا و کیستو کئی سیاست میں قبل ویا گرالدآیا و ایم بیلان کی وائی آخی اور وہ بھی ایم بیلان کی وائی آخی اور وہ بھی ایم بیلان کی وائی آخی ایم بیلان کی ویا گرالد کے ساتھ آئی۔ جا بجا پاس کی وائی آخی ایک بیلان تھی ۔ انتخام اور مرکاری مشیزی اس سے اندر کر آخی بیت امرکاری افزاد کے ساتھ آئی ہوئے والوں کے انتخام اور مرکاری مشیزی اس سے زائد مر گرام آخی بیت امرکاری افزاد کے ساتھ آئی ہوئے والوں کے بوت ہوئی والوں کے بوت ہوئی اور ان میدل چل اور ان میدل چل میں مدور بندر ہیں بلکہ بہت دے مسلمانوں کی دکا تی دوروز بندر ہیں بلکہ بہت سے فیر مسلم افراد نے بھی دکا تیں بندر کھی۔ شہر کے اکثر ویشتر مکانات پر سیاہ جانگ ہے۔ شارک کا ادرای روز شام کو گفتو کے شہر یوں کی طرف سے (جس شرائی قداد شرائی میں انگوں کی اقداد شرائی میں وائی افران کی دوروز شام کو گفتو کے شہر یوں کی طرف سے (جس شرائی افران کی دوروز شرائی تھی افران کے دوروز شرائی افران کی دوروز شرائی افران کی دوروز شرائی افران کی دوروز شرائی کی دوروز شرائی افران کی دوروز شرائی کا دوروز کی دوروز شرائی کا دورای روز شرائی والی کی دوروز شرائی کا دورای دوروز بند و مسلم شید دائی شرائی وسیائی روزماؤں کے مولانا مرائی کو دروز گرائی دوروز گرائی۔ تو بی کی دوروز گرائی کی دوروز گرائی کی دوروز گرائی کی دوروز گرائی کر توروز گرائی کر کر گرائی کر گرائی کر گ

الرض تبله عام جدو بما عند الحل سند كى افتداه عن فماز بهنازه شروع بدق برارول شيد موكوار جو شركت مع ومرده ك تقديما به موادناكى افتداه عن فماز بهنازه كيك كمز مداد كالدريال دوز عدر والم تفسور كاليك افتياس وش كرنام ماسب مع كالد

"مولانا سيد كلب عابد جميد كاماتم جمل بحد كيريان پر بواادداب تك بور باب و الكفت كا در باب و الكفت كا دوايت اور موانا مروم كوجى دوايت اور موان كفلاف ب اور مظاهر و اثنا فيرمتو تع ب كد شايد كا اور كوتو كيا مولانا مروم كوجى اچى زندگی بش اس كا اندازه و در بابو كا كد انبول في است قوى كرواداد و شخص شل او مسلم كل و بحن كا است كير ساور پائيداد اثر ات مسلمانوں كى اجماعيت پر مرتب كرديت بين كدان كى و قات شرم ف شيد فرق كر ايك ايدان كى وقات شرم ف شيد فرق كا ايك ايدان محد ما الكاو كابت بين كدان كى وقات شرف شيد فرق كار دول كي كر يول كرماتيوان كى ناوقت جدائى يويتر ادبواليس كا دول كي كرون كرماتيوان كى ناوقت جدائى يويتر ادبواليس كاد

FFF

اور ما المان سے پوری طرح فیض حاصل کیا کہ" بید فضیلت ووائ کی کا تزید بن آلیا " بھیل علوم کے بعد و جلی کا رخ کیار دو آلی کا مورد فی جدو حاصل آلولیس ۔
بعد د جلی کا رخ کیار ول کے کئی گوش میں بیتمنا جاگ آخی تھی کہ مفتی کا مورد فی جبد و حاصل آلولیس ۔
مختلف قررا کن سے معلا م کی ایک مجلس ندا کرو میں پہنچے اور ایک اور شیل مسئلہ کو اس و ضاحت کے ساتھ طل کیا کہ حاصل موجود کیا کہ حاصل کی اور آخرش شینشاہ ملے کیا کہ حاصل کی در ایک مطلق مجلی در اتی موجود کا در آخرش شینشاہ ملئی جو نیوز انا معرد کرایا اور سند مطال کی۔

جو نیورآ کرمنتی سید مبارک نے ایک خانقا و بنائی جس شی طلاب کو دری و بیتے تھے اور اقار کفر اکفن انجام دیتے تھے۔ خانقا و کی بیتاریخ تھیر پھر پر کند و کراے تھیب کی تھی۔ خبر از سرسال تاریخ داو تاتا چنیں خانقا ہے مبارک بنائے۔

نوث

" خالقا ب مبارك بنائ "كالعداد عهدا بوت بيل- الل الله كالي تمن لقظ مادو تاريخ او كالتي بيل-

خافقاو کے دروالا ۔ پر الصطفی ہدیتہ العلم ولی بابھا کندوتھا۔ اس زیائے ہیں ملتی تلایخون علوم وثنون تھااور بہت ہے علا ہے اس خانقاو ہیں اکتساب فیض کیا۔ امتداول مائد ہے وہ خانقاہ منیدم ہوگئی۔ عرصہ درالا کے بعد سیدتلفشل مسین خال صاحب نے اس جگہ پر ایک پائٹ امام ہاڑ وقفیر کر ایا اور اس پر تقبیر خانقاہ کے اس منگ تاریخ کو نصب کرادیا تا کہ خانقاہ کی جگہ کا نشان باتی رہ جائے۔

وفات

۱۰۰ روضان البارك ۱۰۹ (= ۲۰ جولائي عدمياه) كومفتي اسيد مبارك في رصلت فرمائي - ان كي يناية قبر مفتى تعلّه (جو نيور) مين صاحب" عجي كور"ك وقت تعك موجود هي -( تعليم مراسم دولا دول سرور)

# کلب عسری،سید، نانیاره

INT-/ITTA

املاح بلدنبر ٣٣ نبر ١١ شرآپ کی فروقات ان الفاظ ش چیس ہے۔ "جناب مولانا سید کلب محکری صاحب قبلہ مرحوم نے ماور مضان ش انتقال فر مایا۔ جناب مرحوم پوے مقدس اور برد لعزیز عالم وین تھے۔ اور کھائس ٹانیارہ کو بڑے ابتمام سے انجام فرماتے تھے۔"

(11月17日からしっまでのからうしは1)

#### مبارك اسيد مفتى جو نبورى

404/1-9A

20000000000

منتی سید مبارک منتی ایوالیقا ه (و کیمنے احوال) کے چھوٹے بیٹے اور آسان فضائل وہلوم کے ٹیر اعظم تھے۔ اپنے وقت کے مشہور ملا ویس تھے جن سے ایک زبان نے فیض افغایا۔ ایسی فروسال تھے کہ باپ کا سایہ سرسے اٹھ کیا۔ ان سے بڑے سب بھائی مختل کو دیش اپنے اوقات اپنے اپنے مناصب پر مامور تھے۔ اس لئے سید مبارک باروسال کی ٹم تک کھیل کو دیش اپنے اوقات منائع کرتے رہے ایک روز بلا محداثین (بوطنی ایوالیقا ہے شاگر دیتھے۔ ) ان کی طرف سے گذر سے اوران کا مال و کھے کر بہت تھے تیں کیں۔ اور دوسر سے دن سے اپنے استاد کا حق اوراک الد آباد مطل کے دوز ان کھر مرا کر کرسید مبارک کو بڑھائے گے۔ بلائھ ایش کی رحلت کے بعد سید مبارک الد آباد مطل کے

\*\*\*\*\*\*\*\*

مجتي على خان

maliner

مجتبی علی خان ہم تھا ما پر مجتبی گھر والے کہتے تھے۔ ونیا والے ادیب البندی کے ہم ہے جانے ہیں۔ سارر مضان سوسیا حاسب الست وسوا مرکز بہار پورشلع سلطان پورش پیدا ہوئے۔ والد ماجد الحاج محد شیخ علی خان رکس بہار پورتھے۔خاند انی سلسلہ ریاست دیج کا وی شلع فیض آ یاوے و

"التقاب اسلالیا" نام کی کتاب تکھی۔ پار جمہوری اسلالی کے دستور اسلاکی کا ادود شی ترجہ کرکے پی التقاب اسلالی کے دستور اسلاکی کا ادود شی ترجہ کرکے پی التقاب اسلالی کے بارے شی جو تفاق آنہاں کا بیلا تی جاری تھیں ان کو دور کرنے شن مدولی۔ آیت الشرافی کے بعد دوآیت الشرافی سید تھر مشاکلہا تاکائی کے دکیل رہے اور اب آیت الشرافی سید تھر مہدی شیرازی کے دکیل ہے اور ابن کی کا کتاباں کے ادر دور تھے تی مثاباتی کی کا کتاباں کے ادر دور تھے تی مثاباتی کا موں شی ان کی طرف سے حصد ابنا تھا۔

نجف اشرف ے واپس آئے تو افر الانتھاء مولانا سدوسی تعدما دب مرجوم ف (جوال احت وثيق فر إيكان الله وفير وكادمان ب وقت وثيق فر إيكان كي يرفيل هے ) آپ كوفيش آباد باداي آپ وثيق ش ش الدوفير وكادمان ب المسن وجود ہے تھے۔ وثيق كے تيام كدوران آپ ف اگر برى يكنى اور تنف احقانات و بے بوك الل -ابل - إيك وكرى مامل كرنى راب إلى -انگا - وي كرف كاراده تقا۔

جب مواد تا سيد وسى محد صاحب قبل مدرسة الواطفين كريل مقرد و ي أو أنحول ف والى بريل مقرد و ي أو أنحول ف والى بريل في جلك الديب البندى كانام تجويز كيار بوسطور بوكيا اوراً ب و المؤاش النحوة آك و و آخو مال حك مدرسة الواطفين ع مسلك رب اورال فرصه من واراب كالووجى بهت علاوه بحى بهت ب ترقياتي كام كان كري و بيد و قارت كي قبير أو كي بم جالي اور متحدو كري قبير فو كي بم جالي اور متحدو كري قبير كرائ و بابنام الواطفة كو مالي كل ك و ديد كافي ترقى وى دوي معلومات كا باخذ والد يو الرام بوتا تما جي والله على شركة من من الل شير بحى شرك بوت ها و المحالية الله مدرسة الواطفين ع بلحدو يو الرام بوتا تما جي يوم مناسمة و في كان ميرف ك ويكور ب يكن مالات كريب و إلى قيام كا بهت كم موقع مالا

#### محسن رضوی ،سید

MEHETS

چوک آپ کے والد ماجد ذیا بیش کے مریض تھے نیز ان کو اپنے تحریری مشافل بی کئی معاون کی بھی ضرورت تھی جوجوالے وفیرو نکال سکے۔ اس لئے آپ نے آخر بیا وی سال اُن برر کوار کی خدمت بی کو پال چراور کھنٹو بی گذارے۔ اس لئے آپ اُن کے انتقال کے بعد آپ موگاو یشو (صوبالیہ) بھیست امام جمدو بھا مت تھریف لئے گئے۔ وہاں سے مجھندہ ہونے کے بعد آپ ہوگا شاہ کے۔ سال اور میں بری ان سے کہالا بی طاقات بولی تھی جہاں ووامام جمد بھا مت تھے بکھر ورسے کا بعد وہ تا وار اور شاوار السلام اور ممانا و فیر و بھا توں بی اور کو گئی اُن کے بھا کہ بھیست کے بعد وہ بھی بھیست کے بعد اور کی ان کے بھیل کی گئی تھی اُن کے بھیل کی بھیست کے بھیل کی گئی تھی اور آتا ہے وہ ماؤا کا سکر بھی گئے تھے (اس کی تھیش ان کے بھیل بھیل بھیل بھیل بھیل بھیل کے بھیل میں تک کھیل ان کے بھیل بھیل بھیل بھیل کے بھیل میں تھیل بھیل کی گئی تھی (اس کی تھیش ان کے بھیل بھیل بھیل کے اور کا میں بھیل کے بھیل کی گئی تھیل ان کے بھیل بھیل بھیل کے بھیل کی گئی ہوگئی ہے کہ اس میں بھیل کے بھیل کی گئی تھیل ان کی تھیل کی گئی تھیل ان کی کھیل کی گئی تھیل کی گئی کھیل کی گئی تھیل ان کی کھیل کی گئی کے بھیل ان کی کھیل کی گئی کھیل کیا گئی کی گئی کھیل کی گئی کھیل کی گئی کھیل کی گئی تھیل کی گئی کھیل کی گئی کھیل کی گئی کھیل کیا گئی کھیل کی گئی کھیل کی گئی کھیل کی گئی کھیل کی گئی گئی گئی گئی کی گئی کھیل کیا گئی کھیل کیا گئی کے کھیل کیا گئی کھیل کیا گئی کھیل کی کھیل کیا گئی گئی کھیل کیا گئی کھیل کیا گئی کھیل کی کھیل کیا گئی کھیل کی کھیل کیا گئی کھیل کیا گئی کھیل کیا گئی کی کھیل کی کھیل کیا گئی کھیل کیا گئی کھیل کی کھیل کی کھیل کی کھیل کیا گئی کھیل کی کھیل کی کھیل کے کھیل کیا گئی کی کھیل کی کھیل کیا گئی کیا گئی کھیل کی کھیل کی کھیل کے کھیل کی کھیل کے کہ کی کھیل کے کہ کھیل کی کھیل کے کہ کھیل کی کھیل کی کھیل کی کھیل کی کھیل کی کھیل کی ک

صدود م 194 و على ووافريق ب والمرا آئے مرصد ورائ الحول في الفي سرال يدا

Salar Sa

على ميال مدوى في ميرت اجر الموشن برايك كتاب الرتفني كلمى تقى جمل شي حقائق كوق الم مرود كروش كيا كياب من كاعالمان جواب اويب البندى في الامام كمام من شالى كيا- (افسوس كرمالات كي وجد من الاومر احد شالى نه دوسكا) د" حيات افتار العلما المالكفتر افتار العلماء كا مام زنده كيار امريك الكينة اور بند وستان شي حقيق جائز وفي كرمال بحر كانتك افطار و مح واوقات تماز مرت كياج كمان الكينة المرائد وكانتك المن شائع الويكاب -

اقوال جیاردو محصوی علیم السلام برمشتل ایک کتاب بدنام" افوار" مرتب کی جو مختلف اداروں کی طرف سے شالع ہوتی دی ہے۔

علائے بند کومنظر کرئے کیلیے انھوں نے چلس علاء دواعظین قائم کی جس کے اجلاس دیلی ادر ایر ٹھ میں ہوئے۔

(درال اصلال المنتوكاد يون و وويام)

000000000

FIN

#### فحرسيد رضوى

مولوی سید قرر شوی این مولوی سید علی ضامن صاحب زید بع دشلع بار دیگی کرد بیشده الے عظم رسال اشیعه ( کچھو و ) میں آیک بار آیک صاحب نے مرائم عاشورا کوشمی حساب سے مادا کالا بند میں بچالائے کی حجویز بیش کی تھی۔ اس کی رد میں مولوی سید محد رضوی صاحب کا ایک شجید و مشمون رسالہ میں عبد قبر ۸ قبر ۱۰ میں شائع جواتھ اجس سے ان کی علی سطح کی بائدی کا انداز و او تا ہے۔

## محر اسيد تشميري

1934 FLA

مولانا سید و کشیری نے بندوستان اوراس کے بعد مراق کی تعلیم کمل کرنے کے بعد سرزیمن الحصال مرافع کے بعد سرزیمن الحصال مرافع کے بعد سرزیمن الحصال مرافع کی بنیاد و اور الحقام میں مدرسہ مقار العلوم کی بنیاد و اول اور انتہا کی ابتها م کے ساتھ ورس و قد رکس کا سلسہ شروع کیا۔ شب وروز کی محنت شاقہ اور جانفشانی سے مدرسہ کو دان دونی رات چوٹی ترقی وی۔ آپ سے فیضیاب ہو کر طلبہ مقامات پر جاکر غیرب مقل کی تبلیخ و اشاعت کرتے ہے۔

٢٢رشوال ١٨ ١١ د (=٢ رئ وهوا م) كورطت فر مائي-

(الجواد بيلدلير والمبر ورماه ويتقدو ٨٥ / الري وه والم

گاؤں گھوی کو اپنا وطن بالیا تھا۔ اور وہیں مقیم رہے۔ حدود ۱۹۸۸ وہیں آپ کو مدرت الواعظین کا پہلی بنایا گیا جہاں آخر بیا آ تھ سال رہے۔ گھر وہاں سے بلیحدہ اوکر برا اگاؤں گھوی وائیں آگئے۔

1999ء میں آپ کی ابلیہ نے انگال کیا تو آپ بہت زیادہ متاثر ہوئے۔ آپ خود ملیل رہنے گھ
تھے۔ ۲۸ رفر وری وجوج مرکودل کا دورہ پڑا۔ علاج کیلیے بناری لے جاکر بناری بندہ ہے تعورتی کے اپنتال میں واقع کیا تھی وقت میں میں واقع کی المید میں المید کی المید کو رسایت کے سازھے وی رسانت کے سازھے وی رسانت کے سازھے وی بے رسات فر بائی۔ لائی بڑا گاؤں لائی جہاں کے اساری کو قرب کے دولت فر بائی۔ لائی بڑا گاؤں لائی جہاں کے اساری کو تو فیل میں بوقع۔

(زاتی معلومات مناصرزیدی)

#### مرزامحر فيض آبادي

مرزاجمہ جناب محرملی الباشی فیض آبادی کے فرزند تھے۔ آپ سلطان العلماء سید محد صاحب (منتو فی ۱۲۸۴ء) کے خاص شاکر تھے۔

محضف الحجب من ان كى ايك كمّاب كا ذكر كياب السم الفار فى الساف الثلاث بالفرار". اليكن ورج الانهياء من است خود سلطان العلماء ك تسنيفات من شاركيا كياب - اس سلط من آقا فى بزرگ تيم افئ ف ايناخيال يون فعام كياب -

لعله كتية بإسم التلميذ لملاحظة بعض الجهات تقية كمالة كتب" الضربة التيدرية " بإسم تلميذ والأخر السيد حيذ الدين باقر شاوائعتوى التقارى \_ ( الذريعة جلد فبير ١٢ )

#### محرسيدرضوي

موادی سید گررضوی این موادی سید طی ضامن صاحب نید پی دشلع بارد بیکی سکت بیده است تصرر سال دشید ( مجمود) میں ایک بارایک صاحب نے مراسم عاشورا کوشی صاب سادا کتن بر میں بھالائے کی جمویز بیش کی تھی۔ اس کی رویس موادی سید گررضوی صاحب کا ایک بیجید و مشمون رسال کیمید جلد نہر ۸ نہر ۱۰ میں شائع بواقعا جس سان کی طبی کے باندی کا انداز و بوتا ہے۔

# محر ،سيد تشميري

ASA FLA

مولانا سيد توكي تشميري في بندوستان اوراس كي بعد الآل كي تعليم كل كرف كي وهدم ذين المحتلام ( كشمير ) بن قيام فرمايا اور قوم كوائية فيض ويركات مستفيد فرمايا - پيلي ايندگام بن مدرسه مشارج العلوم كي بنيا و والى اورائتها في ابتمام كي ساتھ ورس وقد رئيس كاسلس شروع كيا - شب وروز كي محت شاقد اور جائفتاني سے مدرسكوون وو في رات چوگئي ترقي وى - آپ سے فينياب وكر طلب مقامات پرجاكر فديب من كي تيلي واشا وت كرتے تھے -

٢٠روال ١٨ عاد(= ١٢ رئي ١٩٥٩ م) كورطت فر مائي

(الواد المنافس والبرا مادة على وع الزيادة إن

گاؤں گھری کو ایت وض بنالیا تقا۔ اور وہیں میم رہے۔ صدود (۱۹۸۸ وہی آپ کو مدرت الوامطین کا پہلے بھی کا بھی کا پہلے کیا بھیاں تقریباں تقریباں تقریباں تقریباں تقریباں تقریبا آٹھ سال رہے۔ پھروباں سے بلیدہ وہو کر بیزا گاؤں گھری والیس آگے۔ 1980 وہیں آپ کی ابلیہ نے انتقال کیا تو آپ بہت ذیاہ وہ متاثر ہوئے۔ آپ خود ملیل رہنے لگھ نے ۸۳ مرفر وری وہ مع کو کو الی کا دورہ پر الد ملائ کیلئے بنادی نے باکر بنازی بندہ یو نیورش کے ایستال میں وہ تھی کیا تھر کی الی موسیق (مطابق ۲۵ مرفری الی الیتال میں وہ تھی کی اس یہ نہ بول یہ نیا موسیق در مطابق ۲۵ مرفری الی وہ سے اس کا مرباری کو وہ میں الی جبال کا مرباری کو تھی سے الی الی جبال کا مرباری کو تھی میں الی میں الی جبال کا مرباری کی تو تھی میں الی میں الی جبال کا مرباری کی تو تھی ہو تھی

(دُوالِي معلومات، عاصرنديدي)

#### مرزامحر فيض آبادي

مرزا محدیث ب محرطی البائی فیش آبادی کے قرز کدھے۔ آپ ساطان العلماء مید محدصا ب (متوفی علامیاء) کے خاص شاگر ہے۔

محص الخب مي ان كي ايك كتاب كاذكر كياب المسلم القار في اتساف المحاف بالقرارا". الكن ورق الانهياء عن المصرف وسلطان العلماء كالقنيفات عن شاركيا كياب راس مطلط عن آقافي وذرك تعراق في انها خيال بوب كام كياب -

العله كتية. واسم القمية لملاحظة بعض الجهات تنبية كمان تركب الطربية الحيد ربية " واسم تلميذ والأخر السية تبيد الدين باقر شاوالتقوى التجاري \_ ( الذريعة بلدنيس ١٢ )

TIT!

دوالفنيفات كافكرمانا بـ (١) فنيا دالهدى (٢) منهائ العلاج سيد تدرساوب ك صافيز او بسريد يوسف صاحب شے جو آقائ برگام ك نام ب معروف تھے.

#### محدالموسوى بصفوى

الحاج مولاتا سيدهم الموسوى صفوى جامعه باب أعلم، بذكام (تشمير) كدرس اللي تقر آپ نے ٢ رمغر المطفر ١٣٨٦ ه (= ٢٣ رمئي ٢٣ يو) كورحلت فريائي (الجار عبد المسال مير ١٣٨٥ مير)

#### محر،سيد،امر موى

مولانا سیدمحد صاحب قبلہ مجتبہ، پڑتیل سید المداری (امروبیہ) کے مداری علیہ، قوی خدمات، محاس اخلاق ، تواضع وانکسار، اور روش خیالی کے نفوش موشین کے دلوں پر قبت میں۔ حجاز کا نفرنس کی صدارت

قاد کافرنس (دلی) کا دواجای جوآل افلیا شید کافرنس کرساتھ اپریل سے اور میں منطقہ دواقعان کے آپ معدر تھے۔ جتاب سیدا فار حسین صاحب جار جوی اس اجلاس میں شریک

900000000000000000000000000000000 dere later a الذرايد عي الناكانام يول كلمات جوراتستريد شاوقاضي يزوي ايزوي كي أببت عملوم موتات كذاب يزوك رشاوال تق يكن الدازه موتات كد بعد في كوكناد وآكرشاى وربارت وابت بو ك تقديدا في آب في سلطان مرقطب ثاء كام يا" تغير قطب ثاى في تغير آيات الاظام الكلى جم عثب قدرا عواج عن فارخ مو عقد الك دسالد مديث" ان الله المعمل التي الله المالية" كي شرح من لكما تما جس عدا الماله عُن قارعُ بوت تھے۔ ایک اور زمال قِل رمول صلم" مام فاک حق معرفتک" اور قول امير المونين " لوكثف المطاه لما الروت يقيمًا" كرويرو وقع من اليف في ما يا قار مي سيد تشميري آپ اوم ونب يول ب: سيدهم انت سيدميدى التن سيد ديدر الصلوى المشير ي الحر وي ـ آپ بڑ گام ( حقيم ) يمن موطن تھے۔آپ كے والد سيدمبدى صاحب عالم تھ (ان كا والمطلح الوادي ماتا ب المهراب في المرمضان ووجا مف وقات يالي ميد تعرب في معرشوال وي الدون عالمري عدود ما كووفات بالى ال

Scanned by TapScanner

مسجد باؤلی پٹنة بیٹی ش امامت صلوق کی قرصداری آخر حرک سنجائے دہ ۔ پٹنٹ مدرسطیمانیہ ش بجیٹیت مدرس اعلی تقریبات سمال درس و قرریس کے فرائش انجام دیتے رہے اور ۱۹۸۹ میں ریٹائز قربو گئے۔ مولانا کو علم ویک ہے ہے صد دلجی تھی۔ اس علم ہے متعلق حربی جائے والوں کے علاوہ آگریزی دان صاحبان علم ہے برابر غدا کرہ کرتے دھتے تھے۔ بہاد اسٹیٹ مدرسہ ابج کیشن پورڈ پٹنٹ کے ایک عرصہ تک تا مزد مجرد ہے۔ علیکڈ وسلم ہے نبوریٹٹی شن "شعبہ شیدہ بیزیات" کے متحق دے اور اسا تذہ کے تقرر کے لئے اکثر ویشتر اکسیرٹ کی حیثیت ہے بلائے جاتے دہے۔ وفات

آپ کو بچھ عرصہ سے قلب کے مرض کی شکایت تھی ۵ رفتے الاول ۱۳۱۷ھ مطابق ۲۲ رجولائی ۱۹۹۲ء کو آخری بارڈ اکثر کو دکھانے گئے لیکن مرض شدت اختیار کر چکا اتھا اچا <mark>تک</mark> فحیک 4 بے میچ حرکت قلب بند ہوگئی اور جال بھق ہو گئے۔

(١٤١٤ إليات الدينة)

#### محربن محمود الدبدار

ید اکبری دور کے صوفی منش شید تھے۔ ان کے والد محمود میاتی تھی کرتے تھے۔ اصلاً شیرازی تھے۔ جن سے شیرازی تھے اور ویں پیدا ہوئے اور ملم حاصل کیا۔ ان کے استادشاہ فتح اللہ شیرازی تھے۔ جن سے المبول نے معقولات اور اشراتی تصوف حاصل کیا۔ اور آخر کار ایک صوفی کی جیست سے مشہور ہوئے۔ جوانی میں بھانے رآئے اور علی عاول شاہ کے دریار میں رسوخ پیدا کیا۔ شاہ فتح اللہ شیرازی ایران سے بھانے رآئے ان کے قیام بھانے رہی وجدار نے شاہ فتح اللہ سے وہ اللی کی ایس برطیس جو ایران سے بھانے رآئے ان کے قیام بھانے رہی وجدار نے شاہ فتح اللہ سے وہ اللی کی تامی برطیس جو

عدان كاليان بكرة ب في الى موقع إلياضي ولين يرد وراور بادمعلومات زبانى خطيه مدارت ارشادفر ما القاجر به في كدبزارول كالمجن مدارت ارشادفر ما القاجر بالموق بي الياضي مركة الآراتقر يرخى كدبزارول كالمجن بمدتن كوش قداور برطرف سے تسيين وآفرين ك فلك شكاف نعرب بلند تھے۔ جب معزت مولانا فيد في انبدام بنت أبقي كا نشر كينجا ہے قام سامين كريدويكا كرد ب تھے۔ يدا يوش اعلان شيد كانفرنس كى تاريخ فيل اعلان شيد

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

تعانف

(۱) دسائل الشريعة (۲) وكائف الشيعه (٣) توراهين (٣) فقة القريقين (٥) قرق القريقين (١) المعول فسه (٤) مشرة كالمه و فيرو

(الجمن وكيف مادات وموشين اسلوريو في غير)

محر،سيد، عابدي

1997/1012

سيد تحد عابدي صاحب مولانا سيد تحر تميد صاحب كفر زند تق \_ آپ كې پيدائش تحد آباد گڼند هنلغ مئو يمن بو كې جبال آپ كه والدز قلي پور ب آ كرمتيم بوگ تق \_ كم حرى بى جي والدو كا انقال موگيا \_ هيقي خاله نے والدو كي طرح حيت وشفقت بخشي \_

ایتدائی تعلیم کے بعد" جامعہ جوادیہ" بناری میں دافل ہوئے جہاں سے فقر الا فاضل کی سند ماصل کی۔ اس کے بعد پشت کورنسٹ طبید کائی سے طب کی تعلیم حاصل کی تحراس کو پیشنیس بنایا۔ تعلیمی سلسلہ فتم ہوئے یہا ہے والدین آگوار کے ساتھ پشتر میں سکونٹ پذیر ہوگئے۔ اپنے والد کے بعد

rrr

# محد، عاملی بشمیری

-

HERMITER.

یاحدین گرخینی کرزند تھے۔ عالی ہے معلوم ہوتا ہے کہ ووجل عال کر ہے والے تھے اور شیخی ہے اور شیخی کے فرزند تھے۔ عالی ہے معلوم ہوتا ہے کہ ووجل عالی ہے اس الآ الی جلداول س ۱۳۸ میں ان کے لئے تکھیا ہے: " عالم وقاشل تھے۔ قلیہ اور سالح تھے اور شیخ بہائی کے معاصر تھے" آتا ہے برزگ تیرانی نے ان کا وہ اجازہ و رکھا تھا جو انہوں نے جائیہ اللہ این عبدالوحید جیلائی کے لئے والم والم میں کھیا تھا اور جس میں وہ شیخ بہائی ہے دوایت کرتے ہیں۔
معلیم میں کھیا تھا اور جس میں وہ شیخ بہائی ہے دوایت کرتے ہیں۔
معلیم میں کھیات افتیار کی تھی اور وہ ہیں رطانہ قربائی۔

طبقات اطام إهيد جلد فيم ص ١٥٠

### محر،سيدجو بنوري

1005-0/116

مولانا سید محد صاحب مولوی سید عطاصین کفرزند تھے۔ ابتدائی تعلیم منٹی سید علی حسن گلال پوری سے حاصل کی۔ بعدہ مولوی تعت علی صاحب سے شرح سلم اور رشید بینک پڑھا بجر آنسنؤ گئے جہاں مولوی سید محد ہادی، مرز امحد علی، سید محد امروہ توتی، مولانا علی اظہر نظام آیادی اور مولانا الصطی محد ابادی جے اساطین علم واوب سے کب فیض کیا۔ آخر بیش مفتی سید محد عماس سے درس لیا اور فقدہ صدیت

rr2

ایوان میں نہ پڑنے تھے تھے۔ مجروہ تھا پورے اٹھ گھر کے ۔ اور نظام شاہ کے مقرب ہے۔ جب شخ مسن مجنی دکن پہنچے تو و ہدارتے ان کی شاگر دی افقیار کی اور تصوف حاصل کیا۔ S.A.A. Rizvi, vol. 2. p. 205-206

خلاصة الترجمان كوانيوں نے عبدالرجم خان خاناں كئام بے تلما قبال سے انداز وہوتا بے كہ خاليا آخرش اس كے دريارے وابسة تھے۔ -

تسانف

ان كے صب و بل تصانف كا فرالذ رايد كى مختف جلدوں ميں ملائے۔ (۱) ارسائل المجطر بيد (۲) ارسائل العرفان يضمن مجموعات (۳) رسائل المعارف (۳) مختصرة خائر العقل السمى و وابر الاسراد (۵) الذوقيات المحقلية والمعقولات الذوق مختصر في و ۱۳ موبرة

(۱) رسالہ فی الوحید (۷) رقائق الحقائق (۸) فلاصة التر جمان فی تاویل خطرة البیان (میرے پاس اس کا ایک تلمی ٹسٹ ہے جوتار نام کشابت کے احتیارے دوسرا ہے لیکن کا تب نے آخر کا تصید وحذف کردیا ہے۔)

(۹) زبدة الوات فی علم الجور (۱۰) بجبل منظوم فی علم الحروف (۱۱) مراًة الحقائق فی شرح بیت کلشن داز (۱۳) الحشر ۱۶ الکامله فی بیان مشرع صفات می اکمل الاوصاف (۱۳) مقاییة الامکان مطبوع فی مجله بعلمر ان آمائے بزرگ نے طبقات کے ۱۵۔۵۱۲ پر

مره بالوتسانيف كالأركياب.

rrs

رضاصاحب،مولا ناسيدمتعب على صاحب،اورمولا ناسيدمنفررطى ساحب ييدنا مورهفرات شال ين -

۱۳۱۸ (=۲-۱۸۵۱) من وفات بالی اورائ بدریز گوارک بیلوش ولوگ بالی شد وفن بوئ مفتی سید تر مباس صاحب نے "آبارز واقعیم" سے تاریخ تکال۔

o Hell c

تين بينے تھے سيدهلى سيدمبدى اور سيد محكرى۔ دويٹياں تھيں جو بدى ريگم اور چھوٹى يگم كہلاتی تھيں۔

(الجاء)اكت المقامالة ديو علد ليراء)

محماثرف

مولانا مولوی محداشرف صاحب منطع راولینڈی میں کمیں پراہل سنت کے وی المار تھے اور شیعوں کے شدید مخالف ۔ تو فیق الی نے راہنمائی کی اور نہ صرف خود شیعہ ہوئے بلک اپنے وطظ وہیجت سے بہت سے دوسرے افراد کو بھی راونق پرالائے۔

(رمال المين المواهدة المالي المالي

کے آخری مدارج سیداعلماء سید سین علین مکان کی رہنمائی عمل ملے سکے۔ اورا جاز و کمسلوق کے آ آئے۔ اے علاج میں جو نیورش انتقال کیا قبر پر ایک پھر اگا ہوا ہے۔ (۱۰ رفاحہ عمر شرفائے جو نیدرازسدا قال احد)

محرسيد، ديو كنفسياوي

ون بارها می المنظام المنظل و يو تفعياوى (و يمن احوال) كفرز مد تقد ملوم دينه كالمنظل المنظل ا

تسانيب

ایک رسال فضیلت جعدد شاعت بر نکساتھا۔ جو دراہ کے پاس محفوظ فدر ہا۔ پکواور تصنیف کردہ رسائے دعیروز ماند کی تذریع کے ۔الذریع جلد ۱۱ ش آپ کی ایک تصنیف الرسم المصقول فی خوراعداء الرسول کا ذکر مثالب۔

آپ كىشاكردون شى مولاغ كرم سين صاحب رقى يورى (و يكف احوال) مولاع سن

20000000000

FFA

پوری تشریف لاے تومستقل طورے درس وقد رایس کا سلسد جاری رہا۔ یہ بزرگوارمرد مقدس اور فحر خواہ تھے۔ گرافسوں مرحوم نے ہیندیں ا۲۹ اھانقال فرمایا" (تذکروس ۲۲۰) آپسيدسوال حين صاحب كفائدان عقيد

( تذكروب بهاوذاتي معلومات)

## محد باقر ،سید شمیری

سدفر باقر عشيري كالمي كوباقرشاه كام عنام عديكاراجا تاقعاء الذريد جلدفم ما يس الن كى ایک کتاب السیف الصارم کا ذکر ملتا ہے جوبعض سادات تشمیری سیادت کے اثبات میں اردو میں لکھی گئی پھرفاری میں لا ہور میں چھیں۔

ان كى مزيددوكا بين بن: (١) دفع المغالط (٢) مضاريب المشلكين -الذريد كيعض جلول سے اعدازہ ہوتا ہے كديد كتابين فيخ حسين نورى طبرى (متونى ١٣٢٠ه) كوقت ين كلى كئير -ال عباقر شاه كاعبد معين كرف ين آساني بوعتى ب-

### محرباقر بسيد

سد محد باقر جناب غفران مآب كے تلافدہ من تھے۔آپ عالم ہونے كرماتھ ساتھ خطيب بھی تھے سیدمبدی نجف علی نے تذکرة العلماء الحققين ميں آپ كاوصاف يول لكھ ييں \_" العالم الفاضل الكامل، الا درع الأقلي"

(الكرام البررة جلداول ١٩٦٠ ترة العلماء التنظين)

مدود ۲ - ۱۱ مر ۱۹۱۳ م

פישום/שתפוים

مولوی سد محر اکبر صاحب، سید صاحب حسین ابن سید علی بخش کے بڑے صاحبز ادے تح يكويال يورضلع سارن (اب سيوان) وطن تها ابتدائي تعليم وطن مين بهوئي، پھر مدرسدايمانيد (بنارس) میں داخل ہوئے جہاں آپ کے پچاز او بھائی جناب مولوی سید ناظر حسن صاحب (ویکھنے احوال ) مدرس اعلی تھے۔ وہاں سے مولوی کا احتمان پاس کرنے کے بعد آپ مدرسہ سلیمانید (پشد) آئے جیاں سے عالم کا احتمان ماس کیا۔

ال کے بعد، وقف محسنہ ، بگلی، سے بطور ذاکر نسلک ہوئے۔ بچریدرسہ عالیہ (کلکتہ) میں بیڈمولوی مقررہوئے۔ریٹائرمن کے بعد امامیہ مجد (گیا، بہار) میں پیشمازی کے فرائض انجام وئے۔ آخر عرض اپنی سرال، موضع بھیک بور (ضلع سارن) میں مقیم رہے جہال امامت جعد وجماعت آپ متعلق ری وی ۱۹۸۴ میں سرسال سے زیادہ کی عربی انقال فرمایا (زاتی معلومات)

سيدمحرامين كويال يوري

IALT/ITA

مولوی سیر محداین صاحب کو پال پوشلع سارن کے باشدے تھے فخر اککما وسیوعلی اظہر مجونی کے حال میں تذکرہ بے بہا میں درج ہے کہ" مگر جب سے مولوی محد امین صاحب کو یال

کرے سلطان البداری گئے۔ وہاں سے صدرااا فاضل کیا اور ای کے ساتھ الجاب کے تعدیق سے مواوی فاضل کی سندھاصل کی۔ اور ارواصلات اور ماہنا مداصلات کے امور میں وہشروٹ سے بھی اپنے والد ماجد کا ہاتھ وہنا تے تھے اور ان کے افغال کے جعد تو ہالکل کے وقعیاس جہاز کو چلاتے رہے کہ تھے۔

ان کے دونوں چھوٹے بھائی،سید آغاجھفر اور سیدرشی جھفر صاحبان اجرت کرے کرا پی جلے گئے تھے۔

مربی سے اردو میں ترجر میں آبیں کمال مہارت ماسل تھی۔ اور متحد وضیم آنابوں کے
ترجے انھوں نے الی شند اور روان اردوش کے کہ وو ترجر آبیں بلاستقل آندیف معلوم ہوتے
جی دان میں وین حق (ترجر الرابعات)، تدائے عدالت انسانی (ترجر صوت العدالة
الانسانیة ) وبلالته انسین (ترجر بلائد انسین) فاص طور سے قابل وکر جی دوسر سے ترجے جی:
مدید سے دین تک ماری کر بائے معلی وجناب عائش والک اشتر ویشام میں افکام بیٹم تمار وہ میں دعنی وجداللہ میں میں افکام بیٹم تمار وہ کی اس

مر باقر شاه اسید

الان الله المنظاء

ا

محرباقر اسيدانقوي

متامرانا او مقارمانا او مقارمانا المتارة المارة) كفرونداكر في مقرارا المارة المرافق المرتفي المرتفي المرتفع ا

( 1964 From 1 1966)

P0000000000

FIFE

- 二日はこかいの

دم بدم مام شیخی کا بین تالد ب یکنتری الی قلم آدی باقر (۲۳۳ در شیخی) سال جری کی زبان مدی و تاکرتی ب مین اصلاح تعایرة ل که باقر (۲۰ ۱۳ در جری)

(الدجار الاراك ميديكران الله مطوات)

## محمر باتی ، ملا ، جو نپوری

....

ملاقد باقی مفتی ایوالبقاء کے فرزنداور" سرتان علاء مقام دسران محماء اعلام" تھے۔ شرول سے اٹجی روحافی تربیت کی طرف بہت راغب تھے اور ملائھو دجو نپوری سے وابستہ ہو گئے۔ استاد نے مجی جب ایک ڈبین اور ذکی شاگر دیلیا تو ان کی تعلیم اور تربیت کی طرف ہوری توجد کی اور تھوڑی ہی مدت میں ملائھر باتی ملائھود کے مرتاض شاگر دول میں ہوگے۔

ملاحمہ باتی معقولات اور منقولات فصوصار یا منی اور حکمت کے ماہر تھے اور منفاض کی آخر تا اتنی سلاست وشیر بی کے ساتھ کرتے تھے کہ سب لوگ ہمدتن گوش ہو جائے تھے۔ آخر کار'' فاضل جو ٹیور کی'' کے لقب سے مشہور ہوئے۔

تعانيف

لماعد إلى في ووكاي وكاريموري: (١) آواب إقيد ورشرع شريفيه (٢) المعاث إليه

یں افسات رائ تی جال دوالطوط کے جوابات لکھنے ہی معروف رہتے تھے۔ آپ بری محنت سے زندگی اور ان دند ب کی خدمت انجام رہتے رہے۔

رسال اصلاح اور اوارة اصلاح كتام فرائض (تعنيف وتاليف سے كر ير چول كو پردة اك كرتے تك) كى فرمدوارى تجاان كى كا عرص يرخى كيونك مالى دشواريوں كر سب كى كارى كى كا تقرر ممكن فيس تقار اس مسلس محنت شاق كا بتير بيدوا كر تكردتى نے ساتھ مجوز تا شروح كرديا۔

ایک مرجہ قیام گھٹو کے دوران قائح کا بلا عملہ ہوا۔ کی مرجوں کے طاب ہے تھوڑ اافاقہ ہوا تو پر بدستورسائی کام بھی مشغول ہو گئے اور طاب بھی چان دہا۔ رفتہ رفتہ صاحب فراش ہو گئے ہائی بلا پر پیشر اور دیگر شکایات کے ساتھ گردے کی تکلیف بھی لائی تھی۔ پٹنے بھی زیر طاب قربائی اور دومرے دوز ۱۲ رشعبان جو جانے ہا درجون جمال موصرف ۱۲ سال کی عربی رطات فربائی اور دومرے دوز کھوے میں آن ہوئے۔

مولانا نے شیخی سند ایجاد کیا جس کی اہتدا شہادت شیخی ہے رکھی۔ جب اُنھوں نے اصلاح عمی چھڑی شاکا کرنا شروع کیا تو اس عمل شیخی سنکا کا لم بھی رکھا اور ای مناسبت سے چھڑی کا نام شیخی چھڑی رکھا۔

موالا تا في موالا تا في الله يقي الله ياد كار تجويد ولدار حيد رصاحب (بلت) كى ابليدين.
حكن قفا كدر سالة اصلاح آپ ك بعد بند و و جاتا يكن آپ كى آمنا يكل كرت و ي آپ ك يم علم دوست موالا تا سيد تحد باقر جوراى في رساله كاقع و فتق الهية باقحول مي في اليا اور ان ك حاجز او ب موالا تا سيد تحد جايد جوراى اب مديريت اصلاح كر أكف انجام و ب رب ين. في اجم الله في الجزار موالا تا سيد تحد جايد جوراى اب خورت كى تاريخ و فات حيني اور تجرى سنول

محرتقي تشميري

ملائور تقی جناب ملاا حمطی این ملائور علی بادشاہ تھے۔ اورائے اب وجد کی طرح زیور علم وضل ہے آرات تھے۔ صاحب نبوم السماء کے وقت تک ملائور تقی کی اولا وموجود تھی۔

(ナールでしかはなりかけいがいかりでしかんだ)

محرتقي مرزا

معیارالعلمها پر مولا تامرزا گورتی این شمس العلمها پر مولا تامرزا گورخی گفتنو ش پیدا ہوئے۔ جب شاہ اور در داجد علی شاہ مرحوم گرفتار ہوکر کلکتہ لائے گئے اور نمیا برج ش سکونت اختیار کی قو مولا تامرزا تکد تقی کو بلوا یا اور اپنے ساتھ ضیا برج ش میں دہنے کی فر مایش کی ، چنا نچے مولا تا و بیں سکونت پذیر ہوگئے۔ کئی بارنج بیت اللہ سے شرف ہوئے۔

ممنی ش شیعیت کوفروغ دیا۔ایک دن میں مین قوم کے گیارہ سوافر ادکو ندہب شیعہ ہے روشاس کیا (السوس کداس کی تفصیل معلوم نہ ہوگل)

آپ کے تین صاحبر ادے اور دوصاحبر اویال تھیں۔ (مرز آبھی مین النام اللہ عن افغی) يهافرة فيليد

٠٩٠٨ الله الله ١٩٨١ هـ (١٩٠٥ و الله ١٩٠٥ ) أو آب كى وفات بوكى وال الله تركله ملتى تناج نورش بلندى برموجود بـ.

( علماند اوم السماء جلداول - ١٠ - ١٩)

المريشر وسيد وعشروى

وير مالويا.

علیم سید تر بین صاحب این سید ظام حنین صاحب کی ولادت اپند وطن عشری شروشلع سارن (بهار) شراه ۱۸۹۱ ه (= ۱۸ - ۱۳ ) می دونی وطن شرارد داور فاری کی ابتدائی تعلیم حاصل کرئے کے بعد کچھو و میں عربی کی تعلیم حاصل کی۔ یا تی سال بعد دہاں سے تکھنٹو جا کرسلطان المداری میں داخل دو بات سے تعلیم عشر کے اعتماد سے فاصل حیل یوجی۔

قار ش التحسيل ہونے کے بعد تحصیل دیوریا میں آئے دی سال تک مطب کیا اور ساتھ ہی البیت دونوں میوریا میں اسلامی مطاب کیا اور ساتھ ہی البیت دونوں مجمود کی اور مولانا سید حالد حمین عشروی اور مولانا سید التحیار البحثین صاحب (صند الله قاض دواحظ) کی سرپری کرتے رہے۔ اہل وطن کے اصرار پراور بعض مشروریات کے ویشی نظر دیوریا کا قیام ترک کرتے اپنے گاؤں کے قریب تھید حمن پورو میں مطب کرتے گے۔ اوجھ میں اور دیا کرتے ہے۔

(وَالِّي معلومات المجمن وقليله ساوات وموشين كولذن يو في غير)

rr2

الم جعز ، سد

مولانائے ۱۳۳۸ر بی الگائی ۱<u>۳۸۳ (= ۲ رخبر ۱۳۹۳ء) کوال دار فائی سے عالم ب</u>قا کی طرف رحلت فرمانی۔

(الجواديد فيرا البراهمان ورمشان ١٦٠٠ه) هـ)

محدجعفر، ملا،شریف دیوجی

1444/#+1

149-/1-49

الحان طافی بعظم شریف دیوی ک دادا دیوی بهال ای خوج گردپ کے لیڈر تھے۔ جس نے الے دار میں تعلم کھا آ ما خان (ادل) سے تعلق تعلق کیا۔ اس انفصال کے بتیج میں پکور کا اصیا داڑ مین اور کماری میں خوجہ شیعد اٹنا عشری جماعتیں وجود میں آ کیں۔ ان کے صاحبز ادے، شریف

د ایو بی اس تو کید میں اپنے والد کے وست راست تھے۔ شریف و بی بی کے دو بیٹے ہوئے۔ ملاحمہ جعفراور ملاحسین ، دونوں بھائی زنجار میں رہے تھے۔ جب مدرستہ الواعظین قائم ہوااور ۱۹۳۶ء ۔۔
حضرات واعظین افرایقہ جسے جانے گئے تو ان واعظین کا ساراا انتظام اور پروگرام آئیں بھائیوں کے باتھوں میں تھا۔ ملاحمہ جعفر شریف نے اپنے شوق اور اپنی محنت ہادود، قاری اور مربی (اور آخری حمر میں اگریزی بھی) سیکو باتھی ۔ انہوں نے ایک بہت بڑا کتب خانہ قاری ، حربی اور اردو کتا یوں کا مہیا کرلیا تھا جواب بلال مسلم شن (کینیا) کے قیفے ہیں ہے۔

ملا تی جعفر مرحوم نے قوم کی اصلاح کے خیال سے مشرقی افریقہ سے لکر ما ڈاگا سکر تک ا اپنے شریق سے کی مرحبہ دورہ کیا۔ گراتی زبان میں کہیں پڑھتے تھے البتہ مصالب اددویں پڑھتے سے اس بناہ پران کی کہیں زیادہ مور قرابت ہوتی تھیں اور وحظ دھیجت کا اثر مور قراب اور بچوں تک پر بہت زیادہ ہوتا تھا۔ ان کی اصلاحی جدوجہ تقریر وال تک محدود وزش تھی۔ بلکہ خوجہ قوم کی ضروریا ہے کے بیش نظر گراتی زبان میں چھییں ۲۹ سماجی کلعیں اور چھوا کمیں ان میں سے جاروری کا جی (شعر میلائے اور میلائے کا دوری کا جی (شعر میلائے اور میلائے کا دوری کا جی رویت بلال ان میں اور کی ان میں اور کی تعلق میں کی تعلق م

ما محرجعفر و۱۸۸۱ء (= ٢ وساله) عن زنجار عن پيدا بوع- اور وي پر شاهاء (افع اله) عن دای جند بوع تجارت كاسلط عن ايك و مدتك مباسا ( كفيا) عن محل عقم رب جبال خاجي تعليم كي فوض عدر مدفع صين قائم كيا۔

راقم الحروف ان كى ما قات ومبر وهوا وين" الليث آف باع" وى جهاد يرمياسا

ير جعز ، سد

مولاناتے علم رقع النائی عرب ال = مرحبر عرب اور ان دار قائی سے عالم بناکی طرف روائ فی ۔

(الجواد جلد فير ١٩ فير المعيان ورمضان ١٨٣٠ه)

محرجعفر، ملا،شريف ديوجي

1444 F .T

1940/11/20

700000000000

الحان ما محد جعفر شریف و بیتی کے داداد بوتی جمال ال خوج گردپ کے لیڈر تھے۔ جس فری محمل کھا آ ما خان (اول) کے قطع تعلق کیا۔ اس انفسال کے بیٹیج بیں پکور کا ضیاداڑ میتی اور کرایتی بیس خوج شید اٹنا عشری جماعتیں وجود بیس آ کیں۔ ان کے صاحبز ادے، شریف

ما محد جعفر و۱۸۸ (= ٢ وسال ) عن زنجار عن بيدا بوع - اور وي بي شاقاء (وع ١١٠) عن راى جن بوع - تجارت كرسلط عن ايك و مد تك مهاسا (كيفيا) عن محى تقيم رب جهال خاجی تعلیم كی فوض من مدرسر فيض حين قائم كيا -

راقم الحروف الان كى ما تاك ومبر 1909 مثل" الليث آف باع" الى جال يماما

غليم

\*\*\*\*\*

عزیز الکھنٹو کی نے آپ کے لئے یہ الفاظ کلے ہیں۔ "مولوی علیم سید محمد جواد صاحب
میکیو رکی مفتی صاحب کے شاگر داور نہایت جیدالاستعداد ہے۔ کی گٹا ٹیں ان کی آتفیف ہیں۔ ایک
مثنوی مجمی نظم فر بائی جومعارف دف کا گنجید ہے۔ مفتی صاحب قبلہ انہیں بہت دوست رکھتے ہے۔"
اور کی تخریرے یہ چائی ہے کہ آپ کی گٹایوں کے مصنف ہے۔ انسوس ایہ ہے کہ راقم
الحروف کو ان کی کسی آتفیف کا نام تک معلوم نہیں ہو کا البتہ مثنوی میں اتفاق سے بھے دستیاب ہوگئی
ہے جوفاری بیں ہے۔

اور زیجارے درمیان چند تھنوں کے لئے ہوئی۔ مرحوم الجواد میں بیرے مضامین پڑھتے رہے تھے۔ اور جب میں نے اینانام بتایا تو انجائی عبت اور احرام سے طے۔ اس کے بعد قط وکتابت کا سلسلہ شروع ایمان تک کرچند محمول کے بعد ان کی موت نے دوباب می بند کردیا۔

ملاصاحب مرجوم نے ایک میٹا اور ایک بٹی یادگار میموزی۔ بٹی ملاا معترفی ام۔ ام۔ جعفر ک والدہ بیں اور بینے صابق فلی جم جعفر شریف مرجوم تھے جو میرے گیرے دوست اور بلال مسلم مشن کے موسسین میں تھے۔ اور جب فروشہ سے مہاسا چلے گئے تو بلال مسلم مشن (کینیا) کی روح رواں تھ

(حاتى طى وجعفراه رؤاتى معلومات)

محرجواد، سير بهيكوري

MOTESTER

-1911/21179

پر بینزگار تھے۔ ۱۸ رشوال ۱۲۴۰ (= ۵ رجون ۱۸۴۵) ش پیدا ہوئے۔ اپنے والد علام سے کتب ورسی مختصرات ومطولات کا ورس لیا۔ اور حجیل علوم علاء حرب وقتم سے بازیان کی وزیارات فر مائی۔ علوم ریاضی کو مولانا غلام حسن رشال جو نیوری سے پارچھیل تک پرونچایا۔ چونگر علوم ریاضی ش آپ کو بہت اشہاک قداس کئے اس علم کی تحقیق کی فرض سے آپ ۱۸۹ ادیس بوروپ کے اور دیاں سے علاء سے ریاضیات کے مشکلات کومل کیا۔

تقوی کا بید عالم تھا کہ جو کی ختک دونیاں نے کرائدن گئے اور جب تک وہاں مقیم رہے ای ختک دوئی پر پسر کی ۔ آخر عر تک درس و قد رئیس اور تھنیف کتب درسائل بیس معروف رہے اور خدمت طلق مجی کرتے رہے۔ آپ کے تصانیف کیٹر و بیس کوئی مجی کتاب زیادہ مشہور نہ ہوگی ۔ آپ کی قبر کچکا وال صلح جو نیودیس ہے

(はらいはないのうしといいないというからしたいないないからかいかいかい

## مرزامحمحس نجفي

میرے نانا جناب مولوی تکیم سیدزین العابدین صاحب طاب ثر اوقے ایک رسال افتا کے اسلام القالم اللہ میں العام القالم الطریق العاق اللہ محال جسار دویش کرے شائع کرایا تھا۔ اس کا نام تھا تر جسطریق العاق اور دوسرانام تھا صراط العاق ۔

یہ زجر" حب فرمائش مو والا فاصل الکرام مرقع شعارُ اسلام بناب مرزا تو حسن فجنی دامت معالیہ" کیا گیا تھا۔ یوکون بزرگوار تھے پیدیس چانا۔ ترجمہ کا اللہ علی چھیا تھا۔ اس وقت اس نام کے کون سے بزرگ تھسٹویا شیمی و ناش تھے؟

پشته کا قیام پشته کا قیام فرزند برناب مشتر مرس ما ب او برخ گرار ابلاشاه هیم آبادی اور مولانا سید محرا امتفاص بدوزیر ویناب کتی احد ارشاه شاه هیم آبادی کی وه فرزیس جن پر تشوف کارنگ عالب ہے وہ تحکیم محر جواد ساحب کی مجرے کا اثر تقا۔ وقات آپ کی وفات ۸ مدر شالا ول ۲۳۴ دکوآپ کے دلمن مالوف میں بورکی (۱۹۲۱ء)

### مر حن سيد

مولاناسيد توسن صاحب سيد العلما وسيد مين عليين مكان كمثا أردول من الحلى بإيد كما علم بإيد كالم والمعلق الخير" مالم وقاصل تقد ورية الانبيا وش الن كيك بيدالقاب كلص بين و" العالم بالقير والمحقق الخير" (ورعد الانبياء الدرام البروع بلداول ٢٠٠٣)

و الماول)

IATA/IFF.

مولانا ماتی سد ترصن صاحب، مولانا سدگفش ملی (و کھے احوال) کے جمولے فرز کد سے۔ آپ بلیل الرجب اورسلم اخبوت مالم سے قصوصاً علم ریاض میں ایک تھے۔ بدے ای مقل اور

ror

# . محرحسين ،سيدفيض آبادي

آپ کے جاکھیں ہوئے مولانا سیدطی احمد صاحب جو زید واقع کی، عیادت گذاری اور بابندی وشع میں شمرت تا مدر کھتا تھے۔

(الجواداكت والماء)

## محرصين اسيد

رمال عبد ( مجود) جدنبر ۸ نبر ۱۲ ش مولوی میدگد حسین صاحب کانام بیشیت و هماز مند را ( یکی ) مانا ب

رسالة شيد (ماه جون الاقله) عن ايك موادى مرمسين صاحب كى تاب ها أق الها أق كا ترجمه (بالانساط) چها ب رمعلونيين بيده ونول مليحد وخصيتين حمين يا ايك -

محرصن مرزاء وبلي

ناعد تاما وهداء

-1910/ager

آپ نے عامر بھالاول ۱۳۳۳ه (=۲/فروری ۱۹۱۵ه) کو ۱۲ سال کی مرش وفات یائی ای حلب سے آپ کی وفاوت صور که ۱۳۱۸ می (=۱۸۵۰) ش او کی اوگی۔

م حسين اسيد

جناب موادا مدور مسين صاحب پندے دینے والے تھے۔آل الله یاشید کا نفولس کے الحال میں ہو کھنے میں ماری میں اجلاس می اجلاس والا میں ہو کھنے ماہرین کی شیعد دینیات کا نصاب مرجب کرنے کے لئے بعائی گئی تھی اس میں آپ کا بھی نام تھا۔ آپ کا بھی نام تھا۔

(المارشيد فحواجون والارم)

000000000

רשר

ملاصاحب پرای شعرکون کرایبااثر ہوا کہ کہاروں کو تھم دیا کہ پاگل جو نیوروائی لے پیش ۔ لوگوں نے بہت منت وزاری کی گر کوئی اثر نہ ہوا۔ وہ جو نیوروائی آگے اور جب تک زندور ہے تو کل اور کوشیشی میں زندگی گذاردی

۲۸ رشوال ۱۲۸ اه اورجو بیدرای بروز جدرای جنت بو نیاورجو نیدرش دفن بو عـــ (مخل نیم اسار مبلد اول ۱۲-۱۳)

محد حدر،سید، کچھوی

igry/irra

مولاتا سيد ترجيد رصاحب جناب فخر التكما وسيد على اظهر صاحب مجهو كى ك دوسر فرز لا في آپ كا علم عمل سے جم آب في اور دين ولمت كے دفاع عن سيو جر رہ جم قيد آپ في عبد التحكور كا كوروى كے ناول ميكيز وست الحسين كے جواب عن جواب شر دائلان اللہ الثاعت كے لئے عبد التحكور كر رسالد البخم كے مقابلہ عن الفتس ( اجوار ) اكالنا شروع كيا۔ اب آپ كاراد و فقاكد تحقد التقام ميكا جواب اردوز بان عن ( جو جامع كر مخترجو ) الفتس عن شائع كيا جائے چنا نچا ال كے مقابلہ على الله مكان سق جي كر قار كين تك ينتي ہے تھے۔ ليكن شديد علالت نے كام آگے بند ہے ندویا۔ علالت كے باوجود على اور ذبي خدمات عن حق الام كان ستى بيدا تو نے ندوى

P32

### 

و المسين مرزا

دسال کاملان (محرم عمر الدین شائع شده سکریزی در سر کافلید کی جس ر پورٹ کا ذکر صوال تاسید فخر الدین صاحب کے حالات بھی آپکا ہے، اس رپورٹ بھی جیز ہواں نام '' مولوی مرز ا محرصین صاحب مجمع وعوادر مشید مقدس ''کاہے۔

محرحفيظ، ملا، جو نبوري

---/----

ما تو حقظ ، ختی سید مبارک جو توری (و یکھے احوال) کے بیتیج تھے۔ انہوں نے اول سے
آخر تک اپنے تم نامدارے علوم حاصل کے تھوڑے ہی دور میں ان کی فضیلت کا شہر وآ سان تک بھی

گیا۔ حبادت الی اور تقوی میں بے حق تھے۔ وری وقد رئیں اور ذکر الی کے طلاو و دنیا کے کسی کام

سے دلی تھی۔ جب ان کے علم فضل اور دوحانیت کا جرچاشہنٹا واور مگ ذیب کے کا نول تک پہنچا توشینٹاہ نے ان کو بلانے کے لئے بار بار دحوت نامے بیسے جین یہاں سے اٹکار کے طاوہ کو کی جواب تہ طار آخر کار آیک مصاحب خاص کو جو تیو دیجیا گیا جس نے یہ بزار منت و ماجت ملا محمد حقیظ کو د لی

بانے کے نے رائتی کر لیا۔ جب ان کی پاکی د بلی میں وافل ہوری تھی اٹھا تھا ایک مردہ پان کسا کے

ہوئے جس کے دانت با انداز تھم کی جو ہوئے جسے ملی مردان خال کی نہر میں پڑا ہوا تھا۔ ایک آز او

مشرب فقیر نے ملا کی پاکی کر کر ای مردے کی طرف اشارہ کرتے ہوئے بیشعر پڑھا

مشرب فقیر نے ملا کی پاکی کر کر ای مردے کی طرف اشارہ کرتے ہوئے بیشعر پڑھا

مشرب فقیر نے ملا کی پاکی گر کر ای مردے کی طرف اشارہ کرتے ہوئے بیشعر پڑھا

وے۔آپ کا تاریخی نام "سیومظفر" ہدرے اللہ کے دوراول کے قار فی السیل صفرات میں تق مولا تاسير محمد بارون صاحب كيساقيون ش تقديقي بايد بهت باند تفااه رؤ بانت وجودت في ب مثال على \_ أيكوجوا جاز ومركار فيم العلماء في عطافر ما القاوة آب كى ليات وما احيت يركافي روتني والآب،آب يور في بيان اور بالر خطيب عد مصائب ال طرز يدي عد الحاكم بوقف مناثر ہوتا تھا۔ بیان میں اصلاق پہلونمایاں رہتا تھا۔ بھین ای ے آپ کو تماز ومبادت اور محاوت قرآن كاشوق قلااور مرك ساته ساته آفؤى اوراؤر خروحتا كما يبال تك كوقد يم زمات ك علاء

آب كى سحت بميشر شراب رعى داختلاج قلب اور فراس في فرساته من جود اس الله كسى تصنيف كى نوبت ندآكى، جهال بكونكستاشروع كيادوران مرشروع ووكيااور ووتري الكمل روكل-البتداردورم في اورقاري كقصا كدنهايت مضمون في اورمور وق تحد

مقدمين كي تصور أظر كسائة بالي تقى -

متاز الافاضل كرنے كے بعد جناب سيونلي احدصاحب رئيس اوردنگ آ بادشلع باعد شرك يبان قدريس ك الخروان ك كار كان كا كارون وبان قيام كيا قا كدمولانا سيدو كي حن صاحب وكل يورى في افي نيابت ك لئ يند باليادر بادشاد فواب مرحوم كى مركار عصوس بوك ينتك مؤشن آب كرويده تصاورات فود جي وبال مانوس بو ك تصرّر وبال كي آب و بواموافق شاكي اس لئے پنتھوڑ کر مراور گے۔ آباد والی آگئے۔ وہاں سے مدر عالیدرا مورش بطور مدال مقرد موے اور آخر مرک ویں رے۔

( كويمنور الجي كلان يوكي في

مرحدر، شخ شرتيليغ ,13A3 611-9 مولانا في الدريدات واحظ منظل مرادا بادك بي والعدد مدرد كاللميد ے متاز الافاضل كرنے كے بعد عدرت الوامطين عن وافل بوئ اور وبال ع قار في بوكر يہلے مدرت الواعظين كي طرف إوراس كر بعدة اتى طور يرتبلني دور في كرت رب اس بليط من بندوستان كربت سے بيخ مقامات يا محل يتج اور ان تبليق صعورة ل كى وجد يقوم في تركيلي كا مولانا تد حدر صاحب كي تقرير ب مد دليب اور دليديد موتى تقى موقع على يرمناب اشعار كاستعال كرت من فروجي أيك باكمال شام تصاور كمال قلص كرت تف جب سر عقل در بوایک مرصة كاشل فازى آباد عل وهمازى اور قدريس ك

قرائض انجام دية رب كل ماوى عالت كي بعدد الى اجل كوليك كبار (الجراريلدنير ومردور بداق الألي ويالي)

محدداؤر،سيد، زنگي يور

HALL GIFAR

مولانا سيد أو داؤد صاحب زقى إورش المرجب ١٢٩٣ و (= جولال ١٨٤٧ م) كويدا

### 3.11.2

1519 6 HAT

مولوی عمر راتی ، طاعمر حفیظ جو نیوری (و یکھے احمال) کے نیرو تھے۔ شروع علی اپنے
جدامجد استفاد و کیا۔ ان کے انقال کے بعد وہ سرے علماء کے سامنے زائو نے ادب تبد کیا۔ تعوالی
علامت عمل فارغ الحسیل ہوگئے۔ علمائے جو نیور کے سرتائ تھے۔ تمام علوم حصارف یہ جیور ماسل آفا
اور برقن عمل وری ویتے تھے۔ البتہ فقد اور اصول فقہ عمل فیرمعمولی مبارت تھی اور ای وجہ الفقہ
المقباء کے لقب سے مضہور تھے۔ تو کل علی اللہ اور و نیا ہے ب نیازی آخری مدیک تھی۔ پوری زعم کی
وری و قدر ایک اور ترکیفس عمل گذاروی۔ آپ کوشا عربی کا بھی و وقی قدا۔

عارد فظ الثانى الراج (= ٢٠ مراكت والميلاء) كواس عالم قانى سے رفعت اور قاور فيض اباد عمل قاضى غلام مصطف ك باغ عمل فرن اوك -

(عمل جواس بلد اص ١١)

## مرورويش ميد، جو پنوري

150-600

ما تدورو فیش زیدی سید اور مفتی تاقد (جو نیور) کے ساوات کے مورث اعلی تھے۔ آپ کا سلسلائٹ کا رواسطوں سے امام زین العابد بن علیہ السلام تک پہنچنا ہے۔ ان کے اجداد میں سید راوالقرح واسطی نے پینگیز مال کے حملوں کے زمانے میں شرواسط (عراق) سے جماگ کر موقع جمن پورٹیں سکونت اختیار کی۔ ملامحہ ورویش ای فائدان میں وہیں پیدا ہوئے۔

ما محد درویش من شعور تک پیچاق تخصیل علم کے جذب نے جو نیود بہ بچایا جہاں فی الملک مبادک فیر اللہ علیہ کا الملک مبادک فیر اللہ کا مور کے نامور مبادک فیر اللہ کی خاتا و میں مقیم ہوئے استاد الملک ما محد الفضل سے تمام علوم کی تحصیل کرے نامور علاء دفضل میں فاردوں نے کے بیادی مرطب کو تعلیم دینے میں گذاردی۔ و نیادی تمائش اور جادوم مم کی طرف کھی تا جدیدی۔

زمان کا اب علی شرایک دات کتاب پڑھنے خودگی طاری ہوئی اور طامحد درویش کے لیسو
چرائے گی اور پڑ گئے۔ لیکن آگ کا کوئی افر ان کے بالوں پر ند ہوا۔ افقا کا شخ مبارک فیز نے ہی ماجرا
اپٹی آتھوں سے دیکھا اور طامحد درویش کی عالی نسبی کا یقین ہوگیا کیونگہ" آتش دوز نے مبادات پر حرام
ہے" تھا وکتابت کے ذریعے ان کے ملسلہ کسب کی مزید تحقیق وکٹیش کی اور مطمئن ہوگر اپٹی بٹی طامحہ
درویش سے بیاودی۔

آخر کار ملائد درولش فے خواجہ مر کے قلد میں سکونت افتیار کی جہاں ان کی اولاد آج بھی موجود ہے۔ اوردو ملاق ملتی قل کہلاتا ہے۔

آپ کی وقات عاددی الحجر 194 حد = عدا کور وال ) من دولی (محد الموراس المداول عد)

F1.

# الدرجم رجميان

omer/and

آخران دهواریوں سے تھا کر دائن والی آئے اور تیلی وی ور وق شرع مین کے فرائن المجام دیے دیے۔ لیکن اس کو فرریو معاش نہیں بنایا۔ بلکہ تجارت کا لائسنس لے کر تجارت کرتے رہے۔ یا تجربہ کاری کی وجہ سے کانی مقروض ہوگئے۔ پکھ فاص دوستوں نے مدوکر فی چای تو آپ نے کہا کہ '' میں نے اسپید آ قالمام زمان علیہ السلام سے عالم خواب میں گذارش کی ہے اوران معزت نے قرض اوا کرنے کا دعد وفر مایا ہے۔'' چنا نچے جلدی و وقرض ایک فیرمتو تع طریقے سے اوا ہوگیا۔

موال الحدر تيم علم طب من ومتكاه ركع تقداد ربعض كشد جات بناتے تقد علم اعداد اور روحانی اعلی و ادعیه كا اجازه آپ في جناب سيدا او أحمن حافظيان سے حاصل كيا تعد مانپ ك كا شد كا اثر تداويا تيمو كذ كل مارف كا اثر فتم او جائے بيا تي سب ك مشاجب من آتى رائق حمل سياده معمومين بيم الملام كنام يورومر تيد قرآن جيد فتم كرتے تقد جن كرافكال ك مال عن الى مشطور و الن كيا وجود يول إدراكيا

آپ کی زندگی کا ل اظم وطبط کا مرقع تقی ۔ آبیۃ اللہ گایا نگائی نے فرمایا تھا کہ ہے۔ دکا ہ شی صرف دوآ دمی تہایت منظم بیں ایک مولوی گھر دھیم رشمیان دوسرے ثیر از کے دکیل وطن والمال آئے کے بعد آپ آبیۃ اللہ سید محن اکلیم کے دکیل مطلق رہے۔ ان کے بعد آبیۃ اللہ والو تی اور آفر بھی آبیۃ اللہ گھیا نگائی کے دکیل مطلق رہے۔

جب بعث پارٹی نے مراق سے فیر کلی طلبہ کو نکالنا شروع کیا تو آپ نے پاکستانی طلب کی افغانی خروق کے اور آپ نے پاکستانی طلب کی افغانی ضرور تول کو چش نظر رکھتے ہوئے آیة اللہ الخو تی کی طرف سے کوئند میں انہا ہت مناسب جگہ ہے۔ ایک بوا مدرسہ بنام وارا العلم الجعفر کی قائم کیا جوے جمہ کمروں بیٹن بوے بال اور کتاب خالہ بیم مشتل

تسانف

(۱) کتاب میراث جس می شرح لعد کی کتاب المیراث و آسان طریقے سے بیان کیا گیا ہے۔ (۲) جفر جامع = ۲ مجلد۔ جو جارا جراء پر مشتل ہے اور ہر جر ۱۹۹۰ سفی کا ہے۔ (اٹل فن جائے میں کد ۹۹ - ۷۹ سال کی تر میں ایک وقیق کتاب کی آصنیف کے لئے کئے تجمع حوال کی شرورت ہے اور دو جمی صرف ویر ھ سال میں (۳) احکام تج جو صرف واجبات تج پر مشتل ہے۔ (۳) احکام مقالمہ بچوں کے لئے (۵) اوج صدور صدید اوج کھروں اور دوکا نوں میں برکت کے لئے ہے جو موضین کو جہ بتا ویتے تھے۔ یہ کی بار کراچی میں جہ جی ہے۔

حدود ۱۹۹۲ء میں ۹۰ یا ۹۳ سال کی عمر میں رصلت فرمائی۔ اور کو سئے میں وُفن ہوئے۔ وصیت کے مطابق مدرسہ کے چوکیدار جوسید تھے اور چندسال پہلے انتقال کر چکے تھے ان کی قبر کے یا کینٹی وُفن ہوئے۔ آپ نے اپنی اہلیدکو محی ان چوکیدار کی سیدانی اہلید کی قبر کے یا کینٹی وُفن کیا تھا۔

FY

### سيدفحرضا

Mallers.

المحتد الاسلام مولانا سيد محد رضاصاحب مولانا سيد نياز حسن برقى حيدرة بادى كرب ب مجود فرزند تقد آپ ١٩٨٥ مل ١٨٨ و من حيدرة باد من بيدا بور ب ابتدافي تعليم ابن والد بررگوارت حاصل كرف كر بعد مراق الشريف له الله على حجول المال المال

مولانا بہت کم آبیز تھے۔ زبدوتق کی قابل رشک تھا۔ برمعاملہ بی آپ کا رویہ تناط تھا۔ مجد اثنا محری بی ایک مرصد تک امامت جماعت کے فرائض انجام ویے۔ طبیعت بی قناعت پیندی تھی۔ داددو بش ایک کد کی مستحق کوکیا ویٹے تھے کی کوفیز نہ ہوتی تھی۔

قرآن کی تعلیم اور تلاوت پر بهت زور دیے تھے۔ حیدرآباد کے اوار وُ چیار دو معصوش نے مولانا تا کے عظم سے ماور مضان المبارک میں دور وگر آن کا سلسلے شروع کیا جس میں مولانا نے آخر وقت تک شرکت فرمانی۔ اس اوار و میں پہسلسلہ ایمی قائم ہے۔

باوتحرم کے مشرو اولی میں مولانا کا انہاک فیر معمولی ہوتا تھا۔ مولانا ان دی دفوں میں روزانہ سوسواسو دورے کی مجلسیں پر معاکرتے تھے۔ طاہر ہے بیچلسی مختبر ہوتی تھیں ہرمجلس دو تین جملوں پر فتم ہوجاتی متنی ۔ لیکن بیدمولانا کے خلوص اور مختق حسین کی تا جیرتھی کہ دو تین ہی جملوں میں زئدگی کے آخری دور میں جب نے کی استطاعت ہوئی توضیقی ونا تو ان کی وجہ ہے قودید فریشرانجام دینے ہے قاصر تے۔ لہذا ایک سید صاحب کوجوا مام مجد تھا بنا تا کب بنا کر بیجا۔ ان سید معاصب سے دیکیا تھا کہ میں نے مطرت دسول ملڈ مل اللہ علیہ وآلہ وسلم سے فطاب کر کے کہا ہے کہ میں نے نے کی تیابت کے لئے اپنی اولا و کوچھوڑ کر آپ کی اولا و کا انتخاب کیا ہے۔ اب آپ کے کرم کا منتظر ہوں کہ میرایٹ نے بارگا واردی میں تجول ہوجائے۔

(1) we 31)

215

مدرسے وقت کے ملاوہ فرصت کے لوات میں دشا کاران طور پر طلب اور شاکلین و بینات کو مذائی تعلیم ہا تا اسکارے دیے تھے۔

F13

دوسرے استادے تعلیم نیس پائی۔ بعد میں جناب ہے ندوئی ہواوی قاضل کا احمان دے آرافی نمبروں سے کامیاب اوے تھے۔" کم کورو بالا عہارت سے جو ۱۳۳۸ حاری وی تاری کی تھی (جہر مواد نامحمہ بارون صاحب حیات تھے) ہے چان ہے کرآپ نے بنجاب ہے نیورٹی نے شی قاضل مجمی پاس کیا تھا۔

اصلاح ماور کے الاول استار علی آپ کی ایک تحریر شائع ہوئی تھی جس میں آپ نے اپنا نام اور پد یون تکھا ہے: سید محدر منی مولوی فاضل ذگی پوری ، ہیڈ مولوی شیعد بائی اسکول جو ہری تلد، امام باڑ و میر باقر سوداگر بکھندئو

علامہ محدوضی زنگی پوری علوم اسلامیہ کے عالم شیم اور محقق بسیم تھے۔ آپ ناصرف منطق وفل فد بلکہ تاریخ اسلام علم کلام اوراد ب عربی کے بھی ماہر تھے۔ (میرے عربی منظوم بات کی اصلات آپ می قرباتے تھے ) ان کے عربی اوب کا نمونہ جامع العلوم جوادیہ کے قرالا فاضل کی سند ہے۔ میرے پاس ان کے چند عربی کمتویات کی تفکیس جی جن سے ان کے اعلی او لی وق کا انداز و کیا جاسکتا ہے۔

رقت بوجان هی یعن مرجه و مواه کساس جمله پری که" آن کون ی ۱۶ رق بیا بی بیان شوم به جه بی بیان شوم به جه با قد می مواه کا گذاره شهات ها لیات گی از یاد قوال سے مشرف بوط یا بیان میں افغال فر با یا بیان میں افغال فر با یا بیان میں موام میں میں موام کا میں موام کی بیان میں افغال فر با یا بیان میں افغال میں بیان میں افغال میں بیان میں افغال میں بیان میان میں بیان میں

und was

ما اسر سيد گردش انگی پاری بر ب بهت شفق استاد ہے اور بھے ان کی خدمت میں آخر ب
ما مل قدر آپ نے شروع ہے آخر تک تمام علوم اپنے ما موں موالا نا سيد تحد بارون صاحب انگی پوری
(و مجھے احوال ) ہے حاصل کے تھے۔ یہ بات میں نے اور بیر سراتھیوں نے استاد مرحوم ہے بار با
سی تھی ۔ اور موالا نا تھی بارون صاحب کی کتاب ابطال المتا کے کشروع میں ملا مد قلام آئسین پائی پی
نے جو تذکر و مصنف کلما ہے اس میں بھی یہ مہارت کی ہے ۔ " چو گذر آپ کی بیری تمنا ہے تو لید ش ۔
اس کے پرائیویٹ طور پر بھی دوموے نہادہ طلاب کو پر حمایا جن میں ہے آپ کے جو تی تبول نے موالا نا کے مواکسی
معلوی سید گھر بینی صاحب انگی بوری ، مولوی قاضل وقتی فاضل تھی جی جنبوں نے مولانا کے مواکسی

سجى توريش مشغول د ب جب يا بحى ممكن نده باقو آپ نه بنارت الميكرام بيجا بكو بعدد و يني اورآپ كورام يور سه بنارس لاست سال ماكست (190 مكو بنارس بني اور ۱۵ ماكست (190 ه (۱۸ و يقعد و

وعاد) كامن كورون تض مضرى سے يا واز كركى۔اى روز يائى بيد شام كو يوس المام بازو

(بنارى) ين قرفين مولى ." رضى عصر" سات كاسده فات وي العدالال ب

تعانف

(۱) قا تلان حسين كي گرفتاري (مطبوعه) عبد الشكوركا كوروي، ديرائيم (تكعنة) في آليك رسال تكلما تفا" قا تلان حسين كي خانه تلاقي" ال من بيد وقوت كيا كيا تفاك قا تلان "بية الشهداة" شيعه بيد يقد يقي وي كارفتاري " وابات تكليد: آليكة بي " قا تلان حسين كي گرفتاري" (از ملامه سيد تكريشي وي كاروناري" (از ملامه سيد تكريشي وي كارون وي وي ) دومر بي " قا تلان حسين كافد بب" (مصطر ميدي تحم جالي ، دير سيل يمن ) دوم المسام كا اقتصادي نظام الا مطبوعه كارة شير رضي (مطبوعه ) ( من ) ابطال ماديت (مطبوعه ) ( ع) سياست علويه (الواحظ كه ما تحد كتابي ظل مي قسط وارقيمي تحمي ) ( ۱ ) سوط عذاب على أمسر ف المرتاب بيستيون كريما كرده الملاح ما تورب هي سال مي فيورشي مي سنيون في الاولوفييت امام زماني كيان المرتاب بيستيون كريما كرده و المناح ما تورب هي سال بيلووشيم بيستيون في الاولوفييت امام زماني كيان وفي موط عذاب مجلد اصلاح ما ورجب هي سال بيلووشيم بيستيون في الاولوفييت امام زماني كيان وفيره مي مي مينون وي واقعاء ( ٤ ) ادوود يا ان وفيره ميلوه )

ان کابوں کے علاوہ ب شار محقق اور مبسوط مضامین الواحظ، اصلات اور البريان (لدهيان ) من شائع موت ريج تھے۔ جن من يكونو است مبسوط تھ كدان كوم تب كرديا جات تو \*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

مقرزق يوري

الاب چد بعثول على مقيراك شامركال

بڑ ہائی ٹس او اب سرسید رمضاعلی آف رام پورٹ سیمیوا ویا سیمیوا ویس ایک جامع تغییر قرآن تعدوان کا منصوبہ بنایا اور اس پروگرام کا انچاری خطیب اعظم مواد تا سید مجر والوی مرحوم کو بنایا۔ اس بورڈ کے دوسرے میسرمواد تا سید محد رضی از کی پوری ہے۔ شروع شروع شرات میں آپ چار مہیئے ک کے رامیور جاتے تھے۔ اورآ تحد میرینہ جوادیہ میں رو کرتھیر ٹولی کا سلسلہ جاری رکھتے تھے۔ بعد میں رام پورک قیام کے مدت بڑھ گی اورآپ نے مدرسہ کی سربرای مواد تا سید تلفر المین صاحب قبلہ کے حوالے کردی۔

آپ کاست بیشے سے کے لئے تشویل کا باعث بنی رائی تھی۔ اوراب معف والوائی

PYA

مطلع انوارسلی ۲۴۲ پآپ کانام زی حسین تکسا ہے ہو کو ہے۔ سی نام وہ ہے ہو میں اے اور ککسا ہے۔

محدز كى سيد، تاج العلماء

المن المحالاء المحالات المن المحالات ا

ایک آناب او جائے۔ اوادو: ایک پر جانب میرانی عران صاحب اورایک اگر

(واتى معلومات دالجواد)

## محدرضي رضوي

"مولانا سيد تحدرض صاحب رضوى ائن جناب مركار ملامدها ترى الا جورى جبتد بنجاب" كى الك تناب "مولانا ميدائر كالا جورى جبتد بنجاب" كى الك تناب "موالما الواحد (ومير ١٩٣٥م) عن ملا ب-ال كتاب عن الملطة شيادت الام حسين عليه السلام كوريان كرك تالفين تقريده ارى كاعتر اضات كوردكيا ب-

محدزي سيد الداحسين

و مع الدی بعد مواد تا سید ایوانسن صاحب (ایوساحب) اور مدار کنتوری افی الله مقامیها
قد مقامات پر مدرت ایمانید قائم کرنے کی تحریب کی ۔ ان مدارس جی سے مدرت مصرب
(میرشی) اور مدرت ایمانید (بنارس) ایمی زیموجی ۔ مدرسا ایمانید بنادس مواد تا سید می جواد صاحب
قبلہ کی سر پری جی میں جاری ر بااور ان کی وفات کے بعد ان کے صاحبز اور مواد تا سید تا میادسات قبلہ کی سر پری میں جاری ر بااور ان کی وفات کے بعد ان کے صاحبز اور مواد تا سید تا میادسات

مدرسہ کے افتتاح کے تقریباً پندرہ مہینے بعد ۱۱۳ بھادی النائیہ ۲۳ اور (۱۱ رفوبر ۱۹۲۹ء) کو پوت میں آپ نے اس دار قائی ہے دھات فر مائی۔ آپ نے تین یٹیاں یاد کارچھوڑی۔ رسالداصلاح کفتا ہے کہ '' بوت انقال آپ کی عرب ۲۸ سال سے زیادہ شاہوگی'' اس کا مطلب یہ ہے کر تقریبان ۱۲ اور ایم ۱۸۸۸ء میں آپ کی ولادت ہوئی ہوگی۔ (املاح بلا سے نیز مالان سے ماداتی مطلب کے اس مالان کا معرب میں اس کا معرب میں اس مالان مالان مالان مالان مالان

اب مدرست الواطلین كاشبین نظرواشاعت آپ كا گرانی می ویا گیا۔ ۱۹۵۱ وی آپ الحقال میں ویا گیا۔ ۱۹۵۱ وی آپ مدرسی مستولی شناخی بنائے گئے۔ الواطن میں ایک موق آپ کے لئے مخصوص تھاجس میں آپ فتھی مسائل کے جوابات تکھتے تھے۔ بقول مواد تا سید آ عام بدی صاحب مرحوم کے" اس دریں دور میں مدقول کے بقول مواد تا سید آ عام بدی صاحب مرحوم کے" اس دریں دور میں مدقول کے بقول مواد تا سیاری ہوئے" یہ جات کی گئی دن تک بھی کلکت بھی بلاز بھی بلاز بھی گئی دن تک بھی کلکت بھی کار بھی استان اجلاس (دوبارہ) جاری دوصد سالہ یاد کار مرات کی بھی شامل تھا۔

جب سرکاد مفتی سیدا حدفی صاحب نے متبات عالیات کا سنز کیا تہ تعبیر تک مدر رہ عاصمیہ کے پڑتیل کی قدر داریاں گئی آپ کے پیردریں۔

تفنیفات: الواط اور مسلم رہوہ کی ہرا شاعت میں سالیا سال مضامین تکھے رہے۔ کی رسائے تکھے جن میں "الاقبیل" کوتیلی اعتبارے بری مقبولیت حاصل او کی۔ تاج العلماء نے ۲۲ سر رفتا الاول <u>دا سما</u>ے اور ۲۹ سرجولائی کے <u>199</u>ء کوتقر بیا ساڑھے آٹھ ہے شب میں رحلت فرمائی اور اپنے داوا چم العلماء کے بیلو میں فرن اوے۔

محر سيد، بنارى

יומים ליובים

000000000

مولانا سيدتار سياف سيان رقى بورى اورقد وة الاتنايا مولانا سيدلل جوادصا ب طاب شراء كي يور فرزند هيد كافي جيس مركز بندويت شي تشي كاريم أبين باب جيول كي قوت ايماني سيان عوار بندومسلمان دونول آپ كي رومانيت سيمتاش هيد

با مزت زندگی گذارری تھی۔ ماجھ صادق نے شرح زنجانی اور ایک شرح مال تکھی تھی۔

00000000000000000000000000

محمصادق

- Menting

مولوی محرصادق مولوی اله پخش ستدهی کفرزند تھے۔ رانی پور (ریاست خر پورسندھ) میں رہے تھے۔ ۱<u>۱۸۵۸ و (۱۳۹۹</u>ھ) میں پیدا ہوئے۔

الذربيد جلد بعد جم سے اندازہ ہوتا ہے كہ آپ مولوئى سيد محمد اختر ابن سيد محمد احمال ك شاكرہ تقے بہ آپ نے كم از كم تمن كمانيں قاديانيوں كارد ميں لكسيں به الذربيد جلد شاميں ان ميں ہے دو كما يوں كا ذكر ہے۔ جومطور مقیل ب

(١) القول ألجيد في روالملحد

(r) القول العماوق في روالمنافق

الذريعيطد ووش تيرى كابكانام الاب-

(٣) المجد وفي روالقاديانيد

الذر بد جلد ٢٠ مين چوشي كتاب معيار السلحاء كاذكر ملتاب-اس كاموضوع ابقاير قاديانيت

متعاق بين معلوم بوتا-

(الدريد ملدات عاء ورام)

F2.5

الم من ميد، زنگي پوري

خواجہ تلام الحنین صاحب پائی پی کے الفاظ یک" ادیب کال جناب سید کو سی صاحب دکی چدک اسے وقت کے ظہوری ہے" اور جناب سید کھ بارون صاحب نے قاری اور مر فی صرف وقع کی ایند افی کٹائیں آپ ہی سے پڑھی تھیں۔

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

( مُركر معنف المال المتاع ازخوا بدلام العنين)

وخفع

ان کا ذکر الذربیدی ہے اور لکھا ہے" الساکن فی البند" اور ان کے صاحب رسائل کیٹر و جوتے کا ذکر کیا ہے۔

محمرصاوق، ملا، جو نپوري

1740/al-A7

ما محد صادق منتی او البقا مرحو نوری کے فرز کر تھے۔ تمام علوم معقولات و منقولات اپ والد ماجد ساجد ساحب تدبیر اور الل ماجد ساحب تدبیر اور الل ماجد ساحب تدبیر اور الل البات تھے۔ خوی تقدیر نے در بار سلطانی کک پہنچایا۔ اور کی سال علائے پاریخت کے دمروی بر اسلطانی کک پہنچایا۔ اور کی سال علائے پاریخت کے دمروی بر بر اسلطانی کے بہاور شاہ کے۔ بالا خوشبیشا واور کی زیب نے شخراو و بہاور شاہ والحدید کی اتا لی پر مامور قرمایا۔ جب بہاور شاہ اول تحت سلطات پر جینے تو ما محد صادق کو جہا تھر گر ( و عاکر ) کی طرف جا کیرویکر دوات کیا۔ ملاحم صادق کے جہا تھر گر ( و عاکر ) کی طرف جا کیرویکر دوات کیا۔ ملاحم صادق کے دیں بودو باش احتیار کرنی اور صاحب کی اور کے وقت تک ملا صاحب کی اولا و و بال

محرصادق ،سيد ، مجھو ئي

مولوی تغیم سید فر معاول معاحب کھو ٹی کی ایک کتاب" جالس عظرہ" کا ذکر الذر بعد جلد لوز دہم میں بلتا ہے۔

## محمرصالح ،سيد،عرشي

سدہ عضاف وسطہ مولوی عکیم الحاج سید محرصالح التخلص پر فرقی ، حاتی سید ناظم حسین صاحب ساکن مجمود المطلع سارن کے فرزند تھے۔ آپ کے دو چھوٹے بھائی مولوی سید ملی حسین صاحب اور مولوی سید مرتشی

حسين صاحب تقي جن كمالات عليدورن جي-

مولوی محرصالح صاحب نے تعلیم لکھؤش عاصل کی اور وہیں طب پڑھی۔ ماہر طعیب تھے اور جہال مجی رہے مطب جاری رکھا۔ آپ کی اعباد کردہ '' پیٹل'' کموٹی بہت مشہور ہوئی۔

آپ طرمہ تک مدورسا ایمانیہ (بناری) یس مدری افلی رہے۔" کموٹی دواخانہ" کے اشتہارات جواصلاح وفیرویں چھپتے رہتے تھان سے بند چان ہے کہ سامیان دفیروی تھے۔ اور کا سامیان دیں چھپروی تھے۔ اگر کا سامیان کے سامی تھے۔ اور کا سامیان کی جھپروی تھے۔ اگر کا میں ایمان کے سامی تھیں تھے۔ اور کا سامیان کی تھے۔ کی تھے۔ کی تھے کی تھے۔ کی تھے کی تھے کی تھے کی تھے۔ کی تھے کی تھ

عرفی صاحب اجھے شاعر تے اور امام رضا علیہ السلام کی ولاوت باسعادت کی شب میں کچھوے میں اپنے مکان پرایک شائد ارمقاصد ومنعقد کرتے تے اور خود بھی تھے۔ال کے

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

محرصادق سيد مكيم

HET GIF DIN

موادا علیم میداد صادق جناب میداد المن صاحب طاب ژاو (جناب او صاحب ) کے شاگرد خاص ہے۔ آپ نے سلطان المداری شاگرد خاص ہے۔ آپ نے سلطان المداری کے معدد الافاض اور وجاب یو ہوری ہے مولوی فاضل کیا تھا۔ تیا م لکھو کے دوران آپ نے ملم طب بھی حاصل کیا تھا۔ تیا م لکھو کے دوران آپ نے ملم طب بھی حاصل کیا تھا۔ یوب باتی دربال اصلاح بی شائع شدہ آپ کے ان القاب سے اخذی گئی تیں جو دی افو تی آپ کے ان القاب سے اخذی کی تیں جو دی اور تی تھے دربی ہوئے ہے وہ سالا ہے کہ مشر کی بلکداری کی تیل وہ دربی ہوئے ہے وہ سالا ہے کہ مشر کی مشامین دربال اصلاح بی شائع ہوتے رہے تھے۔ ان بھی آپ کانام کی دربی ہوتا تھا۔ اس می موری فاضل دھ درالا قاضل کھات اربال الشہد آگرہ کے موری ہوتا ہے کہ دودو ہو سالا ہی میں تی دربی تھا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ دودو ہو سالا ہی اس کی دربی تھا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ دودو ہو سالا ہی اس کی بعد تھا ہے۔ آپ لگت بھی تھے اس کے بعد اصلاح (درمشان وہ سالا ہی) بھی آپ کے نام کے بعد تھا ہے۔ آپ لگت جی بھی تھی ہودی تا بادد کن اس سے معلوم ہوتا ہے دورکن شقل ہو بھی اس کے بعد اصلاح اورکن شقل ہو بھی سے اس کے بعد اصلاح اورکن شقل ہو بھی سے اس کی دربی تھا۔ اس سے معلوم ہوتا ہو تا ہو گئاتہ سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کی اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ بادد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس وقت کلکت سے جیدرآ باد کن اس سے معلوم ہوتا کہ آپ اس سے معلوم ہوتا کہ آپ کی سے معلوم ہوتا کہ

آپ کا ایک رسال مظلوم کریا " مختافی مورت شی رسال اصلاح جلد ۳ مقبر ۵ (جمادی الاوفیال علی استی (۲۸ صفی کا) چمپا ہے۔ اس شی مصنف کا نام یون تکھا ہے۔ " جناب مولان تحتیم سید تھ صادق صاحب تکھنوی مولوی قاضل صدر الاقاضل دام فید طبیب ریاست حیدر آیادد کن" "

r21

## محمه طاهر ، مرز الكھنوي

100 6 E F 110

مولا نالخان مرزامی طاہر صاحب لکھو کر ہے والے تھے۔ آپ ایک جلیل القدر عالم اور بہترین واحظ و خطیب تھے۔ بہت ہی تھی پر بینزگار اور عابد شب زئد دوار تھے۔ ابطال باطل اور اعلاۓ کلد امن آپ کی زندگی کا شعار تھا۔ آخو مرکک عزائے مظلوم کی خدمت سے بھی عدر ندفر مایا۔ جس نے مجلس پڑھنے کا وعد ولیا خود بھی گئے۔

(الجادير فيرون فري في عداء)

محمطا براسيد ، بجنوري

114-61511

مولانا سیدمحد طاہر صاحب مدر الا فاصل موضع محتولی بطلع بجنور کے باشدے ہے۔ سید المداری امروب، مصلید کالج بیز تھ اور سلطان المداری لکھوٹا بیل تعلیم حاصل کی۔ اس کے بعد جامعہ عالیہ جعفر یہ نوگانوال ساوات میں بحثیت واکس پڑیال خدمت انجام دی۔ پھر ساتھ تی شلع بلند شہر میں

قمیدوں کے پکو تخطوطات میرے پاس ہیں۔ان کا ایک جمور قصائد" تبلیات عرشی" کے نام المحافو میں چمپا تقار معلوم نیس بو تخطوط قصائد میرے پاس ہیں دوس تبلیات عرشی میں آگے ہیں یا ٹیس۔ آپ کے دومخفر رسالے بھی شائع ہوئے تھے۔(۱) اہل بیت (۲۰ صفحات) (۲) اہل بیت کی لناز

اسلان (مادمتر ۱۳۳۸ه می بینبرشائع دو کی تھی" کجو وے مادشوال عرال ادیں چات کا قاظ روانہ دوا تھا اس میں (مولوی سید تھ صالح عرش) بھی شریک تھے اور دسن اتفاق ہے جناب مولوی حالی متبول العرصا حب کا بھی ساتھ ہوگیا۔ بیاقاظہ ۲۱ رنومبر مع الخیروشن والی آیا۔ بہت اچھا قاظہ تھا۔ جس میں نوب مجلسیں راست جر بوتی رہیں۔"

آپ نے جناب سید سیاحین صاحب، جناب سید تھ باقر صاحب اور جناب سید نامر حسین صاحب طاب ڈراہم کے ناموں کو قاری میں صنعت تو شخ میں لکھا تھا جو بھرے پاس موجود ہیں۔

مدود عن على وطن على رطت فر ما في-

(اصلاح-واتي معلومات)

TEN

have say have sell the say the terms

انشام يردازي يرقدرت كالمدماصل تفي-

مولانا سيد مظفر ضين صاحب كى رحلت كى بعد شهر بنارتى كى دينى واجها فى سريمانى آپ بواش العلوم كى حصر بن آئى . نيز هدرسانيان يى برئيلى بھى آپ كوسنجانى بزى - علادوى يى آپ بواش العلوم جوادي كى بادى پختب بوئ يا تخش اوراختلان قلب ودردسر بيسامراض بنى جنالات كى اوجود هدرسر بنى درس وقد رئيس، شهر بنى امامت جدوجها عت ، نهالس وقافل بنى بيانات ، فهاذ ميت بيست هرائيل وي فال بنى بيانات ، فهاذ ميت بيست فرائض ويند بنى تاحيات مشغول رہ باورجسانى موارض كوان و مدوار يوں كى راوشى ركاوت بننے ند ويا۔

آپ کی کیلی شادی برے پھامولا ؟ سید محمد سیاد صاحب کی جھوٹی صاحبز ادی ہے بوئی تھی جن کے بطن سے کوئی اولاد نہ بوئی۔ دوسری شادی مکیم مسعود حسن خان صاحب (سیتا ہور) سے خاندان میں بوئی۔ جن سے خدائے یا کھی اولاد یں عطا کیس۔

۲۹ رر جب ۱۹ تا هـ ۲۰ عتبر اعدا ، کو بدامیر کـ آپیشن کی تیاری دوری حقی که اجا تک دل کادوره پر ادر اور دین کے اغرام مول کی پیشع کل دوگئ ۔

( HET = 1/26/5" (d))

توث

مطلع انوار میں صفی ۱۵۲ پر گھر طاہر بناری اور صفی ۵۸۵ پر گھر طاہر اعظم گذھی کے نام سے جو پکو کھھنا گیا ہے وہلا سید گھر طاہر صاحب بناری ہی ہے متعلق ہے۔ دوسال تک امام جماعت رہے۔ اس کے بعد جامع اطوم جوادیہ بنارس میں (خالبُ و 191ء میں) تر دیکی خدمات انجام دیئے مجرحاء البداری (میسانی) سلطان البداری (فکھنو) اور جاسعہ التبائج (لکھنو) میں ورس دیتے رہے۔ آخر عمر میں دوبارہ جامعہ عالیہ چعفرید (نوگانوال سادات) بحریف فے گئے۔

مخدطا براسيده ملا

العلمان المرائية الم

## كرت رب ال كادومهادا شري مي الحي فيض يو تجايا-

j

۱۹۵۰ء می تج بیت الله اور ال و شام کن پارات عشرف او عد ۱۹۵۰ مین شام کا اور چند ماد د مشق می تیام فر مایا-

۱۹۵۴ میں مصراور ایران بھی گئے۔ بیت المقدس کی بھی زیادت کی اور مقابات مقد سے میں بوے بوے علما وے ماد قاتمی رہیں۔

> ۱۹۵۷ء میں دوبارو بی اور فراق کی زیارتوں ہے شرف ہوئے۔ آیتہ اللہ محسن انگلیم طباطبائی نے اپتاو کیل بنایا۔ معمال میں میں میں مجاری ہیں میں میں میں اور ایک میں اور ایک میں میں میں میں میں میں اور میں سے مطا

١٩٩٨ من تيري بارج كاشرف حاصل كيااور بحف اشرف ي يحفظها وكودر ويا-

ازيم

۱۹۵۸ وین کی فوش سے ازیسہ پرو فیے اور جھا (سوگذایس جہال موشین مجد بنانا جا جے تھے اور کلکٹر نے اس پر پابندی عائد کر دی تھی۔ مولانا جم ظبور نے اس وقت کے وزیر انظم پیڈٹ نہرو سے خصوصی اجازت لیکر آئیک عالیشان مجد تھیر کرائی ۱۹۱۵ ویش مدرست الواسطین کے والیس پرلیل مقرر ہوئے اور تا حیات اس عہدہ پر فائز رہے۔ اس ورمیان میں ۱۹۱۸ ویش کینیا پوگانڈا ، اور ماؤا کا سکر تھریف لے میں جہاں و مہیدتک اوگوں نے آپ سے فیش الحایا۔

وفات

۱۰ نومر ۱۹۷۵ مطابق ۸ زیقده ۹۵ ۱۳ روز پیشنیسی ک وقت مولانا ف واقی ایل کو لیک کها۔ اور شب جعد میں تدفین جوئی نماز جنازه مولانا ڈاکٹر سید کلب صادق صاحب ف محرظيور، واعظ

1940/015

آن تے تقریباؤی دوسرال بی اکویا تا میں مولانا میدالرشد ایک جلیل القدر مجاہد عالم دین قد (دیکھے احوال )اور ان کی رہنمائی ہے موک بالومیاں (عرف باکومیاں) نے تجاشید مقید و قبول کیا تھا۔ آن ان کی نسل ایک بورے کلڈی آباد ہے۔ بالومیاں کا ایک ہے رحت علی عرص قدین کے تیمرے فرزی مولانا علیم اختر حسن صاحب تے اور پوٹے مولانا کو ظہور صاحب تھے۔ آپ کی پیدائش جوری ۱۹۱۲ مطابق ۲۹ ترم مالورم ۱۳۳۳ جمری میں ہوئی۔

گریزایتدائی تعلیم کے بعد پورامعروف کے مدر ظفر الایمان یں ۱۳۴۰ جری یں داخل ہوئے۔ اور وہان سے مولوی اور عالم داخل ہوئے وار وہاں سے مولوی اور عالم کی متد حاصل کرنے کے بعد مدر در سلطان المداری بی وافل ہوئے ۔ اور وہاں سے مدر الافاضل کی اقبیاتی متد کے احد مدر در الواحظین کے احد کا دی اور کیا ہے۔

مدرسة الواعظين كى طرف ي تين سال جل بوردرائ بوراور دومر يشرول مي تبلغ

Scanned by TapScanner

FAF

#### تصنيف وتاليف

مراق روا گلی ہے تیل آپ علی جریدہ" اعلم" کے مریاطی دے اور آپ نے ایست نماز، محیط الدائرہ اور نقد الشعر کی تلخیص فرمائی دوران قیام عراق شرح تجرید علامہ علی کا اردو میں ترجمہ کیا۔ واپھی عراق کے بعد آپ کے تصافیف آخر بیاؤ صائی درجن میں ۔ بعض کتب دوسری زبانوں میں بھی ترجمہ و کیں۔

#### الأدو

آپ نے حسب ویل علاء و افاضل سے علی التر تیب تعلیم حاصل کی۔ مولان سید محد من ماحب مولان سید المن حسن توخیرون ماحب مولان سید المن حسن توخیرون ماحب مولان کلب عابد صاحب مولان سید محد صاحب الن کے علاوہ ملتی اعظم بحسن ماحب مولان کلب عابد صاحب اور مولان سید محد صاحب الن کے علاوہ ملتی اعظم بحسن ماحب یہی شرف تحمد حاصل رہا۔

#### تومى خدمات

آپادارہ عالیہ بہلی واشاعت کے بانی تھے۔ مدینہ العلم جامعۃ النیلی کے پڑھل تھے۔ ان کے علاوہ مدرسہ مرید جو پُوراور لکھنو کے شیعہ کالج کی مجلس عاملہ کے مہر اور سلم پُرش لا ماہد ؤ کے مہر تھے۔ آپ کے قائم کردو مدرسہ جامعۃ النبلی نے تشکان علوم سراب ہورہ میں جن میں جندوستان کے برصوبے اور علاقے کے طلبا مثال میں۔

#### وفات

آپ کا انتقال کے جنوری ۱۹۸۵ء کم ۱۳ ارتفاق فی ۱۳ جبری درگاہ حضرت مہال ارتفاق کی ۱۳ جبری درگاہ حضرت مہال ارتفاق کر تکعنو میں قبلی دورہ پڑنے سے جوااور اپنے تغییر کردہ مدر سرجاست النبیخ مصاحب سے تکھنو میں حسب وصیت میر دخاک کے گئے۔

(سوفريد ميدي وخول فيرقوي آواز للمتواالت ١٩٩٠)

پڑھائی۔ آپ کے ایک صافیزادہ مولانا درائس صاحب نیروفی ( کینیا) دارائسلام اور حروث ( تا زوانیا) میں سالبا سال محک و بی خدمات انہام وینے کے بعد اب عروشا میں قیام قرباجی۔راقم الحروف سے تفاصان تعلقات ہیں۔

(ナールを196とらいかかり)

## مجرعالم مرزا فخر العلماء

14A3/417+3

مرزا ابوالقائم صاحب جو بمبلیٰ کی خوجہ شیعہ اثنا عشری مجدیں امام بھا ہت کے فرائش انجام دیتے رہےاورہ بیں ان کا انتقال ہوا۔ فخر العلماء مرزامجہ عالم انہیں کے فرزندار جمند تھے۔

ابتدائی تعلیم کے بعد ۱۹۳۱ میں آپ کا داخلہ سلطان الداری تکنو کے درجہ موم میں ابداری تکنو کے درجہ موم میں ابداری تعلیم کے بعد ۱۹۳۹ میں آپ کا داخلہ سلطان الداری تعلیم کا کا دوران الدآباد بورڈ بکنو کو بھارٹی اور شیعہ عربی کا کئی ہے جی افلی سندی حاصل کیں مصدد الدفاضل کا احمان پائی کرک کے معلیما اور شیعہ موسل و جیل علوم عراق تحریف لے گئے۔ ابتدا میں آپ نے چھ ماہ کی بلائے معلی میں آپ برائے معلی عربی آپ کے بعد ماہ کے بارٹی ایک آپ کے جھارت کے بعد ماہ کی برائے معلی میں آپ می توام فرائی و بیان کر بلائے معلی میں آپ برائی اور شیم کر بلائے معلی عربی کی برائی و بیان کے بیان کی داور جید الاسلام آپ می فرائی و جید الاسلام آپ کا مرز ااسلام فرائی و جید الاسلام آپ کا میں بدو مراف الدستن کی دوران کی داور جید الاسلام آپ کی دوران کی دربیات کی محیل کی رہی کے بعد آپ ۱۹۶۱ میٹی بعد و میں دائی گریف لاگ۔

PAC

عبده برقائزرب فلف عاص شغف تعار مالات ماخره برگری تظرر کے بھے مثامری میں ا بزیفن کارتصادرآپ کا شارات اشعراد میں ہوتا تعادر جوں شعراد آپ سے اصلات کیے تھے۔ آپ کا میں کرتے تھے۔ آپ کا میں می کلیم تعلق کرتے تھے اور کلام میں عالب کارنگ ترایاں تھا۔

#### تقنيفات

- (۱) ما صدرات دسال العظام الالهيكار دور جدكياجس برايك شروري مقدمد اورا يك تخد يسلسلة عقيدة رجعت اردو شراكها روس اتساعف:
- (۲) سران الملقيه (حربي) (۳) الاحتشار في تجامة المثر كين و الكفار (عربي) (ع) رموز و امرار (اردو)

آپ بہت ہی منظمر الموان خوش اخلاق اور متواضع عالم تنے راقم الحروف آپ سے سری اور امرو بہ میں ۱۹۸۲ میں ملاقعا۔

۱۲۳ کور ۱۹۸۹ (۲۳ د دی الاول ۱۰ ۱۳ تجری) کورطن مالوف امر و بدیش د فات پائی (انگین دئیلد دوشش کان ن تکل فهر در حتاد پر ۱۵ تا تکل فهر مالاه متا جند ۱۳ فهر ۱۸ سال ۱۳ ما تاری) مرعبادت، سيد، امروبوي

משולוניים

Poodoooooc

مولانا سید تر عبادت آفتوی بوتاب سیداواد دسین صاحب این مولانا سید تر عبادت صاحب
امرویوی کرزند ہے۔ آپ ا ۔ ٤ امفر ق ت اجری / ا ۔ ٤ رفروری الالا کی درمیانی شب میں
امرویر میں پیدائے۔ آپ کے والد بزے عالم اور فقیہ ہے اور آپ کے جدائی مولانا سید تر عبادت صاحب
صاحب امرویہ میں شیعیت کے ملاقے ہے اور آئیں نے بیان آماز جعدہ جماعت کی بنیادر کی ۔ ال مرجوم
کے بعد پرسلسلہ امامت آپ تی کی اولا دمی رہا۔ آپ کے جدائی فقران مآب کے شاگر دہتے اور آپ
کے والد سید اولا دحمن صاحب جناب مفتی سید تر عبال صاحب کے شاگر دہتے ۔ سید اولا دحمن
صاحب بڑے وش کو اور فوش آفر شام بھی ہے اور خطائی میں تھی کمال حاصل تھا چنا تی امرویہ کی جا مع
صاحب بڑے شوش کو اور فوش آفر شام بھی ہے اور خطائی میں تھی کمال حاصل تھا چنا تی امرویہ کی جا مع

اب يبان عاموا ناسيد تدميادت أخرى كاذاتى عال شروع ووتاب

آپ کی ابتدائی تغییم تو را آمد از سے شروع ہوگئے۔ ایجی دی سال بھی ہوست میں صاحب جمیتد کہ معاویا تھی والد ماجد کے ساجے سے خروم ہوگئے۔ ا ۱۹۴ میں مواد تا سید پوسٹ حسن صاحب جمیتد نے مصب کالی جر فیدیں واقل کر اویا ہے من سال کے بعد امرو بہدوائی آکر الحاق مواوی سیدم تفنی مسین صاحب کے دری جی شرکت کی اور ان سے صرف وقو واوب کلام اور قلف کے دروی با جھے ۱۹۲۹ میں تھینو کے اور جناب مفتی سیدا تر ملی صاحب مراوم ہے فقد واصول فقد کی جیل کی۔

معالی می وای داری آئے۔ای سال سامروبدی جامع مجدی امامت جدد معالت کی قدرداری سنجال ال عرب الاور معالیات معالیات سیدالداری (امروب ) می روس ک

FAT

Committee of the state of the s

-色工はどのないいと

(٢) عناية الرضا

(Lit preshorter (1))

محر عسكري،سيد، جو نيوري

1222\_114+

ان کے شاگر دول میں مولوی عبدالقادر مولوی عبدالعلی خان اور ملا محر موش پونیوری کے نام

. .

محرعياس سيد مظفر يورى

interpret

موان سيد الدوار ما المن سيد الكريم صاحب التي سيد الكريم صاحب البينة والمن اللّه يربم إوره (منظر إلى الله و الله الله و ا

(اللهن وقيد سادات وموشي كالذان جو في غير الداليوار جر 1940 واصلال وقط الاول ساسياها)

محمو عبدالحسين ، حافظ

تراوي المدى

20000000000

مافقة وميد السين ان الرحيد البادى جعفرى طيارى كرياد فى ايك فاطل طيل تقد اصل وطن مدراس تفاجهال آپ كى والادت بو فى تقى جعفرى طيارى كى نسبت سے به يا چالا عبالياً ب عفرت جعفر طياز كى اولاد ش تق كريا جاكرو إلى آياد تو كا تقداد رو بال كما كل طبقہ

TAA

## محرعلى مرزا

سنس العلمها و مرز الحد على المان مرز الجواد على اصفهان كي باشد على العامة على الداروي بيدارد على مقد المارة على المان مرز الجواد على المان الما

(الدمرة الكلي السين عالم إن موال عمرة الطاف السين بي والا تالام إلى المراق الله

### محرقاسم ،سيد

رسال،اصلاح (عوم ۱۳۲۳) ين شائع شدو سر غريرى در در على جر آوريكا ذكر مولانا سيد فو الدين صاحب ك حالات بن آياب-اس فهرست بن چود وال عم" مولوى سيد عد قاسم صاحب، فاصل طبيب بدهام فيض آباد" كاب-

## محرقاتم اسيد الدآبادي

HT ITA

مولانا سید محدقاسم صاحب دائرہ شاہ اجمل الدآباد کرنے والے تھے۔ احقاق می اور ابطال باطل میں کسی کی رعایت ندگی۔ اعرت می ہے بھی عائل ندیہ ہے۔ چند روز قبل عازی پور کے مقدمہ میں پیض حوالے بتائے تھے۔ دیکھنے میں ووایک فقیر منش انسان تھے تکرمند علم پر ایک سلطان کے کا ومعلوم ہوتے تھے۔

مراوم كا اقتال ٩ رومضان المبارك ٨٢ اله (= ٣ فروري ١٩٩٣ م) كودول (الجدوري ١٩٩٣ مرضان المبارك ١٩٨٠ مراوم ١٩٠٢ مراوم ١٩٠٢ مراوم ١٩٠٢ مراوم ١٩٨٢ مراوم ١٩٨٢ مراوم ١٩٨١ مراوم ١٩٨١ م

### 

02

47رة يقورو + 11 مر 14 روي ك ك ك ا م ك مطابق ب-

( تكملة بخوم إسمار جلد وم عا تا ١٢)

000000000

### محرعلی مولوی

عنى جوائى على دُحاكر من ديا سے كرد كارسال وفات معلوم فيل ب- . (عمل تدراس وجد الدور)

آپ کوجوں اور لائس وغیرہ کا ایک جموعہ الحجر بات ہاتم "کام سے شائع ہوا تھا جس کاد کر اصلاح ما وسفر ۲۵ ساد شاں ہے۔ اصلاح ما وشعبان ۱۳۳۳ ھی آپ کا کی سفون " کا کے سفون" کا کے سفون " کا کے سفون " کا کے سفون کی ہے۔ جو مقلمت سمید الشہد او کے بیان میں ہے۔

آپ کے دونوں جون ، سیرطی زیاد صاحب ادر سیدطی عباد تھی رکی پوری کا ذکر اس تذکرہ میں اپنے اپنے مقامات پر آیا ہے۔

آپ نے ۲ رشوال ۱۳۵۳ ھ (= ۲ رفروری ۱۹۳۵) کو پندیس انتقال فرمایا۔ اصلات فی الحج میں خرانقال چیسی تھی اور پر لکھا تھا کہ آپ" زہدوور علاقی قوائن اتقبار کے جسم نونہ مجھے!'

### محمر ماه ، ملا ، د يوگا ي

ملاحد ماہ تھے۔ دیاگام (مثلع اعظم کرمہ) کے شیوع کے اعلی خاتدان سے تھے۔ ملا رکن الدین ، جرب آیادی ا(؟) سے علوم حاصل کے اور ملا فور الدین مداری سے جیل کی۔ ویوان

\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$\$

مولانا تغيم سيد فيرة مم صاحب ايك قديم وضع كے بزرگ عالم تھے۔ آپ كا نقتر اور سادگی قابل فيظ تھے۔ ابتد الْ تعليم كے بعد سلطان الدار آن سے صدرالا فاضل كيا۔ مولانا عرصہ سے برزم بيرو (منظر بير) كی مجد شن امام جمد و جماعت كر أغن انجام و سے ہے تھے الل شير آپ كی قاعت مماد وزئدگی اور عاوات ورياضات كفر روال تھے۔ الموس بيہ ہے كہا ولا وواحقاد كے سوائح ارتحال نے مولانا كو بہت زياد و قتلت خاطر كرديا تھا۔ آپ نے درتى عداد ارد احداد بيان عاد كی الا ولي عوام ۱۳ م) كو بين بيرضلع مظفر بير شي وطلت فرمائی۔ ( الجواد بيون عداد)

## محدلطيف اسيد ، زنگي پوري

mar

آیات الله سید ابو ایسن اصفهانی الله شیاء الدین عراقی الله عبد ایسیین رضی الله محد مسیون کاشف الغطاء و شیخ محد بادی کاشف الغطاء الله محد کاهم شیرازی، شیخ عبد ایسیین انجید سید عبدالله شیراوی مرز امحد بادی خراسانی اورسید مس مجیم خیاخیاتی املی الله در جاجم فی العلیجین -

دوس وقد رئیس کا سلسلہ زبان طالب العلم ہے ہی شروع ہو چکا تھا۔ روا گئی مواق ہے پہلے کئی سال تک سیدالمدارس (امرویہ) میں مدرس دہ ہے۔ مدرسے عالیہ جھٹر پر کا افتتاع کیا۔ 1- روو

- ا) شرح سط الدررآپ کی قلمی زندگی کا شایکار ہو" بہارستان آبلیف" کے ام علی پائی بار شائع ہو تکی ہے۔
- (۲) کشف الاشتها و: موی جارالله وایک روی عالم فے ایک کتاب تھی تنی جس کا جواب علامہ رقتی نے اجو یہ موی جاراللہ "کے ہم سے تکھا مولانا تو تجھی نے اس کا بیار دو ترجمہ کیا اور اپنے محققان دوائی کے ساتھ شائع کیا۔ آپ نے ایک کش خان ال کھنے صیف "کے ہم سے قائم کیا تھا۔

عبد افرشید (معنف من القرورشیدید) ہے بھی بہت فیض حاصل کیا اور عالم اکمل و فاشل اجل ہو گئے۔ فارغ انصیل ہوئے کے بعد 24 سال بھک جو ٹپور میں قیام کرے علم کی روثنی پھیلاتے رہے اور اس دور کے وہاں کے اکثر علامہ وخضلاء نے انھیں ہے کہ فیض کیا۔ ان کے شاگر دوں میں حافظ امان اللہ بناری اور منتی ابوالیقا مقابل فاکر ہیں۔

آخرہ میں سلس الیول میں جھا ہوئے اور عالم جاودائی کی طرف رصات کی۔ ان کی اینت سے بنی ہوئی قیرو بھا میں بیر ملی حمین کے دروازے کے سامنے مصنف بھی فور کے وقت تک موجود تھی۔ سال وفات معظوم نہ ہوسکا لیکن ان کے شاگر دمفتی ایوالبقاء کے والد ملامحہ دروایش کا انتقال ۱۹۹۸ ہے میں ہوا تھا۔ اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ ملاحمہ ماہ نے بھی وسویں صدی ججری کے اوافر یا گیار ہویں صدی کے اوائل میں دفات یائی ہوگی۔

( عمليم السما وجلد اول 1- ٥)

## و بختی سید، نوگانوی

(8+0/IFFE

HOA/IFEE

000000000

مولانا سيد توقيق صاحب نوكانوى جناب سيد ترصين صاحب ( وش نماز جانسند ) ك فرزند تقد الن كي ولادت جررجب الرجب ١٣٢٣ ه (= ١٩٠٥م) كونوكانوال سادات (منطع مرادة باد) يمن عولي -

ابتدائی تعلیم اپنے والد ماجدے ماصل کرنے کے بعد، مصوبہ کا فی (میرٹھ) مدرسہ عالیہ (رام پور) اور میدالمداری (امروبہ) میں تحصیل کی۔اس دوران و فیاب یو غورش اور الد آباد بورڈ

1.44

۱۳۲۵ ، میں زیارت فتهات عالیات کیلئے مراق تشریف نے گئے۔ اس مؤمی آ الدسال کر بلائے معلی میں روکوملی خدمات انجام دیتے رہے بیال تک کدوبال کے جہتدین عظام نے آپ کواز خودا جازات سے مرفر از فر بلا۔

آ پ کا انتقال جو ٹیور میں موااور اپنے آبائی قیر ستان میں ڈن ہوئے۔ (جاری مالی مونیا یے بواید و جمعه)

محمسلم، شخ بحكيم

ire rai

مولوی علیم مینی میر مسلم صاحب کجو ہے رہنے والے تھے لیکن حسین کی آگرآ یاد ہوگئے تھے آپ میرے استاذ محترم جناب مولانا محد مصطفے صاحب قبلہ جو ہرکے پاریز رکوار تھے۔ لانگ جگہوں پر مطب کیا جن میں بھاگل پور بھی شامل ہے۔ میرے والد ماجد مولانا تھیم، سید الوائسن صاحب قبلہ کے پرانے کا نفذات میں مجھے طب کا وواجاز وطا ہے جو ان کے استاد نے تھیم محد مسلم صاحب کودیا تھا۔

موسوف کا ایک سلسایہ مضامین'' عالم برزخ میں اپلی'' کے منوان سے موسد تک اصلاح میں بالا قساط چیتار ہاتھا۔ معلوم نہیں و تصنیف تعمل ہوئی یانیس لیکن جس قدر قسطین جیپ پیکی تھیں اگر ان کو اکٹھا کرے کتابی عمل میں جھاپ ویا جائے تو ایک ولیپ کتاب اہل ؤوق کے ہاتھوں میں آجائے گی۔ چھیتی اور ظرافت کا دلیپ احتوان ہے۔

رسالة اصلاح جلد فبر ٦ سنبر ٥ (براوي الاولى ٥١ ١١هـ) ين آب كي فبروقات النالقاظ

(ایوادبله) منزالفنز ۱۳۵۸ه) محرمحسن ، حائزی ، سید

نو كانوال سادات شي رطات فرمائي مولانا سيد كرصاحب المروبوي جبتد في نماز جناز ويراحاني-

٢٠ ر برادي الأور ١٤ ١٣ هذ ١١ رجوري ١٩٥٨ ، كوساز حي تمن بي ون يمي اسية وطن

آب فرني، فارى اوراردو كالمروث في اردوش المنظر قال

جناب مولوی سید فرخمن صاحب حازی کافسیاوا ژاور سنده کے علاقہ بس بلغ وین ش معروف رہے تھے۔ اسمعینی فرقہ کے مشتری بحر لا کھا کے ساتھ آپ کا مناظرہ مسئلہ امامت پر بوا تھا جس کیلئے یہ فیے پایا تھا کہ خواجہ من نظامی مرحوم اس بس تھم بول۔

(املاع بلدليره وليرع درجب ١٣٥٥)

000000000

محمر مرتضى سيد

سید تورم تھی ساحب سید علی حسین صاحب قصیلداد کے فرز ندیجے۔ ان کے مورث اعلی سید حسین فیٹا پورے آگرا عظم گڑھ بھی آ باوہ و گئے تھے۔ ابتدائی تعلیم گھریر حاصل کرنے کے بعد سید تھر مرتھی تھنو تھریف کے گئے اور مختف ملا ووجہتدین ہے فقہ واصول اور معقولات ومنقولات کی محیل گی۔

روز عليم صاحب نے عفت ليجو ش كہا كدش تم كو اگريزى شي بكد عربي چرجودنا جا انا تعاد بوق ما حاجب نے دوسرے دوز پور پالستر بائد صااور لكھنتۇ كے لئے دواند ہوگئے ۔ سلطان المدارس شي ان كى براوراند دوس راقم الحروف كے والد ماجد مواز ناميد الوائسن صاحب ہے ہوگئى جو اس وقت ورجات كے لحاظ ہے جو برصاحب كے لحاظ ہے جو برصاحب نے دوسال سيم تھے۔ بيدوش آخر دم كل قائم رق مواز ناجو برساحب نے راقم الحروف كو بتا يا تھا كہ دورال سيم جو برصاحب) ۱۹۶۳ ہ شي سلطان المدارس ہے قار في ہو ساحب نے راقم الحروف كو بتا يا تھا كہ دواور يعنى جو برصاحب ) ۱۹۶۳ ہ شي سلطان المدارس ہے قار في ہو ساحب نے ساحد دودود رجوں كے انداز وادونا ہے كہ والد صاحب نے دودود رجوں كے انداز وادونا ہے كہ والد صاحب نے دودود رجوں كے انداز وادونا ہے كہ والد صاحب نے دودود رجوں كے انتخابات الكہ ساتھ و نے بيوں كے )

مدر مہاسیہ (پلنہ): ۱۹۲۴ ویل مدرسہ مہاسیہ کی تاہیں ہوئی جس کا افتتات میں مدرسہ مہاسیہ کی تاہیں ہوئی جس کا افتتات ۱۹۲۸ وی الحجہ الحجہ ۱۹۲۸ وی الحجہ الحجہ

یں پیچی ہے: "افسون کد ہاری قوم کے ایک میناز بردگ بناب مولوی میں کو مسلم صاحب ساکن مین کی شلع سارین نے 1 ردی الثانی ان حاکور فعیڈ ( کذرا) مرض فائل سے انقال کیا۔ مرون کی ولیپ فیقی کاب حالم برزغ میں اٹیل بہت مقبول ومشہور ہو چک ہے۔ مردوم اگر بری کر کی قاری

اردوب کے ماہر تے اور علم طب بین پوطونی رکھتے تھے۔ قدیب ای کی تبلغ میں اکثر اوقات مشغول رہے اور اس کی وجہ سے کسی تقصال کی پروائیس کرتے تھے۔ "(1 روان اٹانی اد سادے ماکست معالم

(BOWL

آپ نے دوفرزیمی یادگار چھوڑے : ایک تو موانا تا کو مصطفے صاحب قبلہ جو تیر اور دومرے مولوی کی مرتشی صاحب جو بیرے قیام درسے میلیات ہے ۔ مولوی کی مرتشی صاحب جو بیرے قیام درسے میلیات کے وقت (۱۹۳۱ ویش ) وہاں درس تھے ۔ آپ کی ایک صاحبز اوری کی شاوی ۱۹۳۸ دی الحج ۸ ۱۳۳۳ ہے کو اور کا مرد کا اور کا اور کی اس اس کو انتظال کیا جیسا کہ اصلات کے فیاقت وو کی الحج ۸ ۱۳۳۴ ہے کی ہے جس ہے جو کم ادر کی جائے ہوا تھا۔ ادر کی جائے ہوا تھا۔ ادر کی جائے ہوا تھا۔

- يممصطفى في جوير

IN45 IF IT

14A3215+1

V0000000000

FRA

الاولى ٣٣ الدروز بينشند) عربي، قارى اوراده و كما برحق تقوى الجهارت الحائش الواقل الاوروزان الحال عاشورا كفي المراي المراق المروز الدا الحال عاشورا كفي المراي المروز الدا الحال عاشورا كفي المراق من بايند حقد كتب بني كاشوق المار تلفظ المجمئي او في الدائيان وعراق من كافي المراق من المراق المحمل والمراق من المراول الموفز المحمل المروز المحمل المروز المحمل المراول الموفز المحمل كل بالمراول الموفز المحمل المروز المرو

جو جرصا ب کواگریزی زبان پر کافی مور تقار مرحوم نے جو سے پذری فربا اتفا کرا کیا۔
مرتبہ ان پر خارش کا اتفاز بردست جملہ ہوا کہ جم کا کوئی حسر محفوظ شد ہا بیمال تک کرا تھیوں ہے جس خون وغیرہ انکار بتا تھا۔ ایک طرف تو مطالعہ کے بغیر دفت گزار نا جمکن تھا دوسری طرف ویٹی کٹائیں ہاتھ میں لینتے ہوئے ڈر تھا کہ کیس اور ان بنجس نہوجا کیں۔ اس مشکل کا حل بیڈ کا انکسالیا۔ ایلیہ ولیا کا انگریزی ترجمہ مشکوا یا اور اسے پڑھنا شروع کیا۔ اوھر مرض فتم ہوا اوھر کٹاب فتم ہوئی اور موالا نا انگریزی کر باہر موگوا یا اور اسے پڑھنا شروع کیا۔ اوھر مرض فتم ہوا اوھر کٹاب فتم ہوئی اور موالانا

سادگی وقناعت

تمام مربزی سادہ زیرگی بسرکی۔معمولی لیکن صاف ستر الباس پینے۔سادہ نندا اور وہ بھی اللہ مقدار میں استعال کرتے۔طلب ونیا اور یوں دنیا ہے ب نیاز تھے۔ کالیس مبادت بھی کر بیا جے۔دوران مجلس اگر سامین میں ہے کو کی تھی کوئی سوال کرتا تو بہت ڈوٹی ہوتے اور مزیری ہے تہا ہو کھی کوئی سوال کرتا تو بہت ڈوٹی ہوتے اور مزیری ہے تہا ہو کھی بڑھی ہوئے کہ کا ایرے کی ہے تہیں ما تھے۔ کہی ا

شائع بوجاتی تھی اور مفت تعلیم کی جاتی تھی۔ خوجہ مجد کھاراور اور مرکار کی ما زیمن کے قائم کروہ مارتی روؤ کے امام بازہ میں ایندائی ایام میں امامت فرمائی۔ مولانا فلفر حسن امروہ وی کے قائم کروہ جامد امامی (وقت کے امام کی ایام میں امامت فرمائی۔ مولانا فلفر حسن امروہ وی کے قائم کروہ جام آباد کی میں دو سال تک بحثیت مدرس اطی خدمات البحام دیے۔ جب آب نارتھ فار معتقد کرتے تھے۔ فلار معتقد کرتے تھے۔ فلار معتقد کرتے تھے۔ فلار معتقد کرتے تھے۔ فلار معتقد کرتے تھے اور معتقد کرتے تھے اور حقیدہ مسائل کے دبی حل چی موٹر فقیا ماور ملاء میں براوران افل سنت کے معزز فقیا ماور ملاء میں شوق سے شرکت کرتے تھے۔ اور بہت سے صاحبان اظروق فو قاشر کیک ہوتے رہے تھے جمن میں سے چند تام بریاں بلور مثال چی کے جانے ہیں: جو آل کی آبادی، علامہ رشید تر الج، بروفی موٹر فی موٹر میں گئی جانے ہیں: جو آل کی آبادی، علامہ رشید تر الج، بروفی اور تہذیب اُسمن (بیف حسین شیفتو تھے ملی حبیب (حبیب جنگ ) آبا سلطان احمد مرزا والوی اور تہذیب اُسمن (بیف اُسمند کی جانے کے بیات کے باوجود جادی اور تہذیب اُسمن (بیف اُسمند کی اور جو بادی رکھ کی اور تو میاری رکھ کیا کھی دور اور میاری رکھ کا اور تہذیب اُسمن (بیف کا کھیج کا رہوں ہور میاری رکھ کا کھیج کا رہی کا میام کی اُساسلہ کی خت ملاات کے باوجود جادی رکھ کا کھیج کا رہوں کا مسلمان کی جو میاری رکھ کا کھیج کا رہوں کی سلمان سے بود کا اور جو دور میاری رکھا تھا۔

استاد معظم مولانا ہو ہر معادب جیسا حافظ یل نے کہیں ٹیس پایا۔ کتابوں کا مطالعہ ان کی انتظافی اور جو چیز ایک بار پڑھ کی دوسرتے دم تک یادری کدید بات کس کتاب کے کس صفی شل کے معدود ہے 19 مربی آگھوں پر موتیا بندا کیااور آپریشن کیلئے استخارہ بیش منع آثار ہا اسلئے آپریشن میکر دیا۔ اس عالم بین بھی جب ان سے بو چھا کہ قال کتاب کہاں ملے گی آو تفصیل سے بتاتے ہے کہ مقال الا بن بین مثلاً تین کتاب ان کے چھوڑ کر چھی کتاب نگا ہے۔ اور دی مطلوبہ کتاب بوتی تھی۔

ت خانه

حين من من منا عدوان كريك اعظم بايد يوسف قد صاحب مرحوم (متوفى ١١٠ بدادى

200000000000

سیدہ کے تاریخی خطبہ فدک کا ترجد جو آ ما سلطان الد مرز ا کی آناب سے قاظمة الرجر آش شاش ہے۔(1) القدیری کی کیل جلد کا اردوترجہ۔ جو شخابوں آ ما مرتقی کی یا کے پاس ہے۔اس کے علاوہ بہت سے دوسرے فیرمطبوعہ آثاران کے درخاء کے پاس محفوظ جیں ۔

وفات

آپ نے ۹ رسٹر ۲۰ ۱۳ در ۱۹۳۰ کور ۱۹۸۵ کوروز پاجشنبہ کراپی میں انتخال فربایا۔
آپ کے فرز تد جناب طالب جو ہری اس وقت باب العلم امام باڑو میں کھنل پڑھ دہ ہے آس دوران افکیں یہ شخوص تیر فی سرارے شہر میں کہرام کا گیا۔ از بڑھ ہے رات کو تحفل مراتشی میں جھیڈر و تحفین کے بعد جنازہ کو گھر لایا گیا۔ میں افراد شریک ہوئے۔ اس رضوبہ امام بارگاہ میں خنقل کیا گیا۔ سوادی ہے اماز جنازہ پڑھائی گئی جس میں ہزاروں افراد شریک ہوئے۔ اماز ظهر کے قبل انھیں کی مسن کے قبر ستان میں برد ماک کردیا گیا۔

محم معصوم، مندى

دیستان الدارب کے مواف نے لاہور کے ملاے شیعدا ٹنا عشریہ کے شمن میں ان کا تذکرہ کیا ہے۔ ان سے وو ۵۳ مار عشل ملے تھے۔

(خِنْت المام العيد بلاؤم ١٥٥)

سمى كرما مندوست موال دراز ندكيا \_ تغيير قر آن ادر طوم قر آنى بيت ولي تاق ادرايى زندگى كوهوم كل و آل كل كيك وقت كرديا قدار

500

شامری میں آپ کا استاداند درجہ پنذاور دوسرے ادبی مراکز میں سلم تفا۔ قیام پندے دوران میسوں فوجوان آپ کی شاگر دی کے فیض ہے متعدشا عربان گے۔ آپ کے قسائد اسلام اور دہا میاں اگرز پور طیامت ہے آراستہ ہوجا کی آو مہ کا ایک تیمی ذخیرہ قوم کے ہاتھوں میں آجائے۔ آپ تیمی ہوگھوں کرتے تھے اور قیس زگل پوری نے اس تھی ہوئے آپ کے ہم کا بیک کہا تھا

وض ويا و مافيها في مصطفى جوير

ثاديال اوراولاد

آپ کی پیل شادی حسین سی کے سید ٹھر کا فلم صاحب کی دومری صاحبز اوی ہے ہو فی تھی۔
ان کے انتقال کے بعد ان کی چوفی بین سے شادی کی جن سے ایک بی پیدا ہو کیں۔ جب زوج نا جانبے بھی رای جنے ہو کی قرجتا ہے تھ رضا صاحب (حسین کے) کی صاحبز اوی سے محقد کیا۔ جن سے
اخذ تعالیٰ نے دو بینے مطاکھ: طالب جو ہری اور ایوالقائم جو ہری۔

تفنيفات وتراجم

آپ علی آثاری جوچزی محصوم میں ان کو یہاں درج کرتا ہوں: (۱) توحیدو عدل: نیج البلاغہ کی روشنی میں (۲) مقائم جعفر پر (۳) اصول جعفر پر (۲) ثبوت خدا (۵) جناب

PAT.

# محد مهدى سيد ، تعليكورى

JAST WITTE

AHTT WITTA

سولانا سیدگار میدی قدوۃ العارفین مولانا سیدیلی طاب ژاہ کے فرزندا کیر تھے۔ آپ کے حالات جوئڈ کرو ہے بہائیں درینا ہیں۔ ان میں مچھوٹی مجھوٹی بہت می خامیاں ہیں۔ میں نے فجرۂ طیب کی تالیف کے وقت برائی تحریروں اور معاصر تو الوں کی ہنا و پران سب استقام کو دور کردیا۔ اور اس بنا ویرآ ہے کا جورا حال بھرے لکھنالازم ہوگیا۔

سول ۱۹ سال کی افر ش آپ سائے پردی سے ورم ورک کی حصول تعلیم کی فرش سے آپ
پیری سے ورم اور کی اس کی عرص معتصل علم میں گزار کر تعین کا سفر کیا اور وہاں مختلف ملا اور دری این اثر ورج کیا۔ "سوال السیم کی گرائر و ج کیا۔ "سوال السیم کی تقریبات کے تاج العلماء موالا تا سیم کی تھے ما است قبلہ طاب ر اور سام ما حد سے کس فیض کیا۔ آخر میں اور در الناس مفتی سیم تھے مہاں ما اسب طاب ر اور کے ملا اس ما میں دائل ہوگئے۔ مرز اعمد ہادی مساحب مزید کھنوی نے قبلیات ما میں مناز دور مولوی سید تھر صور کی ما دور مولوی سید تھر صور کی میں ما اور کی ساحب مزید کھنوی نے قبلیات میں مناز کی مادور مولوی سید تظر حسن میں مولا تا سید تھر میدی تعینی دی کے ملادور مولوی سید تظر حسن

صاحب بھیکی ری اور موادی سید مرتضی صاحب قلستی تو نیروی کے جام تھے جیں۔ موانا علیہ تھیدت حسین صاحب کھے ری (این طامہ کھوری) ہے جی آپ نے استفادہ کیا تھا۔ چونکہ استاداور شاگرد کی مردی میں مرف سات سال کا فرق تھا اس کے قیاس کیا جاسکتا ہے کہ سید تھر مہدی معاجب نے ورد دکھنو کے فررا بعدان ہے موسط سطح کی کما جی پرجی جوگی۔ قصیل علم ہے فرافت یائے کے احد آپ ۱۳۰۱ء ہے پہلے مظفر پورآئے اور اواب حالی سید تھر کی خان ایک وارب میں ایک سید تھر آئی خان ایسی میا ہے۔ نواب معاجب موسوف نے کہ کر ومظفر پورس ایک سید اور عالیہ تان ایمی حیات تھے۔ نواب معاجب موسوف نے گئے کر ومظفر پورس ایک سید اور عالیہ تان ایمی اور یا تھا چر کی تھا تھا کہ در سراجا نے گئی تا ہی گئی (گمان عالی سید ہو کہ کہ اور عالیہ تان ایمی اور عالم اور عالم میں ایک سید موسوف نے گئی کر ومظفر پورس ایک سید موسوف نے گئی در سراجا نے گئی اور گمان عالم دی تھا ہے کہ یہ ایو صاحب مرحوم اطی اولیہ مقامہ اور علامہ کھوری اطی اولیہ مقامہ کی تھید با

نواب صاحب مرحوم نے ۱۳ مرادی الاول ۱۳ ۰۱ ھ ش ۸۸ سال کی حمر ش رحلت فرمائی۔ اپنی وفات سے ایک سال قبل انہوں نے =ر ۲۰۰۰ ابار و بڑاررو ہے سالات آمد تی کی جا تعاد ان کار بائے فیرکیلیے وقف کروئی تھی۔

مولانا سید محد مبدی صاحب آخر بیآساری زندگی ای مدرس مجداورامام بازوت بحیثیت مدرس اعلی و اور فطیب شبکک رہے۔ مولانا سید محد مبدی صاحب اس وقت سے مدرس ایمانی کے مدرس اعلی دیتیت سے شبکک ووٹ ہے جب مجدگی وشنمازی مولانا سید عابد حمین صاحب اعلی اللہ مقامد سے متعاق تھی۔ جب ۱۳۳۰ اور مطابق ۱۹۰۳ ویش مولانا سید عابد حمین صاحب قبلہ سلطان المدارس کلائو تقریف ہے ہے اس وقت سے مولانا سید محدم مبدی صاحب کے سر پر مدرس کے ساتھ ساتھ مجدگی فرمدواری بھی آئی اور ان فرمدواری کو آپ آخر مرتک انجام دیتے تر ہے۔

A STATE OF THE PARTY OF THE PAR

M. W.

ے آپ کو ایک وینا اور ایک بنی دو لی۔ بینے وین بستیم سید تھر جاد صاحب (جو پہلے حالی کی پائٹ میں مطب کرتے تے پھر تقریباً ۲۲ سات میں مظفر پور خفش دو گئے ) اور بنی باجرو خالون تھیں جو راقم الحروف کی تاتی تھیں۔ خدیجہ خالون کا انتقال پائٹ میں ۱۰ شوال ۲۰ سات کو جو ا۔

تسانف

آپ نے اردوش ۲، اور فاری ش ایک ایک آناب تعنیف فرما فی سیس آنایش آپ کی حیات می ش چپ گل جس -

(۱) سواء السيل(۲) جمة بالغي (٣)و (٢) زعزمة المجان وهدية الزيارات (۵)و(۲) لواع الاحزال جاوج ۲(٤) تخذة الايرار (فارى)(٨) مواهظا التنظين (عربي)

لواع الاحزان

لوائع الاجزان كى دونول جلدي فيرمنتم بندوستان كشرشراورد يهات وبيات ش پنجيل اور ان كى وجه سے مصنف علام كا نام بيشر زعدور ب كاربيان مجلول ك مجوس ين جو مصنف علام نے وقا فو قارير مى تقيم \_

اوائع الاتزان جلداول کے دیباچہ می تحریر فرمایا ہے کہ جب آپ بعد فرائع تحصیل علیم مقلیہ وتقلیہ تکھنو کے اپنے وطن میں تشریف لائے تو موشین کے اصرارے اپنے والد ماجد کی بنائی بوئی سمجہ میں نماز جعد و جماعت شروع کی۔ماوسیام کی نماز جعد میں اطراف و جوانب کے موشین دور، دورے آنے گے اوراشاعت ویلی میں روز ، یروز ترقی ہوئے گی۔ بعد نماز ظہر روزانہ و محظ ہوتا تھا۔ لوگ پایتر صلوق وصوم واحکام افی اورتارک معاصی منائی ہوگے۔

١٥١٥ حين احباب كامرار حة فريس معائب يحى بيان كرف كلداور يوالتوام

آپ نے مراق کے مشاہد شرفہ کی زیارت دومرجہ کی تھی اور دومرے سفر ش مشہد مقدی بھی تحریف نے تھے۔ پہلے سفر کا سال معلوم نے ہوسکا۔ دومرا سفر ۱۳۰۷ ھیں ہوا تھا۔ آپ کیسر کا دمرز اسید کو تقی شیر از کی طاب اڑا ہے اجاز وروایت وامور حسیبہ خطافر ہایا تھا۔

بندوستان شرافتهای البیت مولانا سیدهد باقر صاحب قبله طاب ژاوند آپ کوهنسل اجاز دارد ایت عطاکیا تھاج مواطئا کشکین ش چھیا ہے۔

عرج

۱۳۲۱ ہے گی آپ اپنی البیداور چند دیگر رشتہ دارول کے ساتھ بنج اور زیارت مدینہ منورہ سے شرف ہوئے۔

يارى اوروفات

۱۳۰۰ عدی آپ کی بائی دھے جم یرفائے کا اثر ہوگیا۔ طائ سے پی فائد وہ وہ ااور آپ اس قال کہ وہ وا اور آپ اس قال ہو گئے کا گر شدت اختیار کر لی اور آپ وہ میں ہو گئے کہ میں موسلے کے گئے مشار کر لی اور آپ وہل وہ ایس آگئے ۔ آخر کا رشب ۲۳ ہما دی الآبانی ۲۸ ۱۳ عد طابق ۲۰ نومبر ۱۹۲۹ وہو تا مشار آپ نے وہن وہ اور میں مواجب کے قیم کردو امبا (دو اس فرین مواجب کے قیم کردو امبا (دو کس فرین مواجب کے قیم کردو کس فرین کس ف

شاديال اوراولاو

آپ كل شادى خد يو خاتون دت جناب سيدالى بخش سادب ممكورى سے دوكي حى ان

20000000000

### محرمهدى،سيد،زيد يورى

MAKAPET

MANUEL N

مولانا سید محرمیدی صاحب جناب سید مطافی صاحب کے صاحبزادے اور مولانا شبشاد حسین صاحب کے قوائے ہے۔ آپ کی ولادت ہر رحضان المبارک ۱۳ احد ۱۳ دفروری ۱۸۹۵ء کو آبائی وطن زید پورشلع بارہ بنگی جس ہوئی۔ ابتدائی تعلیم وطن جس مولانا علی شامن صاحب عاصل کی۔ ابتدائی تعلیم وطن جس مولانا علی شامن صاحب عاصل کی۔ ابتدائی میدی صن صاحب نے بال وحدر تی تھے۔ وہال سید الد مبدی صن صاحب نے اپنے تانا صاحب کے ملاوہ مولانا مبدی صن صاحب اور مولانا الد مسین صاحب سے ملاوہ مولانا مبدی صن صاحب اور مولانا الد مسین صاحب سے کے ملاوہ مولانا مبدی صن صاحب اور مولانا الد مسین صاحب کے ملاوہ مولانا مبدی صن صاحب اور مولانا الد مسین صاحب کے ملاوہ مولانا مبدی صن صاحب اور مولانا الد مسین صاحب کے ملاوہ مولانا مبدی صن صاحب اور مولانا الد مسین صاحب کے ملاوہ مولانا مبدی صن صاحب اور مولانا الد میں کیا۔

حیدرآبادے واپس آگرآپ نے سلطان المداری میں واخلدایا اور صدر الا فاضل کرنے کے بعد مدرسة الواعظین میں وافل ہوئے۔ وہاں کی تعلیم کھل کر کے مسلسل بارہ سال کک مدرستہ ندکوروکی جانب سے فرائفن جلخ انجام دیتے رہے۔

ا سے بعد آپ ریاست جس پور (طلع سلطان پور) میں بیشیت امام بھاعت و مالم وین تیم رہے۔ خاتر زمیندوری نے ریاست کا سلساؤم کردیا تو آپ وطن واپس آئے۔

آپ بہترین داکر و خطیب تھے۔ ہندہ میرون ہند کلف شروں شی داکری کے سلط ش تحریف لے جاتے تھے۔ معروع عمر علی جالیس سال تک چک الدآباد آخریف ہالہ جاتے دہے۔ زندگی کے آخری محرم میں بہ سبب طالت وہاں نہ جاستے لہذا زید پوری کے امام باڑوسر کارٹیٹن میں برادر جاری رہا ہے م ۱۳۱۹ ہے بی آپ نے اپنے بیان بولس کا سلسلہ ڈالا جو ایک جاری ہے۔ ب آپ کورو ایات فضائل اور مصاعب بچج کرنے کا شوق ہوا۔ چارسال میں کی بادوائج الاحزان جلداول مرحب ہوئی۔ اس کا تاریخی معظم العمایہ ہے۔ (۱۳۱۹ھ)

مبلد اول میں چیار دو معصوی طیم السلام کے حالات کے جدول بھی دیتے ہیں۔ علادہ بری آتھ ترت معلی اللہ علیہ وآلہ و علم ہے بارہ ویں اہام علیہ السلام تک کا پورا تجروبھی کی صفات میں گاہ ستوں کی شکل میں دیا ہے۔ اس میں بیالترام رکھا ہے کہ مصومی کی جن اولا دول کے بارے میں اشاق رائے ہاں کا نام گاہ ہے کہ شکل کے حالتہ میں کھا ہے اور جن کے بارے میں افتقاف ہاں کانام دائرے میں دیا ہے۔

کی جلدیش چیار و معصوش کی ولادت کی مخطیس اور ۱۱۳ معصوش کی وفات وشیادت کی محصوش کی وفات وشیادت کی محصوش کی جانس می از تیب واقعات کا لحاظ رکھا کیا ہے۔

یناب سید محد مهدی صاحب منتی سید محد مهار صاحب کے شاگر دیتے اور استادی کی طرح عربی اور قاری ادب میں مہادت تاسد کھتے تھے تھنتہ الایرار میں جا بجا عالات و واقعات کی مناسبت سے اپنے اشعاد وریق کئے ہیں۔

# محدمهدی،سید،زنگی بوری

NO. PER

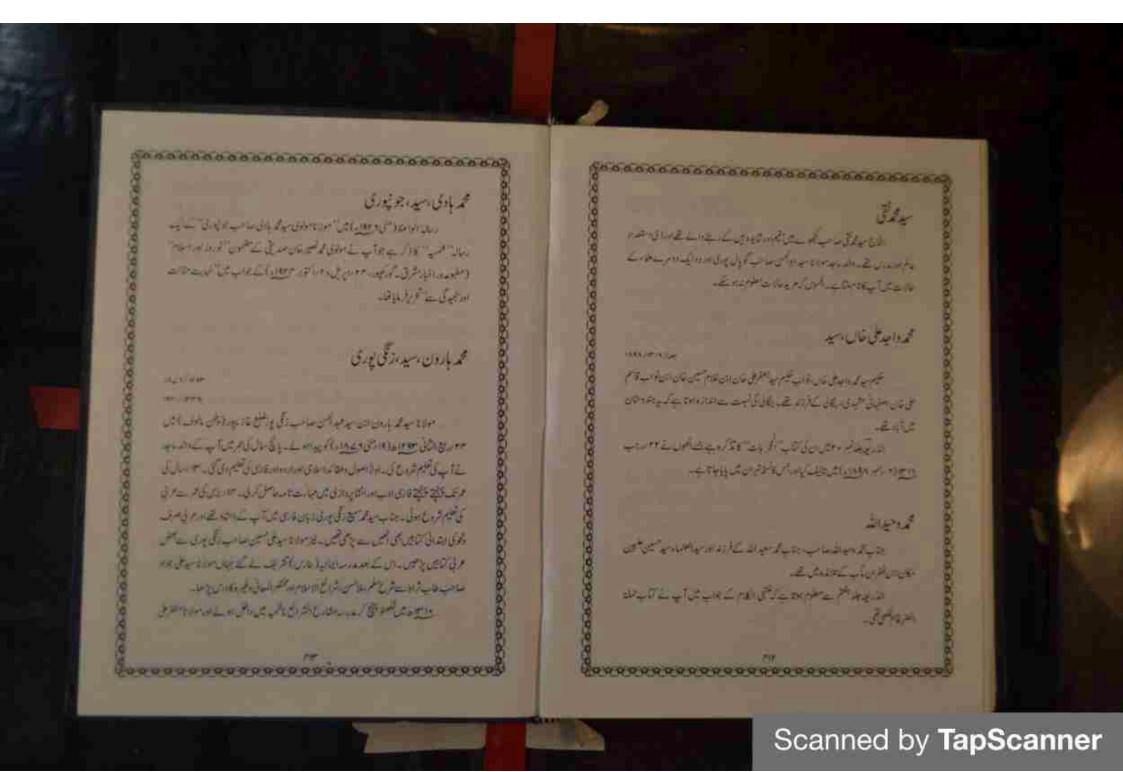
1432/FLS

موادنا سيدهر مهدى صاحب الن موادنا سيدهر يوسف صاحب وبمر علاها و ( عقوم - مغر السلام) عن البيئة الى وطن زكلي يودهل خازى يورش بيدا بوع - وطن ش التدائى تعليم حاصل كرف ك بعد بعادى محمد بعادى على مرستا بياديد على مولوى تك قصيل كى استكه بعد بعاش العلوم جواديد على والحل بوعة الوقع الله فاصل كى سند حاصل كى - فارق القصيل بوف ك بعد بعاد يوى على حدث على والحل بوعة الديدى على حدث مقرد بوع الديدى على حدث المحمد المقال على حدث المحمد على حدث المحمد المحمد المحمد المحمد على حدث المحمد المحمد

0000000000000000000000000

ملم فضل میں بے نظیر تھے۔ نہایت خوش اخلاق تھے۔ بھو پیسے فردوں ہے بھی انکسار فرماتے تھے۔ دری و قدر لیس میں انہاک تھا۔ معقولات کے علاوہ بھی طلباء کو اوقات مدرسہ سے الگ فقہ و اصول فقہ و فیر و کی تعلیم دیتے تھے۔ آپ کے شاگردوں کی فیرست بہت انویل ہے۔

آپ کی شادی موانا سید تھ مقار صاحب زگی پیری کی بھشےرہ ہے اول تھی۔ آپ کے صاحبزادے مولوی سیدانشار مبدی صاحب تھراانا قاشل پرہم پیرومظفر پورٹی امام بھا مت اور دہاں کے مدرسے انجاز جیں۔

مولانا نے ۱۲ رصفر المظفر ۵ می ۱۲ در ۲۰ رخیر ۱۹۵۵ یکوش می رصلت کی۔ (دائی معلومات) 

الم المجدورة بيد ما اوار مخواد مقرر كردى - دوسال كم بعد آپ للسم بيد كيرى من مدين او گئے - اير سركار جم الملة كم سم اسروب كم مدسدش چلى ك - سود اليام ش كورنست اليكوم بك بانى اسكول (وفل) من معلم اول السنة مشرقية مقرر ہوئے اور تيوسات سال تك و بين رب - دوفي ش اي سود اليام من آپ كوالياز برويا كيا جس كے اثر ات علام تيتي حسن كا مو نيورى في ان الفاظ ش بيان ك جن -

" مولانا محد بارون صاحب کودشتی کے سب کھالوگوں نے زہر دید یا تھا جس کی وجہ سال کا ساراجہم بیکارہ وگیا تھا۔ اور ہروت جگہ جگہ ہے خون وغیرہ بہتار بنا تھا۔ ان کی انگلیاں کی بیکار موگئی تھیں۔ محراس حالت میں بھی باتھوں میں پٹیاں بائد حکر تکھتے رہے تھے۔ جب اوگوں نے آجیں اگرام کرنے کا مشورو و بیا تو معلوم ہے آصوں نے کیا جواب و یا ؟ آصوں نے فرمایا: جس سے گھر میں آگل لگ جاتی ہے ووکیا آرام کرتا ہے؟ ووٹو اپنے گھر کا فیتی سامان جلدی جلدی باہر تکا لئے کی گوشش کرتا ہے۔"

علالت یوسط پردنی چھوڑ کرنسین آباد (مؤگیر) میں قیام فرما ہوئے۔ وہاں بھی بیاری نے ساتھ نہ چھوڑ اتو ملازمت مچھوڑ کروشن چلے آئے۔ جب ۸ سالیو (= ۱۹۱۰–۱۹۱۹) میں مدرسة الواعظین قائم جواتو آپ کوشعبہ تھنیف و تالیف کا صدر مقرر کیا گیا۔ وہاں سے معلالہ میں آپ کی گراں قدر کتاب '' ابطال امتناع'' کا درسے پہلے شروک طور پرشائع ہوئی۔

مولانا عمری تفاضوں کو تھے تھے اور جدیدر ، ٹانات کی روٹنی شروی تفایسات کو پھیلائے کا کام کرتے رہے۔ ان کے تالیفات برمغیری شیعہ مولفین کیلئے مثالی میٹیت رکھتے تھے۔ برفض آپ کا مدائی اور تی شیعہ دونوں آپ کے گرویہ وتھے۔ مدرسرویانیہ (ویلی) کو زندگی بخشی۔ مراوار میں ڈیرو مازی خال میں مرز ائیول، حنفول ، و بازیوں اور الل قرآن سے کا میاب خان مرادة بادى اور سركار فيم العلماء سائب فيش كياراد بيات يس مولاة سيدمبدى مصطفية بادى كم ساست زانوك اوب تركيار وكو عرصه تك تكيم سيد في باشم صاحب سيد مي ودن ليار المالية (= ٢٠ - ١٠ - ١٠ - ١٠ من مدرسة ظميد سيمتاز الا قاضل كى سند حاصل كى اورعاسة اعلام كم ماتون منافعت اوردستار فينيات في -

جس سال سوادنا ممتاز الاقاض كامتحان بي شريك بوك الدسال آية الذهبيد فيركاهم طياطياتي يزدى اللي الله متامد ( نجف الثرف ) الى درجه كه فقد و اصول فقد كمتحن شهدي چه سوالات بي ايك سوال تلذ متامد ( نجف الثرف ) الى درجه كه فقد و اصول فقد كمتحن شهدي كرك سوالات بي ايك سوال تلاقل موادنا في جواب بي الاسلام كوفايم كرك سوال كوج كرك الله و يا كيا الله و يا كيا الله و يا كيا حداً مقالله و يا كيا جواب تحريف با يون كي تعريف بي بي مهارت تحريف با كي جو مدر الله بي معارت تحريف با كي جو مدر المتحريف بي ديورث من جيب بي على ب : " قوت متصرف اليثال بسياد خوب است والعز المنيك ميسوال ما كرده الدك كي لله الله شده واين ودمقام المتحان فيلم مناسب است را

ای سال مرودت زمانہ کو تو تا رکھ کر بغیر کی تیاری کے بنجاب یو غورش کے مولوی فاضل کے استحان میں شرکے یو کراس کی تھی سندھام مل کی اور ایسا امتیاز حاصل کیا کہ یو غورش کی طرف ۔ ۲۰ سروپ کا انعام ملا۔ جناب قاری سیدمہاں حسین صاحب (پروفیسر عربی، بلیکن حاکائی) سالبات دراز تک درجہ مولوی فاضل کے محقی ہوتے رہے تھے انھوں نے مولانا بارون صاحب کے پہنے دراز تک درجہ مولوی فاضل کے تاریخی ہوئے ایسا طالب علم استحان مولوی فاضل میں شامل میں ہوا۔" اور و کی جدفر بایا قال کے ان تا تا تا تا تک کوئی ایسا طالب علم استحان مولوی فاضل میں شامل میں ہوا۔" اور آپندا آیا کہ جناب مدون نے پورے فیمرو یو ہے۔

مولوی قاصل کرنے کے بعد آپ کو اور فیل کالی (الا مور) میں بطور عربی استاد کے بالیا کیا۔ وہی کے تیام کے زیائے میں مفتی محباب عالم نے آپ کو" بیدا خیار" کا ایڈیٹر بنادیا۔ اور

COLC.

ضانيف

تعنیف کا شوق و طالب العلی ای کردائے سے الدی کرائے فارغ القسیل اور نے العمل اور کے ایس کا مراف کا القسیل اور کے ایک مرحد میں ایک سوے زیادہ کا ای طاح مراف کی مرحد میں ایک سوے زیادہ کا ایس طاقت علی مرفی دی تعنیف کیں۔ یہ تعنیفات عرف فاری اور اردو تیوں زیانوں میں میں اور ہر زیان میں نئر اور نظم دونوں طرح کی الآئیں میں۔ (اعم میں آپ تلا تھی کرتے ہے) کو کہا ہی مطبوعہ میں۔ یا تی مخطوطات میں جو سوادہ میں اردون صاحب کے ہمائے اور شاگر و طاحہ سید محد رض زقی بوری کے پاس تھے اور اب بات اطلیم میرادی کے اس تھے اور شاگر و طاحہ سید محد رض زقی بوری کے پاس تھے اور اب بات اطلیم میرادی کے اس تھے اور اب بات الحادم میں ایس کے بعد نئی میں۔ ذیل میں چند کرا بوری کا مردح کیا جاتا ہے:

فنحديث

الطّود الصين (في شرح الاربعين ) بدربان او بي، جيمبلدول مي

صول فقه

سيرصينيه بخنث عازيه مستلك على القدين

اورادواذكار

انيس المجهد ،اورادالقرآن

كغيير

توحيدالقرآن علوم القرآن فقى القاسر (عربي)

من قرے سے۔ ایک ایک ون ایک فرق والے آتے تھے اور ظلت کماکر واپال جاتے تھے۔ در دم رواوار کو وہاں سے فاتمان شان سے واپاس آئے۔

عرف المرش من المرش المرش المراس المراس المراس المراس المرش مرض كا وبد المرش المرش المرض كا وبد المرش المرش المرس المرش المرس المرش المرس المرش المرس المرش المرس المرش المرس المرس

اس جا تکاو طالت بی احمان بالات احمان بر بودا کدآپ کے جوان صاحبر اوے سیدشیر حسین نے جن کی شادی وسط شعبان سیستا دیں جناب مولانا سید محد احموب صاحب کی صاحبزادی سے دوگر تحمی مرف ایک اوبعد ۱۲ ارد مضان کو بیشدگی و باش احمال کیا۔ ضعیف باپ نے جو مرف کیاس کا ایک شعر ہے:

تعلی ے تری وابع تھا جیا جرا اب یعنائیں،اے بان ایر ہختاکالدا

مد خال پین دراب

(3)

# محدباشم سيد

140 100

مولانا سید تر باشم صاحب لا بوراور کراچی کی مجدوں میں امام بھا عت رہے۔ آپ نے ۱۸ مری ۱۹۹۳ء (=۲ مذیعند و ۱۳۷۰ء) کورطات قربائی۔

(الوادولة في وم لير عدم عرم الرام 10 100)

## محريعقوب،سيد،زنگى پور

Mrs/mor

مولانا سیرمحر یعقوب صاحب جناب سیر علی حسین صاحب زقی پوری کے صاحبز ادے تھے۔ ولمن میں ابتدائی تعلیم کے بعد تکھنؤ گئے جہاں دوسرے علاء اعلام کے علاوہ جناب مفتی سید محد عہاس صاحب سے خاص طورے کے فیض کیا۔

ورع داختیاط کابیمالم تھا کرزندگی جرفراز نیس پڑھائی۔ آپ کے صاحبر ادے جناب ماسید محد پوسف صاحب مرحوم تھے جوجا مع العلوم جوادیہ کے پہلے پڑھل تھے۔

آپ کی صاحبزادی کی شادی جناب مولانا سید فر بارون صاحب کے صاحبزادے سید شیر صین صاحب کا شادی کے ایک میدنے کے اندری انتقال میں صاحب کا شادی کے ایک میدنے کے اندری انتقال موالیا۔

(مدن عدامر ۱۸ البر ۱۸

گلام ومناظره ابطال المتاع ، بچه العر، العرائ ، تنقیح البیان (ردفرق الل قرآن)، البیف البیان (ردقاویانی)، المه القرآن، ثبوت شباوت مواعظ مواعظ رمضانی، مواعظ دولوی، مواعظ امروبوی، مواعظ مشرع حسینی، مواعظ حن، نزل الا براد، شفرات المعقیان قری السائمین -رجال مناویدوشن (علائے ترکی الات)

البدرالقام (اردور جماليك والاملام)

ان کے ملاوہ اردو و قاری تکم میں کتا ہیں ہیں۔ اخلاق کتا ہیں اور ادمیات عربی نیز اہم کتابوں پر حواثی بیل بین کا ذکر انظر اختصار ترک کیا جاتا ہے۔

مولای نے صرف ۱۳ سال کی جری سار بھادی الاولی ۱۳ میرور ۲۳ رچوری الاقام کو

(ابطال الله المسائد جهيدوالله المستف الحقه فواجفام المستن بأني الكفرواكيدادادا (المدليب المرا) (ابطال الله تاسان المستن المستف المقه فواجفام المستن المران المستان المستناف المستناف المستناف المستناف المستن

CIA

£000000000000

قربائی تو آپ کو اطور پرلیل و بال بادانیا جہاں آپ آخر تک رہے۔ سرکا رجم العصاء نے آپ کو بناری جانے کی اجازت و بے ہوئے مواد تا محد سجا و صاحب کو بیانکھا تھا کہ آپ نے میراوا بیٹا باتھ لے الیا۔ اگر بناری کی المیت نہ دوتی تو موصوف کو بھی جانے دویتا۔

آپ نے سار بھادی الاول ۱۹ هر ساچ اور دو معلق کو مدرسہ جوادیہ میں انتقال فر مایا۔ لاش افرض تدفیل جور لے جائی گئی۔

آپ اپنے دور کے فقید، اویب اور خطیب تھے۔ آپ کے فرز تد مولانا سید تلد مبدی مبدی ماحب بھی زیروست عالم تھے جن کا حال اس تذکر ویس دیا کیاہے۔

## مختاراحد،سيد، گويال پوري

41+1-11-1-4-11-4

MET OF TE

مولوی سید می راحد صاحب سید عابد حسین صاحب این سید ظاہر حسین صاحب کے بوے بیٹے تھے۔ گویال پوروطن تھا۔ وطن میں ابتدائی تعلیم حاصل کرنے کے بعد مدر سرائیات بیاری تحریف کے بیٹ کے جہاں آپ کے بیٹا مولانا سید تاظر حسن صاحب مرحوم مدری ابنی تھے۔ اُنھیں کی گرائی میں انتظامی مراحل سطے کے اور الدآباد بورڈ ہے فاصل پاس کیا۔ اصلاح (باور مضان ۱۹۳۳ ہے) کی ایک تحریب معلوم ہوتا ہے گدآ ب اس وقت درجہ فاصل میں تھے۔

ا کے بعد آپ مرساسلامی ( کجو وشلع ساران ) یس مدرس مقرر ہوئے جال آ فر کر تک رے۔جوری سامور میں انتقال فربایا۔ مر يوسف،سيد،زنگى پورى

IAA4/IF+5

HE WEST

مولانا سيدائر فيسف صاحب جناب مولانا سيدائد يعقوب انن مولانا سيد في شين ائن سيد فيرات على زكل يورى كرفرز عقيه وارش و ١٨٥١ه (= • اررمضان الموسلاء) كوزگل بورش بيدا بوت رايتدافل تعليم اپنديدرز رگواراورم نامداد جنايي سيدائد ايرانيم صاحب سامل كرف ك بعد مولانا سيد على جواد صاحب طاب ثراوكى مريدتى ش مدرست الحانيه (بنارى) بش وافل اورت جهال ورجه عالم تك تعليم حاصل كي راس كه بعد مدرست الحميد ( لكفتو) مي وافله ليا اورممتاز الا فاصل بوت يجرسلطان المداري سي مدر الا فاصل كيا راس كه بعد و بنايا بي نيورش سيمولوى فاصل اور طافا حل المراكل سيمدر الا فاصل كيا راس كه بعد و بنايا بي نيورش سيمولوى فاصل اور

سر کار تھم العلماء نے آپ کو سر مواہ یک بعرض تبلی زخر تبلی جہاں آپ کی خوش اطلاقی اور خوش میانی کے چہتے بعد میں مجی رہے۔ (الواحد ، حجر ( مواہ یہ) وہاں سے عمر 19 میں والہی بعد کی۔

جب مولانا سيد ورسادب طاب راه في منارس من جامع العلوم جوادي تاسيس

m

SECRETARIA DE LA COMPANIO DEL COMPANIO DE LA COMPANIO DEL COMPANIO DE LA COMPANIO

یو نیورٹی کے نشقی معالم مقاضل جوادی معالم مقاضل اور انگرے کی ٹیں انتوان پائی تھے۔" اس تحریر کے مطابق آپ کی والاوت صدود ۴۴ سائی اور کی دوگ

## مرتضى حسين اسيد احسين آبادي

MANDETEC

مولوی تکیم سیدمرتھی حسین صاحب حسین آباد (حلع بلیا، یو پی) کے باشدے تھے۔ آپ مولوی تکیم سیدم تناز حسین صاحب کے صاحبزادے تھے۔ وقن میں ابتدائی تھلیم کے بعد آنھنڈ جا کر عدر سناظمیہ سے فارغ انتھسیل و سے ادرو جی علم طب بھی حاصل کیا۔

آپ کی پہلی شادی مولوی سید طاقت حمین صاحب بھیکی ری (ویکھے احوال) کی صاحب بھیکی ری (ویکھے احوال) کی صاحبزادی ہے اور گئے اور اس ملطے ہے موتیاری (بہار) پی آخوزی ی جابداد بھی فی آخی چائی آپ نے موتیاری میں طبابت شروع گی۔ پہلی و وجہ کے انقال کے بعد مولوی سید راحت حمین صاحب بھیکی وری (ویکھے احوال) کی جوہ صاحبزادی ہے جاتد کیا۔ اس رشتہ کی ناکای کے بعد موشع کی کوکھ راضلع سارن) پی شادی کی ۔ اسکے بعد آپ احدا آباد (گجرات) میں ویش انداز ہو کر چلے گئے اور ویس موطن ہو گئے ہو اس مارن کی بعد اور ایس موطن ہو گئے ہو اس مارن کی معدود جاتھ کے جہاں کیکہ مارن کی معدود و بھوال است جمدود جاتھ کے اور ویس معدود و بھوال است جمدود جاتھ کے اور ایس انتقال فی مالیا۔

(زائي مطويات)

سے الی ایس الی ایک چھٹی ہی مرحوم سے مقابات بدائی کے چند مقاب پڑھے ہے۔ مرحوم الی الیک قطعہ بہاداور ہے لی ہی بہت مشہور ہے۔

الی انسل امامت ہیں ہے جب تا ٹیر ہرایک ان ہی ہے کیسال مغیر ہو کہ گیر

جب نیس کر نظر بندی مصور نے پاٹ بلٹ کے دکھائی ہو ایک ای تصویر

آپ بہت ہی فوش اخلاق ، فوش نداق اور بذاری تھے۔ چیہ الاسلام مولانا سید ملی صاحب

قبل کو پال پوری سے بہت ہی گیرے ووساند روابط ہے۔ مولانا سید ملی صاحب قبلہ طاب راونے جھ سے بیان کیا کہ ایک وقعہ یو ووق صفرات کو پال پورے مولانا سید ملی صاحب کے کا اتج ویجر وصیا تھا اور اس وقت کی مگی سوک گذھوں اور کھائیوں سے عبارت تھی۔ ایک جگہ دیروں سے بیارت کی۔ ایک جگہ دیروں سے بیاری کرتے تھے۔

## مرتضى حسين اسيد الور

ST. TICKAL

HIC HAVEET

000000000

اسلاح جلد فير ١٨ غبر ٦ (رمضان السارك ٢٣٠ عن من آب كي خروفات ان الفاظ

الله المالية

مواوی سیدمرتشی مین صاحب مهاراج کافی دحول اور آپ نے اس برت کے من میں بعدرت علی دعول اور آپ نے اس برت کے من میں بعدرت علم الکھنو کے افاضل سے تھاور منجاب

rrr

کے تھے۔ ہندوستان تو اصل وطن می تھا۔ پاکستان جائے کے بعد پھر ایک مرجہ بندوستان تک باب

ا کی عملی زندگی کا ایک بیدا حصد ایک سرکاری تعلیمی اداره ش استادی حقیت سے گزراادر ای دوران دو گری حقیت سے گزراادر ای دوران دو گری تقلیم دوران دو گری تقلیم دوران دو گری تقلیم دوران دوران دی از در سے درجان دیا شد انہوں نے جوم رہے حاصل کیا دوا تھے ہم معمر دن کیلئے قابل رفت ہے۔ اوب ش دو قالیات کے باہر تھے ادر قالب کی صد سالہ بری کے موقع پردوں میں دونے دالے بین الاقوالی ہی بینارش محققین نے متقد طور پر قاصل قلعتوی اور مالک رام کو قالب کے معتدرترین ماہر ہونے کی استددی۔ اورائے حقیقی کا مون کو نونے کا کام قراردیا۔

تسانف

آپ نے تقریبا تین سوکتا بین آگھیں۔ جن جن جن اور ۲۲۵ کے نام معلوم بیں۔ سوکتا بیل جھی جی ایک سودد فیر مطبوعہ بین اور ۲۳ مفقود جی اور بائی کا حال کیں معلوم۔

آپ کے ساجز اوے جو الاسلام سید حین مرتقی نے آپ کا ہو محقورتوارف ٹالٹ کیا ہے اس ٹیل پوستان قاصل کے نام ہے آپ کے تصافیہ کی مفصل فیرست حروف ججی کے اعتبارے مرحب کر کے کھمی ہے۔ پوستان اول ٹی مومطور کا اول کے نام جی ۔ پوستان دوم ٹیل ایک مودو فیر مطور اتصافیف کے نام جی جو ایک کتب خان میں موجود ہیں۔ پوستان موم ٹیل ان ۲۳ تالیفات کا مطور اتصافیف کے نام جی کوان میں کتابوں کانام ملکستان محتمر تذکر ہے ٹی میکن ٹیل ہوا سے کام ہے جو تایاب جی فالوں کانام ملکستان محتمر تذکر ہے ٹی میکن ٹیل ہوا سے کام ہے جو تایاب جی فالوں کانام دری کیا ہوا تا ہے۔

ا- آثري تابدار امت ٢- آية الدُّشِين في على ٢- احوال أثن وتعارف

مرتضى حسين ،سيد ، فاضل

Herry men

MACHERA

سید مرتشی حسین (ساحب مطلع انوار) تکھنؤ کے محلہ راجہ بازار میں ۱۹۵۸ کا اور المجمد المجاری الحجہ المجاری المجبر المجاری المجبر المحبر ال

کریس ایندائی تعلیم حاصل کرنے کے بعد انہوں نے مدرت عابد یہ ش داخلہ لیا اور اسکے
بعد سلطان المداری میں داخل ہوئے۔ سلطان المداری سے معدد الا فاضل کی سند کے صول کے بعد
وویا عمریہ میں داخل ہوئے جہاں ہے ممتاز الا فاضل کی سند حاصل کی ۔ مدرسد کی تعلیم کے دوران میں
انہوں نے شید ورنی کا بنی سے محاد الا دب اور محاد الکام کی سندین حاصل کیس اور الدا یا ویورڈ سے عالم
(عربی) کائل (فاری) اور قابل (اردو) پاس کیا اور تکھنٹو کی نئورٹی سے فاضل ادب اور دور کائل کی
سندین حاصل کیس ۔ اور آخر میں چاب می نیورٹی سے مولوی فاضل انفی فاضل اور اردو فاضل کے
انتہاں کے ۔

اجاز بإئروايت

آپ آیا الدید و الدین فی مرحی فی و صن آنا بدرگ تبرانی اور سید و صن آمندی الدین الدین الدین الدین العندی الدین م

آب كويت والدائد شام البنان وحودي ويدايان بكدويش اورام يكدكسنر

m

-413

فات

آپ نے ۲۷ زی الحج ک ۱۳۰ طرطایق ۱۳۳ کست عرفی دور یک شهر میوانیتال ۱۶۰۱ میلی دور میکند میوانیتال ۱۶۰۱ میلی در مطلق قر بائی تصویح جنازه شاس بیشار شید ، تن مطابق قبار می اور شید و تن و دور ای میلی در دور ای میلی در دور قب در این میلی در دادر قبر متان شاه کمال ۱۶ دور ش فرن کیا گیا۔

(ميودهي مين که ايک الفراق ال. عرب ميسين واقعي )

## مسرور حسين اسيدامرو موى

1436 GT CC

مولانا سید سرور شین صاحب امروہ وی مدرت الواعظین کے اولین دور کے واعظین بی شے اور خالیا 1919 میں واخذہ وے شے۔ انجمن مولد الطوم کے سریراہ شے اور بہت ی اہم کنا بیاں مدرسر کی جانب سے آپ کے زیراہ تمام شائع ہوئیں۔

 کیات ۱۳- احوال الربیال و انتئاب الموس ۵- احوال دریا میات خیام ۱۴- اذ کارا اساه الله بیمانه ، مقاله الله بیمانه و الله بیمانه بی

0000000000000000000000000000000000

سے افوار الذیات ۲۴ - ائیس اور مرتبد ذیر کی اور بیام ۲۴ - اوساف الحدیث آئے تحقیق مقالات اردو اور مرقبی انها تیکو پیڈیا میں شال میں اور ایکے ملاوہ وہ مقالات میں جودوسوے زائد تیمینارز اور کا نفرنسوں میں پڑھے گئے۔ وہروں کی بہت کی کہایوں پر مقدے تکھے اور بے شار تحقیق مقالے بنمی ماونی اور خاتی رسالوں میں چھے۔

شادى اوراولاد

آپ کی شادی آغات بارہوی کی بری صاحبر ادی ہے ہوا ویس بو فی تھی۔ ایک بنی اور پانی بیٹے آپ نے بادگار چھوڑے جن ش بجہ الاسلام سید سین مرتقبی کل سرسید جی ا رقم الحروف ہے قاصل کا معنوی کے تعلقات زیاد طالب ملمی ہے ہے موسوف نے شیعہ عرفی مدرس کے طلباء کی ایک انجین قائم کی تھی جس کے دو فود سکر بیٹری تھے اور چھے ہی سیکر بیٹری مثالیا تھا۔ انگے پاکستان جائے کے بعد صرف ایک مرجہ لا بحد ش ان سے ملاقات ہوگی اس وقت مطلع

الوارد وروج بقى- كابيات يران كردومقا كرفراد شن شائع موع تفاور يل في برياك

ودی افاد حدداک شائع کیا۔ و کی رہا ہوں کداب وی کام علی افواد کے سلسلہ علی انجام ویدہ

277

#### مظاهر حسن اسيد ، امر و موى

1997 177

eren Jane

آپ رجب ۲۳ ار (= اُگست عَبِر ۲۰۹۱) کونله جامع منجه ،امروب ش پیدا تو ۔ ابتدائی آفلیم گرید دو گری دو مقامی میڈیل اسکول می آفلیم حاصل کی یو بی اور فاری کی آفلیم اشرف المدارس (امروب ) میں حاصل کی ۔ آپ ایک عرصہ تک اے بی مشن بانی اسکول (دھر دون) میں میڈ مولوی رے بھر گوزشنٹ اسکول امروبہ میں حربک پرشین نیچر اور دربار بائی اسکول، جمایو واشیت (سینول اعلی) میں میڈ مولوی رہے۔

آپ کے چند انسانی کا بد چال ب :(۱) رببر منطق (۲) شرح انسیدو بات سعاد الذریعیش (۳) نمویر (منظوم ،اردو، ۵ صلی ) کاذکر ال ب

(الجمن وكليلة مادات وموثين)

## مظا برحسين ،سيدنو گانوي

MAT FIRM

----/----

سید مظاہر حین نوگانوی (مواود حدود ۱۳۰۰) فی مقتل این نما (مثیر الاحزان) کا تریمه اردو یمی "مقتل حمین" کے نام سے کیا تھا۔

دوسری جگد ماتا ہے کد مولانا مظاہر حمین صاحب، مدرت عاظمید میں مدی تھے۔ گمان عالب یہ بہاک میدودوں یا تین ایک بی بزرگ سے تعلق ہیں۔

8 8

مبارت مامل کی مادا کا سکر ش آپ نے ایک مالا کا می خاتون سے شادی کی تھی جن سے ایک بنی مداوہ کی ۔

ایک مشہور فرانسی شامو" انگرزیڈر کئل" ہے دوئی ہوئی تو اے دافعات کر بلا کے ملل
داسیاب دافعات شہادت اور متائج شہادت مجھاۓ۔ دواس قدر متاثر ہوا کد دنیا کے بچوں کی طرف
عدمترے علی استفر کی تیادت بھی دتیا م اس کے لئے ایک انتہائی موثر اور طویل افر کھنگر اقوام متحدہ
میں مجھی ۔ مولانا اسرور حسین صاحب نے اس لقم کا اردوتر جمہ" معصوموں کا ستارہ "کے نام ہے کیا۔
جو سرفر ان کے عرافیر (متائج رہا ہے نہر)۔ (۲۵ مرجون ۱۹۵۵ اور شامر کی الحجہ عرفی سالا ہے، جلد ۲۵)
میں سام ۱۹۲ ہے میں ۲۰۹ پر شائع ہوا۔ اس میں متر جم کا جیش لفظ اور شامر کے مقدمہ کا اقتباس مجی
شامل ہے۔ نظم میں ۲۰۱ ہے میں ۲۰۹ تک ہے۔

بندوستان والی آگرآپ وطن مألوف (امروید) میں رہے جہاں آپ نے ۱۳ رفروری عدور مطابق ۱۲ ردیب عرب سے اوکووقات بائی۔

مصطفے بیکم،سیده

سید و مصطفے بیکم مولوی سید باقر حسین صاحب کی صاحب علم و کمال بینی تھیں۔ شاعر ہ بھی تھیں۔ ان کاری کمتو بات کا ایک مجموعہ" رقعات مصطفائیہ" کے نام سے چھیا تھا اس کے علاوہ ان کی حسب ویل کما یوں کا ذکر الذراجہ کی مختلف جلدوں میں میری نظرے کر راہے:

(۲) قصائد مصطفائی (۳) مقائد الصالحین (۴) امیران کریلا (۵) مرقع فم (۱) مقاح الحاجات فی الاوحید والاوراو(۵) مقتل شهداه (۸) ذخیرهٔ مصائب -بدیده ندیکل سکا که آب کس دورش تحیس اورکهال کی دینے والی تحیس -

CTA

P0000000000

## مظفر حسين ،سيد ، بناري

مولاتا سيد مظفر حيين صاحب سرائ ميرضلع المظم الرحد كريد بين وال مع الكن آب كى القريبا يورى زعد كى بين والد الدرسة الماري) ين القريبا يورى زعد كى بنارس من السريوني وطن ش ابتدائي تعليم ك بعد بدرسة المادي الدرسة الماري الله والمثل بورك مناب مولاتا سيد محد مهاد صاحب طاب والمراب الماري من الماري الما

آپ کوئیٹس کالی (بنارس) کے سیکنڈری سیکٹن ش اردو اور قاری کے بیڈر مولوی ہے۔ (اب یہ کالی سیورٹا ننڈسٹنرٹ وشود بالیہ بن چکا ہے )اپنی علائت کے زیائے بیل دو مرجہ کھے عارضی طور پر اپنی میگذیر رکھوا دیا تھا۔ جی پر خاص شفقت فرماتے تھے کیونکہ والد مرحوم کے تلقی دوستوں میں تھے۔

الم 1919ء میں مولانا سید می جاد صاحب کی وقات کے بعد آپ بنادی کیام جھو و شاعت اور و بٹی مرقع تھے۔ نیز ان مرحوم کی جگہ پر جامع العلوم جوادیہ کے" بادی" بنائے گئے۔ بنادی اور مضافات میں آپ کی بہت مزت تھی۔ آپ بہت اقتصے خطیب اور واحظ تھے اور ٹماز جمعہ کے بعد آپ کے مواعظ دلی پی سے نے جاتے تھے۔

زوجہ اوٹی کے انقال کے بعد آپ کی دوسری شادی مولانا محر بجاد ساحب کی دوسری صاحبر ادی زاہد دبی بی سے ایک بنی ہیں۔

آپ کے بڑے صاجزادے مولانا سید فرجین صاحب فرالافاض آجکل مدرسداندائیے یہ جی ۔

مطلع انوارس ١٥٢ يرآب كانام" مظفرهن بنارى" كلما بيوغلا ب\_مشبورشام وقا

مظاہر حسین ۔سید

1964/194

مولوی علیم سیدمظاہر حمین این سیدنا قرحین این سیدا میر حسن اپنے وطن مالوف کو پال پور (طنتی سیدان ، بہار) میں پیدا ہوئے۔ ان کے دادا میرے دادا سید مقبول حسین صاحب مرحوم کے بہتوئی تھے۔ مظاہر حسین صاحب نے طبید کا نے (پنت) کی سند اطل فہروں سے حاصل کی تھی اور ان کو تشخیص مرض کا ملک حاصل تھا لیکن فیوٹو کی کے وقت مریض کی مالی دیثیت کا خیال فیس رکھتے تھے اور قریبوں کے لئے بھی گراں قبت ووائی تجویز کرتے تھے اس وجہ سے مطب کا میاب ندہ وسکا وسمال اور سندھ کی اور اسندھ ) میں دہوں کے ان کی المید ما ہور اسندھ ) چلے گئے۔ ان کی المید ما ہوں میں دہیں۔

خیر پوریش مدرے سلطان المداری میں مدرس مقررہوئ ان کوم نی اوپ کی آدر لیس میں ماہر جھا جاتا تھا اور دیوان جی آدر لیس میں ماہر سچھا جاتا تھا اور دیوان جی ڈوق وق وشوق ہے پڑھاتے تھے۔ خیر بچارک مشافات میں بھر لوق ہیسان کے دیجی خدرات کا مرکز تھا جہاں وہ ہر بغلا جاتے تھے اور قماز جھدہ بھا عت اور وحظ وقعیمت ہے لوگوں کوفیض بھیاتے تھے۔

انقال ایک بفته پہلے فردافردا پر اس کے یہاں جا کر گذاش کا کہ آر بھو ہے کوئی تکلیف ہو تی اور قوالے معاف کرد ہجے۔ آخری جدے وقت ش کہا کہ اب ش کوئی نماز جدفیں پڑھاؤں گا۔ انقال کے دن نماز مغرب پڑھا کرائی قیامگاہ پر چلے کے اور موشین سے کہدیا کہ نماز عشاہ دو فراولی پڑھ ایس ۔ قیامگاہ پر آگر دو ٹی بھائی (دینا کھانا خود بھائے تھے) پھر نماز مشاپر می اور جا دراوڑ ھاکر لیٹ گئے۔ بعد ش دیکھا کیا تو دو ٹافٹس مفری سے پرداز کر بھی تھی۔ یہ وعد اور کا واقد ہے۔

( تخمية صنيين وذاتي معلومات )

10000000000

Cr.

كَ تَعْلِيم نِيز اردوقاري كَي ابتدا في تعليم حاصل كي . يا نج سي درج عن شيعه كالحي شهرا المقسا كياجبال ے اعرمیڈیٹ یاس کیا۔شید کالح کی تعلیم عمل کرے تاستو یو نیورٹی میں واطلم الیاجیاں ، 190 میں بی-اے کیااور پرای یو غور ٹی ہے ایل ایل کی ڈگری حاصل کی۔ قانون کی تعلیم حاصل کر کے بكودنول قيسرنج ، بهرانج اور بكور وزنكستؤين رييش كي يكريانس كي معروفيت في وكالت سيليط كوسطن زوبارآ خركارات تزك كرويناج ار

و في تعليم كاسلسلة كحرير جارى رباجهال أصير الهلة اورسعيد الهلة طاب را اتائ فصوصي أوجه ے قدیمی معلومات می اضاف کیا نیز مولانامرز الحرطابر صاحب بیت بچواستفاده کیا۔ شیعد کا خ ين محى الما احد من صاحب مرحوم عد منات كالعليم عاصل كى-

ذاكرى كى ابتداجرول من مرشد خوانى سے دوئى مرجلدى مرشد خوانى ذاكرى من تبديل بوگل اور ۴۷-۱۹۴۵ و تلک با قاعده محلسین پزهناشروع کرویں۔ ۱۹۵۸ ویش کی باز قشر و ترم بین موتین کے اصرار پر جرول سے باہر قدم اللا اور پہلا عشر و کراتی میں بارٹن روؤ کے امامیازے میں برحاج بید ایند کیا گیا۔ ملکتہ کے لوگوں کے اصرار پر ١٩٨١ سے ١٩٨١ تک (مسلس میں سال) عشره عرم كلت مل يزجة رب-

#### توي خدمات

ابتدائة مرى عدمتعددة مي تحريول عدايسة رب مزاد شبيد الث كي تعير أوش تمام كال سريابي فرائهم كيار مولانا سعيد الملة كانقال كي بعد الحفيج سب وميت شيعد كالح بي فصوصى ولچین فی فیکے تقریباً ۱۸ رسال سکر بزی رہے۔ وقف حسین آباد مبارک کی کیک مین کے متولی رہے۔

00000000000000000000000000 مك يورى في جواويدكي طالب ملى الرامات يمن موالا مرون عندم كا في اليك تطعد يمن كباتفاج گزار مصطلے کا کل وحسین ب ( دوسرامصريد بادعيل) ہر قوم کیدری ہے مظفر حسین ہے 63 F 106 + 42 100 E6 ( والى معلومات ) مظفر حسين ،سيد، طام جرولي جناب مظر مين صاحب مروم طاير تدول ١٥ روب ١٥٠ عطابق ٢١ ويمر 1979 للحوص حولد ہوئے۔آپ كوالد سيدنظير مين صاحب جرول ضلع بجرائ كعلقد ار تے درامل ان کا تعلق سادات زیر ہورے تھا مگر دوستعل طور پر اٹی نضیال جال بین مقیم ہے۔ طاہر صاحب کی تخصیال ساوات کتو مے ایک مظیم ملمی گھرائے میں تھی آپ کی والدو تاسر الملة کی جيوني صاجر ادى اورصاحب مبتات الأنوار علامه حاية مين صاحب كى يوتي حين -آب كى هر ايمى حاسال كى تحى كد معهوا يمل باب كرمايد عروم يوكة آب ك

مامول نعير الملة وسعيد الملة طاب أزاتهاف اسيط سابي عاطفت على يرورش كيا-القد الم تعليم كا أيازيون عواكر بهم القدر كان عسر الملة في إها في اوركم رقر آن والينيات Silve area-enterente estado e

200000000000

Scanned by **TapScanner** 

کی تعلیم نیز اردوفاری کی ابتدائی تعلیم حاصل کی۔ پانچو یں درج سے شیعد کالی بین بام اکتحا کیا بہاں سے ۱۹۵۲ سے ۱۹۵۲ سے ۱۹۵۲ سے ۱۹۵۲ سے ۱۹۵۲ میں داخلہ ایا بہاں سے ۱۹۵۲ میں باتھ ایک بین کی ایک میں داخلہ ایا بہاں سے ۱۹۵۲ میں بین سے اس کی سے ایک اور پھرای یو نیورشی سے ایل ایل بی کی ڈاگری حاصل کی ۔ قانون کی تعلیم حاصل کر سے کھردوں قیصر سے مہرائے اور پھردوں کھوڑوں تیم سے کی دول سے سلط کے میرائے اور پھرائے دور کھوڑوں بین کی سے کھردوں کے سلط کی میں دولیت نے دکالت سے سلط کی سے ایک نیورس کے میں دولیت نے دکالت سے سلط کی سے دولات کے سلط کی سے دولات کی سے دولات کے سلط کی سے دولات کی سے دولات کے سلط کی سے دولات کی سے دولات کے سلط کی سے دولات کی سے دولات کے سلط کی سے دولات کے دولات کے دولات کے سلط کی سے دولات کے دو

دین تعلیم کاسلسد گریر جاری رہاجہاں نسیر الملة اور سعید الملة طاب رُا اہمانے نصوصی اوّجہ عدیدی معلومات میں اضافہ کیا نیز مولانا مرزامحہ طاہر صاحب سے بہت یکھ استفادہ کیا۔ شید کا نے میں بھی طااحمد صن صاحب مرحوم سے دینات کی تعلیم حاصل کی۔

داكرى

فاکری کی ایتدا جرول میں مرشہ خوانی ہے ہوئی گرجلدی مرشہ خوانی فاکری میں تبدیل ہوگئی اور ۳۹ – ۱۹۳۵ء تک با قائد و کلیس پر طناشرو س کردیں۔ ۱۹۵۸ء میں پہلی بار خشر و محرم میں موشین کے اصرار پر جرول ہے باہر قدم لگالا اور پہلا عشر و کراچی میں بارٹن روڈ کے امام باڑے میں پڑھا جو بیجد پیند کیا گیا۔ کاکٹ کے لوگوں کے اصرار پر ۱۹۹۱ ہے ۱۹۸۱ تک (مسلسل میں سال) عشر و محرم کاکٹ میں پڑھنے رہے۔

#### توى خدمات

ابتدائے مراق بے متعددہ کی تح یکوں ہے دابت رہے۔ مزاد شہید ہالت کی تعیرہ میں تمام ہ کمال سربار فراہم کیا۔ مولانا سعید الملة کے انقال کے بعد ایکے حسب وسیت شید کا نے بی خصوصی دلچین کی جسکے تقریباً ۱۸ سرمال سکر یزی رہے۔ وقف حسین آباد مبارک کی کیل کمیل کے حتولی رہے۔

ملك يوزى في يرواديد كى طالب ملى كرز مافي يمن مولانا عدون كيام كاك اليك أفعد عن أبا تماج ( دوسرامصريد باوتيس) گزار معظے کا گل ترحین ہے ہر قوم کبدری ہے مظفر حسین ہے فانح ہوا پہلے یہ ظاہر کر وفا (زاق مطومات) مظفر حسين ،سيد ، طا مرجرولي بناب مظفر حمين مداحب مروم طاير جرول ١٢ روب ١٨٥٠ الده مطابق ٢١ ويمر 1979 كى مولى مولد بوك . آب كوالدسيد ظير مين ساحب برول طلع ببرائ كتعلقد اد تے دراسل ان کا تعلق ساوات زیر پورے تھا تکر ووستعلی طور پراٹی نخبیال جوال جس متم رہے۔ عابر صاحب كي تخييال مادات كتورك ايك عظيم على كحراف يس حى آب كى والدوناصر الملة كى يجوني صاجر ادى اورصاحب عبقات الأنو ارملامه حادثمين صاحب كى يوتى تحيل-آپ کی فر ایجی ۱۳ سال کی آی که ۱۹۳۴ یمی باب کے سام سے فروم دو گئے آپ کے مامول تعيير الملة ومعيد الملة طاب راءات اين سايد عاطف على ي ووش كيا-المقالي العليم كا آغاز يول اواكر أحم الله مركار عصر الملة في يزهاني اور كحرير قر آن ووينيات

200000000000

Scanned by TapScanner

BUSIC STEARING PROPERTY SUCCESSE &

فصوصی کا درجد یا گیا تھا۔ جن کے لئے سیکور بنی کا خاص انتظام تھا اگر چہم توہم اسکے لئے تیار نہ تھے۔ کا نفونس کے افتتام کے بعد ۲۸ نومبر کوسی امام فیمین سے ملاقات کی۔ \* \* نومبر کو می نو بھی سازمان مہلیفات اسلامی کے املی ادراکیون سے ملاقات ہوئی فتکے بعد وز ارت خارج کے قائز کنز نے معلالا موصوف سے ملاقات کی دو پھر بعد شاوع بداعظیم اور کو ولی فی شربہ بانو کی ذیارت کیلئے گئے اور \* اسکے

رات شاوالهي بولي

( الليب الاعان ك طبط ش بالاخراء في إلا الشي عرف الما العمل الخدائل والإقدام وكالراحث ) آل اظ یا تعید کا فرنس کرتر بیا تین سال جزل مخریزی د به آق دمان ی بینی شن ایک مظیم ااد یاد کار اجلای ۱۹۸۰ وی منعقد کیا جوموشین کور دول یاد دیگار الجمن تحفظ حیینت کر کرم رکن اور ۱۹۵۹ سے تادم مرک مدر د ب شید کونس قائم کی قسط زندگی کے آخری کا ات تک چریمن رب رفت موار شید فالف کے مخریزی کی حیثیت سے آئے فدمات کا قافی فراموش جی ای

سفرجج وزيارات

یں قوسید مظفر حین طاہر جرول نے ذاکری کے سلیدی ہندوستان کے کوشے کے طاوہ ورون ملک بھی جروب اسم یک وافریقہ ، کناڈا اور خیلی ممالک کے متعدد سفر کئے ۔ گر مخضوص فریارات کے سفریسی آپ نے بہت کیے۔ چہتا تی 1971 میں پہلی بارایران واراق کا سفر کیا 1971 میں وروس بار 1971 میں وروس بار 1971 میں جری بار 1977 میں بیت المقدی فلیل الرخن اور شام کے زیارات بھی کے دوسری بار 1971 میں چیتی بار 1971 میں بیت المقدی فلیل الرخن اور شام کے زیارات بھی کے 1971 میں چیتی بار 1971 میں بار مورس کی بار مورس کی بار 1971 میں اور شام کے زیارات بھی کے اور اور گیا 1971 میں افریقہ سے دوسری بار 1971 میں اور گیا 1971 میں افریقہ سے دوسری بار 1971 میں اور گیا در بھی گیا 1971 میں افریقہ سے دوالوں کی ترون کے اور اور گیا اور امام رضا علیہ السلام کے جوار میں ایک المیان تھی بھی گیا۔ گیا تھی اسلام کے جوار میں ایک کیا تھی سے سلے تھی جہاں سے سفر آخر سے شروع ہو گیا اور امام رضا علیہ السلام کے جوار میں ایک کیا تھی کے کہا تھی گیا ہو گیا۔

و تا فیر سر ۱۹۸۵ او تحفظ و تقدال ترم کے موضوع پر دونے والی جین اللاقوا می کا نفونس جی المائی میں المائی کا نفونس جی سام اسلام کے ختب ملاء کرام اور وانشوروں کو مدمو کیا میں مائم اسلام کے ختب ملاء کرام اور وانشوروں کو مدمولیا کہ محمل اللہ میں سے تریادہ مرحوم کی آفٹر پر بہتدی گئی تھے بعدار اللی حکام نے مرحوم سے وجد والیا کہ وی مداوجان میں سے طاہر تروی صاحب کوممان

יחחה

# مظهرسن، زنگی بوری

OHIO WEST

مولوی مظیر شن صاحب رقی پوری . آپ جابر ج شن شقیم رب دست اخلاق کااثر پور ۔ ملاق عن ایسا تھا کہ ۱۸ ررجب و ۳ میل کو جب آپ کا انتقال جوا ب ۔ تو آگٹر ددگا تماروں نے دوکا نیس دکھولیس ۔ کئے گھروں میں کھاٹانہ یکا۔

تقويم كالاعداريب والعدار بولال الواكم طابق في-

## نظهرعلی ،سید

و تعلق کے عہد میں سید مسعود فون کے سربرآ دردہ سرداروں میں ہے۔ وہ جناب حسین الاصغر فرز تدامام زین العابدین علیدالسلام کی نسل سے ہے۔ ان کی اولاد خازی پور کی بہتیوں، مثلاً پارہ، نونبرو، دیج کھیا، زگی پور جسین پورو فیرو میں موجود ہے۔ مولانا سید تقریع صاحب ای نسل سے ہے جن کا وطن کنگولی ضلع خازی پور تھا۔ ان کی شادی مولانا سید تھر صاحب و مح کھیاوی (دیکھنے احوال) کی صاحبز ادی، یوی بیتم ہے ووئی تھی۔ ان سے دو بیٹے پیدا ہوئے، (۱) مولانا سید تیا اللہ، (۱) مولانا سید تیا اللہ، (۱) مولانا سید تنیا اللہ، (۲) مولانا سید تنیا اللہ،

بظفرعلى خال ،سيد سيد مفقوعلى خال ابن سيدخورشيدعلى خال ، جائسي شلع مفلفر محرك رئيس اور صاحب ففلل و كال تعدما الدوسي تفااور الفيف وتالف كا دوق الله الغرض قديم زبائ كروساكي طرح دولت وتياوردولت الم دونول عالا مال تح. الما = (= ١٩٣٥) على وقات إلى-آب عيدهنيفات مباويل إلى: (١) ملساة الذوب (موافح ديات حرت أياب) (۲)ساست نسيند (٣) شريعت سبله 35151(1) (٥) ين متلى في زهد مديث الملاسل 1 (Y) [ [ (Y)

000000000

## متازحسين ،سيد ،مظفرتگري

مولانا سيدمتاز حسين صاحب موضع سليمليد وهلع مظفر تحرك ريث والي تقد مدسة الواعظين كے واليس بركيل تھے۔ يوري زعر كي مذريس وتقرير كے ذريعہ خدمت و بن انجام وي۔ المرفيم وموا (=٨د فقالاول وي الكوايدول عي القال فريايا (الواحة على قبر ١٣٠ قبر ١٠ عادي الأوكارة ١٥٠)

#### منظورسين

ass or.

شيعة محرر جيثي شرغازي آباد ك مشرق من تحصل كرّ ه مكتيبه رك تقريبا جاريل جوب من ے بہتی کے نام میں شیعہ مرکا اضافه مولا نامنظور حسین نے کیا تھا۔

آب ك والدمواوي سعيد الدصاحب عاشق الل بيت تصر كليس اور تحت اللفظ مراتى يزها كرتے تھے منظور سين ان كى بوي اولا دتھے مولانا این في صاحب، والمؤتم پھٹي اولا دتھے اور يروفيسر على مصرصاحب أوي اورآخري\_

مولانامنظورهين ١٥رومير ١٩٣٠م ١٩٣٠مروب ١٣٠٩ ها داويدايو عدر وطن شي ايتدائي تعلیم حاصل کرنے کے بعد سید المداری (امروب ) کے سام 19 میں جامعہ علی وافل ہوئے معزالدين اروستاني آب كاصل تام فرين تليم الدين فرقاء ايان عة كرهيدرآ بادي مقيم مو ك تحد جبال الحول في استاد، جناب ورين خالون عالى، عظم عد ملطان مبدالله وقلب شاوك نام يسورة على الى كالتيرة ارى زبان يلى العي يتنير واردب ٢ ١٠ و الدكوتمام تك ياو في اوراك كا ا كم لنو كتيرة متان الدى رضوى على عد

آپ كى دوسرى كتاب" جاية العالمين" ب جوسلطان عبدالله قطب شاه كعم س ٨٥٠١٥ عن اللهي عن الله المرالموسين كالمت كوايات قر آني اوران روايات عابت كيا ب بوشنق عليد بين الفريقين إلى - (اس ايك كتاب كوكاتبول في كيس كاشف الحق للعاب أكيس كف الى تكوار كي من قب قلب شاى كلوار اوركي المات)

(طبقات اطام العيد جلد فيم عدد)

مرم بخت مرزا

HER HEE

00000000000

" مائي مولوي مرز اكرم بخت ماحب، بيش فماز چنار" كانقال كاطلاع رساله اصلات الاولالي الحياس المراجي المراجي

## مهتاب شاه جعفری ،سید، شیرازی

INGE-F FRANK

HIS FFE

مولاناسدمہتاب شاویعظری شیرازی کے کارم فیض التوام سے متاثر ہوکر کیٹر التعداد اشخاص نے قد بہ حق افتیار کیا۔ مرحوم نے بدفر 20 سال ۸ رہادی الگانیہ ۱۳۳۳ مطابق ۲۵ رومبر 19۲۵ کورط شافر مائی۔

(الفاظال بعد علد على المراجب المر

## مهدى، ملاء مازندراني

INTE ITES

ملامهدی این محد شفی اسر آبادی مازی دانی آقا سید ملی طباطهائی ( صاحب ریاش المسائل )

ک خاص شاگردوں میں مجھے اور اجتہاد کے درجہ پر قائز ہے۔ پکو عرصہ تک کر بانشاہ میں رہے حدود
وسی تا اللہ بین جید رکھنو آئے اور پیمیں کے دور ہے۔ کوش عز الت وقتا عت میں زعدگی
بسر کی اور بیشہ دری و قد رہی اور تصنیف و تالیف میں مشغول رہتے تھے۔ عوام الناس سے کوئی ربط شہ رکھتے تھے البت اہل فعنل و کمال اور طلبہ سے بھال تواضع بیش آئے تھے۔ آپ کے تصانیف زیادہ
تراصول فقد اور فقد کوئی میں ہیں جیمن بیشتر تا تمام رہ گئے۔ جو کما بین کھیل ہوگئی جس الن کے نام
تراصول فقد اور فقد کوئی میں ہیں جیمن بیشتر تا تمام رہ گئے۔ جو کما بین کھیل ہوگئی میں۔ الن کے نام

اور و 12 میں متاز الا فاصل کی مند حاصل کی۔ فار فی اتھیں او نے سے چیسال پہلے ہدرسی المور مدرس میں المور مدرس می المور مدرس بھی کام کرتے رہے تھے۔ اپنے بھائی مولانا ابن ملی صاحب کو آپ ہی عظمیہ لے گئے۔ آپ کے اس انڈویش فائل و کر معزات میں : مفتی سیدا حرفی صاحب سیدا تعلما وسید ملی آتی صاحب، ملا مدسید عد میں افتر صاحب اور مولانا سیدرسول احمد صاحب سطاب ٹر اہم ساتھ و میں و اکثر سید کلب صادق صاحب اور ملاسة دیشان میدر جوادی قائل وکر ہیں۔

00000000000000000000000000000000

مولانا غلام مهدی فجنی اور مولانا عیاس فل فجنی کے اصرار پرآپ وافظاہ جعفریہ واکر بیکی مہدی آباد (سندھ) تخریف لے گئا اور بارہ تیرہ سال تک اس دافظاء کے پہلی رہے۔آپ ائٹیا آن سادگی کے ساتھ رہے تھے۔ کوششن کی زعم گی کوڑج ویتے تھے۔آپ کا شعار بیما کی وحق کوئی تھا۔ سادات کرام کی بہت اور ت کرتے تھے۔ جوانوں کی تربیت اور ان کے مسائل مل کرتے میں انہا کے تھا۔

علالت كى بنا پروائش كاوجه فريد ساسية ولمن حيدرآباد واليس آسك شفد ويزه ودوسال علاق جارى دبار آخر كار ۱۸ روضان المبارك و ۱۳۲ / ۲۵ رومبر 1999 شب دوشند ش آخر بيا قطائى بيك دائي كودار بنا كى طرف كوئ كيار

1

## مهدی حسن ، شیخ ، ناصری

1951/1554

مولوی شخ مبدی حسن صاحب ناصری ملا فاصل اور ایم اے شفے۔ مرحوم کو اردو، فاری، عربی، ایرانی اور آگریزی زیانوں پر عبور حاصل تھا۔ پہلے میور کالئے میں پروفیسر رہے اور ابعد میں گورنمنٹ اسکول فیگڑ دومیں بیڈیاسز مقرر ہوئے۔

٢٠رزى الحبه و١٣٠ (=١١٠ ترك ١٩٣١) كورهلت فريالي.

(املاح جلافيروس فيرايوم الحرام ١٥٠٥ م)

## ميرحن كل ،سيد

14.0/15 IA 14.00

HEADIT SAME

مولوی سید بیرضن گل موضع حسن خیل وکی کے دینے والے تھے۔ آپ نے اسپنے عہد کے علوم شداولہ کی تعلیم اسپنے برز رکوں ہے حاصل کی۔ اس کے بعد علاء کی صحبت میں رو کر آپ ایک جید عالم کے درجہ پر پہنچ گئے۔ آپ کے وعظ واقعیحت ہے موشین بھٹی کافی عرصہ تک مستنیض ہوئے رہے۔ علاقہ بھٹی کے مولوی صاحبان آپ کے پاس بیٹے کر آپ نے فیض پائے اور آپ کی صحبت کو ایپ نے گئی کا عث فی بھٹے تھے۔ آپ کوفٹے جھٹر یہی کافی مہارت حاصل تھی۔ ۔ آپ کوفٹے جھٹر یہی کافی مہارت حاصل تھی۔ ۔ آپ کوفٹے جھٹر یہی کافی مہارت حاصل تھی۔ ۔ آپ کوفٹے جھٹر یہی کافی مہارت حاصل تھی۔ ۔ آپ کوفٹے جھٹر یہی وفات یائی۔ کی شاگر دیھوؤ گئے۔

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*\***\*** 

(182 A ) Francis ( 184)

سب ویل بین :(۱) قدهاس العقول فی بیان تواهد الاصول (۲) شرة المؤاد ورسندر نیج ایمان محقول اے کرمان شاہ میں اوائل ۱۳۳۵ میں گلما تھا (۳) مصداق الاجتماد اصول فقد وحدیث و تغییر و کلام کے مسائل میں ۱۳۳۵ مد (۳) فضل الخطاب فی جمیة خواجر آیات الکتاب ۱۳۳۵ مد (۵) احسن الاقوال ۱۳۳۸ (۱) بدیة السلطان نصیر الدین حیود شاہ کیلئے تعدید میں سسم با میں تکسا (۵) فرة الجمین وراحکام نماز بین کا نہ نواب نشخم الدولہ حکیم مبدی علی ماں کیلئے تعدید کیا۔ (۸) عرب المین المربوط کیا جمید شاہ کی والدوباد شاہ دیگم کی قربائش پر بحارالا توار کی جلد بھتم کا ترجمہ بدتا م جاری الانجار شروع کیا جمید صرف باب اول ووم کا ترجمہ پورا اور کا۔ (۹) رسالہ مہارت وراحکام طہارت (۱۰) رسالہ ممتاز ورسائل نماز عرب الارا) رسالہ استحکام درسائل صیام (۱۳) رسالہ کوز ورنماز بائے فوائل دو فیرو۔

آپ نے ماہ و یقعدہ 100 ا (= ۱۸۳۳) میں لکھنو میں رحلت فر مائی اور تحفران مآب کے امام بازہ میں فرن ہوئے۔ (جوم اسما مبلد اول ۲۹۵۔۳۵۵)

مهدى حن ،خواجه، حافظ

MEL/mro

حافظ خواج مبدی من صاحب کیرانه شلع منظؤ گری و هماز تھے۔ مولانا نے ۲۰۰۳ مال کی مرض ۹ روانا کے ۱۳۳۰ مال کی مرض ۹ روانا کے درطانے فریائی۔

(الحافظ مِلاغِيرِ عِلى وقيرِ على الحجيد ١٣٥٥)

MET

## ناصر حسين ،سيد ،جو نيوري

inso/irir

مولانا سيدنا صرحبين صاحب بناب مولانا سيدمظفر حسين ابن سيدنلام حسين ك يقط يظ تصدآب كاسلسلدنس سات واسطون ك بعد ملاحفظ تك بانجالب (ويجعندا حوال)

آپ نے سرف وتوادرتھوڑے معقولات معفرت طاسخان علی صاحب یے جے بعد ازال علامہ عبد السلیم فر تقی بحلی ہے معقولات کی میمیل کی میلوم فقد وحدیث و کلام مولانا گلشن ملی کجگا او ی سے حاصل کتے اور فقد واصول فقد کے اعلی عداد ن جناب ممتاز العلماء سید محر تقی صاحب کے ڈریعے طے کے سام کے بعد درس وقد رئیں میں مشغول ہوگئے۔

آپ نے چ بیت اللہ کی سعادت حاصل کی اور متبات عالیات کی زیارتوں ے مشرف

-2 1

تصانيف

تادر حسين بكهنوى

1440/11/11 N

مولوی تا در شمین این شخ الی پخش کلمینو کر ہے والے تھے۔ او بیا صرف وتو کے ماہر تھے۔ اردو میں '' شرع المیز ان' الکھی تقی۔ نیز صرف میر کی شرع اردو میں سوال وجواب کے عنوان سے لکھکر سر کا دمبر زاشیر از کی اطلی اللہ مقامہ کی خدمت میں سامر ہم بھی تھی جوان مرحوم کی وقات کے چند وقو ل بعد و بال تینی ۔ (سرکا دمبر زاشیر از ی کی وفات واسیا میں ہوئی تھی )

(الذريوبلد ١٥ص٥٥)

ناصرحسين ،فيض آبادي

1440/11/10

مولانانامر حین صاحب الم ال می فیض آباد (بندوستان) ب جرت كرك نارد وال تشریف لے مح اور ویس متوطن ہوئے۔ آپ ایک متناز ب باک، صاف كو، عالم وین تھے۔ موسوف نے شیعہ بیتم خاند بولیا۔ نیز نیو بری (امریکہ) میں امام بارگاد كى بنیادركمى جواب تك روال دوال بے۔ مابتامہ بیام مل (لا بور) كريست تھے۔

آپ نے سررمضان البارک واس مار مرفروری دووں کورمات فر مالی اور تظرفاند مین اور تظرفاند مین اور دفاک کے گئے۔

(الوامقاشوال ١١٥)

200000000000

Scanned by TapScanner

تصانف

からしている(の)からしていしている(で)というなく(で)というしている(の)としてしている(い)

10

٩ رومضان الميارك عن ١٢٠ ه أيم جولا في ١٩٨٢ م كو پشاور ثين رحلت قرماني .. (الوامة جلد ٥ د نبر ٩ ـ ١٨ الت و تنبر ١٩٨٣ م)

## نذرحسن ،سيد، گوپال پوري

19.7/1FT.

مولوی سید نذر حسن صاحب این سید محد جعفرصاحب کی واددت عن فی و (وعظاه) شن وظن مالوف گو پال پور (ضلع سیوان) شن بوئی . آپ کی تعلیم مولانا سید ناظر حسن صاحب گو پال پوری (مدرس اعلی مدرسدایمانیه بنارس) کی گرانی ش بوئی اورالد آباد بورذ کی سندین مولوی ، عالم اور فاضل و بین سے حاصل کیس . بعد ؤسلطان المدارس سے جہاں سندالا فاضل تک پڑھا۔

ایک اور دراز تک گوریا کولی بائی اسکول ( اسلیم ساران ) میں بینا موادی رہے۔ اس کے بعد وطن ہے قریب حسین سی بائر اسکول میں بینا موادی ہوئے۔ اور و بیس سے ریٹائر بوئے۔ اسکول سے ریٹائر بوئے کے بعد بدر سراسلامیہ ( کجھو و شلیم سیوان ) میں بحیثیت بدر س اطلی دھلت ہے کھی اوقیل تک دیات انجام دیے اور مدر سے نشا ہی انجابی دول اوا کیا۔

مقابل تک خدمات انجام دیے اور مدر سے نشا ہی کتاب کی اخبارات ورسائل میں آئے۔ کے مقابلین سالباسال تک بعد وستان و پاکستان کے قوی اخبارات ورسائل میں آئے۔

خاراحد، كان يور

الواعظ (ماونومر ١٦٥٥م) يم از وارهناع كوند و كايك تبليني جلساور جالس كى ربورك چيى ب جس من مولانا لقاء على حيدرى جااج فى شريك تقداى من" مولانا ثار احد صاحب كان پاد" كاذكر ب مع يد عالات معلوم نه و سكار

عجم الحن ،سيد، كراروي

MAT HEAT

مولانا سيد في ألمن كراري شلع الدا ياد كرين والفيق مدرالا فاشل كرف ك بعد
آب في مدرسة الوامظين شي دا فلدليا - جبال ب فارغ بوكراً ب بهار اور دوسر عمويون شي

تبلي فدمات انجام دية رب - حدود عمال المراسل من رسال الواحظ كي ادارت آب كوسوني كي حقيم

بندك بعداً ب يشاور علي من جبال فراكش فراب وتبركي بجا آوري كي ملاووا يك المم تدبي جريده
"شباب القب" كالناش و ح كيا -

پاکستان کی متعدد قرقی تنظیموں کے رکن ہونے کے علاوہ آپ حکومت پ<mark>اکستان کی اسلامی</mark> نظریاتی کونسل کے بھی ممبر تھے۔ پاکستان مجلس علائے شیعہ کے ہاتم اعلی تھے۔ نیز ج سمینی مے ممبر تھے۔

MYZ

LLA

# نصيرحيين \_خيآل

per/mor

نواب سیدنسیر حسین خیال شاد تھیم آبادی کے بھائے تھے۔ مظیم آباد کے روسا بیں شار تھا۔اولی دنیا میں ان کا نام آج بھی عزت واحر ام سے لیا جاتا ہے۔ ۲۳۱۸ (۲۹-۱۹۳۸ می) میں ریاست خیر پورسندھ کے چیف سکریٹری مقرر توٹ ۔'' اطل تعلیم یافتہ دروش خیال ماہر سیاسیات اور قوم ولمت کے بڑے فاوم اور بھی خواہ' تھے۔

تسافيف ين زبان اردوكي مفصل تاريخ" روداواردو مطبوع بـ

آپ نے ۱۱روکبر ۱۹۳۴ (= ۴ رومفان ۱۳۵۳) کوملگڑ وی انقال فر مایا۔" آپ مخلف اوصاف جمید و میں اپنی نظیرآپ تھے۔ ند بب وملت کی خاموش جمایت بہت سرگری سے کرتے تھے۔"

(العلاية رمضان عرصور وهوال مود علا)

#### نظام الدين احمد

(4mg/1-24

قطام الدین احد گیانی، میر باقر داماد (حوفی وسواه) عشار دقمد سلطان عبدالله قطب شاد ک دورش (۱۰۸۳–۱۰۳۵) حیدرآباد آے۔ آپ کا انتقال ۲۵۹ شن حیدرآبادش

774

#### چیچ رب دورجول وری کائیل تغیین ریجوند ای تشنیفات الا بور کاوار و معارف اسلام اوروی ب کامامیمشن کی طرف سے شائع بوئی بین .

آپ نے ۸ رجون ۱۹۸۳ و (۲۹ رشعبان من الدی کوایے وطن شی رطت فر مالی۔ (دائی معلونت)

## نيم حن ،امروبوي

آب مولانا الخارصين امرو يوى كي صاجر ادب تقيد

آپ كي افي الفيقات كالأكريس في الذريد كي الشف جلدول بين ويكواب:-

- ازالة الغرور بعض علائے الل سنت كرز بانى احتر اضات كاجواب
  - ا تيالاسلام - ا
- ۳- زیروست خلافت۔ ایک مصنف کے جواب بی جس نے برید کو طلیق برجی گردائے ویا تھی امام کو جابر تکھا تھا۔
  - الم- حثيث الاقران
  - ٥- ترجمه معاد النصائل إصل كتاب آب كوالد ماجد كالعنيف ب-

MON.

# نصيرحسين \_خيآل

arr/mar

نواب سیدنسیر حسین خیآل شاد علیم آبادی کے جمائے تھے۔ مظیم آباد کے روسایش شار تھا۔ ادبی دنیا میں ان کا نام آئ بھی عزت واحر ام سے لیا جاتا ہے۔ ۲۳ سر (۲۹۔ ۱۹۳۸ می) میں ریاست خیر پورسند ہے کے چیف سکر یئری مقرر ہوئے۔'' اطل تعلیم یافتہ دروش خیال ماہر سیاسیات اور قوم وملت کے بوے خاوم اور بھی خواہ' تھے۔

تسافیف من زبان اردوی مقصل تاریخ "روداداردو اعطبوع ب-

آپ نے ۱۱ روئیبر ۱<u>۹۳۴</u> (= ۴ روشان ۱<u>۳۵۳) کوملیگز ه</u>ی انقال فر مایاد" آپ مخلف اوساف جمیده میں اپنی نظیرآپ تھے۔ قد بب وملت کی طاموش جمایت بہت سرگری ہے کرتے تھے۔"

(اصلاح دملهان عرس دورا (العلاج ١٣٥٠)

#### نظام الدين احمد

14/4/1404

نظام الدین احد کیاانی، بیریاقر داماد (حوفی مین احد) کے شاگرد تھے۔ ملطان مبداللہ قطب شاہ کے دوریش (۱۰۸۳–۱۰۳۵) حیدرآ باد آئے۔ آپ کا انقال <u>۵۹ نا</u>یش حیدرآ بادیش پھیچے رہے۔ درجوٰل دری کا بین تکھیں۔ پھی نہ ہی تھنیفات لا ہور کے ادار وَ معارف اسلام اور وہیں کامیر سٹن کی طرف سے شائع ہوئی ہیں۔ آپ نے ۸ رجون ۱۹۸۳ و (۲۷ رشعبان ۱۳۰۳ھ) کواپنے وطن میں رصات فر مائی۔ (واتی معلومات)

## نسيم حسن ،امروبوي

آپ مولانا ا گاز حسین امروہوی کے صاحبز اوے تھے۔ آپ کے پانچ تصنیفات کا ذکر میں نے الذراید کی مختلف جلدوں میں دیکھاہے:-

- ازلة الغرور العض على على السنت كرباني المتراضات كاجواب
  - المالاملام المالاملام
- ا- زیروست فلافت۔ ایک مصنف کے جواب میں جس نے بزیر کو طلیعہ برحق گروائے بوئے قبل امام کوجا بر تکھا تھا۔
  - ١١- حثيت الاقران
  - ٥- ترجم معياد الفصائل اصل كتاب آب كوالد ما يدكي أصفيف ب-

CCA

الماء عوبال بإطا معقول علم منقول بهى كيا ب صول بن كا ميرن القب قفا نام حسين الجبتد، الجبتد ك توراهين شهرو ان كا عرب عمل بيونها هي الجبتدوال ك شير بناب وي كامنون كا عرب عمل بيونها القب وي الجبتدوال ك شير بناب وي العنماء ان عاصل كيا ب فقد والسول الم عديث و كام و بم معقول ان عاصل كيا ب فقد والسول الم عديث و كام و بم معقول بعد الحصيل علم كرك ستر اليونها بهر زيارت حيد العد الحد الم الم كرك ستر اليونها بهر زيارت حيد كربا كا تقيين سامره الله الحد بر عبد عن كيا على مدود من جناب منتي صاحب قبل عليه الرحمد في آب كواب عالمة و من جناب منتي صاحب قبل عليه الرحمد في آب كواب عالمة و من جناب في زين العابد بن ماز عدان اور جناب مرز اطي تني طيام إنى عاقد واسول كالمحيل كا دران فعزات في العابد المن ماز من الله المن الله عليال كا دران فعزات في العابد المن المناه المن المناه المن المناه المنا

میں فادران فطرات نے اجازات مرتب فرمائے۔

سفر کریا ہے جب کہ پھرا قصد میں نے طرف دکن کے کیا
حیدرآباد میں جو میں آبا طبق یاں کے شریفوں میں پایا
دیکھی غربت مزاج میں سب کے اور مروت مزاج میں سب کے
حیروں مدی کے خالیا سالوں فورومی آب دکن میں واردوو کے قریبال آپ کے فلل و

کال کاشرہ و والیا۔ نواب مخار الملک سرسالار جنگ اول نے بری عزت افزائی کی۔ مدت لازم سے است محسن کی است مولا علی کا سے جو می

ہے سرائ زبال وہ ماہ سنے ہے وہ مخار ملک شد کا وزیر میر عالم تواد وہ سالار حض مخار تاکل کفار

برتر ابی ہے وہ تراب علی خاک پاتے علی و آل بی

بول آپ ابرطیب تے جیا کرآپ کے تعالیف سے ظاہر ہوتا ہے۔

ان کے تقیقات میں: (۱) اسرار الاطباء اور (۲) طب قاری ہیں۔ ان کے ملاوو ایک ۲۰۱ (ایک سودو) رسالوں کا مجموعہ ہے۔ من کا نام افھوں نے الشجر کا دائش الکھا۔ اس میں تمام مروجہ علوم کے رسالے ہیں۔ مثلاً: طبیعیات، طب، فلسفہ کلام، عقاکہ آفسیر، اطلاق، اوب، مشطق، موسیق، فقد، تاریخ طوک ملا کر قطاء و فیرو۔ ان کے علاو و علوم فرید میں اور موسیائی کے بیان میں مجی رسالے قد، تاریخ طوک ملا دو فیرو۔ ان کے علاو و علوم فرید میں اور موسیائی کے بیان میں مجی رسالے تاریخ ان کی تعقیق ہیں، باتی کو دوسروں کی کتابوں سے ختب کیا

۱۳۹۹ منٹی کا یہ جمور کتب خاندہ منید یس موجود ہے۔ اِحض رمائے خودان کے قلم کے قلعے موے میں ریکیم سید سین نے اول کتاب میں ان کے مالات تحریر کے این۔

(الدريديلد ٢٣)

سيدنياز حسن برى حيدرة بادى

INTE-FILESIA

00000000000

IAST JIT . 4

موادی سید نیاز حسن بن سید فلام حسین صاحب برست منطع کرنال ( پنجاب ) کے رہنے دالے تھے۔ آپ نے اپنا مختصر حال مشوی حدیقة الا بھان میں بول لکھا ہے

مرض کرتا ہے اب نیاز حس خدمت موشیں بی تازہ بنی اسل ہے باہرہ وطن میرا طم بخصیل تکمنز میں کیا

الانده

مولوی مہدی فال صاحب دیدرآبادی مولوی سیدنین المن صاحب مزیم تیم والمتعلمین المن صاحب مزیم تیم و المتعلمین (مطبوع)، مولوی سید اکا بر صین صاحب (جو مولاتا کے دارون جی تھے) مولوی صادق علی صاحب مولوی کا الم علی صاحب امام جعد حیدرآباد۔

تاليفات

حديقة الايمان (مثنوي مطبوط ) علية العبادتر جمد زية العبادة البادع اجازات (مطبوط) ( تذكرة بيديد مطاعة و ا

### وارث حسين ،سيد

HAR BEEL

1881/1711

الحاج مولاناسیدوارث حسین مرحوم این سیدفلام رضامر حوم این آبائی وظن موشع چک حسن بخر وضلع معطفر پور بهار میں مورد ۲۵ مرجوری ۱۰۰ مال میں متولد ہوئے۔ ایتدائی تعلیم کچنو وضلع سیوان عصاصل کی بعد و مدرسہ بیات علاومولوی کا احتجان پاس کیا جسکے بعد مدرسہ بلیمانیہ بیات سے حاصل کی بعد و مدرسہ بلیمانیہ بیات سے ماصل کی بعد و کا اپنی بری بین سیماتھ بھیک پوشلع سیوان میں مستقل رہا کرتے جے۔ اسلے اس بستی کے جید عالم برزگ مولانا سید نظر حسین صاحب کی ترفیب سے ۱۹۳۳ء میں سلطان المداری تکھنو میں وافلہ لیکر ۱۹۳۹ء میں صدرالا فاصل کی سند حاصل کی۔ ای ورمیان میں سلطان المداری تکھنو میں وافلہ لیکر ۱۹۳۹ء میں صدرالا فاصل کی سند حاصل کی۔ ای ورمیان میں سلطان المداری تکھنو میں وافلہ لیکر ۱۹۳۹ء میں صدرالا فاصل کی سند حاصل کی۔ ای ورمیان میں سلطان المداری تکھنو میں وافلہ لیکر ۱۹۳۹ء میں صدرالا فاصل کی سند حاصل کی۔

רטר

مرکارنظام ہے منصب طار ایک عالی شان مجد بوائی جس شری دوش، کوال دزنائی مجداور کافریاں تھیں کے موشین قیام کریں ، اس مجد کا قطعہ تاریخ حسن کل خال الور شاگر دمیاں مشق نے لکھا جس کا بیت تاریخ بیر ہے ق مجد ؤ مشر کر کے الور یو لکھ وے کہ خانہ خدا ہے (۱۰ ۳اھ)

محی دومرے شاعر نے بیادہ تاریخ نکال نے الحق بنایا وومرا کعب ظیل نے (۱۰ سام)

ان مجدی مادمیام یں بہت بزے بیجھ میں تین تین گھنے موسط بیان فرماتے۔ نظام دکن نے ایک کمیٹی مقدمات کا فیصلہ کرنے کے لئے بنائی جس میں ایک ہندوہ ایک کی اور ایک شیعہ عالم مقرد کیا تو اس میں آپ کوفتن کیا لیکن آپ نے چندماو بعد استعفاد یدیا۔

آپ نے افیارہ نے کے۔ انٹیس مرتبہ مراق کی اور سات مرتبہ مقدس کی زیاد تیں کیں۔ آٹھویں مرتبہ مشہد مقدس کی زیادے کو جارے نے کے سکم میں آخر بیاف تا شن دملت فر مائی۔ آپ کا جنازہ امانت دکھا گیا اور تقریباً دو سال بعد کر جائے معلی میں لے جاکر فرن کے گئے۔ اس وقت آپ کی عرفقر بیاستر سال تھی۔ اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ آپ حدود وسالیا میں پیدا ہوئے ہوں گے۔

سيد بندوحسن ،سيدا بولخسن ،سيد مبدالرسول المعروف بدسنة آماً سيد محدرضا ، بيرجارون عالم مختاوران كحالات الى جكيول نيروري جن -

COL

جناب مولانا سيدوجيب السن صاحب مرحوم باروشلع فازى يورك باشد عق يجان اى ين إب كاسايير ، الله كااورآب وللمنو كيم فاندش والل كرديا كيار بالروقي مارى -و بي علوم كي تحصيل كي مداري في كا اورو في خدمات بين مشغول جوئ \_آخر شرا فلان ش وش الماز اور عالم كي حيثيت الخرهات كف خدمات انهام دع ..

AAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAAA

#### وزيرحن بسيد

مولاناسدوررسن صاحب محلی کائل (ملل فيش آباد) كي باشد عضاوره بيل آب کی پیدائش ہوئی تھی۔مطلع انوار میں آپ کا تعلق طلع خازی پورے بتایا گیا ہے جو تھی تیں ہے۔ آپ نے جامع العلوم جواد بر(بنارس) میں تعلیم حاصل کی اور و 190 می فر الاقاضل ہوئے۔ال کے بعد آب نے مدرسة الواعظين من داخله ليا اور وبال سے قار في جوكر مدرسه كي طرف سے تبلغي خدمات انجام ديئيه آب ايك كامياب ملغ تقياد رقطابت كالمداز ول تقين قديدرسة الواعظين كيدت فتم كركة آب رياست محودة بادے فسلك رہے - تجريدرمة الواعظين كے والين بركل بوئ .. ال کے بعد بعراوی مجد ( کلکتہ ) میں امام جعد و جماعت کی حثیت سے تشریف لے گئے۔ انجی ویں تھے کر خوجہ شیعدا ٹنا عشری ہماعت ( بمینی ) نے انھیں خدمات کیلئے آپ کو طالبا۔

اب مجلع صاجزاوے کی تقریب کے سلسلے میں وطن آئے ہوئے تھے کہ • سمر ماریق ٨١٥ (=٠١٠ رفع الأن ١٢٩٨ م) كوام عك سر آخرت القياد فرمايد مرعم علاين اخلاق الد وين خدمات اظهر من أهنس بين يه

(الجواد علاقيم 4 و على وعلى والدين و على وعدد)

وعدائ فالريال شرادام بعدوالحاحث كاحيت عاقريف في عد ووواي الماري المرايس كاستدماه الكاور يالى يرمطب قائم كيار اواب ميدالى العادم موسوع لى المام باعدى يمكم وقف كالرار باغ بدوى فوايش ير ٢٢ ريسول ك قيام ك بعد ١٩٥٧ ، عن على تحريالي كوفير بادكها اورتخزار باغ يشذف امام بماعت كطورير مامور بوك احدوشيعه جامع مجدم او بورش المام جعد كرفر أخل محى انجام وية رب جوتاحيات قائم رباء • ١٩٤ وش ع بيت الله ع مشرف ہوئے۔ جہال سے والی اور درسلیمانیہ سے بحثیت مدری مشلک ہوئے۔ مدرسہ کی مالی حشکات کودور کیا۔ اور کار پوریشن کے لیس کی کثیر رقم کو موای تعاون سے اوا کیا۔ تاحیات مدرسى بقا كطي كوشال ديد وفات: ایک خویل ملالت کے بعد بالافر ۹۲ رسال کی عمر می ۲۱ رشعبان ۲ (۱۳ مع مطابق ٣٠ جنوري ١٩٩٩ يروز شنبه دارفاني عداريقا كاطرف رصلت فرماني-

(كايدارة المان دسيدان تسين)

وجابت سين سيد

مولوی سید وجابت صین صاحب فاندان اجتباد کے رکن اور مولوی سید حاوت صین صاحب (مردوم) كي صاحبزاو ي تقي علم اور خطابت من شيرت تحي بروان عمري من وفعيًّا انقال

(املان جلافيره وفيرو عادى الأف م الاساب)

# وصى مرسيد ضياء الملة ،فيض آبادى

141-/FFA

000000000000000000000000000000000

ایک عرص تک بدایوں شرامام جدو جاعت کی حیثیت سے تھم رہے۔ اسکے بعد فازی اور شریعت میں جدو جات کے بعد فازی اور شریعت میں چند سال امام جدو جاعت کی حیثیت سے گزاد سے۔ راقم الحروف کو پہلے پال ویر آپ کی خدمت میں حاضری کا موقع طاقعا۔ یہاں تک کے مواد ناظفر الحمن صاحب نے ان کو جواد بیر کر کیا کا کی میں بحیثیت مدر ان بالیا۔ اور کی ماہ کیلئے مواد ناظفر الحمن صاحب مدرسامر بیر (جو نیور) کے پر مال میں بحید سرکار ظفر الملة بنادی والی آئے تو مولانا وسی محمد صاحب ناصر یہ کے پر کیا عدید بیب مولانا سعاوت حسین فان (جو سالباسال تک وثیقہ اسکول فیض آباد کے پر نیل دہ) فیض آباد سے کیسل دہ )

یں رو کروری و قد رئیس کے مشاقل میں لگ گئے۔ اور تحقق تم کی و فی خدیات اور شرقی فرمدواریوں
کی اور ایکی میں منہک ووگئے۔ اپنے قیام کے ووران فیض آباد کی ایک قدیم اور نہایت می
مقبول ( کرخ کی) ورگاہ کی از مرفوقیر کردئی۔ اور هنزت ایو افعنل احیاس کا نبایت می قریصورت
روضہ توایا۔ جب آپ وثیق اسکول سے دیٹائر ہوئے قو مواد تا سیدائن سن صاحب نوشیروی نے آپ
کو مدرت الوا منظین تکھنو میں وائس پر کیل کی حیثیت سے بلوالیا۔ اور ملا مدوشیروی کے انتقال کے بعد
وود 19 میں اسکار نہیل مقرر کرد کے گئے۔

اخلاق حسنه

علم کے ساتھ حلم ہوا دت بہ حدایا رابلم میں لا جواب و اگری میں بہ حک ایالات تہا ہد علمی دوقیق دسادگی اللوی دور ع دصلہ رحم و مکمت اللہ پر دشا عری دھا ضر جوالی دسمن ساعت داور ہاؤوق او بیت ایسامعلوم دوتا تھا کہ بیصفات آپ می کیلئے وشع سے سے جس۔

اکساراور قواضع کی تصویرای واقعہ سے ظاہر ہوتی ہے کہ فیض آبادی ایک جگر سالانہ جلس
تحی۔ بانیان جلس جن سے ایک بھائی نے سرکار ضیاء الملة سے ذاکری کا دھرہ لیا اور دوسرے بھائی
نے ایک دوسرے صاحب سے وحدہ لے لیار سرکار ضیاء الملة ذاکری فرمارے سے کہ دوسرے
صاحب بھی تحریف نے آتے اور بھرے جمع میں کھڑے ہو کر فرمایار جناب اس جلس کا جھے سے وحدہ
عواہے۔ جناب نے بھے می سنافر را منبر سے اثر آتے اور فودی فرمایار بھی اللہ آپ بھی فرمائیں۔
ووصاحب جناب نے بھے می سنافر را منبر سے اثر آتے اور فودی فرمایار بھی اللہ آپ بھی فرمائیں۔
ووصاحب جناب نے بھی توں سنافر را منبر سے اثر کی ۔ اور جناب مرحوم پوری بھی ذیر منبر بینے دے
اور کی سے کوئی دی سے گئیں کی ۔ طال تک دوسرے ذاکر عالی ہے۔

104

(22)

عالم صاحب امام بمناعت المامية مهيد بمبئ كوفيروى . أنهون نے مولاء كوئمين كے حبيب اسپتال بي واقع كرديا .

تقریباً ٢ سال تک مواد تا بمبئی فیض آباده اور بنادی کے اکثر وں اور میڈیکل کا گون ش زیر ملائ رہے۔ می ۱۹۸۵ ویس مواد تا گریز ہے اور اگل بسارت بھی جاتی ری ۔ آفر بنادی ش ۱۳ جمان ۱۹۸۷ ویوم شنید ساڑھے پانچ بجے شام کو یہ آفل ملم المل فروب ہوگیا۔ ادائی فیض آباد لے جاتی محل اور ۱۵ جون کو بیر دلحد کر دیا گیا۔

ۇك

یبال تک جو پکولکھنا گیا او مواد نامرحوم کے چوٹے بھائی ڈاکٹر سیدیدراکسن عابدی کے مضمون (بایتامدالجواد واکست ۱۹۸۷) ہے ماخوذ ہے۔ اس کے بعد راقم الحروف کی پکھایا دواشتیں درج کی جاتی تیں۔ شدہ

بإدواشين

 J.C.I

پونگ وثیت اسکول میں مموی پیندوئیں ہوتا گفا بلک دقف بہو دیگم ہے ، قوسا حکومت مانا ہے۔ تقاہر ہے گذائی نائے کے لوالاے جور قم معین تھی اس ارز اٹی کے زمانے میں کافی ہو جاتی تھی۔
لیکن اس کر افل کے زمانے میں نہ ہوئے کے براز تھی۔ اسلے مصارف دار الا قامہ طلباء کے قیام وطعام
کے اخراجات آپ اپٹی قود جیب خاص ہے ادا فرمائے تھے۔ چٹانچ ایک مرحبہ دو کا ندار کا قرض کا فی
جو گیا تھا کہ دو کا ندار نے تی ہے قاضہ کیا اور صاف کہدویا کہ پہلے تھی قرض ادا کرد ہیں جب نیا قرض
ویا جاتی ہو جوم کیلئے بین امشکل مرحلہ آگیا تھا جب کوئی صورت ادا کی قرض کی ممکن ند ہوئی اق

طلب میت وشفقت کا بیرمالم تھا کہ دانوں کواٹھ اٹھ کرد کھتے تھے اگر کمی طالب ملم کے پاک لحاف فیص دونا تو اپنی مبااوز صادیتے تھے۔اکٹر باز ارے طلباء کے کھائے کیلئے خود دی مبزی وقیرو خرید کے کیلئے جایا کرتے تھے اور کسی برخلام کوئیس جواکر تا تھا۔

الات اوروفات

رمشان البارک ۱۹۰ اه کے قالباً تیسری تاریخ تھی کہ موانا تاوسی قد صاحب نے ایران کا سر کیا اور تھی کہ موانا تاوسی قد صاحب نے ایران کا سر کیا اور تقریباً ایک ماہ کے تیام کے بعد ۳ جولائی ۱۹۸۳ ماہ جب ایران سے واپسی کیلئے روانہ عول تا قو اگی طبیعت بہت قراب تھی۔ بول تی جہاز یہ باری اور بڑھ گئی۔ موانا تا روش علی صاحب مرحوم (پہل مصبور کا فی میرف ) ہمراہ تے انہوں نے بول کی جہاز کے عملے کی مدد سے موانا تا کو بول تی جبالا سے اتارائا سلے کرائے ہی ول میں جلنے کی قوت میں گئی اور داہ بی جانب فائے کا اثر ہو کیا تھا۔ مات کو موانا تاروز میں ساجب میں خوانا کا موانا تاریخ میں مات کے موانا تاروز میں موانا تا سیوٹیم

COA

تعلیم عراق تشریف نے مجھے اور آٹھ سال وہاں رو کر سیسیا میں متعدوا جائے وہائے اجتباد کے کر وائیں آئے۔

بندویست کیا۔ سادگی ، تقوی ، درخ ، صلدح ، تحت ادر قدیر میں اپنی نظیر آپ تھے۔ راقم الحروف کو ان کی خدمت میں اسوقت سے نیاز حاصل تھا جب وہ خازی پور میں متیم تھے۔ اور میں جوادیہ کا طالب علم تھا۔ آخری ملاقات مولانا تلفر الحن صاحب قبلہ طاب ثراوے دیسر کی مجلس میں ہو فی تھی۔

## ولايت على اكبر يوري

مواوی والایت علی صاحب این قلام رسول صاحب اکبر پور( منطع فیض آباد) کے رہنے والے تھے۔آپ نے مولوی عبدالحق کی کتاب مراطا متقیم کے ابین فضلوں کی رویس ''سیف حیدری'' کلسی جس میں سیدا شہد اندکی افراق کا بوسے کے جواز قابت کیا ہے۔الذر بعدیں یہ معلومات کشف الجب نے قبل کی گئی جی ۔

## يوسف حسين ، امرو بوي

IAAO/IF-F

000000000

mer/mor

موال تامید بوسف حین صاحب جمید جناب موال تامید مرتضی حین صاحب امروہ وی کے صاحبزادے تھے۔ آپ ۱۸ ردیب سی اور تاری ۱۸۸۵ می کو امرویدی پیدا ہوئے۔ آپ کے والد ماجد اللی ورج کے مدری اور مشہور فضلائے امرویدی تھے۔ آپ نے کتب ورمید اپنے والد ماجد اور مولوی تحد این صاحب شاہ آبادی (حتی المسلک ) سے پڑھی تھیں۔ ۱۳۳۳ میں بغرش والد ماجد اور مولوی تحد این صاحب شاہ آبادی (حتی المسلک ) سے پڑھی تھیں۔ ۱۳۳۳ میں بغرش

on the dispersion of the party of the same of the same

آخر مر بھی اپنے وطن بھی اسکونٹ آئزیں تھے۔ مہادت خاند سینی دار الثقاد بھی اوسد ورانہ حک تماز جما احت اور وطنا وضیحت کا سلسلہ جارتی رکھا۔ آپ نے مجھلی بندر میں وفات پائی اور وہی وقن ہوئے۔ ایک جٹا اور ایک بٹی یاد گار تھوڑے۔

#### ت تقی حسن ،سید،وفا

1994 17:192

مولانا سیرتق حسن و قلام اور می حیدر آباد و کن کے ایک نواتی شلع کے معزز کر انے میں پیدا ہوئے۔ نہ ہی تعلیمات مولانا سید ابوالحسن میران صاحب قبلہ مجتبدے حاصل سے امران سے ادشد تلا غدومیں شار ہوئے گئے۔ نہف اور قم کے علاء دمراقع سے ان کی خطاء کتابت رہتی تھی۔

مولا تائے جواد لی ساتی سیاس اقتصادی اور قد بھی خدمات انجام دیتے دواگر تن تنہا تھیں اق چندمحد ود دوستول کی جدکاری سے ظہور یذیر ہوئے۔

آپ کاسب سے بڑا کارنامہ جوان نسل کو تعلیمات قرآئی اور معلومات ویق سے دوشاس کرانا تھا۔ تقریباً کی اور معلومات ویق سے دوشاس کرانا تھا۔ تقریباً ساتھ سال قبل حیور آباد کے مشہور ڈاکٹر شہامت ملی بیک مرحوم نے سوالانا تقی حسن وی کی جمکاری سے مدرسر جعفر ہے کی جمکاری سے مدرسر جعفر ہے کی جمکاری سے مدرسر جعفر ہے کی جمارت میں کھولا گیا جس کے دلاگیا جس کولا گیا جس کولا گیا جس کولا گیا جس کولا گیا جس کے دلائی تعداد سے ویش نظر پہلے تو شر سے مختلف محلوں میں اس کی شاخیس کھولا گیا ہے جو اس مسلسل شاخوں کا افتاع ہوتا دیا۔

منمدمه

"خورشد خاور" كريت او جائے ك يعد فصايك كا پيدا با" تاريخ على و كن" بو حيدة باودكن كى" اولائى يوقد ويلفر سوسائى" كاشائى كردو ب- اس ش چدرو علاء ك حالات تين- جن ش سے كيارو كا تعلق اس دور سے جو بحرى كاب كا موضوع ب- چوكا تذكرواس كاب ش آ چكا ب- باق بائى كا حال يبال كتاب كاسلوب ك مطابق تروف جى كى ترتيب سادرة كياجا تا ہے:-

## برکت علی ،سید

مولاتا سيد يركت في صاحب مولاتا سيد في شفيح باقرى كفرزند سيد (جن كا حال بعد من كا كال بعد من كالمواجعة بالمواجعة بال

آپ كتاليفات يى مرائ العرقان اورمنيان العرقان ايم يى \_ آپ شاعر يحى تصاور ويكان ايم يى \_ آپ شاعر يحى تصاور ويكان

444

آپ کی تقریر پرخلوس اور مؤثر ہوتی تھی اور کی شیعہ سب اے ذوق وشوق ہے ہے۔ آپ کوشعر وخن ہے بھی لگا کو تھا اور ''فقیبہہ'' جکلس کرتے تھے۔ آپ حتی الا مکان راوحق میں واہے، ورے ، قدرے ، نبخے اعانت ہے بھی گریز نہیں کرتے تھے۔ کوئلہ عالیجاو میں شائد ارم چہ جعفری آپ ہی کی انتقاب کوششوں کا نتیجہ ہے۔

افى بنودين بحى آپ كوكانى وقعت عاصل تقى .

ایک اور سے علالت کا سلسلہ جاری تھا۔ مشور کا بھی کی بنا پر تبدیل آب وہ وا کیلے کو وہ والعلی
پر مقیم تھے جہال ۲۴ ردی الحجد رات کے جار بج رائل ملک بنا ہوئے۔ ووسرے روز تقریبا ۴ بج وابرة میر مومن میں تدفین ہوئی۔ (اس کما بچہ میں وقات کا سال نہیں ویا ہے ) آپ کے تمن
ساجز اوول میں بڑے مولوی سیدزین العابدین صاحب بھی معنوں میں اپنے والدمجتم مے جانشین
تھے۔ اور جامع کمالات وقع اطلاق تھے۔

## محد شفيع با قرى

14F1/1F10

مولانا سید محد شفح باقری المعروف بدیر آقا قبلہ و کعبہ جنت مقائی بہت بڑے عالم وین شف۔ آپ کے درے کوئی مایوں ٹیس گھرتا تھا۔ بہت ہی فیاض شف۔ آپ نے سیدائشید اوکی ذاکری شم بھی بہت نام پیداکیا تھا۔ اپنے ہے تم عمروالوں سے شفق باپ کی طرح ما کا کرتے۔ اٹھیں راوستقیم پرزی وجبت کے ساتھ کا مزن کرتے۔ حاج تندوں کی عددائ طرح کرتے کہ کی دوس کواس کا ملم

£999999999999999999999999999

پتانچاب تقریباً ایک سوے زیادہ شامیس موجود میں جن سے بزاروں طلبا ووطالبات فیض پا بچکاور

تقریباتی سال قبل مفیرای ان داکر تقی مقدری نے مدرسی مفریہ کے شاندادم کری کت خانہ کا افتتاح کیا۔ مرحوم شہیدیار جنگ کے درف نے شہیدیار جنگ کا پورا کتب خان مدرسکودیدیا۔ مولانا وقانے بھی اینا داتی کتب خانداس میں مضم کردیا۔

مولانا کی فعالیج ل میں مسلم وقف بورڈ کی رکئیت ، آل انڈیا شیعہ کا نفرس میں شموایت وغیرہ کے ملاوو داریؤ میرمومن کی حفاظت وگلہدار کی بہت اہمیت رکھتی ہے۔

آپ نے ۷۸ سال کی تعربی ماور مضان کے تیسرے بیٹے میں رحلت فرمائی۔ ۷۸ سال کی تعرب اندازہ ہوتا ہے کہ آپ نے حدود ۱۹۱۹ء (۱۹۹۸ء میں رحلت کی وگی۔

## على نقى ،سيد ، مجتهد

جَدَة الاسلام مولانا سيوطي أتى صاحب مولانا مير محد على صاحب طاب رَّ او ك فرزند ہے۔

آپ ك والد ماجد جامع علوم اور عالم باعمل ہے اور فقد وحدیث وتغییر وغیرہ جس مهارت تامدر كھتے

ہے۔خود مولانا علی آتى صاحب عربی وقاری جس ماہر ہے اور فقد وحدیث وتغییر وكلام پر بوری طرح عبور
عاصل تھا۔ آپ نے جمد الاسلام آتائی الحاج ہے جمد علی خراسانی ہے اکتساب علم کیا تھا۔ پجر حراق کے
اور وہاں كے علی ہے كرام كے سامنے زانو ك اوب جيد كيا۔ اور اان سے اجازت لے كر وطن واليس

قى-

آپ کی تاریخ پیدائش اس کتابچه ش'' تیم ریب المریب ۱۳ ۴۳ مطابق ۱۳ ۴۳ کتابر ۱۹۲۶ تکھی ہے۔لیکن آفتو یم کے لحاظ ہے کیم ریب ۳۳ تا ۲۶ رینوری ۱۹۴۵ سے مطابق تھی اور ۲۶ رستمبر ۱۹۲۴ و کا رؤیقعد و من تا اور کے مطابق تھی۔

ة پ کومبود جعفر پر بین منسل ویا گیااه رجلون کی شکل بین جناز والاه و سرطوق مبارک لے جایا گیا۔ جبال ان کے فرزند مولانا علی تفی صاحب نے نماز جناز و پڑھائی پھر داریا میر موثن بین بیر دلد سمج مسکلا۔

## استدراک (ریحیس ۱۹۱)

مولانا مرزاد ضاعلی ان صاحبان فضل و کمال ین سے تھے بخوں نے جرواتر ہواور تحقیق و
تالیف ہر میدان میں تک و تازی اور اپنا تھی چیوز گئے ۔ صاحب تذکرہ ب بہا کے مطابق مولانا کا
مکان مفتی سے ( نکھنٹو ) میں تھا اور آپ کا خاندان بھی علم وفضل میں مشہور تھا۔ ابتدائی کی افتانہ
اسا تذو سے پڑھیں اور پھر ملک العلماء جناب سید بندوسن صاحب طاب را او سے علوم ویڈ ہی الحل
العلیم حاصل کرنے کے بعد ریاست محمود آبادی مجد میں امام جمعہ و بھا عت رہے ۔ مرزآ پ کا السل
ووق آھینے ف و تالیف تھا۔ واکری الحل پائی کرتے تھے۔ مناظر و میں لا بواب سے اور بڑے ۔ والیس خواف و العلماء مردوم سید بھی صاحب کے موثق و
ظرافت کا مظاہر و قرباتے۔ تمام علائے اعلام خصوصا ملا و العلماء مردوم سید بھی صاحب کے موثق و
معتد سے ۔ طالب علموں سے والیانہ مقیدت تھی اور الن کی بہت عزت کرتے ۔ توریب و اصر کے
درمیان کوئی فرق میں ہے۔

8688888888888888888888888888

ت و نے باتا۔ آپ ٹام بی تے اور شق تھی کرتے تھے۔

آپ کر بال میں مقیم رہے اور وہیں 4 مذی الحجہ ہوا ہے الا کو وفات پائی۔ اور حرم اقدی کے قریب وفن ہوئے۔ اپ کے فرزیر قریب وفن ہوئے۔ بیتاری تاقویم کے لحاظ سے معرفوم روز 190 کے مطابق ہے۔ آپ کے فرزیر مولانا سید یرکٹ مل صاحب کا ذکر پہلے آپکا ہے۔

## محمرصادق ،سيد بجفي

144F / IF 10

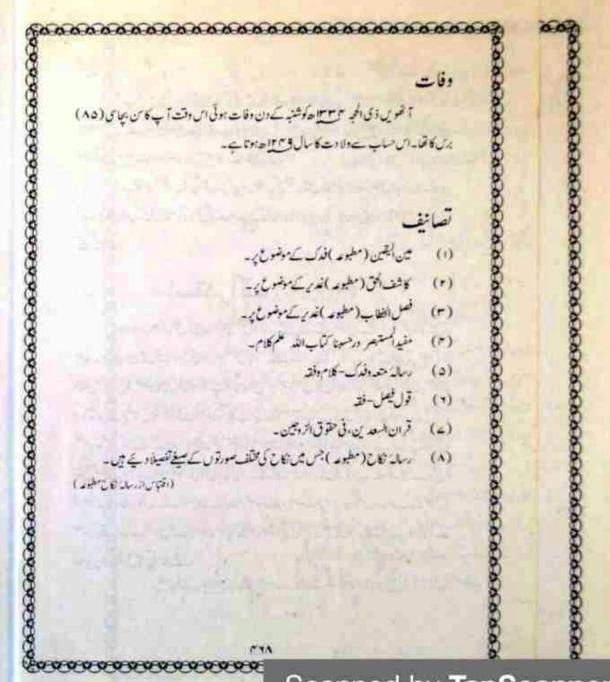
مولانا سید تد صادق بیخی تاحیات مجد جعفری کے امام جعد و جماعت رہے۔ یہ وہ مجد ہے جا ب جدد و جماعت رہے۔ یہ وہ مجد ہے جہاں حیدر آباد میں کینی مرتبہ اشہدان امیر الموشین علیا و لی اللہ کی صدا بلند ہوئی۔ اس وقت و ہاں بہت معرک رہا۔ آپ کی ایور کی زعد گی تیلی اصلاح اور ترویخ مقصد حسینیت میں گذری مختلف اویان و غدا ہب کے مدیر فضفی ، وافقور معلاء اور شعراء آپ ہے بہت متاثر تھے۔ غدی اور سیاس طلقوں میں مولانا کا بہت ذیاد و و قار تھا۔ سابق چیف خشر آ عرم ایرویش و اکثر چتار غربی آپ کے بہت مقدر تھے۔

آپ کی حیات ہی جس مجد جعفری کو مزید کشادہ کر کے ایک رزئین فو کی گئی۔ جس سے خمازیوں کو بہت سوات ہوگئی۔

آپ مختلف اہم امام باڑوں میں بحیثیت عالم و ذاکر تشریف نے جاتے تھے اور خطاب فرماتے تھے۔ آپ کالب وابجہ بہت محمد داور زبان بہت سلیس تھی۔

آب كانقال الرمفر واس وكوروا جوتقريم كالناس وارجوال الم 1990 مكمطابق

mar.



Scanned by TapScanner

